जो मैं हीरो को देखता हूँ तो उसकी ओर मेरा मन आकर्षित हुआ जाता है।

पीडरो को क्लौडियस और हीरो का सम्बन्ध ऐसा उचित मालूम हुआ कि उसने लियोनेटो से प्रार्थना करके यह विवाह स्वीकार करा लिया। और हीरो भी उससे विवाह करने पर राज़ी हो गई क्योंकि क्लौडियस बड़ा वीर और गुणी पुरुष था। जब ये सब बातें निश्चय हो गईं तब विवाह संस्कार के लिए एक तिथि नियत कर दी गई।

यद्यपि विवाह के दिन निकटस्थ ही थे परन्तु क्लौडियस को एक-एक घड़ी सौ वर्षों के बराबर बीतती थी। क्योंकि युवक मनुष्य जिस बात को करना चाहते हैं उसको जल्दी ही करना चाहते हैं और चाहे उसके होने में थोड़ा ही समय क्यों न हो, उनको बहुत बड़ा मालूम होता है। इस समय में क्लौडियस का जी बहलाने के लिए पीडरो ने एक और उपाय सोचा वह यह था कि किसी प्रकार ऐसी बात करनी चाहिए जिससे बैनीडिक बीटरिस से प्रेम करने लगे और बीटरिस भी बैनीडिक को चाहने लगे। इसी के लिए लियोनेटो ने भी यह बात मान ली। और तो और सुशीला हीरो भी क्लौडियस के कहने से इस बात पर राज़ी हो गई कि जो कुछ मुझसे बन सकेगा, मैं भी इस सम्बन्ध में यथाशक्ति कोशिश करूँगी।

अब सवाल यह था कि किस प्रकार इस काम को करना चाहिए। पीडरो की समझ में एक बात आई कि सब लोग

वैनीडिक को झूठ-मूठ यह वात निश्चय करा दे कि बीटरिस उससे प्यार करती है। और हीरो बीटरिस को यह विश्वास दिला दे कि वैनीडिक उसके प्रेमरोग से पीड़ित है।

पहले पीडरो, क्लौडियस और लियोनेटो ने अपना कार्य्य आरम्भ किया। जब वैनीडिक बाग़ की एक कुञ्ज मे वैठा हुआ कुछ पढ़ रहा था उस समय वे सब लोग एक निकट की कुञ्ज मे जाकर टहलने लगे, जिससे उनकी सब वातें वैनीडिक को सुनाई दे सकें। पर उसे यह वात मालूम न हो कि ये बातें मुझे सुनाने के लिए कही जा रही हैं। पीडरो लियोनेटो से कहने लगा—

"लियोनेटो! आपने आज मुझसे यह क्या बात कही कि तुम्हारी भतीजी बीटरिस वैनीडिक से प्रेम करती है!

क्लौडियस—चुप! वैनीडिक सुनता होगा! मुझे तो यह आशा न थी कि बीटरिस किसी मनुष्य को भी चाहती हो।

लियोनेटो—मुझे भी यही ख़याल था। परन्तु यह बड़ी विचित्र वात है कि बीटरिस वैनीडिक से इतना प्रेम करती है। दिखलाने को तो वह उससे बहुत लड़ती है और उसे ख़ूब ही चिढ़ाती है।

वैनीडिक ने दूर से जो यह वात सुनी तो मन मे आश्चर्य करने लगा। परन्तु लियोनेटो ने फिर कहा—

"क्या बताऊँ, कुछ समझ मे नहीं आता। परन्तु इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि बीटरिस का वैनीडिक के लिए अगाध प्रेम है।

पीडरो—वह बहाना तो नहीं करती ?

क्लौडियस—हाँ, शायद यही बात हो।

लियोनेटो—नहीं नहीं, ऐसा बहाना कोई नहीं करता। यह तो सच ही प्रतीत होता है।

पीडरो—अच्छा, उसका प्रेम आपको किस प्रकार जान पड़ा ?

क्लौडियस—हाँ, यह तो बताओ—

लियोनेटो—मेरी लड़की ने यह कहा था; क्या आपने नहीं सुना!

क्लौडियस—हाँ, वे तो मुझसे भी कहती थीं!

पीडरो—मुझे बड़ा आश्चर्य होता है; मैं तो यही समझता था कि बीटरिस का हृदय कभी इस योग्य नहीं है जिसमें किसी का प्रेम समा सके!

लियोनेटो—हाँ; और विशेष कर बैनीडिक का जिसको वह साफ़-साफ़ गालियाँ देती है।

बैनीडिक इस बात को सुनकर मन में कहने लगा कि इसमें कुछ कपट-छल मालूम होता है परन्तु एक बात से छल प्रकट नहीं होता क्योंकि यदि कोई छल होता तो सफ़ेद डाढ़ी वाला वृद्ध लियोनेटो इसमें सम्मिलित न होता।

पीडरो ने फिर पूछा—

"क्या बीटरिस ने अपने प्रेम की कथा बैनीडिक को सुना दी है ?"

लियोनेटो—नहीं नहीं। वह कहती है कि मैं कभी यह बात प्रकट न करूँगी।

क्लौडियस—आपकी पुत्री ने भी यही कहा था। बीटरिस कहती है कि मैं सबके सामने उसकी हँसी कर चुकी हूँ। इसलिए अब किस मुँह से कहूँ कि मैं तुमको प्यार करती हूँ।

लियोनेटो—वह कहती ही कहती है। मुझे निश्चय है कि वह बीस बार रात मे सोते से उठेगी और सफ़े के सफ़े लिख डालेगी। प्रेम बड़ा प्रबल है।

क्लौडियस—हाँ! हाँ! मैं आपको बताता हूँ। आपकी लड़की कहती थी। बीटरिस ने एक पत्र लिखा।

लियोनेटो—फिर क्या?

क्लौडियस—जब देने का समय आया तो अपने निलज्जपन पर लज्जित हो गई और फाड़ डाला। कहने लगी. "मुझे विश्वास है कि बैनीडिक सुनते ही मुझसे हँसी करने लगेगा।" फिर वह कहने लगी—

"बैनीडिक! बैनीडिक! दया करो।"

लियोनेटो—मेरी लड़की ने तो बहुत सी बातें बताई हैं। वह कहती है कि अगर बैनीडिक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार न की तो वह आत्मघात कर लेगी!

पीडरो—फिर यह अच्छा होगा कि बैनीडिक से हमी लोग इस बात को कह दे।

क्लौडियस—कहने से प्रयोजन? बैनीडिक ऐसा कठोर है कि बिचारी रमणी को ख़ूब ही कष्ट देगा।

पीडरो—यह वैनीडिक की दुष्टता है। क्योंकि वह बड़ी अच्छी स्त्री है और उसका चालचलन भी निस्सन्देह है।

क्लौडियस—और वह बुद्धिमती भी है।

पीडरो—सिवा इस बात के कि वह वैनीडिक को चाहती है और सब बातों से उसकी बुद्धिमत्ता प्रतीत होती है।

लियोनेटो—जब बुद्धि और प्रेम में लड़ाई होती है तब प्रेम ही की जय होती है। मुझे बीटरिस के लिए शोक है। क्योंकि वह मेरी भतीजी है और मैं उसका संरक्षक हूँ।

पीडरो—जो वह मुझसे इतना हित प्रकट करती तो मैं अवश्य उसे अपनी अर्धाङ्गिनी बना लेता। मेरी तो यही राय है कि वैनीडिक को इस बात की सूचना दे दी जाय। देखें वह क्या कहता है?

लियोनेटो—क्या इससे कुछ लाभ होगा?

क्लौडियस—हीरो तो यही कहती है कि वह मर जायगी और कभी वैनीडिक से न कहेगी। क्योंकि हँसी कराने से मर जाना अच्छा है।

पीडरो—हाँ उसका विचार ठीक है क्योंकि अगर उसने अपने प्रेम का प्रकाश किया तो वैनीडिक अवश्य उससे घृणा करेगा। क्योंकि वह बड़ा दुष्ट है।

क्लौडियस—आदमी तो भला है।

पीडरो—बाहर से तो भला ही जान पड़ता है।

क्लौडियस—मैं तो उसे बुद्धिमान् समझता हूँ।

पीडरो—बात तो अच्छी कहता है।

क्लौडियस—बहादुर भी है।

पीडरो—झगड़ा भी नहीं करता। परन्तु लियोनेटो! मुझे तुम्हारी भतीजी के लिए शोक है। चलो बैनीडिक के पास चलें और उसे इस बात से सूचित कर दें।

क्लौडियस—नहीं नहीं! महाराज! इस समय न कहिए।

पीडरो—अच्छा जाने दो! हीरो से सब बातें मालूम हो जायँगी! बैनीडिक मेरा मित्र है। मैं चाहता हूँ कि वह यह बात जान ले कि वह इस युवती के योग्य नहीं है।

ये बातें करके वे लोग बाग़ से भोजनशाला की ओर चले गये। बैनीडिक कुञ्ज से निकला और अपने मन में सोचने लगा—

"यह बात हँसी की नहीं है। क्योंकि वे बड़ी गम्भीरता से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने यह सब हीरो से सुना होगा। उनको बीटरिस पर तरस आता है। इससे जान पड़ता है कि उसकी अवस्था शोचनीय हो गई है। ये लोग मुझे बुरा-भला कहते हैं और समझते हैं कि अगर मुझे बीटरिस के प्रेम का पता चल गया तो मैं उसकी हँसी करूँगा। इनका यह भी ख़याल है कि बीटरिस बिना प्रेम का प्रकाश किये ही मर जायगी। वे कहते हैं कि स्त्री तो रूपवती है। इसको मैं भी मानता हूँ। बुद्धिमती भी है। सदाचारिणी भी है। ये लोग कहते हैं कि मुझसे प्रेम करना उसकी मूर्खता है। पर मैं तो इसको मूर्खता नहीं कहता! अगर वह मुझसे प्रेम करती

है तो क्या मैं उससे न करूँगा। मुझे कभी विवाह करने की इच्छा नहीं थी और मैं विवाह का बड़ा विरोधी था। पर क्या इच्छाओं मे परिवर्तन नहीं होता? जो खाना मनुष्य को जवानी में अच्छा लगता है वह बुढ़ापे मे नहीं भाता। जब मैंने कहा था कि मैं कारा ही मर जाऊँगा तब मुझे यह क्या मालूम था कि मेरा विवाह हो जायगा।"

जब बैनीडिक महाशय विचार कर रहे थे तब वहाँ पर बीटरिस भी आ गई और कहने लगी—

"अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं आपको भोजन का निमन्त्रण देने आई हूँ।"

बैनीडिक—सुन्दरी, मैं आपका अनुगृहीत हूँ। आपने बड़ा कष्ट किया।

बीटरिस—इस धन्यवाद के लिए मैंने उतना ही कष्ट किया है जितना आपने धन्यवाद देने में। अगर मुझे कष्ट होता तो मैं न आती।

बैनीडिक—तो यहाँ आने में आपको हर्ष हुआ है?

बीटरिस—हाँ, उतना ही हर्ष हुआ जितना आपको भोजन खाने मे होगा।

बैनीडिक को अभी से यह ख़याल होने लगा कि जो कुछ पीडरो और क्लौडियस ने कहा वह सब ठीक है। उसे बीटरिस के मुँह पर प्रेम के चिह्न दिखाई देने लगे क्योंकि जो कुछ मनुष्य के मन मे होता है उसी के अनुकूल

बाहर भी दिखाई देता है। अब उसने कहा कि "मैं अवश्य बीटरिस को प्यार करूँगा; अभी जाकर उसकी तसवीर लिये आता हूँ।"

बैनीडिक को जाल मे फँसाने के बाद अब इन लोगों ने बीटरिस के फाँसने का यत्न किया और हीरो ने अपनी दो सहेलियों मारगरेट और अर्सला को साथ लेकर वही काम करना आरम्भ किया जो क्लौडियस आदि ने किया था। जिस समय बीटरिस पीडरो और क्लौडियस से बातें कर रही थी उस समय मारगरेट ने जाकर उससे कहा—

"श्रीमतीजी! हीरो और अर्सला आपके विषय मे चुप-चाप कुछ बात कर रही हैं। अगर तुम चाहो तो बाग़ की कुञ्ज मे जाकर इसको सुन सकती हो।"

यह वही कुञ्ज थी जहाँ वैनीडिक पहले दिन बैठा पुस्तकावलोकन कर रहा था।

जब हीरो को मालूम हो गया कि बीटरिस आ गई तब वह अर्सला से यों कहने लगी—

"अर्सला! मैं जानती हूँ कि वह एक दुष्टा स्त्री है। वह कभी किसी का ख़याल नहीं करती।"

अर्सला—फिर क्या आपको दृढ़ विश्वास है कि बैनीडिक बीटरिस को चाहता है?

हीरो—पीडरो और मेरे स्वामी दोनों कहते थे।

अर्सला—क्या उन्होंने आपको इसकी सूचना देने के लिए कहा है?

हीरो—उन्होंने तो मुझसे यही प्रार्थना की थी कि मैं बीटरिस को इस बात से सूचित कर दूँ। परन्तु मैंने उनसे कह दिया है कि अगर आप वैनीडिक का भला चाहते हैं तो कभी बीटरिस को इसका पता भी न लगना चाहिए।

अर्सला—क्यों? आपने ऐसा क्यों कहा? क्या आपके ख़याल में वैनीडिक बीटरिस के योग्य नहीं है?

हीरो—हे ईश्वर! वैनीडिक ऐसा ही योग्य है जैसा एक आदमी को होना सम्भव है। बीटरिस बड़ी कठोर स्त्री है। उसकी आँखों से घृणा बरसती है। वह अपनी बुद्धि के आगे किसी को नहीं समझती। उसे किसी का प्रेम नहीं है।

अर्सला—मेरा भी यही विचार है कि उससे यह बात नहीं कहनी चाहिए। नहीं तो वह व्यर्थ वैनीडिक को चिढ़ाया करेगी।

हीरो—तुम सच कहती हो। चाहे कितना ही बुद्धिमान, रूपवान या योग्य पुरुष क्यों न हो, बीटरिस उसकी हँसी ही उड़ाया करती है। यदि कोई सुन्दर मनुष्य हो तो कहती है कि यह मेरी बहन सी मालूम होती है। अगर काला हो तो कहती है कि ईश्वर ने धब्बा डाल दिया। यदि लम्बा हो तो कहती है कि बरछी के समान लम्बा है। यदि छोटा हो तो कहती है कि बौना है। यदि बातून हो तो कहती है कि बक्की है।

यदि शान्त हो तो कहती है कि गूँगा है। इस प्रकार हर एक मनुष्य के दोष निकाल देती है और उनके गुणों को छोड़ देती है।

अर्सला—ठीक है, ठीक है। उसमें यह बड़ा दोष है।

हीरो—पर उससे कहे कौन? मैं कहूँ तो मुझसे लड़ पड़ेगी, मुझसे हँसी करेगी। इसलिए वैनीडिक को राख में दबी हुई आग के समान सुलगने दो।

अर्सला—अच्छा, कह तो देना चाहिए। देखें वह क्या कहती है?

हीरो—नहीं नहीं; इससे तो यह अच्छा है कि मैं वैनीडिक के पास जाऊँ और उससे कह दूँ कि तुम इससे हित न करो। मैं अवश्य कोई ऐसा उपाय सोचूँगी जिससे उसका प्रेम छूट जाय। मैं अपनी बहन में कुछ झूठ-मूठ दोष लगा दूँगी। क्योंकि दोषों के मालूम होने से स्नेह दूर हो जाता है।

र्सला—नहीं! नहीं! ऐसा मत कीजिए, नहीं तो आपकी बहन बदनाम हो जायँगी। ऐसी मूर्ख भी नहीं है। जब सोचेंगी तब वैनीडिक जैसे योग्य पुरुष का तिरस्कार न करेंगी।

ीरो—मेरे प्यारे क्लौडियस को छोड़कर वह इटली भर में सबसे योग्य पुरुष है।

र्सला—श्रीमतीजी! मुझे क्षमा कीजिए। मैं तो समझती हूँ कि वैनीडिक सबसे योग्य पुरुष है।

हीरो—हाँ, वह बहुत प्रसिद्ध पुरुष है।
अर्सला—यह सब उसकी योग्यता का फल है। श्रीमतीजी! आपके विवाह में कितने दिन रहे हैं?
हीरो—कल होगा, चलो वस्त्र तैयार करो।

यह कहती हुई हीरो तो सहचरी सहित चली गई। बीटरिस, जो कान लगाये इन दोनों की बातें सुन रही थी, अपने मन में कहने लगी कि "अगर यह बात सच है तो मैं अवश्य बैनीडिक से प्यार करने लगूँगी। जब वह इस प्रकार मुझे चाहता है तो मुझे कठोर नहीं बनना चाहिए।"

इन दोनों शत्रुओं का इस प्रकार आपस में मिल जाना बड़ा ही उत्तम दृश्य था। परन्तु अब हीरो की आकस्मिक विपत्ति का हाल सुनना चाहिए। क्योंकि दूसरे दिन जब कि हीरो का विवाह होनेवाला था एक बड़ी दुर्घटना हो गई जिसके कारण हीरो और उसके योग्य पिता लियोनेटो को बड़ा कष्ट हुआ।

विवाह के एक दिन पहले डौन जौन ने, जो डौन पीडरो का भाई था और जो उसके साथ युद्ध से लौटकर आया था, पीडरो के पास आकर कहा—

"यदि आपको अवकाश हो तो मैं कुछ कहना चाहता हूँ।"
पीडरो—क्या एकान्त में?
जौन—हाँ, क्लौडियस को साथ ले लीजिए। क्योंकि इस बात से उनका सम्बन्ध है।

पीडरो—क्या बात है ?

जौन (क्लौडियस से)—क्या आपका विवाह कल होगा ?

पीडरो—हाँ, तुमको तो मालूम है।

जौन—मैं नहीं कह सकता कि जो बात मुझे मालूम है वह इनको भी मालूम है या नहीं ?

क्लौडियस—यदि कोई विघ्न हो तो बताओ !

जौन—शायद आप ख़याल करेंगे कि आपकी मेरी शत्रुता है। मेरे भाई को आपसे प्रेम है और इन्हीं ने इस विवाह का प्रस्ताव किया था परन्तु वधू अयोग्य है।

पीडरो—कहो, बात क्या है ?

जौन—स्त्री सती नहीं है।

क्लौडियस—कौन ? क्या हीरो ?

जौन—हाँ वही। लियोनेटो की हीरो! तुम्हारी हीरो! सब जगत की हीरो!

क्लौडियस—असती!

जौन—हां, असती। यह तो नम्र से नम्र शब्द है। वह तो इससे भी बुरी है। आप सोच न कीजिए। आज आधी रात के समय मेरे साथ चलिए और जो कुछ मैं दिखलाऊँ वह देख आइए। फिर अगर हीरो पर आपका प्रेम हो तो अवश्य विवाह कर लीजिए। परन्तु आपको योग्य तो यही है कि उसका त्याग दीजिए।

क्लौडियस—क्या यह बात है ?

पीडरो—मुझे तो यक़ीन नहीं आता।

जौन—अगर आप उस बात को जानना नहीं चाहते जिसको मैं दिखलाना चाहता हूँ, तो जाने दीजिए। पर अगर आप मेरे साथ चलेंगे तो दिखला दूँगा।

क्लौडियस—अगर आज रात को मैं कुछ बात देख लूँ तो फिर कल विवाह न करूँगा। बल्कि कल समस्त सभा मे इसे बदनाम करूँगा।

पीडरो—यदि मुझे विश्वास हो गया कि हीरो असती है तो मैं भी कल इसको बदनाम करने में तुम्हारा साथ दूँगा।

सच बात यह है कि हीरो असती नहीं थी किन्तु जौन एक दुष्ट आदमी था। वह पीडरो और क्लौडियस से शत्रुता रखता था। इसके अतिरिक्त उसमे स्वाभाविक नीचता भी थी। उसे यह बात पसन्द न आई कि क्लौडियस का विवाह ऐसी योग्य स्त्री के साथ हो जाय। इसलिए उसने पीडरो और उसके मित्र को कष्ट देने के लिए हीरो को बदनाम करने की ठान ली और उस कार्य्य को पूरा करने के लिए बोकियो नामी एक दुष्ट आदमी को कुछ रुपया देने का वादा करके कहा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे यह विवाह न हो सके। बोकियो ने उत्तर दिया कि मैं अवश्य इस काम को कर सकता हूँ।

जौन—किस प्रकार?

ओकियो—मैंने आपसे कहा था कि हीरो की सहेली मारगरेट मुझसे प्रेम करती है।

जौन—हाँ! मुझे याद है।

ओकियो—मैं उससे कह दूँगा कि रात्रि के समय वह हीरो की खिड़की से होकर मुझसे बातचीत कर ले। मारगरेट अवश्य मुझसे बात करने आवेगी। और हीरो के वस्त्र भी धारण कर सकती है, यदि मैं उससे कह दूँ।

जौन—हाँ यह तो अच्छा उपाय है।

ओकियो—परन्तु आपकी कोशिश चाहिए। आप उसी समय क्लौडियस को लेकर दूर से दिखला दीजिए कि हीरो किसी अन्य पुरुष से रात के समय बातें कर रही है। क्लौडियस इसके असतीत्व को देखकर झट अपना मन फेर लेगा। कहो कैसी कही।

जौन—बहुत अच्छी! बहुत अच्छी! हर्रा लगे न फिटकरी, रंग आवे चोखा! पर देखो अपनी बात से मत हट जाना, नहीं तो मुझे बड़ी लज्जा उठानी पड़ेगी।

इस प्रकार जब जौन, क्लौडियस और पीडरो को साथ लेकर हीरो के मकान की ओर आया तो हीरो की सहेली मारगरेट अपनी स्वामिनी के वस्त्र पहने हुए खिड़की में होकर ओकियो से बातें कर रही थी।

क्लौडियस को यह चाल मालूम न थी। उसे विश्वास हो गया कि यह हीरो ही है। इसलिए यह देखकर उसको बड़ा

क्रोध आया और जितना प्रेम वह हीरो से करता था उतनी ही उससे घृणा करने लगा। अब उसने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली कि दूसरे दिन धर्ममन्दिर में जाकर हीरो की क़लई खोलूँगा। राजा पीडरो ने भी यह बात स्वीकार कर ली। क्योंकि उसे यह बहुत बुरा मालूम हुआ। निस्सन्देह किसी स्त्री का इससे अधिक दोष नहीं हो सकता कि विवाह की रात को अपनी खिड़की में होकर वह एक अजनबी आदमी से बात करती पकड़ी जाय!

दूसरे दिन प्रातःकाल जब विवाह-संस्कार का समय आया और सब लोग धर्ममन्दिर में एकत्रित हुए, उस समय क्लौडियस ने बड़े ज़ोर से क्रोध में आकर हीरो के दोष वर्णन करना शुरू किया। निर्दोष हीरो खड़ी-खड़ी सुन रही थी और कहती थी—"क्या मेरे स्वामी का स्वास्थ्य अच्छा है? आप इतना क्रुद्ध क्यों होते हैं?"

क्लौडियस ने पीडरो से कहा—

"आप क्यों चुप खड़े हैं आप भी साफ़-साफ़ कहिए।"

पीडरो—मैं क्या कहूँ। मुझे तो लज्जा आती है कि ऐसे योग्य मित्र का विवाह एक असती स्त्री से कराने में मैंने सहायता दी!

लियोनेटो—अरे क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ! या वास्तव में यह बातें हो रही हैं?

जौन—अजी, यह सब सत्य है।

बैनेडिक—यह तो विवाह सा नहीं मालूम होता!

हीरो—सच? हाय परमात्मा!

क्लौडियस—लियोनेटो ! देखो यह मैं खड़ा हूँ। यह राजा हैं ! यह उनके भाई हैं ! और यह हीरो का मुँह है ?

लियोनेटो—यह तो सब कुछ है, फिर क्या ?

क्लौडियस—मैं आपकी लड़की से एक बात पूछता हूँ। आप इसका ठीक-ठीक उत्तर इनसे दिला दीजिए।

लियोनेटो—बेटी ! सच-सच कह दो।

हीरो—ईश्वर मेरी रक्षा करे ! किस प्रकार का प्रश्न है ?

क्लौडियस—अपने नाम को धब्बे से बचाओ !

हीरो—मेरे नाम पर कौन धब्बा लगा सकता है ?

क्लौडियस—हीरो ही हीरो के नाम पर धब्बा लगा सकती है। वह कौन आदमी था जिससे तुम कल रात बारह और एक बजे के भीतर खिड़की में होकर बातें कर रही थीं ? अगर तुम सती हो तो ठीक-ठीक बताओ !

हीरो—उस समय मैं किसी से बात नहीं करती थी।

पीडरो—फिर तो तुम सती नहीं हो। लियोनेटो, सुनो ! मैंने, मेरे भाई ने, और इस मेरे दुखिया मित्र ने इसको एक आदमी के साथ बातें करते देखा और सुना, और उस दुष्ट ने निर्लज्ज होकर साफ़-साफ़ कह दिया कि सहस्रों बार हमसे बातचीत हुई है।

जौन—धिक्! धिक्! धिक्! महाशय! रहने दीजिए! ये बातें कहने योग्य नहीं हैं। हीरो ! मुझे आपके इस असतीत्व पर शोक है।

हीरो को इन बातों के सुनने से इतना दुःख हुआ कि वह मूर्छा खाकर गिर पड़ी और सबने यही जाना कि हीरो मर गई। पीडरो और क्लौडियस दोनों धर्ममन्दिर से चले गये और उन्होंने यह भी न देखा कि हीरो और उसके पिता लियोनेटो को कितना दुःख है। क्योंकि क्रोध के मारे उनका हृदय पाषाण से भी कठोर हो गया था!

बैनीडिक वहीं रह गया था। उसने बीटरिस की सहायता से हीरो को मूर्छा से जगाया। बीटरिस को अपनी बहन की इस आपदा पर बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि उसको भली प्रकार ज्ञात था कि हीरो बड़ी सदाचारिणी स्त्री है। उसको इस दोषारोपण पर बिलकुल ही विश्वास नहीं आया। वह अपने मन में कहने लगी कि लोग झूठ बोलते हैं।

परन्तु हीरो का बाप लियोनेटो सन्दिग्ध-आत्मा का पुरुष था। वह डौन जौन जैसे सज्जन की साची को झूठ नहीं मान सका। जिस समय हीरो मूर्छित पड़ी हुई थी वह लज्जा के मारे चिल्लाने लगा। वह कहने लगा—"मौत! मौत! आज मेरी लाज रख ले। हे हीरो, तू अब आँखें मत खोलना; क्योंकि ऐसा लज्जा का काम करके मर जाना ही उचित है।"

जब बीटरिस के परिश्रम से हीरो ने कुछ आँखें खोलीं तो लियोनेटो ने फिर कहा—

"हाय! यह तो जीवित है। अरी क्यों उठती है? धिक्, धिक्! समस्त संसार धिक् धिक् कर रहा है। भला यह इस

बात का कैसे निषेध कर सकती है। हीरो आँखे मत खोल ! हीरो, अब तेरा जीवन व्यर्थ है। जो मैं जानता कि तू इस लज्जा के होने पर भी जीवित रहेगी तो तुझे चुपके-चुपके मार डालता ! मैंने कभी इस बात पर रञ्ज नहीं किया कि ईश्वर ने मुझे केवल एक ही लड़की दी। हाय ! तू मेरे क्यों पैदा हुई ? और मैंने तुझे स्नेह से क्यों पाला ? अगर मैं किसी फ़क़ीर की लड़की को गोद ले लेता और वह आज ऐसी निर्लज्ज हो जाती तो मैं यह कह सकता था कि यह मेरे वंश की नहीं है। परन्तु क्या किया जाय। मैं अपनी लड़की के ऊपर अभिमान करता था। मैं अपनी लड़की की प्रशंसा किया करता था। हाय ! आज वह डूब गई। स्याही के गड्ढे में डूब गई। उसके माथे पर कलंक का टीका लग गया; जिसके धोने के लिए सात समुद्रों का पानी भी काफ़ी नहीं है।"

वैनीडिक—श्रीमन् ! सन्तोष कीजिए। मुझे तो इतना आश्चर्य हुआ है कि कुछ कह ही नहीं सकता।

बीटरिस—अपने जीवन की सौगन्ध, मेरी बहन को झूठा दोष लगाया गया है।

वैनीडिक—क्या कल तुम हीरो के साथ सोई थी ?

बीटरिस—नहीं नहीं। कल तो नहीं। लेकिन साल भर से रोज़ साथ सोती रही हूँ।

लियोनेटो—ठीक ! ठीक ! क्या दो राजा झूठ बोलेंगे। क्या क्लौडियस झूठ बोल सकता है ? वह तो इसे प्राणों से भी

अधिक चाहता था ! इसको यहाँ से ले जाओ और मर जाने दो ।

पुरोहित, जो अब तक चुपका खड़ा यह भयानक दृश्य देख रहा था, एक बुद्धिमान् मनुष्य था। उसने बहुत से आदमियों की आँखें देखी थीं, वह सच और झूठ की पहचान कर सकता था। वह कहने लगा—

"कुछ मेरी भी सुनो। मैं बड़ी देर से चुपका खड़ा हूँ और हीरो के मुँह की ओर ताक रहा हूँ। मैंने देखा है कि पहले तो लज्जा के मारे इसका मुँह लाल हो गया, परन्तु फिर थोड़ी देर में वह सब लाली जाती रही, जिससे प्रकट होता है कि यह लड़की निर्दोष है। इसकी आँखों में एक प्रकार की चमक है, जो अपराधियों की आँखों में नहीं होती। मुझे तो यही जान पड़ता है कि कुछ धोखा हो गया है। अगर ऐसा न हो तो कह देना कि मैंने धूप में बाल श्वेत किये हैं।"

लियोनेटो—पुरोहितजी! यह नहीं हो सकता। भला झूठ बोलकर एक अपराध की जगह दो अपराध करना कौन सी अच्छी बात है।

पुरोहित—देवि! वह कौन मनुष्य है जिसके साथ रहने का तुम पर दोष लगाया गया है?

हीरो—यह तो वे ही जान सकते हैं जो दोष लगाते हैं। मुझे क्या मालूम? अगर मैंने किसी पुरुष के दर्शन भी किये हों तो ईश्वर मुझ पर दया न करे। पिताजी! अगर

आपको सिद्ध हो जाय कि कल रात को मैं किसी पुरुष से बात करती थी तो कुत्तों की मौत मार डालना !

पुरोहित—इन राजा लोगों का स्वभाव कैसा है ?

बैनीडिक—दो तो बड़े धर्मात्मा हैं। तीसरा जौन, जो जारज है, दुष्ट है और दुष्टताएँ किया करता है।

लियोनेटो—मेरी समझ मे कुछ नहीं आता। अगर वह सच कहते हैं तो इन्हीं हाथों से मैं इसके टुकड़े-टुकड़े किये डालता हूँ। यदि उनका कहना झूठ है तो अभी मेरी भुजाओं में बल है, मैं उनको इसका मज़ा चखा दूँगा।

पुरोहित—अच्छा मेरी बात मान लीजिए। वे सब देख गये हैं कि हीरो मर गई। अब यही प्रसिद्ध कर दो और समाधि बनवा दो।

लियोनेटो—इससे क्या होगा ?

पुरोहित—इससे यह होगा कि जो क्रोध करते हैं वे तरस खायँगे। इससे कुछ लाभ होगा। लोग शोक मनावेंगे और अपने किये पर पछतायँगे। जब क्लौडियस सुनेगा कि हीरो मर गई तो उसका क्रोध शान्त हो जायगा और उसे अपनी प्यारी की फिर याद आवेगी। इससे बहुत बड़ा लाभ होगा। परन्तु यदि मेरा यह सब कथन मिथ्या हुआ तो कम से कम एक बात तो हो ही जायगी, अर्थात् हीरो बदनामी से बच जायगी। अगर तुम चाहो तो उसको किसी मन्दिर में रहने दो।

अधिक चाहता था! इसको यहाँ से ले जाओ और मर जाने दो।

पुरोहित, जो अब तक चुपका खड़ा यह भयानक दृश्य देख रहा था, एक बुद्धिमान् मनुष्य था। उसने बहुत से आदमियों की आँखें देखी थीं, वह सच और झूठ की पहचान कर सकता था। वह कहने लगा—

"कुछ मेरी भी सुनो। मैं बड़ी देर से चुपका खड़ा हूँ और हीरो के मुँह की ओर ताक रहा हूँ। मैंने देखा है कि पहले तो लज्जा के मारे इसका मुँह लाल हो गया, परन्तु फिर थोड़ी देर में वह सब लाली जाती रही, जिससे प्रकट होता है कि यह लड़की निर्दोष है। इसकी आँखों में एक प्रकार की चमक है, जो अपराधियों की आँखों में नहीं होती। मुझे तो यही जान पड़ता है कि कुछ धोखा हो गया है। अगर ऐसा न हो तो कह देना कि मैंने धूप में बाल श्वेत किये हैं।"

लियोनेटो—पुरोहितजी! यह नहीं हो सकता। भला झूठ बोलकर एक अपराध की जगह दो अपराध करना कौन सी अच्छी बात है।

पुरोहित—देवि! वह कौन मनुष्य है जिसके साथ रहने का तुम पर दोष लगाया गया है?

हीरो—यह तो वे ही जान सकते हैं जो दोष लगाते हैं। मुझे क्या मालूम? अगर मैंने किसी पुरुष के दर्शन भी किये हों तो ईश्वर मुझ पर दया न करे। पिताजी! अगर

आपको सिद्ध हो जाय कि कल रात को मैं किसी पुरुष से बात करती थी तो कुत्तों की मौत मार डालना !

पुरोहित—इन राजा लोगों का स्वभाव कैसा है ?

बैनीडिक—दो तो बड़े धर्मात्मा हैं। तीसरा जौन, जो जारज है, दुष्ट है और दुष्टताएँ किया करता है।

लियोनेटो—मेरी समझ मे कुछ नहीं आता। अगर वह सच कहते हैं तो इन्हीं हाथों से मैं इसके टुकड़े-टुकड़े किये डालता हूँ। यदि उनका कहना झूठ है तो अभी मेरी भुजाओं में बल है, मैं उनको इसका मज़ा चखा दूँगा।

पुरोहित—अच्छा मेरी बात मान लीजिए। वे सब देख गये हैं कि हीरो मर गई। अब यही प्रसिद्ध कर दो और समाधि बनवा दो।

लियोनेटो—इससे क्या होगा ?

पुरोहित—इससे यह होगा कि जो क्रोध करते हैं वे तरस खायँगे। इससे कुछ लाभ होगा। लोग शोक मनावेंगे और अपने किये पर पछतायँगे। जब क्लौडियस सुनेगा कि हीरो मर गई तो उसका क्रोध शान्त हो जायगा और उसे अपनी प्यारी की फिर याद आवेगी। इससे बहुत बड़ा लाभ होगा। परन्तु यदि मेरा यह सब कथन मिथ्या हुआ तो कम से कम एक बात तो हो ही जायगी, अर्थात् हीरो बदनामी से बच जायगी। अगर तुम चाहो तो उसको किसी मन्दिर में रहने दो।

वैनीडिक के समझाने से लियोनेटो ने यह बात मान ली और हीरो को छिपा लिया। वह कहने लगा—

"डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत है।"

अब बीटरिस और बैनीडिक वहाँ रह गये। वैनीडिक ने कहा—

"प्यारी बीटरिस! क्या तुम उस समय से रोती ही हो?"

बीटरिस—अभी तो और रोऊँगी।

वैनीडिक—मैं समझता हूँ कि तुम्हारी बहन पर झूठा दोष लगाया गया है।

बीटरिस—मैं उस पुरुष को कितना चाहूँगी जो इसको झूठा सिद्ध कर दे।

बैनीडिक—क्या ऐसा करने के लिए कोई उपाय है? मैं तुमको सबसे अधिक चाहता हूँ।

बीटरिस—मैं भी कहती हूँ कि तुमसे ज्यादा और कोई मुझे प्यारा नहीं है। चाहे विश्वास न करो, मैं झूठ नहीं बोलती। मुझे अपनी बहन का बड़ा दुःख है।

बैनीडिक—तलवार की सौगन्ध! तुम मुझे बड़ी प्यारी हो। जो कहो सो कर सकता हूँ।

बीटरिस—क्लौडियस के प्राण ले लो।

बैनीडिक का क्लौडियस बड़ा मित्र था, इसलिए उसने उत्तर दिया—

"कदापि नहीं। कदापि नहीं।"

बीटरिस—क्या क्लौडियस दुष्ट नहीं है जिसने मेरी बहन को बदनाम किया? आज मैं मर्द होती तो क्या कुछ न करती।

बैनीडिक—बीटरिस, सुनो, सुनो!

परन्तु बीटरिस ने एक न सुनी और यही कहती रही—

"क्लौडियस दुष्ट है। बिचारी निर्दोष और सुशील स्त्री हीरो को दोष लगाता है। उसका अपमान करता है। हे ईश्वर! तू आज मुझे पुरुष बना दे कि मैं क्लौडियस से इसका बदला ले लूँ। या किसी ऐसे मित्र को भेज दे जो मेरे हित के लिए यह काम करे। क्योंकि आजकल वीरों की वीरता सभ्यता के मारे नष्ट हो गई है और वे दुष्टों को दण्ड देना नहीं चाहते। अच्छा, मैं अगर पुरुष नहीं हो सकती तो दुःख के मारे मर सकती हूँ।"

बैनीडिक—इस हाथ की सौगन्ध, तुम मुझे प्यारी हो।

बीटरिस—तो इसी हाथ से मेरी सहायता करो।

बैनीडिक—क्या तुमको निश्चय है कि यह क्लौडियस का दोष है?

बीटरिस—हाँ!

बैनीडिक—अच्छा लो, जाता हूँ। आज वह अपने किये का फल पावेगा!

इधर तो बीटरिस के कहने से बैनीडिक ने क्लौडियस को युद्ध करने के लिए बुलाया, उधर वृद्ध लियोनेटो ने भी पीटरो

और क्लौडियस दोनों से युद्ध की इच्छा की *। क्लौडियस ने लियोनेटो को तो वृद्ध पुरुष समझकर टाल दिया, परन्तु वह बैनीडिक से युद्ध करने पर राज़ी हो गया और यदि ईश्वर की सहायता न आ जाती तो अवश्य एक न एक मारा जाता !

जब यहाँ युद्ध की तैयारियाँ हो रही थीं उसी समय एक मजिस्ट्रेट ब्रोकियो को पकड़े हुए लाया। उसने ब्रोकियो को किसी अन्य मनुष्य से वे सब बातें कहते सुना था जो उसके और डौन जौन के बीच मे हुई थीं और जिनके कारण हीरो और उसके सम्बन्धियों की यह गति हुई।

ब्रोकियो ने क्लौडियस के सामने पीडरो से वर्णन किया कि रात के समय जो स्त्री खिड़की मे उससे बाते कर रही थी वह हीरो की सहचरी मारगरेट थी जो हीरो के कपड़े पहने हुए थी। अब तो हीरो के विषय मे क्लौडियस और पीडरो को कुछ भी शङ्का नहीं रही। यदि कुछ रही होगी तो वह इस वजह से दूर हो गई कि ब्रोकियो के पकड़े जाने की ख़बर सुनते ही डौन जौन वहाँ से भाग गया, जिससे सब लोग जान गये कि जौन का इस दुष्टता मे अवश्य कुछ मेल है।

जब क्लौडियस को मालूम हुआ कि मैंने अपनी प्यारी के अकारण प्राण ले लिये तो उसे बड़ा दुःख हुआ। वह हीरो की याद

---

* यूरोप में पहले यह नियम था कि यदि किसी बात में दो पुरुषों को सन्देह होता था तो उसका लड़ के निश्चय कर लेते थे, जो जीतता था उसी की बात सच्ची समझी जाती थी।

करके चिल्लाने लगा। वह कहने लगा कि जब मैं ओकियो की बातें सुन रहा था तो मेरे शरीर मे विष जैसा फैलता जाता था।

अब क्लौडियस ने लियोनेटो के पैरों पर सिर रखकर क्षमा चाही और कहा कि आप जो कुछ दण्ड मुझे देना चाहे उसे सहन करने के लिए मैं तैयार हूँ। क्योंकि मैंने अपनी प्यारी पर दोषारोपण करके बड़ा भारी अपराध किया है।

लियोनेटो ने कहा कि मैं तुम्हारे लिए एक प्रायश्चित्त बतलाता हूँ, उसे करना स्वीकार करो। हीरो की एक चचेरी बहन और है, जो रूप मे बिलकुल हीरो के समान है। उससे तुम विवाह कर लो। क्लौडियस ने कहा कि "मैं तैयार हूँ, चाहे वह काली-कलूटी ही क्यों न हो।"

परन्तु उसको उस रात बड़ा रञ्ज रहा और वह रात भर हीरो की कल्पित समाधि के पास जाकर रोता रहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल क्लौडियस अपने इष्ट मित्रो-सहित विवाह के लिए धर्ममन्दिर मे गया और लियोनेटो ने एक लड़की को लाकर, जिसके मुँह पर घूँघट पड़ा हुआ था, कहा—"लो यह लड़की हीरो की चचेरी बहन है।"

क्लौडियस ने बिना देखे हुए उस लडकी का हाथ पकड़कर कहा—"अगर तुम चाहो तो मैं तुमको अपनी स्त्री बनाना अङ्गीकार करता हूँ।"

लड़की ने घूँघट उतारकर कहा—"मैं तो जीवन भर तुम्हारी ही स्त्री थी।"

अब तो सबने पहचान लिया कि यह लड़की जिसका क्लौडियस से विवाह होनेवाला था, हीरो की चचेरी बहन नहीं किन्तु हीरो ही थी। क्लौडियस ख़ुशी के मारे फूला न समाया और पीडरो ने कहा—

"अरे यह क्या हीरो नहीं है? वही हीरो जो मर गई थी।"

लियोनेटो ने उत्तर दिया—

"हीरो तो उसी समय तक मरी थी जब तक उसका अपयश जीवित था।"

पुरोहित ने कहा कि विवाह-संस्कार के बाद हम आपको ये सब बातें समझा देंगे; और संस्कार की कार्य्यवाही आरम्भ की। परन्तु उसी समय वैनीडिक और बीटरिस दोनों ने अपने विवाह की इच्छा प्रकट की। लियोनेटो, क्लौडियस आदि ने उनको अब बतला दिया कि किस प्रकार धोखा देकर वैनीडिक और बीटरिस का आपस में स्नेह कराया गया था। उस समय उनको ज्ञात हुआ कि एक दूसरे के प्रेम की कथा केवल जी के लुभाने के लिए थी। परन्तु अब वे दोनों विवाह का इरादा कर चुके थे। इसलिए इस सम्बन्ध पर अप्रसन्न न हुए और क्लौडियस का हीरो से तथा वैनीडिक का बीटरिस से विवाह कर दिया गया।

उसी समय एक दूत ने आकर ख़बर दी कि दुष्ट डौन जौन मैसीना से भागते हुए पकड़ा गया। इसका सबसे उचित दण्ड यही समझा गया कि वह विवाह के आनन्दों को देखकर डाह की अग्नि में भस्म हो।

वही भला जिसका अन्त भला

(ALL'S WELL THAT ENDS WELL)

रोसिलन देश में एक राजा था जिसकी मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र ब्रतराम उसकी गद्दी पर बैठा। फ्रान्स के महाराज को ब्रतराम के पिता से बड़ा स्नेह था। इसलिए जब उसने इस मृत्यु की ख़बर पाई तो उसी समय ब्रतराम को पेरिस की राजसभा में उपस्थित होने की आज्ञा दी जिससे वह अपने प्रिय मित्र के पुत्र के साथ दया का व्यवहार करके उसको उत्साहित कर सके।

ब्रतराम अपनी विधवा माता के साथ रोसिलन में था, जब कि फ्रान्स की राजसभा से लेफू नामक एक सभ्य उसे महाराज के पास ले चलने के लिए आया। फ्रान्स में उस समय राजतन्त्र राज्य था और सभा का निमन्त्रण आज्ञा के रूप में था, जिसका उल्लङ्घन करना किसी मनुष्य के अधिकार में न था, चाहे वह कितना ही प्रतिष्ठित क्यों न हो। इसलिए यद्यपि ब्रतराम की माता को अपने पुत्र के वियोग से बड़ा दु:ख हुआ, क्योंकि वह अभी विधवा हुई थी, परन्तु राजनिमन्त्रण को अस्वीकार करना उसकी शक्ति के बाहर था।

इसलिए लेफू के आते ही उसने लड़के के भेजने की तैयारियाँ कर दीं। लेफू ने रानी को बहुत ढारस बँधाया और कहा कि फ़ान्स-नरेश बड़े दयालु हैं, वे आपके साथ पतिवत् व्यवहार करेंगे और आपके पुत्र के साथ पितृवत्। लेफू ने यह भी कहा कि महाराज थोड़े दिनों से बीमार हैं और वैद्यों ने कह दिया है कि रोग असाध्य है। रानी को महाराज के रोग की बात मालूम करके बड़ा खेद हुआ और उसने कहा—

"शोक है कि इस समय जिरार्ड-डी-नार्वन जीवित नहीं है, नहीं तो वह अवश्य महाराज को नीरोग कर देता। क्योंकि वह एक बड़ा वैद्य था और भयानक से भयानक रोगों की चिकित्सा कर सकता था। अगर आज जिरार्ड जीवित होता तो महाराज के रोग की अवश्य मृत्यु हो जाती।"

लेफू—हाँ महारानी! महाराज के मुँह से भी मैंने उसकी बड़ी प्रशंसा सुनी है। उन्होंने उसको बहुत याद किया था। अगर मौत की कोई दवा हो सकती तो जिरार्ड अवश्य आज जीवित होता!

रानी के पास एक लड़की थी, जिसका नाम हैलीना था। लेफू ने हैलीना की ओर देखकर पूछा "क्या यह जिरार्ड-डी-नार्वन की कन्या है?"

रानी—जी हाँ! यह अपने बाप की इकलौती बेटी है। इसका पिता मरते समय इसे मेरी देखरेख में छोड़ गया था। यह एक सुशील और सुशिक्षित लड़की है,

और मुझे आशा है कि यह एक अच्छी स्त्री बनेगी। इसका बाप बड़ा योग्य पुरुष था और उसी के गुण और स्वभाव इसमें भी हैं।

हैलीना इस समय रो रही थी। इसलिए रानी ने उसे समझाया और कहा कि अपने मृत पिता के लिए इतना शोक करना उचित नहीं।

अब व्रतराम अपनी माता के पास से चल दिया। रानी ने अपने पुत्र के वियोग के समय बड़ा अश्रुपात किया और बहुत कुछ अशीश देकर लेफ़ू से प्रार्थना की—"महाराज! आप इसको उपदेश करते रहना, क्योंकि अभी यह अशिक्षित है और राजसभा के योग्य नहीं है।"

चलते समय व्रतराम हैलीना से भी मिला और कहा कि ईश्वर तुमको ख़ुश रक्खे! मेरी माताजी की सेवा किया करना और सर्वदा उसका मान करना।

हैलीना का छिपे-छिपे बहुत दिनों से व्रतराम से प्रेम था, जिसकी इस राजकुमार को ख़बर तक न थी। इसलिए इस समय जो अश्रुपात वह कर रही थी वह अपने मृत पिता के लिए नहीं था, किन्तु व्रतराम के लिए था, जिसका अब उससे वियोग हो रहा था। यद्यपि हैलीना अपने पिता पर बड़ी भक्ति करती थी, परन्तु इस समय उसे अपने मृत पिता का किञ्चित् भी ध्यान नहीं रहा था, वह तो अपने प्यारे के वियोग में शोकातुर हो रही थी।

यद्यपि हैलीना बहुत दिनों से ब्रतराम के प्रेम मे आसक्त थी, परन्तु वह जानती थी कि ब्रतराम रोसिलन का राजा है और पेरिस के एक कुलीन तथा प्राचीन कुल मे उत्पन्न हुआ है। उसके सब पूर्वज बड़े प्रतिष्ठित और माननीय पुरुष थे। परन्तु मैं एक साधारण वंश की लड़की हूँ। मेरा पिता कोई प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध पुरुष नहीं था। ऐसा खयाल करके वह समझती थी कि हम दोनों का किसी प्रकार का सम्बन्ध होना सम्भव नहीं है। इसलिए यद्यपि उसे विवाह की आशा न थी किन्तु वह अपने प्यारे की ओर प्रेम की दृष्टि से देखा करती, और कहा करती थी कि ब्रतराम मुझसे इतना ऊँचा है कि उससे स्नेह करना किसी ऊँचे चमकते हुए ग्रह से प्रेम करने के समान है, जिसकी प्राप्ति की कुछ भी आशा नहीं।

ब्रतराम के वियोग से उसका हृदय बड़ा व्याकुल हुआ, क्योंकि यद्यपि उसे विवाह की आशा न भी हो, तथापि एक शान्ति उसके लिए बहुत काफ़ी अर्थात् वह नित्य प्रति सोते-जागते, चलते-फिरते, अपने प्यारे के दर्शन कर सकती थी। वह बैठ जाती और उसके मनोहर मुँह की तसवीर अपने हृदयरूपी पट पर इस प्रकार खींच लेती कि उसकी एक एक रेखा उसकी स्मृति पर अंकित हो गई थी।

हैलीना के पिता जिरार्ड-डी-नार्बन ने मरते समय अपनी बेटी के लिए सिवा थोड़ी सी ओषधियों के और कुछ नहीं छोड़ा था। ये ओषधियाँ उसने अपने आयु भर के परिश्रम

से इकट्ठी की थीं और इनसे भयानक से भयानक रोगों की चिकित्सा हो सकती थी। इनमे से एक ओषधि उसी रोग की थी जिससे लेफ़ू के कथनानुसार फ़ान्स-नरेश पीड़ित हो रहा था। जिस समय हैलीना ने महाराज के रोग की कथा सुनी, उस समय इस साधारण रमणी के हृदय मे उत्साह उत्पन्न हो गया। उसने इरादा किया कि पेरिस चलकर राजा की चिकित्सा करनी चाहिए। यद्यपि हैलीना के पास बड़ी अच्छी-अच्छी ओषधियाँ थीं, परन्तु एक बड़ा भय यह था कि जब बड़े-बड़े वैद्यों ने राजा के रोग को असाध्य कह कर छोड़ दिया है तब राजा इस अशिक्षित लड़की की दवाओं पर कब विश्वास करेगा। लेकिन हैलीना को इन दवाओं पर अपने पिता से भी अधिक विश्वास था और वह समझती थी कि यदि इन ओषधियों से राजा अच्छा हो जाय तो मैं अपने प्यारे व्रतराम की स्त्री हो सकूँगी।

व्रतराम के जाने के पश्चात् उसकी माता को एक नौकर द्वारा ज्ञात हुआ कि हैलीना चुपके चुपके एक कोने मे बैठी हुई ऐसी बातें कर रही थी जिनसे प्रकट होता था कि उसको राजा (व्रतराम) से प्रेम है, और उसका निश्चय पेरिस को जाने का है। रानी ने नौकर से कह दिया कि हैलीना को बुला लाओ।

हैलीना—महारानी! क्या आज्ञा है?

रानी—हैलीना! तुम जानती हो कि मैं तुम्हारी माता के समान हूँ।

हैलीना—आप मेरी पूज्य स्वामिनी हैं।

रानी—नहीं नहीं। माता! माता क्यों नहीं? जब मैंने 'माता' शब्द कहा तो तुमको इतना रंज हुआ मानों तुमने साँप देखा है। 'माता' शब्द में ऐसी कौन सी बात है जो तुम इतना चौंकती हो! मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हारी माँ हूँ और उन्हीं के समान गिनती हूँ जिन्होंने मेरे उदर से जन्म लिया है। तुम मेरी लड़की हो।

हैलीना—मैं नहीं हूँ।

रानी—मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हारी माता हूँ।

हैलीना—रानी! क्षमा कीजिए, रोसिलन का राजा मेरा भाई नहीं हो सकता! मैं एक साधारण स्त्री हूँ। वह प्रतिष्ठित पुरुष है। मेरा वंश नीच है। उसके पूर्वज प्रसिद्ध थे। वह मेरा स्वामी है। और मैं उसकी एक दासी हूँ और मरणपर्यन्त रहूँगी। वह मेरा भाई नहीं हो सकता!

रानी—और मैं तुम्हारी माता भी नहीं हो सकती?

हैलीना—रानी! तुम मेरी* माता हो। मेरी बड़ी अभिलाषा है कि तुम मेरी माता हो जाओ। लेकिन मेरा स्वामी मेरा भाई न हो। आप हम दोनों की मा हो जाओ, पर मैं उसकी बहन न होऊँ।

रानी—हाँ हैलीना! तुम मेरी बेटी या पतोहू हो सकती हो। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। तुम्हारा यही तात्पर्य जान

---

* अंगरेज़ी में सास को भी माता कहते हैं और बहू को बेटी।

पड़ता है। मैं अब तुम्हारी बात समझ गई हूँ। अब मैं जान गई कि तुम क्यों अश्रुपात कर रही हो। तुम मेरे बेटे को चाहती हो! अब स्पष्ट कह दो कि क्या यह बात ठीक है? देखो, तुम्हारे मुँह तथा आँखों से यही प्रकट होता है।

हैलीना—महारानी! क्षमा करो।

रानी—क्या तुम मेरे बेटे को चाहती हो?

हैलीना—क्या श्रीमतीजी उनको नहीं चाहतीं?

रानी—बात मत बनाओ। मैं चाहती हूँ। परन्तु मेरा चाहना और बात है। ठीक-ठीक कहो, क्या तुम उसे चाहती हो?

हैलीना—तो महारानी! मैं ईश्वर और आप दोनों की साक्षी देकर कहती हूँ कि मैं आपके पुत्र से प्रेम करती हूँ। मैं एक दरिद्र वंश की हूँ। परन्तु मेरा पिता सच्चा आदमी था। ऐसा ही सच्चा मेरा प्रेम है। आप नाराज़ न हूजिए। आपके पुत्र की, इस बात से कुछ हानि नहीं कि मैं उससे स्नेह करती हूँ। मैं न तो उसके पीछे पड़ती हूँ और न उससे विवाह की प्रार्थना करूँगी, जब तक उसको अधिकारिणी न बनूँ। मैं जानती हूँ कि मेरा यह प्रेम व्यर्थ है। मैं भारतवासियों के समान उस सूर्य की उपासना करती हूँ जो मुझको देखता तो है परन्तु यह नहीं जानता कि मैं उपासिका हूँ। रानीजी कृपा कीजिए। इस मेरे प्रेम के कारण मुझसे अप्रसन्न न हूजिए।

रानी—क्या तुम्हारा पेरिस जाने का विचार नहीं है ?

हैलीना—है।

रानी—क्यों ?

हैलीना—मैं सच-सच कहूँगी। आपको मालूम है कि मेरे पिताजी मुझे कुछ औषधियाँ बतला गये थे। उनमे राजा के रोग की भी दवा है।

रानी—क्या पेरिस जाने का यही प्रयोजन था ?

हैलीना—आपके पुत्र के कारण मैंने यह विचार किया, नहीं तो पेरिस, फ्रांस-नरेश या दवाओं का मुझे स्मरण भी नहीं था।

रानी—हैलीना! तुम समझती हो कि राजा तुम्हारी दवा करेगा। क्योंकि वैद्यों ने कह दिया है कि यह रोग असाध्य है।

हैलीना—मेरा आत्मा कहता है कि मैं अपने परिश्रम से अवश्य साफल्य प्राप्त करूँगी।

रानी—क्या तुमको विश्वास है ?

हैलीना—हाँ हाँ! मैं तो यही समझती हूँ।

रानी—अच्छा, मैं तुमको आज्ञा देती हूँ। मार्ग-व्यय के लिए धन ले जाओ। नौकर-चाकर साथ ले जाओ। मैं रोसिलन मे रहकर तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँगी! तुम कल चली जाओ। मैं तुम्हारी यथाशक्ति सहायता करूँगी!

हैलीना पेरिस में जा पहुँची। उसका लेफ़ू से परिचय हो चुका था, इसलिए उसी की सहायता से राजा के भी दर्शन हो गये। राजा ने पूछा—

"लड़की! क्या तुम मेरे पास आई हो?"

हैलीना—श्रीमहाराज! मेरे पिताजी का नाम जिराड-डी-नार्बन था। वे अपने काम में बड़े दक्ष थे।

राजा—मैं उसे जानता हूँ।

हैलीना—बस बस, अब श्रीमान् के सम्मुख उनकी प्रशंसा करना अनावश्यक है। मरते समय उन्होंने मुझे बहुत सी ओषधियाँ बताई थीं। उनमें से एक ऐसी है जिसके लिए वह कह गये हैं कि इसे आँख की पुतलियों से भी अधिक रक्षित रखना। मैंने सुना है कि आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। इसलिए आपकी चिकित्सा करने आई हूँ।

राजा—हम तुमको धन्यवाद देते हैं। परन्तु जब हमारे बड़े से बड़े वैद्यों ने जवाब दे दिया और हमारे रोग को असाध्य ठहरा दिया तब हमको ऐसा अविश्वासी नहीं होना चाहिए कि असाध्य रोग की इधर-उधर दवा करते फिरें।

हैलीना—मेरा जो कर्तव्य था मैंने किया, अब मैं श्रीमान् को कष्ट नहीं दूँगी।

राजा—मैं तुमको उसी प्रकार धन्यवाद देता हूँ जैसे एक मरता हुआ मनुष्य उन लोगों को देता है जो उसे जीते

रहने के लिए आशिष देते हैं। मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुम मुझे चङ्गा नहीं कर सकती हो।

हैलीना—इस बात की जाँच करने में तो कोई हानि नहीं है। ईश्वर बहुधा छोटे आदमियों से बड़े काम कराता है।

राजा—अच्छा जाओ! मैं तुम्हारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ।

हैलीना—महाराज! मैं कोई धोखेबाज नहीं हूँ। आप मेरा विश्वास न कीजिए, किन्तु ईश्वर पर विश्वास कीजिए। मुझे आशा है कि मैं अवश्य आपको अच्छा कर दूँगी।

राजा—क्या तुमको इतना विश्वास है? अच्छा, कितने दिन में अच्छा करोगी?

हैलीना—जितनी देर में सूर्यदेव के घोड़े दो बार आकाश में अपना दैनिक वृत्त बना सकें और दो बार प्रकाश के दीपक को समुद्र में बुझा सकें। या जितनी देर में जहाज़वाला २४ बार बालू को शीशे में बदल कर यह कह सके कि इतने मिनिट गुजर गये!

राजा—अगर तेरी दवा ने काम न किया तो क्या दण्ड?

हैलीना—श्रीमान् मुझको कुत्तों की मौत मरवा डालें! परन्तु यदि मैंने अच्छा कर दिया तो आप मुझे क्या इनाम देंगे?

राजा—बोल, क्या चाहती है?

हैलीना—क्या आप उसे पूरा करेंगे?

राजा—अवश्य अवश्य! मुझे अपने राज की शपथ है!

हैलीना—जिस मनुष्य से मैं विवाह करना चाहूँ आप उसी को मुझे ग्रहण करने की आज्ञा दें। मैं आपके राजवंश में से किसीसे विवाह की प्रार्थिनी न हूँगी। परन्तु ऐसे मनुष्य को माँगूँगी जिसको दे देना आपके अधिकार में है।

राजा ने स्वीकार कर लिया और हैलीना को आशातीत सफलता प्राप्त हुई। अभी दो दिन भी न होने पाये थे कि राजा का रोग बिलकुल जाता रहा और वह चंगा हो गया। अब राजा ने एक बड़ी सभा की जिसमें अपने राज्य के सब योग्य युवक पुरुषों को बुलाया और हैलीना को आज्ञा दी कि इनमें से जिस किसीको चाहो अपना पति बना लो। हैलीना ने थोड़ी ही देर में व्रतराम की ओर संकेत करके कहा—

"स्वामिन्! मैं यह तो कहने के योग्य नहीं हूँ कि आप मेरे हैं। हाँ, मैं यह कह सकती हूँ कि आयु पर्य्यन्त मैं आप की आज्ञाकारिणी रहूँगी।"

राजा—हाँ व्रतराम! अब यह तेरी स्त्री है, तू इसको अङ्गीकार कर।

व्रतराम—मेरी स्त्री! महाराज! मेरी प्रार्थना है कि इस काम में आप मुझे अपनी आँखों से काम लेने दें।

राजा—क्या तुझे नहीं मालूम कि इसने मेरे साथ क्या भलाई की है?

व्रतराम—हाँ, महाराज! पर मुझे यह नहीं मालूम कि इसके साथ विवाह क्यों करूँ।

राजा—क्या तुझे मालूम है कि इसने मुझे मृत्यु से बचाया है?

अलराम—परन्तु इससे यह बात सिद्ध नहीं होती कि मेरा कुल नष्ट हो जाय। मैं जानता हूँ कि इसका बाप एक तुच्छ आदमी था। नीच कुल की कन्या से मेरा क्यों विवाह कराते हैं? आप मुझसे घृणा कर सकते हैं, परन्तु घृणा से अपमान अच्छा नहीं है।

राजा—ऐसा मत कहो। गुणी मनुष्य नीच कुल में उत्पन्न हुआ भी गुणी ही है। यदि एक मनुष्य कुलीन हो परन्तु गुणी न हो तो उसका कुलीन होना व्यर्थ है। यह रूपवती और बुद्धिमती है। यही गुण आदमी को प्रतिष्ठित करते हैं। यदि तू इस रमणी को स्वीकार करे तो इसमें जो त्रुटियाँ हैं उनको मैं पूरा कर सकता हूँ। रूप और बुद्धि तो इसमें है ही। रहा धन और मान। यह मैं दूँगा!

अलराम—मुझे इससे स्नेह नहीं है और न हो सकता है।

राजा—(हैलेना से) यदि तुम किसी अन्य को चुनना चाहो तो शायद तुम को कष्ट होगा?

हैलेना—महाराज! मुझे हर्ष है कि आप अच्छे हो गये। शेष बात को जाने दीजिए।

राजा—नहीं नहीं! यहाँ मेरी प्रतिज्ञा भङ्ग हो रही है। इसलिए मैं अपनी शक्ति से काम लूँगा। हे अभिमानी लड़के! तुझे इसको ग्रहण करना पड़ेगा! अपनी घृणा को

रोक और मेरी आज्ञा का पालन कर। अगर ऐसा नहीं करेगा तो मैं तुझे अपनी दृष्टि से गिरा दूँगा। और मैं तुझसे इस बात का बदला लूँगा!

व्रतराम—महाराज! क्षमा कीजिए, मैं अब आपकी आज्ञा का पालन करता हूँ। जिस स्त्री से मैं घृणा करता था उसी की, मैं देखता हूँ कि, महाराज प्रशंसा करते हैं। इससे अधिक कुलीनता क्या हो सकती है?

राजा—अच्छा, इसे ग्रहण कर और मैं तुझे तेरे राज्य के बराबर देश और दूँगा।

व्रतराम—मैं स्वीकार करता हूँ।

इस प्रकार उसी दिन राजा की आज्ञा से व्रतराम और हैलीना का विवाह हो गया। परन्तु व्रतराम को हैलीना से कुछ भी प्रेम न था। राजा उसे विवाह करने पर तो मजबूर कर सकता था, परन्तु प्रेम करने में मजबूर करना असम्भव था।

विवाह के थोड़े दिनों पीछे ही व्रतराम ने हैलीना-द्वारा पेरिस से जाने की आज्ञा चाही। जब आज्ञा मिल गई तब व्रतराम ने उससे कहा—

"मैं इस विवाह के लिए तैयार नहीं था, इसलिए मेरा चित्त बड़ा विक्षिप्त हो गया है। अगर मैं इस समय कुछ करना चाहूँ तो आश्चर्य न करना।"

हैलीना बेचारी क्या आश्चर्य करती! उसे यह जानकर बड़ा रञ्ज हुआ कि व्रतराम उसे त्यागकर विदेश-यात्रा करना

चाहता है। अतराम ने हैलीना को हुक्म दिया कि मेरी माता के पास चली जाओ और उनको यह पत्र दे देना। मैं अब कभी तुमसे न मिलूँगा। हैलीना ने विनयपूर्वक उत्तर दिया—महाराज, मैं इसका क्या उत्तर दे सकती हूँ। मैं तो आपकी आज्ञाकारिणी दासी हूँ, और सदा ऐसी ही रहूँगी।

अतराम को हैलीना के गिड़गिड़ाने पर कुछ भी तरस न आया और बिना किसी शिष्टाचार के वह वहाँ से चला गया।

हैलीना बेचारी अब अतराम की माता के पास चली गई। उसने अपना कार्य्य सिद्ध कर लिया। राजा को प्राण बचा तो, अपने प्यारे अतराम से विवाह भी कर लिया, परन्तु अब वह उसी दुःख की मारी फिर निराश होकर अपनी सास के पास लौट आई। घर पहुँचते ही उसे अतराम का ऐसा पत्र मिला जिसको पढ़कर उसके हृदय के दो टूक हो गये। यह पत्र उसकी मा के लिए था जिसमें लिखा था—

'मैंने तुम्हारे पास तुम्हारी पतोहू को भेज दिया है। इसने राजा को चङ्गा और मुझे नष्ट कर दिया। मैंने उसके साथ विवाह तो कर लिया परन्तु पतिवत् व्यवहार नहीं किया और मैंने इस "नहीं" को अनन्त बनाने की शपथ की है। आपको मालूम होगा कि मैं भाग गया, इसलिए मैं पहले ही से सूचना दिये देता हूँ। यदि संसार में जगह रहेगी तो मैं इससे दूर रहूँगा। प्रणाम के पश्चात्

आपका अभागा पुत्र—अतराम।

एक पत्र हैलीना के लिए था जिसका तात्पर्य यह था—

"यदि तुझे मेरे हाथ की अँगूठी मिल जाय, जिसे मैं कभी नहीं उतारूँगा, तो उस समय तू मुझे अपना पति कह सकती है परन्तु यह समय कभी नही आने का।"

इसके आगे लिखा था—

"जब तक मेरी स्त्री नहीं, फ़्रान्स मे मेरा कुछ भी नहीं।"

व्रतराम की माता ने हैलीना को आदर के साथ लिया और बडे प्यार से रक्खा परन्तु हैलीना को शोक के मारे कल न पड़ी। उसकी सास ने बहुत कुछ समझाया कि "अब मेरा लड़का तो चला गया, तुम्हीं लड़के के समान हो। तुम ऐसी गुणवती हो कि ऐसे बीस लड़के तुम्हारी ख़ुशामद करें।" परन्तु हैलीना को सन्तोप न आया। वह टकटकी लगाकर पत्र की ओर देखती और कहती "हाय! मेरा स्वामी चला गया। सदा के लिए चला गया।" फिर वह कहने लगी "हाय! मेरा स्वामी केवल मेरे कारण देश-विदेश मारा-मारा फिरता है। ऐसी दशा में मुझे धिक्कार है अगर मैं यहाँ रहूँ। इसलिए अब मैं यहाँ से चली जाऊँगी।"

दूसरे दिन प्रातःकाल रोसिलन की रानी जब उठी तब उसने अपनी पतोहू को घर मे न पाया। थोड़ी देर पीछे उसे एक पत्र मिला जिसमें लिखा हुआ था—"मेरे इतनी जल्दी चले जाने का कारण यह है कि मुझे यह जानकर बड़ा शोक हुआ है कि मेरा पति मेरे कारण घर नहीं आ सकता। इन

अपराध के प्रायश्चित्त के लिए मैं सेण्ट-ग्राण्ड के मन्दिर में यात्रा करने जा रही हूँ। आप अपने पुत्र को लिख दीजिए कि जिस स्त्री से तुम इतनी घृणा करते थे वह चली गई।"

व्रतराम पेरिस छोड़कर फ़्लोरेंस चला गया और वहाँ के राजा की सेना में भरती हो गया। वहाँ उसने युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई और बड़े पद पर नियुक्त होने को ही था कि उसे अपनी माता का पत्र मिला—"अब तुम चले आओ, क्योंकि हैलीना यहाँ से चली गई।" यह देखकर व्रतराम ने घर को लौटने का विचार किया। उसी समय हैलीना एक यात्रिणी के वेष में फ़्लोरेंस पहुँच गई।

सेण्ट-ग्राण्ड के मन्दिर का रास्ता फ़्लोरेंस होकर था। जब हैलीना फ़्लोरेंस में आई तब उसने सुना कि यहाँ एक ऐसी विधवा है जो सेण्ट-ग्राण्ड के जानेवाले यात्रियों को बड़े सत्कार से रखती है। इसलिए वह उसके पास चली गई। उस वृद्धा ने उसको आदर से लिया और कहा कि अगर तुम राजा की सेना को देखना चाहो तो मेरे घर में से देख सकती हो। एक तुम्हारे देश का आदमी भी इस सेना में है जिसका नाम व्रतराम है। हैलीना ने व्रतराम का नाम सुनकर निमंत्रण स्वीकार कर लिया और अपने पति के दर्शन करने के लिए उसके साथ चली गई। वृद्धा ने पूछा—

"क्या वह रूपवान् नहीं है?"

हैलीना—हाँ, मुझे वह पसन्द है।

इस समय इस विधवा की लड़की डायना ने कहा—

"कैसा ही हो, पर यहाँ इसने बड़ी वीरता दिखाई है। मैंने सुना है कि वह फ़ान्स से भाग आया है क्योंकि महाराजा ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह कर दिया था। क्या तुमको कुछ मालूम है?"

हैलीना—हाँ, यह ठीक है।

डायना—प्रेम न करनेवाले पति की स्त्री होने से, अधिक कौन सा दुःख है?

इस प्रकार यह विधवा और हैलीना व्रतराम के विषय में बातचीत करने लगी। इसके पश्चात् उसने यह भी सुना कि व्रतराम इस विधवा की लड़की डायना को बहुत चाहता है। और रात को आकर उसकी ख़ुशामद किया करता है कि गुप्त रीति से तुम मुझको अपने कमरे में आने दो। डायना एक योग्य और सुशिक्षित लड़की थी। यद्यपि इस समय उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी किन्तु वह एक कुलीन वंश की लड़की थी और उसकी माता ने बड़ी मेहनत करके उसे धार्मिक शिक्षा दी थी। इसलिए डायना व्रतराम के फुसलाने में नहीं आई। डायना को यह मालूम था कि व्रतराम एक विवाहित पुरुष है, ऐसे पुरुष से प्रेम करना अधर्म है। जिस रात को हैलीना इस विधवा के घर ठहरी हुई थी उस दिन व्रतराम ने डायना की बड़ी ख़ुशामद की क्योंकि वह उसके दूसरे दिन घर जा रहा था।

विधवा ने यह सब समाचार हैलीना से कह दिया और अपनी लड़की के धार्मिक जीवन की बड़ी प्रशंसा की। अब हैलीना ने अपने पति की पुनः प्राप्ति का एक उपाय सोचा। उसने विधवा से कह दिया कि व्रतराम की स्त्री मैं ही हूँ। अपनी पुत्री से कह दो कि वह व्रतराम को अपने कमरे में आने दे। मैं डायना के भेष में उससे मिलूँगी। विधवा को ऐसा करने में सकोच हुआ। तब हैलीना ने कहा—

"अगर आपको मेरे व्रतराम की स्त्री होने में सन्देह हो तो मैं नहीं समझती कि किस प्रकार आपको निश्चय दिलाऊँ। परन्तु इससे मेरे प्रयोजन की सिद्धि न हो सकेगी।"

विधवा—यद्यपि मेरी दशा इस समय सन्तोषजनक नहीं है, पर मैं एक कुलीन घर की हूँ, और ऐसी बातें नहीं जानती। इसलिए ऐसे काम नहीं कर सकती, जिससे मेरे कुल के नाम में धब्बा लगे।

हैलीना—मैं भी यह नहीं चाहती। मेरा विश्वास करो। व्रतराम मेरा पति है। मैंने ठीक-ठीक कह दिया है। आप एक काम कर सकती हो जिससे आपकी बदनामी न होगी।

विधवा—वह क्या है?

हैलीना—व्रतराम के पास एक अँगूठी है जो उसे अपने पूर्वजों से मिली है। इसको वह बहुमूल्य समझता है और अपने

प्राणों से भी अधिक प्यार करता है। परन्तु अब उसका अनुराग आपकी पुत्री पर है। स्त्रियों के प्रेम मे लोग अमूल्य से अमूल्य वस्तु दे डालते हैं। यदि डायना उस अँगूठी को व्रतराम से ले ले और मुझे दे दे तो मैं बहुत कुछ धन तुमको दूँगी। इस समय केवल एक थैली रुपयों की देती हूँ।

विधवा ने यह बात स्वीकार कर ली और अपनी पुत्री को तला दिया कि किस प्रकार कार्य सिद्ध किया जावे। इस समय हैलीना ने किसी के द्वारा व्रतराम से कहला भेजा कि हैलीना मर गई। क्योंकि उसने समझा कि अगर वह अपनी पहली स्त्री के मरने की खबर सुन लेगा तो अवश्य खुल्लमखुल्ला डायना से विवाह का प्रार्थी होगा और इस प्रकार उसे अँगूठी मिल जायगी।

उसी रात को व्रतराम डायना के पास आया और प्रेम की बातें करने लगा। उसने कहा—

"तुम देवी हो!"

डायना—नहीं। मैं डायना हूँ।

व्रतराम—हाँ तो तुम देवी*ही हो। परन्तु तुम में प्रेम नहीं है। तुमको वैसा ही होना चाहिए जैसी तुम्हारी मा थी जब तुमने जन्म लिया था।

---

*डायना रोमन लोगों की एक देवी का नाम है।

विधवा ने यह सब समाचार हैलीना से कह दिया और अपनी लड़की के धार्मिक जीवन की बड़ी प्रशंसा की। अब हैलीना ने अपने पति की पुनः प्राप्ति का एक उपाय सोचा। उसने विधवा से कह दिया कि व्रतराम की स्त्री मैं ही हूँ। अपनी पुत्री से कह दो कि वह व्रतराम को अपने कमरे मे आने दे। मैं डायना के भेष मे उससे मिलूँगी। विधवा को ऐसा करने मे संकोच हुआ। तब हैलीना ने कहा—

"अगर आपको मेरे व्रतराम की स्त्री होने मे सन्देह हो तो मैं नही समझती कि किस प्रकार आपको निश्चय दिलाऊँ। परन्तु इससे मेरे प्रयोजन की सिद्धि न हो सकेगी।"

विधवा—यद्यपि मेरी दशा इस समय सन्तोषजनक नहीं है, पर मैं एक कुलीन घर की हूँ, और ऐसी बाते नहीं जानती। इसलिए ऐसे काम नही कर सकती, जिससे मेरे कुल के नाम मे बट्टा लगे।

हैलीना—मैं भी यह नहीं चाहती। मेरा विश्वास करो। व्रतराम मेरा पति है। मैंने ठीक-ठीक कह दिया है। आप एक काम कर सकती हो जिसमे आपकी बदनामी न होगी।

विधवा—वह क्या है ?

हैलीना—व्रतराम के पास एक अँगूठी है जो उसे अपने पूर्वजो से मिली है। इसको वह बहुमूल्य समझता है और अपने

प्राणों से भी अधिक प्यार करता है। परन्तु अब उसका अनुराग आपकी पुत्री पर है। स्त्रियों के प्रेम मे लोग असूल्य से अमूल्य वस्तु दे डालते हैं। यदि डायना उस अँगूठी को व्रतराम से ले ले और मुझे दे दे तो मैं बहुत कुछ धन तुमको दूँगी। इस समय केवल एक थैली रुपयों की देती हूँ।

विधवा ने यह बात स्वीकार कर ली और अपनी पुत्री को बतला दिया कि किस प्रकार कार्य सिद्ध किया जावे। इस समय हैलीना ने किसी के द्वारा व्रतराम से कहला भेजा कि हैलीना मर गई। क्योंकि उसने समझा कि अगर वह अपनी पहली स्त्री के मरने की ख़बर सुन लेगा तो अवश्य खुल्लमखुल्ला डायना से विवाह का प्रार्थी होगा और इस प्रकार उसे अँगूठी मिल जायगी।

उसी रात को व्रतराम डायना के पास आया और प्रेम की बातें करने लगा। उसने कहा—

"तुम देवी हो!"

डायना—नहीं। मैं डायना हूँ।

व्रतराम—हाँ तो तुम देवी*ही हो। परन्तु तुम में प्रेम नहीं है। तुमको वैसा ही होना चाहिए जैसी तुम्हारी मा थी जब तुमने जन्म लिया था।

---

*डायना रोमन लोगों की एक देवी का नाम है।

डायना—वह उस समय धार्मिक थीं।

व्रतराम—ऐसा ही तुमको भी होना चाहिए।

डायना—मेरी माता का कर्तव्य था जैसा कि आपका अपनी स्त्री के साथ है।

व्रतराम—यह न कहिए। मैं उससे विवाह करने पर मजबूर था। परन्तु मैं आपसे स्नेह करता हूँ, और सदा आपका सेवक रहूँगा।

डायना—हाँ, तुम उसी समय तक हमारे सेवक हो जब तक हम तुम्हारी सेवा करती हैं। पर जब तुमने हमारे फूल चुन लिये तो काँटों को हमारा ही हृदय विदीर्ण करने के लिए छोड़ जाते हो।

व्रतराम—मैं शपथ खाता हूँ।

डायना—शपथ खाने से बात सच्ची नहीं हो सकती। बुरी बातों के लिए शपथ नहीं खाना चाहिए।

व्रतराम—प्रेम करना बुरी बात नहीं है। मैं छल नहीं करता। प्यारी मुझे अपना समझकर मेरे प्राण बचा लो, क्योंकि मैं प्रेम-रोगी हूँ।

डायना—अच्छा, इस अँगूठी को दे दो।

व्रतराम—मैं दे देता परन्तु दे नहीं सकता!

डायना—क्या, दे नहीं सकते?

व्रतराम—हाँ यह मेरे पूर्वजों की निशानी है। इसे खो देने में मुझे बहुत बड़ा अपयश होगा।

डायना—बस बस! मेरा आत्म-गौरव भी इस अँगूठी से कम नहीं है। मेरा सतीत्व मेरे घर का रत्न है जिसे खो देने से मेरा बड़ा अपयश होगा। यह रत्न मेरे पूर्वजों की निशानी है।

व्रतराम—(अँगूठी देकर) लो! अँगूठी लो। मैं, मेरा कुल, मेरा गौरव सब तुम्हीं हो।

डायना—अच्छा, आधी रात के समय मेरा दरवाज़ा खट-खटाना! मैं ऐसा प्रबन्ध रक्खूँगी कि मेरी माता को ख़बर न हो। तुम केवल एक घण्टे मेरे पास रह सकते हो। लेकिन देखो, बातें मत करना। मैं इन सब बातों का कारण फिर बतला दूँगी। रात के समय मैं एक और अँगूठी पहनकर आऊँगी और आपको दूँगी जिससे हम दोनों का सम्बन्ध भविष्यत् में मालूम हो सके कि मैं तुम्हारी स्त्री हूँ।

व्रतराम—तुमको पाकर मैंने स्वर्ग पा लिया। ज्योंही मेरी पहली स्त्री मर जायगी, मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूँगा।

डायना—अच्छा अब जाओ।

आधी रात के समय जब अँधेरा हो गया, व्रतराम डायना के कमरे में गया। वहाँ हेलीना डायना के वेष में उसका स्वागत करने को तैयार थी। व्रतराम को यह मालूम नहीं था कि हेलीना ऐसी चतुर है। इसका कारण यह मालूम होता है

कि उसने कभी हैलीना के गुणों पर विचार नहीं किया था। हैलीना रूप मे डायना से कुछ कम नही थी। परन्तु जिस चीज़ को मनुष्य रोज देखा करते हैं वह उनको साधारण प्रतीत होती है। दूसरी बात यह है कि हैलीना को बतराम से ऐसा अगाध प्रेम था कि वह चुपके-चुपके उसके मुँह की ओर देखा करती थी और कभी कुछ कहती नही थी। कहावत है कि गहरे पानी के ऊपर बुलबुले नहीं उठा करते, इसी प्रकार गहरे प्रेम मे बातों की कमी हुआ करती है। यह भी एक कारण था, जिससे बतराम का चित्त हैलीना की ओर कभी आकर्षित न हो सका। परन्तु अब हैलीना को जरूरत थी कि अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए यथाशक्ति उपाय करे। इसलिए उसने बतराम से ऐसी प्रेम की बातें कीं और चुपके-चुपके ऐसा स्नेह प्रकट किया कि बतराम मोहित हो गया। चलते समय हैलीना ने अपनी अँगूठी दी और सवेरा होने से पहले ही वहाँ से विदा कर दिया!

हैलीना ने अब डायना और उसकी माता से पेरिस चलने को कहा। क्योंकि हैलीना के प्रयोजन की सिद्धि के लिए उन दोनों का वहाँ पर होना आवश्यक था। जब वे वहाँ पहुँचीं तब उनको मालूम हुआ कि फ्रांस-नरेश बतराम की माता से भेंट करने के लिए रोसिलन को गया है। इसलिए उन सबने जल्दी से रोसिलन को प्रस्थान कर दिया।

महाराजा का स्वास्थ्य अब तक बहुत अच्छा था। वह हैलीना का बड़ा कृतज्ञ था और उसे याद करता था। इसलिए जब वह रोसिलन पहुँचा तब हैलीना के लुप्त होने की ख़बर सुनकर बहुत शोकातुर हुआ और कहने लगा—

"देखो, हैलीना तुम्हारे घर का एक रत्न थी, जिसे तुम्हारे लड़के ने अपनी मूर्खता से नष्ट कर दिया। उसने हैलीना की क़दर न जानी।"

बतराम की माता ने महाराजा की अप्रसन्नता का ख़याल करके कहा—

"महाराज! क्षमा कीजिए। वह लड़का है। लड़कपन में उजड्डपन होता ही है। उसने अपराध किया।"

महाराज—यद्यपि मुझे उस पर बहुत क्रोध आया। और मैं उसे मारने का अवसर खोजता रहा, परन्तु अब मैंने उसे क्षमा कर दिया है।

लेफ़ू—महाराज! उस लड़के ने आपके साथ, अपनी माता के साथ और अपनी स्त्री के साथ बड़ा अन्याय किया परन्तु सबसे बड़ा अन्याय अपने साथ किया कि उसने ऐसे स्त्री-रत्न को खो दिया जिसके रूप पर बड़ों-बड़ों की आँखें मोहित हो गईं, जिसकी बातों ने भले-भले कानों को आकर्षित कर लिया और जिसके गुणों ने अच्छों-अच्छों से प्रशंसा करा ली।

महाराज ने अब व्रतराम को बुलाया जो अभी फ्लोरेंस से आया हुआ था, और उसे क्षमा कर दिया। परन्तु जिस समय यह बातें हो ही रही थीं, महाराज को फिर क्रोध आ गया, क्योंकि उन्होंने व्रतराम के हाथ में वह अँगूठी देखी जो उसने हैलीना को दी थी। हैलीना कह गई थी कि मैं इसे अपने हाथ से कभी पृथक् न करूँगी। हाँ, जब मुझ पर कोई विपत्ति पड़ेगी तो अवश्य इसे किसी के हाथ आपकी सेवा में भेज दूँगी। अब वह क्रोध में आकर व्रतराम से कहने लगा—

"अरे दुष्ट! क्या तूने हैलीना से वह चीज़ भी ले ली जिसकी उसे बड़ी ज़रूरत थी।"

व्रतराम—यह उसकी अँगूठी नहीं है?

रानी—बेटे! मैंने उसे इसको पहने देखा था। वह इसे बहुत प्यार करती थी।

लेफ़ू—मैंने भी देखा था।

व्रतराम—महाराज! आपको धोखा हुआ है। यह अँगूठी कभी उसके पास नहीं थी। फ़्लोरेंस में एक स्त्री ने अपने कमरे से यह अँगूठी मेरे पास फेंक दी थी। उसके चारों ओर एक काग़ज़ लिपटा हुआ था जिस पर उस स्त्री का नाम था। वह स्त्री बड़ी योग्य थी और उसने समझा कि मैं उससे प्रेम करूँगा। परन्तु जब मैंने अपने विवाह का हाल सुनाया तो वह स्त्री चुप हो गई और मुझसे फिर कभी अपनी अँगूठी न माँगी!

राजा—चाहे किसी ने दी हो, यह मेरी अँगूठी है, यह हैलीना की अँगूठी है। तुम ठीक बताओ कि तुमने उससे किस प्रकार यह अँगूठी छीनी। वह कहती थी कि या तो यह अँगूठी वह तुमको देगी, जब तुम उससे प्यार करोगे, और या वह इसे मेरे पास भेजेगी। सो बताओ तुमने यह अँगूठी कहाँ पाई?

व्रतराम—उसने इसे देखा तक नहीं।

राजा—झूठ बोलता है।

यह कहकर राजा ने अपने सिपाहियों-द्वारा व्रतराम को पकड़वा लिया क्योंकि उसे यह निश्चय हो गया कि व्रतराम अपनी स्त्री का घातक है।

उसी समय एक नौकर राजा के पास एक पत्र लाया और कहने लगा—"महाराज! फ्लोरेंस की एक स्त्री ने आपकी सेवा में यह प्रार्थना-पत्र भेजा है।"

राजा ने पढ़ा। उसमें यह लिखा हुआ था—

"रासिलन के अधिपति ने सैकड़ों शपथें खाईं कि जब मेरी स्त्री मर जायगी तो मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूँगा। मैं कहती हुई शरमाती हूँ, परन्तु कहना पड़ता है कि इसी लालच से मैंने अपना सतीत्व नष्ट कर दिया। अब व्रतराम की स्त्री मर गई है। लेकिन यह पुरुष बिना मुझसे मिले हुए यहाँ चला आया है। आप कृपा करके मेरा विवाह कर

दीजिए नहीं तो मेरा जीवन नष्ट हो जायगा और लोग इसी प्रकार स्त्रियों को नष्ट किया करेंगे।

आपकी आज्ञाकारिणी,

डायना।

जब राजा ने व्रतराम से इसका हाल पूछा तो उसने राजा के क्रोध से डरकर इनकार कर दिया। इस पर डायना अपनी माता-सहित महाराज की सेवा में उपस्थित हुई और माता ने रोकर कहा—

"महाराज! आज मेरे कुल की नाक कट गई। आप हमारे साथ न्याय कीजिए।"

फिर डायना ने एक अँगूठी दिखलाकर कहा—

"महाराज! यह अँगूठी व्रतराम ने मुझे दी थी और मैंने उसके बदले एक अँगूठी दी थी। इससे प्रकट होता है कि मेरा कथन ठीक है।"

राजा ने हैलीना की अँगूठी दिखाकर कहा—

"क्या यही अँगूठी है?"

डायना ने उत्तर दिया कि "भगवन्, यही अँगूठी मैंने व्रतराम को दी थी।"

अब तो राजा ने समझा कि डायना भी हैलीना की अँगूठी का भेद जानती है। इसलिए उसने कहा—

"सच सच बताओ कि तुमने यह अँगूठी कहाँ से पाई। नहीं तो अभी एक-एक को प्राण-दण्ड दूँगा।"

इस पर डायना ने उत्तर दिया कि महाराज मेरी माता को आज्ञा दीजिए कि उस जौहरी को ले आवे जिससे यह अँगूठी ली गई है।"

डायना की माता को आज्ञा दी गई और थोड़ी देर पीछे वह हैलीना को लेकर कमरे में आई।

राजा हैलीना को देखकर फूला न समाया और कहने लगा—

"अरे क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ?"

हैलीना—नहीं महाराज! नहीं! (व्रतराम से) यह आपकी स्त्री की छाया मात्र है। नाम है वस्तु नहीं!

व्रतराम—दोनों। दोनों। क्षमा कीजिए।

हैलीना—स्वामिन्! जब मैं डायना के वेष में थी तो आप मुझपर बड़े प्रसन्न थे। देखो यह अँगूठी है। और यह पत्र भी आप ही का है जिसमें आपने एक बार लिखा था कि अगर तुम मेरी अँगूठी प्राप्त कर लो तो तुम मुझे अपना पति कह सकती हो। यह सब हो गया!

व्रतराम—(राजा से) महाराज, अगर हैलीना मुझे समझा दे कि यह सब बातें किस प्रकार हुईं तो मैं सदा इससे प्रसन्न रहूँगा।

हैलीना के लिए अब यह बात कुछ कठिन न थी। डायना और उसकी माता इसी लिए वहाँ आई हुई थीं।

जब सब कथा आद्योपान्त कही गई तो सबको बड़ा हर्ष हुआ और हैलीना अपने प्यारे बतराम की चहेती रानी हुई।

राजा डायना से बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि उसने एक दुखिया स्त्री की सहायता की थी और उसने उसका विवाह भी एक योग्य और प्रतिष्ठित पुरुष से करा दिया।



छठा हनरी—पहला भाग

(HENRY VI. PART I.)

'पाँचवे हनरी' मे यह वर्णन हो चुका है कि उसने न केवल फ़्रांस का राज्य ही ले लिया किन्तु फ़्रांस की राजकुमारी कैथरायन से विवाह भी कर लिया। इँगलेंड मे उस समय बड़ा आनन्दोत्सव मनाया गया और समस्त प्रजा अपने अपूर्व सम्राट् पर अभिमान करने लगी। परन्तु डौफ़िन अर्थात् फ़्रांस के युवराज ने हनरी से विरोध किया और इसलिए हनरी को फ़्रांस जाना पड़ा। दो वर्ष तक युद्ध होता रहा। परन्तु इन युद्धों से पञ्चम हनरी का स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ गया था इस कारण ३१ अगस्त सन् १४२२ ई० को विन्सीनिस मे उनका देहान्त हो गया।

हनरी का शव इँगलेंड मे लाया गया और सब लोगों को इस अकाल मृत्यु पर बड़ा ही शोक हुआ क्योंकि पञ्चम हनरी से पूर्व किसी राजा ने फ़्रांस पर इस प्रकार विजय न पाई थी। इसके समय में इँगलेंड का यूरोप के अन्य देशों में बड़ा मान बढ़ गया था। परन्तु यह उन्नति केवल क्षणिक थी,

क्योंकि पिछले युद्धों मे न केवल राजकोष ही खाली हो गया था किन्तु राजसेना भी वीर पुरुषों से वञ्चित हो चुकी थी। प्रायः सब बड़े-बड़े योद्धा मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। इसलिए हनरी के मरते ही राज में गड़बड़ी मच गई। अभी उसका मृतक संस्कार भी न होने पाया था और लोगों के आँसू अभी सूखे तक न थे कि एक दूत ने यह कुसमाचार सुनाया कि अँगरेज़ी सेना परास्त हो गई और गाइनी, शेम्पेन, रीम्स, ओर्लियन्स, पेरिस, गिमर्स और पोइक्टियर्स नामी प्रान्त उनके स्वत्व से निकल गये।

यह सुनकर अँगरेज़ी राजनेताओं को बड़ा दुःख हुआ। हनरी की मृत्यु के पश्चात् उसका २ वर्ष का पुत्र छठे हनरी के नाम से गद्दी पर बैठा और बेडफ़र्ड को राजकार्य्य का कर्त्ता नियत किया गया जैसी कि पञ्चम हनरी ने मृतक-शय्या पर अपनी इच्छा प्रकट की थी।

बेडफ़र्ड ने जब यह दुःखमय वार्त्ता सुनी तो झट से फ़्रांस को जाने की तैयारियां कर दीं। उसी समय दूसरे दूत ने आकर ख़बर दी कि डाफिन चार्ल्स (फ़्रांस के युवराज) का रीम्स में राज्याभिषेक हो गया। और ओर्लियन्स, ऐञ्जू तथा एलेन्कन के जागीरदार उससे मिल गये। परन्तु सबसे बुरी बात जो सुनी गई वह यह थी कि अँगरेज़ों का एक बड़ा वीर योद्धा टालबट फ़्रांस में क़ैद हो गया। यह घटना इस प्रकार हुई कि १० वीं अगस्त को जब टालबट ओर्लियन्स नामी

नगर से कुछ दूर पर पड़ा हुआ था उस पर अचानक शत्रु ने आक्रमण किया और उसे अपनी सेना को ठीक करने का अवकाश न मिला। तीन घण्टे तक घोर युद्ध हुआ जिसमे टाल्बट ने ऐसी वीरता दिखाई कि सैकड़ों शत्रु नरकधाम को पहुँचा दिये। उसे देखकर शत्रु-दल मे हलचल पड़ गई और जिसका जिधर मुँह उठा, भाग निकला। अँगरेज़ी-सेना अपने योद्धा का नाम ले-लेकर शत्रुगण को परास्त करने लगी। उस समय फ़्रांस के पराभव मे कुछ भी कसर नहीं रही थी परन्तु सर जौन फ़ालसटाफ़ नामी एक अँगरेजी सेनापति अपनी कायरता के कारण भाग निकला। इसी अवस्था मे पीछे से आकर एक फ़रांसीसी ने टाल्बट की पीठ में धोखे से एक ऐसी तलवार मारी कि वह गिर पडा और पकड़ लिया गया।

टाल्बट की वीरता पर सबको बड़ा भरोसा था और उसी के आश्रय पर अब तक अँगरेज़ लोग निश्चिन्त बैठे हुए थे, परन्तु अब सब लोग घबड़ा उठे और बेडफ़र्ड ने दस सहस्र सेना के साथ फ़्रांस को प्रस्थान कर दिया।

उस समय बचे-खुचे अँगरेज़ औार्लियन्स को लेने का प्रयत्न कर रहे थे। यद्यपि टाल्बट क़ैद हो चुका था परन्तु सालसबरी अभी स्वतन्त्र था और उसने डौफ़िन का इस वीरता से सामना किया कि एक बार फिर उसे अपनी हार का निश्चय हो गया। सालसबरी के सामने से भागकर उसने कहा—

"हाय! मेरे आदमी कैसे कायर हैं। दुष्ट! अधम! यहाँ यह लोग मुझे अकेला शत्रुदल में न छोड़ देते तो मैं कभी यहाँ से भागकर पीठ न दिखाता।"

रिगनियर नामी एक दूसरे सैनिक ने उत्तर दिया कि "सालसबरी बड़ा लड़ाकू है। वह इस प्रकार लड़ता है मानो अपने जीवन से थक गया है। दूसरे लोग भूखे शेरों की तरह हम पर टूट रहे हैं।"

एलेंकून—हमारे एक सजातीय विद्वान् ने तीसरे एडवर्ड की लड़ाई का वर्णन करते हुए लिखा है कि इङ्गलेण्ड में वीर ही वीर उत्पन्न होते हैं जिनका एक आदमी हमारे दस वीरों को मार गिरा देता है। ऐसे पतले-दुबले मनुष्यों को देखकर कौन ऐसी आशा कर सकता था कि इनमें इतना बल है। क्या यह सब सैमसन* ही हैं।

डौफ़िन चार्ल्स † इस समय निराश हो गया और उसने ऑर्लियन्स छोड़ देने का इरादा किया परन्तु इस द्विविधा के समय जेन डार्क नामी एक लड़की वहाँ पर आई और कहने

---

*सैमसन ज़ोरा नामक नगर में मनोह का लड़का था। जिसको ईश्वर ने इतना बल दिया था कि वह शेर को फाड़ डालता था। एक समय जब उसके शत्रुओं ने उसे पकड़ लिया तब उसने एक बड़े मकान के खम्भों को गिराकर उन सबके ऊपर गिरा दिया और स्वयं भी मर गया। (देखो बाइबिल Judges 12)

† डौफ़िन का नाम चार्ल्स था।

लगी कि मुझे स्वप्न हुआ है जिसमें मरियम* ने प्रेरणा की है कि मैं रणक्षेत्र मे जाकर तुम्हारी सहायता करूँ, तुम अवश्य विजय पाओगे।

चार्ल्स—मुझे तेरी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ है। परन्तु जब तक तेरे बल की जाँच न कर लूँ, तेरा विश्वास नहीं कर सकता। मैं तुझसे मल्लयुद्ध करूँगा। यदि मैं हार गया तो तुझे अपनी सेना का सेनापति नियत कर दूँगा।

जेन डार्क—"मैं तैयार हूँ।"

अभी जेन ने दो-तीन ही हाथ चलाये थे कि चार्ल्स चिल्ला उठा—

"बस कर! बस कर! तू बड़ी बुरी तरह मारती है।"

जेन डार्क—ईसा की मा मेरी सहायता कर रही है।

चार्ल्स—कोई तेरी सहायता करता हो, परन्तु इसमे सन्देह नहीं कि तू बडी प्रवीरा है, मैं तेरा राजा होना नहीं चाहता किन्तु मेरी यह इच्छा है कि तू मुझे अपना दास बना ले।

जेन डार्क—नहीं नहीं! मेरा उद्देश पवित्र है। मैं तुझसे विवाह नहीं कर सकती। मुझे केवल विजय-प्राप्ति के लिए आज्ञा हुई है।

यह कहकर उसने डौफ़िन और समस्त सेना को ऐसा उत्तेजित किया कि वे फिर लड़ने पर कटिबद्ध हो गये और अँगरेज़ों से जा भिड़े।

---

* मरियम ईसामसीह की मा का नाम है।

इसी समय टालबट बन्दीगृह से छुटकारा पाकर सालसबरी के पास जा पहुँचा। सालसबरी ने बड़े हर्ष के साथ उससे कहा—

"टालबट! टालबट! आप किस प्रकार छूट आये। मुझे आपको देख कर बड़ा हर्ष हुआ है।"

टालबट—बेडफर्ड के पास एक फ़रासीसी क़ैदी लार्ड पौण्टन था जिसके बदले में फ़रासीसी लोगों ने मुझे मुक्त कर दिया। पहले वे मुझे एक साधारण पुरुष के बदले छोड़ देते थे। परन्तु मैंने इस बात को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि इससे मेरा अपमान होता था और यश में बाधा पड़ती थी। मैंने कह दिया कि इस अपमान-युक्त छुटकारे से तो मृत्यु ही भली है।

सालसबरी—"आप के साथ फ़रासीसियों ने कैसा व्यवहार किया?"

टालबट—"बहुत बुरा! उन्होंने मुझे बाजार में निकाला, तालियाँ बजाई गईं और अनेक प्रकार से अपमान किया गया। मैंने भी क्रोध के मारे हाथों से पत्थर उठाकर भीड़-भाड़ को भगा दिया। उन लोगों में मेरी वीरता की ऐसी धाक थी कि वह डरते थे कि कहीं मैं लोहे का शीकचा न तोड़ डालूँ। इसलिए उन्होंने चुने हुए सिपाही बन्दूक़ लिये मेरे ऊपर नियत कर दिये कि यदि मैं हाथ-पैर हिलाऊँ तो वे झट मुझे मार डालें।"

सालसबरी—"मुझे आपके इन कष्टों पर बड़ा खेद है परन्तु
हम लोग शीघ्र ही इसका बदला ले लेंगे।"

अभी सालसबरी ने अपना कथन समाप्त भी नहीं किया था कि जेन डार्क से प्रेरित फ़रासीसियों की एक गोली सालसबरी को ऐसी लगी कि एक आँख और एक गाल बिलकुल उड़ गया और वह बेहोश होकर धरातल में गिर पड़ा।

इतने में जेन डार्क शस्त्र धारण किये आ पहुँची और उसके सम्मुख समस्त अँगरेज़ी सेना तितर-बितर हो गई। यद्यपि टालबट बड़ी वीरता से लड़ा परन्तु उसका साहस व्यर्थ गया और अँगरेजों की हार हुई। वे ऑर्लियन्स को न ले सके और डौफ़िन चार्ल्स ने बड़े समारोह से जेन डार्क की महिमा के गीत गाये। नगर में उसी के नाम का जय जयकार होने लगा। रात भर विजयोत्सव मनाया गया।

थोड़ी देर पीछे बेडफ़र्ड अपनी सेना-सहित बरगण्डी के साथ वहाँ आ गया। जब इन सबने जेन डार्क की वार्ता सुनी तब इनको बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने समझा कि इसके ऊपर कोई भूत आ गया है अथवा यह कोई जादूगरनी है जो एक गड़रिये की लड़की होने पर भी उसमें इतना बल है और ऐसे पराक्रम के साथ लड़ती है।

अब इन सबने विचार किया कि रात के समय जब फ़रासीसी लोग उत्सव में संलग्न हो रहे हैं अचानक इन पर छापा मारना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए टालबट, बर-

गण्डी और बैडफ़र्ड नगर की दीवारों पर चढ़ गये और थोड़ी देर में नगर को ले लिया, क्योंकि फ़रासीसी लोगों को उस आक्रमण की कुछ भी आशा न थी।

प्रातःकाल को फरासीसी लोगों ने टाल्बट के पकड़ने का एक और उपाय किया और औवर्न की रानी ने, जो एक प्रसिद्ध रमणी थी, टाल्बट को महभोज के लिए निमंत्रण दिया। टाल्बट को उसके छल-कपट का कुछ भी पता नहीं था। इस-लिए वह वहाँ चला गया। परन्तु जब टाल्बट वहाँ पहुँचा तब उसे देखकर रानी अपने नौकर से कहने लगी—

"क्या यही टाल्बट है? क्या इसी ने फ्रांस का इतना नाश कर दिया है? क्या यही मनुष्य है जिसके नाम से मातायें अपने बच्चों को चुप किया करती हैं? मैं समझती थी कि वह बड़ा भारी लम्बा-चौड़ा आदमी होगा। प्रतीत होता है कि किसी ने झूठमूठ उड़ा दिया है। यह तो छोटा सा है।"

टाल्बट—देवि! मैंने आपको व्यर्थ कष्ट दिया। आपको अवकाश नहीं है। इसलिए मैं यहाँ से जाता हूँ।

रानी ने उस समय अपने नौकर-द्वारा फाटकों में ताला लगवा दिया और कहने लगी—

"अब तुझे मैंने कैद कर लिया।"

टाल्बट—कैद?

रानी—हाँ ! क़ैद ! तूने मेरे देश की बहुत हानि की है। इसी लिए मैंने तुझे यहाँ बुलाया था। बहुत दिनों से मेरे मकान में तेरी तसवीर टँगी हुई थी परन्तु अब तू स्वयं आ गया। अब मैं तेरे हाथ-पाँव बाँधकर डाल दूँगी और तू मेरे देशवासियों को कुछ भी कष्ट न दे सकेगा।

टाल्बट—ओहो ! ओहो !

रानी—अरे दुष्ट ! तू हँस रहा है। देख तो अब तुझे रोना पड़ेगा।

टाल्बट—मुझे हँसी आ रही है कि श्रीमतीजी ने मेरे चित्र को कुछ और समझ लिया है जिसको आप दण्ड देना चाहती हैं।

रानी—क्या तू टाल्बट नहीं है ?

टाल्बट—मैं हूँ !

रानी—तो क्या इस समय टाल्बट मेरे वश में नहीं है ?

टाल्बट—नहीं नहीं ! यह तो मेरा चित्र है। मेरा शरीर तो कुछ और ही है। यदि आप मेरे शरीर को देखतीं तो चकित हो जातीं क्योंकि यह इतना बड़ा है कि आपके इस छोटे मकान में नहीं समा सकता।

रानी—यह तो असम्भव बात है।

टाल्बट ने इस समय बड़े ज़ोर से बिगुल बजाया जिसको सुनते ही उसके साथी जो किसी गुप्त प्रदेश में छिपे खड़े थे आ उपस्थित हुए और दरवाज़ा तोड़कर घर के भीतर घुस आयें। अब टाल्बट कहने लगा—

"आपने देखा! देवीजी! मेरे हाथ-पाँव ये हैं। जो शरीर अब तक आपके सम्मुख खड़ा था वह तो केवल टाल्बट का चित्र है।"

रानी यह देखकर घबरा गई और टाल्बट से क्षमा माँगी। अन्त में उसने टाल्बट और उसके साथियों को सहभोज दिया। इस प्रकार अँगरेज लोग ऑर्लियन्स की लड़ाई में जीत गये।

परन्तु चार्ल्स डौफ़िन और जेन डार्क अभी अँगरेज़ों को निकालने का उद्योग कर रहे थे। अँगरेज़ लोग उस समय रोये नामी नगर में पड़े हुए थे। चार्ल्स और जेन ने इस नगर को लेने का इरादा किया और व्यापारियों का वेष धारण करके नाज के बोरों के सहित रोये के फाटक पर दस्तक दी। द्वारपालों ने पूछा—"तुम कौन हो?"

इन्होंने उत्तर दिया—"हम दरिद्र व्यापारी हैं और अन्न बेचने आये हैं।" यह सुनकर फाटक खोल दिये गये और ये लोग नगर में घुस गये। फाटक के खुलते ही फ़रासीसी सेना घुस पड़ी और टाल्बट तथा बरगण्डी को बड़ी कठिनाई हो गई। दैवगति और दुर्भाग्य से उस समय बेडफ़ोर्ड रोग-ग्रसित हो गया और उसके बचने की आशा न रही। टाल्बट आदि ने चाहा कि उसे किसी सुरक्षित स्थान में भेज दिया जाय, जहाँ वह युद्ध के कोलाहल से बच सके। परन्तु उसने न मानी और युद्ध जिस स्थान पर हो रहा था वहीं बैठा-बैठा

सिपाहियों को उत्तेजित करता रहा। अन्त में जब फ़्रांस-वालों की पराजय हुई और चार्ल्स तथा जेन रणक्षेत्र से भागने लगे तो बैडफ़र्ड के मन को शान्ति हुई और हर्षपूर्वक यह कहते हुए उसने प्राण त्याग दिये कि "अब शत्रु को पराभूत देखकर मुझे बड़ा सन्तोष है। अब मैं सुखपूर्वक मरता हूँ।" युद्ध के पश्चात् अँगरेज़ों को अपने ऐसे वीर सेनापति की मृत्यु पर बड़ा शोक हुआ और रो-रोकर उसका मृतक-संस्कार किया गया।

अब टालबट और बरगण्डी ने पेरिस की ओर कूच किया जिससे वे लोग फ़्रांस देश की राजधानी पर स्वत्व प्राप्त कर सकें। जेन डार्क ने ओर्लियन्स और रोये में अपना काम बिगड़ा हुआ देखकर बरगण्डी को अपनी ओर मिलाने का उपाय किया और यह बात सम्भव भी थी। क्योंकि बरगण्डी* फ़्रांस का प्रान्त है जिसका शासक ड्यूक आफ़ बरगण्डी अँगरेज़ों से जा मिला था। जेन उसे फिर अपने देश की भलाई के विषय में समझाना चाहती थी। इसलिए जब बरगण्डी की सेना पेरिस को जा रही थी तो जेन डार्क ने मार्ग में बरगण्डी से कहा—

* अँगरेज़ी में राजा को उनके देश के नाम से पुकारते हैं, जैसे "बरगण्डी" बरगंडी के ड्यूक को कहते हैं। "यार्क" यार्क के ड्यूक को इत्यादि।

"वीर बरगण्डी ! फ़्रांस की आशा तुझी से है। हे बरगण्डी ! मैं तेरी दासी कुछ प्रार्थना करना चाहती हूँ।"

बरगण्डी—संक्षेप से कह ! मुझे अवकाश नहीं है।

जेन डार्क—अपने देश की ओर देख ! उपजाऊ फ़्रांस की ओर देख ! सोच तो सही कि यह सुन्दर नगर किस प्रकार विनष्ट हो रहे हैं। अरे ! अपने देश की ओर उसी दृष्टि से देख जिस प्रकार एक माता अपने मरते हुए पुत्र की ओर देखती है। देख तूने स्वयं अपनी तलवार से अपने ही देश का हृदय किस प्रकार विदीर्ण किया है। अपनी इस तलवार को दूसरी ओर फेर और उन लोगों को मार जो तेरे देश को नष्ट कर रहे हैं। भला अपने देश के मित्रों के साथ इस प्रकार अहित क्यों करता है ? अपनी मातृभूमि के रक्त की एक बूँद से तुझे शत्रु के रुधिर की नदियों की अपेक्षा अधिक पीड़ा होनी चाहिए। इसलिए हे बरगण्डी ! अब लौट आ और अपने देश की रक्षा कर।

बरगण्डी (मन में)—अरे ! इसके शब्दों में बड़ी आकर्षण-शक्ति है।

जेन डार्क—अगर तू ऐसा नहीं करता तो लोगों को तेरी उत्पत्ति और वंश में सन्देह है। क्योंकि तू ऐसी जाति से जा मिला है जो केवल स्वार्थ के लिए तुझे चाह रही है। यदि टाल्बट जीत गया तो सिवा इनकी के और कौन

राजा होगा ? और क्या उस समय तू इसी प्रकार रहने पायेगा।"

जेन डार्क ने बरगण्डी को ऐसा फुसलाया कि अन्त में वह पिघल गया और अँगरेज़ों को छोडकर डोफ़िन चार्ल्स से आ मिला।

फ्रांस देशीय घटनाओं को हम इस समय यहीं छोड़ते हैं और इँगलेण्ड के विषय में कुछ वर्णन करते हैं। ऊपर लिखा जा चुका है कि पञ्चम हनरी की मृत्यु के पश्चात् उसके इच्छानुसार बेडफ़र्ड राज-कार्य-कर्त्ता नियत किया गया। परन्तु वह प्रायः फ्रांस के झगड़े मे फसा रहा और उसे इँगलेण्ड मे रहने का कुछ भी अवकाश न मिला। उसकी अनुपस्थिति मे उसका भाई ग्लोस्टर छठे हनरी का सरक्षक नियत हुआ।

परन्तु सम्राट् की बाल्यावस्था मे इँगलेण्ड के मन्त्रिगण और अन्य प्रसिद्ध पुरुष आपस में लड़ने लगे। ग्लोस्टर और विंचेस्टर के लाट पादरी मे बहुत कुछ वैमनस्य हो गया। उन दोनों ने बारी-बारी से बालक इँगलेण्ड-नरेश को अपनी रक्षा में लेने का उद्योग किया। इस प्रकार कई बरसों तक घोर युद्ध होता रहा। इन दोनों के नौकर जहाँ कहीं मिल जाते परस्पर लड़ाई करते। एक समय इनके झगड़ों से तंग आकर लन्दन के लार्ड मेयर (मुख्याधिष्ठाता) ने इनको शस्त्र धारण करने से वर्जित कर दिया। परन्तु वे लोग अब पत्थर इकट्ठे करके अपनी जेबों मे भरने लगे और एक दूसरों को मारने लगे।

उधर थोड़े दिनों पीछे ग्लौस्टर ने पार्लियामेंट (राजसभा) में विंचेस्टर के पादरी के विरुद्ध अभियोग चलाने की तैयारियाँ कीं। पादरी ने उस कागज़ को जिस पर ग्लौस्टर ने, उसके दोष लिखे हुए थे, भरी सभा में राजा के सन्मुख फाड़ डाला। छठा हनरी अब यद्यपि बड़ा हो गया था और राजसभा में आया करता था परन्तु उसके अशक्त होने के कारण और लोग उससे डरते नहीं थे। और सब अपने को स्वतंत्र समझते थे। पादरी के कागज़ फाड़ डालने पर ग्लौस्टर और पादरी में बहुत झगड़ा हुआ। [illegible] बिचारे ने बहुत कुछ उनसे प्रार्थना की कि जब आप [illegible], जो कि राज-काज के करनेवाले हैं, आपस में लड़ेंगे [illegible] ज का क्या हाल होगा। पहले तो उन्होंने अपने रा[illegible] की बात न सुनी। परन्तु जब हनरी ने बहुत कुछ उनसे विनती की तो वे मान गये और थोड़े दिनों के लिए झगड़ा मिट गया।

परन्तु उस समय एक और झगड़ा खड़ा हो रहा था। उसकी कथा इस प्रकार से है। चतुर्थ हनरी का हाल लिखते हुए यह दिखलाया जा चुका है कि तीसरे एडवर्ड के दूसरे बेटे लाइनल ड्यूक ऑफ क्लेरेन्स के वंश का एक पुरुष मार्टीमर ग्लेण्डावर और हैरी हौटस्पर के साथ मिल जाने के कारण क़ैद कर लिया गया था। यह मार्टीमर अभी तक बन्दीगृह में ही पड़ा रहा था। और हनरी चतुर्थ तथा उसके लड़के पञ्चम हनरी ने उसे इस भय से मुक्त नहीं किया था कि कहीं वह

राज लेने का प्रयत्न न करे। पाँचवें हनरी के समय में इसके बहनोई कैम्ब्रिज ने इसको राज देने का कुछ प्रयत्न किया था परन्तु उसका भाँडा शीघ्र ही फूट जाने के कारण कैम्ब्रिज को झट से प्राण-दण्ड दे दिया गया। कैम्ब्रिज का पुत्र रिचार्ड जो मार्टीमर का भांजा था और जो इसके पुत्ररहित होने के कारण उसका उत्तराधिकारी था, इस समय गुप्त रीति से अपना सिर उठाने की कोशिश कर रहा था।

जब मार्टीमर का अन्त समय आया तो उसने रिचार्ड को अपने संरक्षकों-द्वारा बुलवाया और कहा—

"मेरी वृद्धावस्था के संरक्षको! मुझ मरते हुए को इस स्थान पर बिठा दो! जिस प्रकार बहुत कष्टों के पश्चात् मनुष्य कुछ आराम लेता है इसी प्रकार बहुत दिनों के बन्धन के पश्चात् मेरे शरीर का हाल है। श्वेत केश कह रहे हैं कि अब मार्टीमर का अन्त समय है। ये आँखें उन दीपकों की भाँति, जिनका तेल समाप्त हो जाता है, धुँधली हो रही हैं। कन्धे बोझ के मारे दुर्बल हो रहे हैं, पैर अब शरीररूपी भार को धारण करने में असमर्थ हैं। अब मृत्यु के सिवा और किसी वस्तु की इच्छा नहीं है। क्या मेरा भांजा रिचार्ड आ रहा है?"

इसी समय रिचार्ड आ गया, और मार्टीमर ने बड़े प्रेम से उसे छाती से लगाया। अब रिचार्ड ने अपने मामा से कहा—

"मामा! आज मुझसे और सोमर्सेट में झगड़ा हो गया; जब हम सब बैठे हुए थे तब वह मेरे पिता के लिए अपशब्द कहने लगा। मुझे अपने पिताजी का कुछ भी हाल ज्ञात नहीं है नहीं तो अवश्य मैं उसका सिर तोड़ डालता। इसलिए मामाजी बताइए कि मेरे पिताजी को क्यों प्राण-दण्ड दिया गया।"

मार्टीमर—उसका कारण वही था जिसने मुझे क़ैद कराया; और जिससे मेरा युवावस्थारूपी पुष्प इस बन्दीगृह में पत्ता-पत्ता सूख गया।

रिचार्ड—स्पष्ट बताइए। मैं नहीं समझा।

मार्टीमर—यदि मेरी साँस चलती रही तो कहने का प्रयत्न करूँगा। इस वर्त्तमान सम्राट् के पितामह चतुर्थ हेनरी ने अपने भतीजे रिचार्ड (द्वितीय) को गद्दी से उतार दिया। उसके समय में उत्तरी देश के नार्थम्बरलैण्ड और उसके पुत्र हॉट्स्पर ने राजा के अत्याचारों से तङ्ग आकर मुझे गद्दी पर बिठाने का इरादा किया। मैं वास्तव में राज्य का अधिकारी था क्योंकि तीसरे एडवर्ड के पहले पुत्र का लड़का रिचार्ड सन्तानरहित मर चुका था। अब राज मेरा था क्योंकि मेरी माता एडवर्ड के दूसरे लड़के क्लेरेन्स के वंश की थी। चतुर्थ हेनरी का पिता गाण्ट एडवर्ड का तीसरा लड़का था इसलिए मेरे होते हुए उसका अधिकार नहीं था। परन्तु मेरे सहायक कुल-

कार्य नहीं हुए और मुझे क़ैद कर लिया गया। पञ्चम हनरी के समय मे तेरे पिता कैम्ब्रिज ने, जो यार्क के वंश से था, मेरी बहन अर्थात् तेरी माता से विवाह किया और मेरे कष्टो पर दया करके एक सेना इकट्ठी की। परन्तु भेद खुल जाने पर उसको प्राणदण्ड दिया गया। इस प्रकार आज मार्टीमर-कुल की समाप्ति होती है।

रिचार्ड—तो मेरे पिताजी के साथ अत्याचार किया गया।

मार्टीमर—हाँ, अब तू मेरा उत्तराधिकारी है। परन्तु सोच-समझकर काम करना चाहिए क्योंकि वर्त्तमान राजवंश बड़ा प्रबल हो रहा है।

अब मार्टीमर तो मर गया। और रिचार्ड ने राजसभा में जाकर यार्क की जागीर के लिए प्रार्थना की। छठे हनरी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और रिचार्ड को यार्क का ड्यूक बना दिया गया।

इसके पश्चात् ग्लोस्टर ने राजा से प्रार्थना की कि "आप फ्रांस को चलिए। वहाँ आपका राज्याभिषेक होना चाहिए। क्योंकि आपको देखकर फ्रांस के विद्रोही लोग शान्त हो जायँगे।" ऐसा विचार करके हनरी फ्रांस को प्रस्थान किया।

पेरिस पहुँचकर हनरी का अभिषेक हुआ। ग्लोस्टर सोमरसेट और रिचार्ड यार्क उसके साथ थे। अभिषेक के पश्चात् यार्क और सोमरसेट मे फिर झगड़ा हो गया। परन्तु हनरी ने बड़ी मुश्किल से उनको शांत किया, पर उनके

मन में शत्रुता की आग भड़कती रही। इसी समय हनरी ने सुना कि बरगण्डी डौफिन से जा मिला। इस पर हनरी को बड़ा क्रोध आया और टालबट को उसके दमन के लिए भेजा। परन्तु कई बातों का विचार करके वह स्वयं इँगलेण्ड को लौट गया।

टालबट थोड़ी सी सेना लेकर बोर्डो की ओर चला। और नगर के फाटक को खुलवाने का इरादा किया। परन्तु नगर-वासी पहले से ही अँगरेज़ों के विरुद्ध हो रहे थे, उन्होंने टालबट की बात न सुनी और छठे हनरी का स्वत्व अङ्गीकार नहीं किया। अभी टालबट फाटक पर ही खड़ा था कि डौफिन की सेना ने आकर उसको घेर लिया।

टालबट के पास बहुत थोड़ी सेना थी और शत्रु का सामना करने में असमर्थ थी। उसने यार्क और सोमरसेट से सहायता की प्रार्थना की! परन्तु वे दोनों आपस में झगड़ा कर रहे थे, भला टालबट को कैसे सहायता भेजते। यार्क ने उद्योग भी किया कि किसी प्रकार कुछ सेना टालबट के पास पहुँचा दी जाय। परन्तु सोमरसेट ने डाह के मारे सेना भेजने में देर कर दी। क्योंकि हनरी ने रिचार्ड यार्क को फ़ांस का अध्यक्ष नियत किया था और यदि विजय हो जाती तो इसमें रिचार्ड यार्क का ही नाम होता।

इस समय टालबट का पुत्र जॉन अपने पिता से मिलने आया, टालबट ने सात वर्ष से उसे देखा न था और अब अपना

अन्त निकट समझकर उसने इसे इसलिए बुलाया था कि युद्ध-विद्या में कुछ शिक्षा दे सके। जौन अपने पिता से ऐसे समय मिल सका जब टाल्बट शत्रु के बीच मे घिरा हुआ था। इसलिए उसने अपने पुत्र से कहा कि जल्दी से भाग जा।

जौन—क्या मैं आपका पुत्र नहीं हूँ? क्या मैं भाग जाऊँगा? यदि आप मेरी माता से प्रेम करते हो तो मुझे रण से भगाकर उसका अपमान न कीजिए क्योंकि मुझे भागता हुआ देखकर लोग कहेंगे कि यह टाल्बट का पुत्र नहीं है।

टाल्बट—अरे भाग भाग! यदि मैं मर गया तो तू बदला ले सकेगा।

जौन—जो इस प्रकार भागेगा वह बदला कब ले सकेगा।

टाल्बट—अगर हम दोनों रहे तो दोनो मरेंगे।

जौन—तो आप जाइए। मैं यहीं रहूँगा। आपके मरने से अधिक हानि होगी। मुझे कोई नहीं जानता इसलिए मैं मरा भी तो क्या? आपकी मृत्यु से सब निराश हो जायँगे। आपके पराक्रम इतने हैं कि एक बार भागने से उनमें कमी नहीं आ सकती। परन्तु यदि पहली ही लड़ाई से मैं भाग गया तो बड़े अपयश की बात है। यदि आप भागेंगे तो लोग कहेंगे कि यह नीतिज्ञता है, परन्तु मेरे भागने को लोग भय से ही सम्बद्ध करेंगे। मरना अच्छा है परन्तु अपयश के साथ जीना भला नहीं।

टाल्बट—मैं तुझे भागने की आज्ञा देता हूँ।

जौन—मैं भाग नहीं सकता। मैं लड़ाई करूँगा।

टालबट—यदि तू भाग जायगा तो तेरे पिता का नाम जीवित रहेगा।

जौन—केवल अपयश के साथ।

टालबट—पिता की आज्ञा से भागने में कुछ दोष नहीं है।

जौन—आप तो मर जायँगे फिर उसको साक्षी कौन देगा। यदि मृत्यु का होना ही सच है तो हम दोनों भाग चलें।

टालबट—फिर मेरे साथियों का क्या हाल होगा? मेरे श्वेत बालों में धब्बा लग जायगा।

जौन—फिर मेरी युवावस्था में क्यों धब्बा लगे? मैं आपके पास से नहीं जा सकता। चाहे ठहरिए चाहे जाइए!

टालबट—अच्छा, यहीं रहेंगे। और यदि भागेंगे तो साथ-साथ स्वर्ग को भागेंगे!

अब युद्ध हुआ और बाप-बेटे दोनों इस वीरता से लड़े कि शत्रु के दाँत खट्टे हो गये। यदि सोमरसेट और यार्क की सहायता पहुँच जाती तो फरासीसियों की अवश्य हार होती। परन्तु अकेला टालबट क्या-क्या करता। जौन का युद्ध दर्शनीय था। वह जिस ओर से निकल जाता था शत्रु के दल के दल खाली हो जाने से और काई सी फट जाती थी। एक बार जीन डार्क ने जौन से कहा कि "आ मुझसे लड़।" परन्तु उसने बड़े अभिमान के साथ उत्तर दिया कि "अंगरेज़ वीर कदापि स्त्रियों पर हाथ नहीं उठाते।" यह कहकर वह उसको क्रोध में चला गया। एक बार शत्रु ने उसे घेर लिया परन्तु

टालबट ने आकर उसे बचा लिया। इस प्रकार घण्टों लड़ते-लड़ते यह दोनों थक गये और पहले जौन मारा गया फिर टालबट घायल होकर मर गया। इन दोनों की मृत्यु पर फ़रासीसियों को बड़ी ख़ुशी हुई क्योंकि अब अँगरेज़ों के दल में कोई ऐसा बाक़ी नहीं रहा था जो विजय पा सके। यद्यपि कई वीर पुरुष अभी जीवित थे। परन्तु फूट और डाह के मारे उनकी वीरता निकम्मी हो रही थी। अब चार्ल्स फ़्रांस का राजा हो गया!

परन्तु अभी लड़ाई बन्द न हुई और ऐंजीर्स के युद्ध में रिचार्ड यार्क ने जेन डार्क को पकड़ लिया! फ़रासीसी सेना भाग गई और किसी ने इस युवती के छुड़ाने का प्रयत्न नहीं किया, जिसने फ़्रांस को अँगरेज़ों के स्वत्व से मुक्त किया था।

अँगरेज़ों ने इस अबला के साथ बड़ा अत्याचार किया। उस पर जादूगरनी होने का दोष लगाया गया। उस समय जादू करना बड़ा दोष माना जाता था और जिस पर इसका सन्देह होता था उसको जीते जी जला दिया जाता था। यही हाल जेन डार्क के साथ हुआ। बहुत से पादरियों ने बैठकर उसको इसी दण्ड के योग्य ठहराया और बहुत बड़ी अग्नि जलाकर उसे उस पर फेंक दिया। इस प्रकार इस प्रवीरा कुमारी का जीवन समाप्त हुआ जिसने अपने पराक्रमों से अच्छे अच्छों के दाँत खट्टे कर दिये थे। फ़रासीसियों की कृतघ्नता

और अँगरेज़ों के निर्दयीपन ने एक विचित्र आत्मा को संसार से उठा लिया।

इसी युद्ध में ऐंजू के राजा की लड़की मारगरेट अँगरेज़ी सेना के सफ़ोक के हाथ लग गई। मारगरेट बड़ी रूपवती थी। इसके रूप को देखकर सफ़ोक का चित्त उसकी ओर आकर्षित हो गया। परन्तु उसका विवाह हो चुका था इसलिए मारगरेट के साथ सम्बन्ध करना असम्भव था। अतएव उसने यह विचार किया कि इस युवती को इँगलेण्ड की महारानी बनाना चाहिए। मारगरेट ने इस बात को स्वीकार कर लिया और उसके पिता से इस शर्त पर सन्धि हो गई कि उसको ऐंजू का राज लौटा दिया जाय।

सफ़ोक ने इँगलेण्ड में आकर राजा हनरी को उसके लिए राज़ी किया। उधर रोम से पोप ने भी आग्रह किया कि फ्रांस और इँगलेण्ड के युद्ध में सहस्रों ईसाइयों का रक्तपात होता है। इसलिए सन्धि हो जानी चाहिए।

यद्यपि ऐसे समय में जब इँगलेण्ड के हाथ से फ्रांस का बहुत सा भाग निकल चुका था और यार्क को जोन के मर जाने से फिर यह आशा हो चली थी कि गया हुआ राज फिर लौट आवे उसे यह सन्धि अच्छी नहीं लगी, परन्तु उसका कुछ वश नहीं चला। वह कहने लगा—

'क्या हमारे सब कर्मों का यही परिणाम निकला। क्या इतने सेनापतियों तथा योद्धाओं की मृत्यु के पश्चात् जिन्होंने

केवल अपने देश के हित के लिए अपने शरीरों को बलिदान कर दिया, हम इस अपमान के साथ सन्धि करेंगे। क्या झूठ, कपट, छल तथा विद्रोह के कारण हमने फ़्रांस के बड़े-बड़े प्रान्त हाथ से नहीं दे दिये, जिनको हमारे पूर्वजों ने रक्त बहाकर जीता था। शोक ! शोक !"

परन्तु अब हो क्या सकता था। यह सन्धि केवल पोप के आग्रह से की गई थी और विञ्चेस्टर का लाट पादरी, जो ग्लौस्टर का बड़ा शत्रु था, पोप के इस प्रस्ताव का कारण था। चार्ल्स डौफ़िन भी यही चाहता था कि जिस प्रकार हो सके सन्धि हो जाय, क्योंकि इस समय मुख्य-मुख्य प्रदेश उसके हाथ लग चुके थे। इसलिए इस शर्त पर सन्धि हुई कि चार्ल्स डौफ़िन सदा हनरी का मित्र रहेगा और उसकी आज्ञा का पालन किया करेगा और कभी इँगलंण्ड-नरेश से वैर न करेगा। यह शर्त केवल नाम मात्र थी; क्योंकि सब प्रसिद्ध स्थान चार्ल्स के हाथ में थे, अँगरेज़ों को कर लेने का भी अधिकार न था। अब सिवा कैले के और कोई फ़्रांस-देशीय स्थान उनके पास नहीं रहा था। परन्तु अब यहाँ उस युद्ध की समाप्ति हो गई जो एडवर्ड (तृतीय) के समय में आरम्भ हुआ था और जिसको शताब्दीय युद्ध (HUNDRED YEARS' WAR) कहते हैं।

छठे हनरी की मारगरेट के साथ शादी हो गई और उसके बदले में ऐंञ्जू और मेन नामी दो प्रान्त उसके पिता को दे दिये गये।

छठा हनरी—दूसरा भाग

(HENRY VI. PART II.)



हम प्रथम भाग मे बता चुके हैं कि छठे हनरी और डौफ़िन चार्ल्स से सन्धि हो गई। अब चार्ल्स डौफ़िन युवराज नहीं रहा किन्तु फ़्रांस का सम्राट् हो गया। मारगरेट सफ़ोक के साथ इँगलेण्ड मे आई जिसका हनरी ने बड़े समारोह से स्वागत किया और भरी सभा मे सब मंत्रियों ने अपनी इस नई महारानी को प्रणाम किया। सबने उसकी चिरायु के लिए असीम दी। इसके पश्चात् सन्धिपत्र पढ़ा गया जिसमें लिखा हुआ था—

"फ़्रांस-नरेश चार्ल्स* और इँगलेण्ड-नरेश हनरी के एलची विलियम डीलापूल सफ़ोक के मध्य मे यह सन्धिपत्र लिखा गया कि हनरी का विवाह नेपिल्स, सिसली और जरूसलम के राजा की पुत्री मारगरेट से हो और १३वीं मई से पहले पहल वह इँगलेण्ड की महारानी बनाई जाय; ऐंजू और

---

*सफ़ोक का पूरा नाम विलियम डीलापूल था।

मेन जो पहले इसके पिता के अधीन थे फिर उसे लौटा दिये जायँ; और मारगरेट हनरी के खर्च पर इँगलेण्ड को लाई जाय। यह भी निश्चित हुआ कि उसे कुछ यौतुक न दिया जाय।"

हनरी ने इस पर बड़ा हर्ष प्रकट किया और डीलापूल को, जो अब तक सफोक का* मार्किस ही था, ड्यूक बना दिया और मारगरेट को महारानी बनाने के लिए बड़ी-बड़ी तैयारियाँ कीं। परन्तु इस विवाह तथा सन्धि से हनरी के मन्त्रिगण ख़ुश नहीं हुए। ग्लौस्टर, सालसबरी, वारिक, विंचेस्टर का पादरी और रिचार्ड यार्क ये सब लोग लंदन के राज-महल मे बैठे-बैठे इस प्रकार वार्त्तालाप करने लगे—

ग्लौस्टर—"इँगलेण्ड के मन्त्रिगण! राज्य के स्कन्ध! मैं आपके सम्मुख अपना दुःख प्रकाशित करता हूँ। यह केवल मेरा ही दुःख नहीं है किन्तु आपका और समस्त जाति का दुःख है। क्या मेरे भाई ने वीरता, धन तथा सेना इस फ़ांस की विजय के लिए अर्पण नहीं की थी। क्या उसने जाड़े और गर्मी में इसी के लिए कष्ट नहीं सहे। क्या बेडफ़र्ड ने इसी लिए अपने प्राण नहीं दिये। क्या वीर यार्क, सालसबरी, वारिक, आप लोगों ने फ़ांस और नारमण्डी के रणक्षेत्रों में घाव नहीं खाये? यदि

* मार्किस का पद ड्यूक से नीचा होता है।

ऐसा है तो क्या इन सब कष्टों का यही परिणाम होना था? हम लोग रात-दिन कोशिश करते-करते थक गये कि किसी प्रकार फ़ांस हाथ से न जाय। परन्तु इन सबका परिणाम यह हुआ कि अपयश-सूचक सन्धि करनी पड़ी। क्या इस विवाह से भी अधिक घृणित कोई बात हो सकती थी जिसने हम सबकी वीरता को पानी में मिला दिया। आज कई पीढ़ियों की वीरता का चिह्न फ़ांस से मिट गया।

सालसबरी—ईसा की सौगन्ध ऐंज्जू और मेन नारमण्डी की कुञ्जियाँ थीं और यह हाथ से चली गईं।

वारिक—मुझे तो रोना आता है कि अब फ़्रांस को कभी न ले सकेंगे। हाय! जो देश मैंने घाव खाकर जीते थे वे बात की बात में दे दिये गये।

यार्क—यह सब इसलिए है कि अब सफ़ोक की चलती है। मेरी चलती होती तो मैं कभी इस सन्धि का अनुमोदन न करता चाहे मेरी बोटी-बोटी उड़ जाती। मैंने किसी इतिहास में नहीं पढ़ा कि किसी इँगलेण्ड-नरेश का विवाह बिना यौतुक के हुआ हो। यहाँ हमारा सम्राट् अपनी रानी के बदले अपने देशों को बेच रहा है।

ग्लौस्टर—विवाह क्या है हास्य है। देखो सफ़ोक इसके मार्ग-व्यय का कितना रुपया माँगता है। इससे तो वह फ़्रांस में ही क्यों न रह गई।

विंचेस्टर का पादरी—आप बहुत गर्म हो रहे हैं। क्या आप नहीं जानते कि हमारे सम्राट् की यही इच्छा थी ?

ग्लौस्टर—मैं आपकी इच्छा को भले प्रकार समझता हूँ। न केवल मेरी बात ही आपको बुरी लगती है किन्तु मेरी उपस्थिति से भी आपको दुःख होता है। अभिमानी पादरी! आपके चहरे से क्रोध के चिह्न प्रकट हो रहे हैं। यदि मैं यहाँ रहा तो न जाने क्या मुँह से निकल जाय, इसलिए जाता हूँ।

ग्लौस्टर तो चला गया अब विंचेस्टर के पादरी ने कहा—"ग्लौस्टर महाशय बड़े क्रोध में जाते हैं। आप लोग जानते हैं कि इसको मुझसे वैर है। न केवल मुझसे ही किन्तु आप सब से। यह हनरी के वंश में निकटतम है और सन्तानाभाव की अवस्था में उसका उत्तराधिकारी भी यही है। इसी लिए यह सब कोप है। आप सब लोग सावधान रहिए और इसकी बातों में न आइए, यद्यपि साधारण लोग उसको "भला! भला!" कहते हैं परन्तु मुझे तो इससे भय होता है।

बकिङ्घम—यदि ऐसा है तो हम लोग इसको राजा का संरक्षक न रहने देंगे। हम सब इसको निकाल बाहर करेंगे।

यह कहकर बकिङ्घम और पादरी सफ़ोक की सम्मति लेने के लिए चले गये। रिचार्ड यार्क अपने मन में सोचने लगा कि "ऐंजू और मेन तो हाथ से निकल ही गये, पेरिस छिन गया। नार्मण्डी भी गया ही सा है। लोगों ने सन्धि कर ली। हनरी

सोमरसेट—यदि मैं इस पद के अयोग्य हूँ तो यार्क को अध्यक्ष कर दिया जाय ! मैं उसके अधीन रहूँगा ।

वारिक—चाहे आप योग्य हों या अयोग्य ! यार्क को अध्यक्ष होना चाहिए ।

विंचेस्टर का पादरी—वारिक ! अपने बड़ों को बोलने दे ।

वारिक—रणक्षेत्र में पादरी बड़े नहीं होते ।

सालसबरी—अच्छा बताइए सोमरसेट को क्यों अध्यक्ष होना चाहिए ।

रानी मारगरेट—क्योंकि राज यही चाहते हैं ।

ग्लौस्टर—महाराज स्वयं इतने बड़े हैं कि अपनी इच्छा प्रकट कर सकते हैं । राज-काज में स्त्रियों की आवश्यकता नहीं ।

मारगरेट—अगर महाराज बड़े हैं तो आपके संरक्षक होने की क्या आवश्यकता है ।

ग्लौस्टर—महारानी ! मैं राज का संरक्षक हूँ और महाराज के इच्छानुसार इस पद को छोड़ सकता हूँ ।

सफ़ोक—तो छोड़ क्यों नहीं देते ? तुम्हीं अब तक राज कर रहे हो । तुम्हारे शासन में देश की बड़ी अवनति हुई है । तुम्हारे ही शासन में डौफ़िन ने फ़्रांस का इतना भाग ले लिया और सब प्रसिद्ध पुरुष आज तुम्हारे दास बन रहे हैं ।

विंचेस्टर का पादरी—तूने प्रजा को लूट लिया और धर्म* धन नष्ट कर दिया।

सोमरसेट—और राज-कोष तेरे मकान और तेरी स्त्री के बहुमूल्य कपड़ों की भेंट हो गया।

मारगरेट—और तूने नगर के नगर फ्रांस में शत्रु के हाथ बेच दिये।

सफोक—मैं सिद्ध करूँगा कि यार्क इस पद के लिए सब से अनुचित मनुष्य है।

यार्क—मैं ही क्यों न कह दूँ। सबसे पहली अयोग्यता तो यही है कि मैं तेरी ख़ुशामद नहीं कर सकता। दूसरी बात यह कि अगर मैं इस पद पर नियत भी हो गया तो सोमरसेट धन और सेना मेरी सहायता को न भेजेगा और डौफ़िन रहा-सहा देश भी ले लेगा। यही हाल तो पेरिस का हुआ था।

बहुत झगड़े के पश्चात् सोमरसेट फ़्रांस के अँगरेज़ी प्रान्तों का अध्यक्ष नियत हुआ।

अब ग्लौस्टर के अधःपतन की बारी आई। यद्यपि ग्लौस्टर राजभक्त था परन्तु उसकी स्त्री एलीनर ऐसी न थी। वह लेडी मैकबेथ की भाँति इँगलैण्ड की महारानी होना चाहती थी।

* यह कर जो धर्मसंस्था (Church) की ओर से प्रजा पर धर्मार्थ के लिए लगाया जाता है।

एक दिन जब ग्लौस्टर अपने घर में बैठा हुआ कुछ सोच-विचार कर रहा था तब एलीनर ने कहा—

"स्वामिन्, किस सोच में हो! आज आपका सिर पक्के खेत की भाँति क्यों झुक रहा है। आज आपकी आँख पृथ्वी पर क्यों लगी हुई है? आप क्या देख रहे हैं? क्या आपकी दृष्टि हनरी के राजमुकुट पर है। यदि ऐसा है तो प्रयत्न कीजिए और राजमुकुट धारण कीजिए। हाथ बढ़ाइए और मुकुट उतार लीजिए। हम तुम दोनों इँगलेण्ड पर राज करेंगे!

ग्लौस्टर—प्यारी! यदि तुम अपने पति से प्रेम करती हो तो ऐसे विचारों को अपने अन्तःकरण से दूर कर दो। ईश्वर न करे कि अपने महाराज से मैं विरोध करूँ। मेरे दुःख का कारण भयानक स्वप्न है जो मैंने रात देखा है। मैंने देखा कि मैं संरक्षण से पृथक् कर दिया गया और सफ़ोक और सोमरसेट मेरे स्थानापन्न हो गये।

एलीनर—यह कुछ भी नहीं है। मैंने रात यह देखा कि मैं और तुम राजमुकुट पहने हुए बैठे हैं और हनरी तथा मारगरेट हमको प्रणाम कर रहे हैं।

ग्लौस्टर—एलीनर! एलीनर! ऐसे विचारों को दूर कर। क्या तू अपना और अपने पति का नाम विद्रोहियों में लिखाना चाहती है। हे ईश्वर! मेरी रक्षा कर।

यह कहकर ग्लौस्टर तो चला गया परन्तु एलीनर अपनी सी कोशिश करती रही। उसने सगुन लेनेवालों को बुलाया

जिन्होंने कहा कि "हनरी मारा जायगा।" फिर उसने सफ़ोक के विषय में पूछा। उन्होंने सगुन विचार कर कहा कि "समुद्र के बीच में उसकी मृत्यु होगी।" सोमरसेट के सम्बन्ध में सगुन यह निकला कि वह नगर छोड़कर बराबर वनवास करे। एलीनर इस सगुन को निकलवा रही थी कि बकिङ्घम ने उसकी बातें सुन लीं और राजा हनरी से सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया।

अब क्या था मारगरेट तो पहले से ही उसके विरुद्ध हो रही थी। उसने सफ़ोक से कई बार कह दिया था कि जिस प्रकार हो सके ग्लौस्टर के संरक्षण से महाराज को मुक्त करना चाहिए। भरी सभा में एलीनर पर विद्रोह का अपराध लगाया गया और वह जीवन-पर्यन्त के लिए मान टापू में क़ैद कर दी गई।

इसके पश्चात् हनरी ने ग्लौस्टर को संरक्षक-पद से अलग कर दिया और स्वतंत्र हो गया। इस प्रकार ग्लौस्टर ने जो स्वप्न देखा था वह ठीक हो गया। उसके अधःपतन में केवल इतनी ही कसर रही थी कि अभी उसके प्राणों पर हस्ताक्षेप नहीं किया गया था। परन्तु अब उसकी भी बारी आई। हनरी ने बेरी नामी नगर में राजसभा की और ग्लौस्टर को बुलाया। जिस समय ग्लौस्टर ने निमंत्रण की सूचना पाई उसी समय उसका माथा ठनकने लगा; क्योंकि इस सभा के करने में उसकी सम्मति नहीं ली गई थी। वह समझ गया

कि अवश्य दाल मे कुछ काला है। बेरी मे राजसभा हुई। राजा, रानी, विंचेस्टर का पादरी, सफ़ोक, यार्क, बकिंहुम और अन्य प्रतिष्ठित पुरुष बैठे हुए थे। उनके सामने राजा ने कहा—

"ग्लौस्टर अभी नहीं आये। वह तो कभी पीछे नहीं रहते थे। न जाने क्या कारण हुआ ?"

मारगरेट—क्या तुम देखते नहीं हो कि थोड़े दिनों से उसकी क्या दशा हो रही है। उसका मुँह कैसा चमकता जाता है और वह कैसा अभिमानी होता जाता है। हम उसे उस समय से जानते हैं जब वह आज्ञा-पालन मे तत्पर रहता था। क्या आपने देखा नहीं था, कि टेढ़ी आँख होते ही उसका सिर झुक जाता था और समस्त राजसभा उसकी राजभक्ति की प्रशंसा करती थी। परन्तु अब उसका हाल ही और है। प्रातःकाल को सब लोग प्रणाम-दण्डवत् किया करते हैं परन्तु यदि हम ग्लौस्टर को मिल जायँ तो वह नाक-भौं चढ़ा लेता है और उचित प्रणाम भी नहीं करता। छोटे पिल्लों के गुर्राने का कोई ख़याल नहीं करता परन्तु शेरों की धाड़ से बड़े-बड़े लोग डर जाते हैं। आप जानते हैं कि ग्लौस्टर कोई छोटा आदमी नहीं है जिसके क्रोध का कुछ ख़याल न किया जाय। पहले तो वह वंश के ख़याल मे आपसे निकटतम है। यदि दुर्भाग्यवश आपको कुछ हो

जाय तो वह झट गद्दी पर चढ़ बैठेगा। इसलिए उसके विचारों को देख मुझे तो यही उचित मालूम होता है कि आप उसे अपने पास न आने दीजिए और अपने मन के भावों को उस पर प्रकट न कीजिए। उसने ख़ुशामद से सर्वसाधारण के हृदय को आकर्षित कर लिया है और मुझे भय है कि यदि कहीं उसने सिर उठाया तो सब लोग उसे सहायता देंगे। अभी तो बेटी बाप की है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। विद्रोह की जड़ें अभी गहरी नहीं जमीं। परन्तु यदि इनके उखाड़ने का प्रबन्ध न किया गया तो विद्रोह-रूपी वृक्ष अपने विषैले फल दिये बिना न रहेगा। सफ़ोक, बकिङ्घम और यार्क! मैं आप लोगों से सविनय पूछती हूँ कि यदि मेरा कहना असत्य हो तो मुझे ठीक रास्ते पर लाइए।

सफोक—महारानीजी ने ठीक कहा है। यदि मुझे आज्ञा दी जाती तो मैं भी आपके ही कथन को कहता। इसकी स्त्री तो महाराज के मारने का ही प्रयत्न कर रही थी। वह अपने किये को पहुँच गई। परन्तु अब ग्लौस्टर से सावधान रहना चाहिए। गहरी जगह में नदी बिना किसी कोलाहल के बहती है। जब लोमड़ी मेमने को पकड़ती है तो भोंकती नहीं। यही हाल ग्लौस्टर का है। न जाने उस चुप्पे के मन में क्या-क्या बातें काम कर रही हैं।

विंचेस्टर का पादरी—क्या उसने नियम-विरुद्ध छोटे-छोटे दोषों के लिए लोगों को प्राण-दण्ड नहीं दिया ?

यार्क—क्या अपने संरक्षण के समय में उसने फ्रांस भेजने के लिए प्रजा पर अनुचित कर नहीं लगाया जिसको उसने कभी नहीं भेजा और जिसके कारण नगर के नगर विरुद्ध हो गये ?

बकिङ्घम—यह दोष तो बहुत तुच्छ हैं। अभी इनसे भी बड़े-बड़े अपराध हैं जिनसे ग्लौस्टर का हृदय कलंकित है और जिनको आप लोग नहीं जानते।

हनरी—महाशयो ! मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ कि आप मुझसे इतना प्रेम रखते हैं और मेरे मार्ग से कण्टक-निवृत्ति की कोशिश करते हैं। परन्तु मेरा अन्तःकरण यही कह रहा है कि ग्लौस्टर निर्दोष है। वह इतना कोमल-हृदय है कि उसके आत्मा में मेरे अहित की बात नहीं आ सकती ! वह तो हंस के समान अपराध-रहित है।

मारगरेट—इस अज्ञान से अधिक हानिकारक क्या हो सकता है ? आप उसे हंस कहते हैं। परन्तु उसने वास्तव में हंस के पर लगा लिये हैं, उसकी आन्तरिक दशा बगले के समान है। छली पुरुष इसी प्रकार अपने छलों को छिपाया करते हैं। हमारा भला इसी में है कि इस दुष्ट को अलग कर दिया जाय।

इस समय सोमरसेट आया और उसने यह कुसमाचार सुनाया कि फ़्रांस के रहे-सहे प्रान्त भी हाथ से निकल गये! उसके पश्चात् ग्लौस्टर आया और कहने लगा—

"महाराज की जय हो! श्रीमान् मुझे क्षमा करें। आने में कुछ देर हो गई।"

सफ़ोक—नहीं ग्लौस्टर! आप जल्दी आये हैं। यदि आप राजभक्त होते तो अवश्य हम आपसे देरी की शिकायत करते। परन्तु अब मैं आपको विद्रोह के कारण पकड़वाता हूँ।

ग्लौस्टर—मुझे इससे कुछ भी भय नहीं है। क्योंकि शुद्ध-हृदय मनुष्य कभी नहीं डरते। शुद्ध से शुद्ध नदी भी इतनी शुद्ध नहीं होती जितना मेरा अन्तःकरण विद्रोह से शुद्ध है। मुझ पर कौन दोषारोपण कर सकता है?

यार्क—आप पर यह दोष लगाया गया है कि फ़्रांस में आपने रिशवत ली और सेना को वेतन नहीं दिया जिससे महाराज की सेना पराजित हो गई।

ग्लौस्टर—कौन है जो यह बात कहता है? मैंने कभी सेना को वेतन से वञ्चित नहीं किया! और न कभी एक पाई तक रिशवत ली। ईश्वर जानता है कि मैं इँगलेण्ड के हित के लिए रातोंरात जागते हुए विचार करता रहा हूँ। यदि मैंने एक पैसा भी अनुचित रीति से लिया हो

तो ईश्वर न्याय के समय मुझे दण्ड दे। यही नहीं, मैंने बहुत सा अपना रुपया सेना को केवल इसलिए दे दिया कि कहीं प्रजा पर अधिक कर न लगाना पड़े; और कभी इस रुपये को माँगा तक नहीं।

विंचेस्टर का पादरी—यही कथन आपका हितकर है।

ग्लौस्टर—ईश्वर जानता है कि मैं सत्य कहता हूं।

यार्क—अपने संरक्षण के समय अपने अपराधियों को ऐसे कठोर दण्ड दिये कि इँगलेण्ड कठोरता के लिए बदनाम हो गया!

ग्लौस्टर—सब लोग जानते हैं कि यदि मेरे शासन का कोई दोष था तो नम्रता! अपराधी के अश्रुपात पर मेरा हृदय पिघल जाता था। हाँ मनुष्य-हत्या के बदले में अवश्य प्राणदण्ड देता था।

सफ़ोक—श्रीमन्, इन दोषों का उत्तर तो आप सरलता से दे सकते हैं। परन्तु आप पर तो इनसे भी घोरतर अपराध लगाये गये हैं जिनसे आपका जल्दी छुटकारा नहीं हो सकता। इसलिए मैं आपको पकड़कर पादरीजी के हवाले करता हूँ।

हनरी—लार्ड ग्लौस्टर! मुझे पूर्ण आशा है कि आप इन दोषों को असत्य सिद्ध कर देंगे, क्योंकि मेरा अन्तःकरण कह रहा है कि आप निर्दोष हैं।

ग्लौस्टर—महाराज! यह समय बड़ा बुरा है। ऐश्वर्य की इच्छा ने शुभ गुणों को छिपा रक्खा है। लोगों से दया

का भाव उठ गया। श्रीमान् के देश से न्याय का अभाव हो गया। मैं जानता हूँ कि यह सब मेरे प्राण लेना चाहते हैं। यदि मेरी मृत्यु से इस देश में शान्ति हो जाय तो मैं बड़ी ख़ुशी से प्राण देने को उद्यत हूँ! परन्तु मेरी मृत्यु इन लोगों के अत्याचारों की भूमिका है। पादरी की लाल-लाल आँखें मेरे कथन को पुष्ट कर रही हैं। सफोक की चढ़ी हुई भौंहें उसके वैर-भाव को प्रकट कर रही हैं; बकिङ्घम की वाणी उसके अन्तःकरण को दिखा रही है और यार्क की इच्छा मेरी जान लेने की है। हे महारानीजी! आपने बिना किसी कारण के मेरे सिर पर अनेक दोष आरोपण कर दिये हैं। मैं यह नहीं चाहता कि झूठे साक्षी इकट्ठे किये जायँ। लोकोक्ति है कि "कुत्ते को मारने के लिए लकड़ी मिल ही जाती है।"

पादरी—महाराज! इसकी गालियाँ असह्य हो रही हैं। यदि आपके रक्षकों को इस प्रकार कोसा जाय और कोसनेवाले से कुछ न कहा जाय तो न जाने क्या परिणाम हो!

सफोक—क्या इस दुष्ट ने महारानीजी को झूठा कहकर उनका अपमान नहीं किया?

मारगरेट—परन्तु मैं दुःखी मनुष्य को आज्ञा देती हूँ कि जो चाहे सो कहे।

ग्लौस्टर—ठीक कहा! मैं अवश्य दुःखी हूँ।

बकिङ्घम—यह तो बातें बनाकर दिन भर बिता देगा। इस-लिए पादरीजी! इसे पकड़ लीजिए।

ग्लौस्टर—आज हनरी प्रबल होने से पूर्व ही अपने सहारे को नष्ट किये देता है। आज भेड़िये गड़रिये को भेड़ों के पास से भगाये देते हैं। हनरी! आज मुझे अपना भय नहीं, किन्तु तेरे प्राणों का भय है, क्योंकि ये भेड़िये पहले तुझे ही काटेंगे।

अब ग्लौस्टर को तो लोग पकड़कर ले गये। परन्तु हनरी शोक के मारे उठने लगा। मारगरेट ने कहा—"क्या आप राज-सभा से जाते हैं?"

हनरी—हाँ मारगरेट! मेरा हृदय शोक से पूरित हो रहा है। मेरे आँसू निकले आ रहे हैं। मेरा शरीर दुःख से ग्रसित हो रहा है। क्योंकि अशान्ति से अधिक और क्या दुःख हो सकता है। ग्लौस्टर! मुझे तो तू सच्चा और राज-भक्त मालूम होता है। परन्तु हा! कैसे बुरे ग्रह आये हैं कि ये सब लोग, यहाँ तक कि महारानी मारगरेट भी तेरी जान लेना चाहती है। तूने इनका कुछ नहीं बिगाड़ा। जिस प्रकार कसाई बछड़े को बाँधते हैं और यदि वह भागता है तो उसे मारते हैं इसी प्रकार ये लोग तेरे साथ व्यवहार करते हैं। हाय! मैं तो यही कहूँगा कि ग्लौस्टर सच्चा राजभक्त है।

यह कहकर हनरी तो सभा से उठ गया, परन्तु बाक़ी लोगों ने निश्चय कर लिया कि ग्लौस्टर को मार डालना

चाहिए। पहले तो नियमानुसार उस पर अभियोग चलाने का विचार हुआ। परन्तु मारगरेट इससे सहमत न हुई। क्योंकि उसे डर था कि हनरी ग्लौस्टर को बचाने की कोशिश करेगा। इसलिए यह सलाह हुई कि उसे गुप्त रीति से मरवा डालना चाहिए। इस विचार के अनुकूल सफ़ोक ने घातकों द्वारा उसे मरवा डाला।

इसी समय यह भी ख़बर मिली कि आयर्लेण्ड के लोगों ने सिर उठाया है और बहुत से अँगरेज़ राजपुरुषों को मार डाला। उनके दमन के लिए यार्क बहुत सी सेना के साथ भेजा गया। यार्क इस काम से बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि उसकी इच्छा किसी तरह राज्य लेने की थी। उसने यह भी इरादा किया कि केण्ट के एक प्रसिद्ध पुरुष केड के द्वारा वह इंगलेण्ड में विद्रोह मचावे और अवसर मिलने पर अपनी सेना सहित आकर हनरी को राजगद्दी से च्युत कर दे।

जब हनरी को यह पता लगा कि ग्लौस्टर मारा गया तो उसे बहुत शोक हुआ। यद्यपि सफ़ोक और मारगरेट उसकी हत्या को छिपाने लगे, परन्तु राजा को विश्वास हो गया कि यह काम पादरी और सफ़ोक की सलाह से हुआ है। उसकी मृत्यु को सुनते ही राजा मूर्छा खाकर गिर पड़ा। जिस समय उसकी आँख खुली तो सफ़ोक उससे कह रहा था—"महाराज! सन्तोष कीजिए।" हनरी ने उत्तर दिया—"अरे सफ़ोक! क्या तू मुझे सन्तोष दिलाता है। अरे

अपने विष को मीठी बातों से क्यों छिपाता है ? इन हाथों से मुझे मत छू; क्योंकि यह मुझे साँप के समान काटे खाते हैं। अरे तू मुझे मत देख, क्योंकि तेरी आँखों से मुझे डर लगता है। हाय ! तूने ग्लैास्टर को मार डाला।"

मारगरेट—आप सफ़ोक को क्यों कहते हैं। यद्यपि सफ़ोक और ग्लैास्टर मे शत्रुता थी परन्तु सफ़ोक को उसकी मृत्यु पर शोक है। यदि आज ग्लैास्टर जी जाय तो मैं रोते-रोते अपनी आँखें फोड़ दूँ।

जिस समय हनरी इस प्रकार दुःख प्रकट कर रहा था, ग्लैास्टर की मृत्यु की ख़बर नगर में फैल रही थी। समस्त प्रजा ग्लैास्टर को प्यार करती थी। लोगों को पता लग चुका था कि पादरी और सफ़ोक ने उसे मरवा डाला है। इसलिए वे सब इकट्ठे होकर राजमहल पर आये और सालसबरी और वारिक के द्वारा राजा को संदेसा भेजा कि या तो सफ़ोक को अभी प्राणदण्ड दे दिया जाय या उसे सदा के लिए देश से निकाल दिया जाय। नहीं तो हम अभी द्वार तोड़कर सफ़ोक को निकाल लेंगे और पत्थरों से उसका सिर कुचल देंगे। जिस समय हनरी यह सोच रहा था कि क्या किया जाय, उस समय लोगों की भीड़ राजमहल के दरवाजे पर कोलाहल कर रही थी। अन्त में हनरी ने सफ़ोक को देश-निकाला दे दिया। मारगरेट ने उसकी बहुत सिफ़ारिश की, परन्तु हनरी ने उसकी बात न सुनी और हुक्म दे दिया कि यदि सफ़ोक परसों तक

चाहिए। पहले तो नियमानुसार उस पर अभियोग चलाने का विचार हुआ। परन्तु मारगरेट इससे सहमत न हुई। क्योंकि उसे डर था कि हनरी ग्लौस्टर को बचाने की कोशिश करेगा। इसलिए यह सलाह हुई कि उसे गुप्त रीति से मरवा डालना चाहिए। इस विचार के अनुकूल सफ़ोक ने घातकों-द्वारा उसे मरवा डाला।

इसी समय यह भी खबर मिली कि आयर्लेण्ड के लोगों ने सिर उठाया है और बहुत से अँगरेज़ राजपुरुषों को मार डाला। उनके दमन के लिए यार्क बहुत सी सेना के साथ भेजा गया। यार्क इस काम से बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि उसकी इच्छा किसी तरह राज्य लेने की थी। उसने यह भी इरादा किया कि कैण्ट के एक प्रसिद्ध पुरुष केड के द्वारा वह इँगलैण्ड में विद्रोह मचावे और अवसर मिलने पर अपनी सेना सहित आकर हनरी को राजगद्दी से च्युत कर दे।

जब हनरी को यह पता लगा कि ग्लौस्टर मारा गया तो उसे बहुत शोक हुआ। यद्यपि सफ़ोक और मारगरेट उसकी हत्या को छिपाने लगे, परन्तु राजा को विश्वास हो गया कि यह काम पादरी और सफ़ोक की सलाह से हुआ है। उसके मृत्यु को सुनते ही राजा मूर्छा खाकर गिर पड़ा। जिस समय उसकी आँख खुली तो सफ़ोक उससे कह रहा था—"महाराज! सन्तोष कीजिए।" हनरी ने उत्तर दिया—"अरे सफ़ोक! क्या तू मुझे सन्तोष दिलाता है। अरे

अपने विष को मीठी बातों से क्यों छिपाता है ? इन हाथों से मुझे मत छू; क्योंकि यह मुझे साँप के समान काटे खाते हैं। अरे तू मुझे मत देख, क्योंकि तेरी आँखों से मुझे डर लगता है। हाय ! तूने ग्लौस्टर को मार डाला।"

मारगरेट—आप सफ़ोक को क्यों कहते हैं। यद्यपि सफ़ोक और ग्लौस्टर में शत्रुता थी परन्तु सफ़ोक को उसकी मृत्यु पर शोक है। यदि आज ग्लौस्टर जी जाय तो मैं रोते-रोते अपनी आँखें फोड़ दूँ।

जिस समय हनरी इस प्रकार दुःख प्रकट कर रहा था, ग्लौस्टर की मृत्यु की खबर नगर में फैल रही थी। समस्त प्रजा ग्लौस्टर को प्यार करती थी। लोगों को पता लग चुका था कि पादरी और सफ़ोक ने उसे मरवा डाला है। इसलिए वे सब इकट्ठे होकर राजमहल पर आये और सालसबरी और वारिक के द्वारा राजा को संदेसा भेजा कि या तो सफ़ोक को अभी प्राणदण्ड दे दिया जाय या उसे सदा के लिए देश से निकाल दिया जाय। नहीं तो हम अभी द्वार तोड़कर सफ़ोक को निकाल लेंगे और पत्थरों से उसका सिर कुचल देंगे। जिस समय हनरी यह सोच रहा था कि क्या किया जाय, उस समय लोगों की भीड़ राजमहल के दरवाज़े पर कोलाहल कर रही थी। अन्त में हनरी ने सफ़ोक को देश-निकाला दे दिया। मारगरेट ने उसकी बहुत सिफ़ारिश की, परन्तु हनरी ने उसकी बात न सुनी और हुक्म दे दिया कि यदि सफ़ोक परसों तक

इँगलेण्ड मे पाया गया तो उसका सिर काट लिया जायगा! इस प्रकार ग्लौस्टर के घातकों मे से एक तो देश से निकल गया। अब दूसरे का हाल सुनिए।

विंचेस्टर का पादरी ग्लौस्टर की मृत्यु के पश्चात् ही उन्मत्त हो गया। ईश्वर ने स्वयं ही उसे दण्ड देना चाहा। वह आत्म-अनुताप के मारे चिल्लाने लगा। राजा और अन्य पुरुष उसके पलँग के पास पहुँचे, परन्तु उसने किसी को नहीं पहचाना और ग्लौस्टर की मृत्यु के विषय में बकवाद करता रहा। उसकी अन्त समय की बातचीत यह प्रकट कर रही थी कि निस्सन्देह ग्लौस्टर की मृत्यु का कारण वही था। अन्त में राजा ने कहा—

"पादरी! ईश्वर से क्षमा माँग और अपने हाथों को जोड़।" परन्तु इस पादरी का जीवन ऐसा पापमय था कि अन्त समय ईश्वर का नाम भी उसके मुँह से न निकला और उसके हाथ भी आकाश की ओर न उठे। वह इसी दुःख में समाप्त हो गया। हनरी पर इसकी मृत्यु का बड़ा प्रभाव पड़ा और जब वारिक ने कहा कि "इस बुरी मौत से मालूम होता है कि इसने कितने पाप किये थे" तब राजा ने उत्तर दिया "हम कुछ नहीं कह सकते! क्योंकि वारिक! हम सब पापी हैं।"

सफ़ोक को भी फ़्रांस में ईश्वर ने सुरक्षित न रहने दिया। क्योंकि थोड़े ही दिनों में वह क़ैद कर लिया गया, और एक नाव पर लोग उसे कैण्ट में ले आये, जहाँ वह अपने शत्रु विट-

मोर के हाथ से मारा गया। इस प्रकार यह सगुन ठीक हो गया कि सफ़ोक समुद्र मे मरेगा!

हम ऊपर कह चुके हैं कि यार्क ने आयर्लेण्ड को चलते समय कैण्ट के एक मनुष्य केड को विद्रोह के लिए उभार दिया था। इसलिए अब उसने बहुत से आदमियों को इकट्ठा कर लिया और लन्दन पर चढ़ाई करने की तैयारी कर ली। उसके दल में बहुत से गँवार मिल गये और केड ने उनके हृदयों को बहुत सी विचित्र आशाओं से भर दिया। उसके साथियों मे डिक नामी क़साई और स्मिथ नामी जुलाहा भी था। इनके अतिरिक्त बहुत से नीच जातियों के आदमी थे। उसने अपने लिए एक गढ़न्त यह गढ़ी कि मेरा बाप लाइनल क्लेरेंस का पुत्र था, जिसे बालकपन मे कोई चुराकर ले गया था: इसलिए उसने राज (विश्वकर्मा) का काम करना आरम्भ किया, और कैण्ट में रहने लगा! इस अद्भुत वंशावली के द्वारा उसने अपने को राज का अधिकारी प्रकट किया और अपने साथियों से कहा कि अगर मैं राजा हो जाऊँगा तो अन्न बड़ा सस्ता कर दूँगा। सब लोग समानता से रहेंगे। ऊँच-नीच में कुछ भेद न रहेगा। सबने यह सुनकर केड महाराज के जयजयकार बोले। केड ने इसके उत्तर में कहा—

"सज्जनो! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मेरे राज में रुपये के सिक्के न होंगे, क्योंकि रुपयों की आवश्यकता ही न होगी। सब मेरा सिर खायेंगे। मैं सबको एक से वस्त्र

बनवा दूँगा, जिससे सब लोग भाई के समान रहें और मुझे अपना राजा कहें।"

डिक—सबसे पहले हम वकीलों को मारेंगे।

केड—हाँ, हाँ! यह ज़रूर होगा। कैसे अन्याय की बात है कि निर्दोष भेड़ की खाल से कागज़ बनाया जाय जिस पर लिखकर लोग अपने भाइयों का सत्यानाश करें। लोग कहते हैं कि मक्खी डङ्क मारती है, पर मैं कहता हूँ कि मोम डङ्क मारता है। क्योंकि मैंने एक बार एक चीज़ पर मुहर कर दी और मुझे कष्ट उठाना पड़ा।

इस प्रकार के मनुष्यों ने विद्रोह का झण्डा उठाया। राज्य की ओर से हम्फ़रे स्टफ़र्ड और उसका भाई विलियम स्टफ़र्ड उनके दमन के लिए भेजे गये। उन्होंने जाकर बहुत समझाया कि जो लोग केड का साथ छोड़ देंगे उनको महाराज क्षमा कर देंगे। परन्तु किसी ने उनकी न सुनी। अन्त में ब्लैकहीथ पर लड़ाई हुई। परन्तु हम्फ़रे और विलियम दोनों खेत रहे और उनकी सेना अपने सेनापतियों को मरता देखकर भाग निकली। अब क्या था, विद्रोहियों के दिल बढ़ गये, वे चौगुने उत्साह से लड़ने लगे। अब उन्होंने समझा कि हम अवश्य देश को जीत लेंगे। अब उन्होंने लन्दन की ओर कूच किया और शीघ्र ही लन्दन के पुल पर पहुँच गये। जब यह ख़बर राजमहल में पहुँची तो राजा के पेट में पानी हो गया और उसने जाकर रानी सहित

क्लिगवर्थ मे शरण ली। राजा की ओर से अब मैथ्यूगफ़ बहुत बड़ी सेना के साथ केंड का सामना करने के लिए भेजा गया। परन्तु वह भी मारा गया। नगर भर मे लूट मच गई। विद्रोहियों ने महलों को तोड़ डाला। कागज़ों को जला दिया और सैकड़ों मनुष्यों को मार डाला। लार्ड से और उसके दामाद को पकड़ लिया और इस अपराध मे उनके सिर काट लिये कि उन्होने फ्रांस के युद्ध के लिए लोगों से कर लिया था।

जब इन्होंने यह आफ़त मचा दी तो बकिङ्घम और क्लिफ़र्ड इनके हराने के लिए आगे बढे और बकिङ्घम ने कहा—

"केड! हम राजा की ओर से यह कहने आये हैं कि जो लोग तेरा साथ छोड़ देंगे उनको महाराज क्षमा कर देंगे।"

क्लिफर्ड—भाइयो, क्या कहते हो। क्या तुम इसका साथ छोड़कर दया के पात्र बनोगे, या विद्रोही बनकर मारे जाओगे? तुममे से जो लोग राजभक्त हों उनको चाहिए कि अपनी टोपी उछाल दें।

केंट ने देखा कि सब लोग राजा के लिए जयजयकार बोलने और टोपियाँ उछालने लगे। इसलिए उसने कहा—

"भाइयो! क्या तुम क्लिफ़र्ड के बहकाने में आ गये! क्या तुमको यह नहीं मालूम कि यह लोग प्रजा के शत्रु हैं। क्या अभी मेरी तलवार टूट गई जो तुम निराश होकर मेरा साथ छोड़े जाते हो। क्या तुम ऐसे अधम हो कि अपनी

प्राचीन स्वतंत्रता को खोये देते हो? यदि इस समय भी अपने बच्चों, अपनी स्त्रियों और अपने घरों का हित चाहो तो अवश्य मेरा साथ दो।"

मूर्ख लोगों का बहकाना क्या दुस्तर था। उनमें निज की बुद्धि तो थी ही नहीं, वे झट से केड के साथ हो गये। इस पर क्लिफ़र्ड ने कहा—

"भाइयो! क्या तुम केड को राजवंशी समझे हो? क्या तुमको आशा है कि यह जाकर फ़ांस को जीतेगा और तुममे से हर एक को जागीरे दे सकेगा। क्या तुमको यह नहीं मालूम कि इसके पास रहने को घर तक नहीं है। भाइयो! अपने हाथ अपने पैर में कुल्हाड़ी क्यों मारते हो! मुझे तो यह दीखता है कि केड का वश चला तो तुमको लूटकर खा जायगा और शीघ्र ही फ़रासीसी लोग, जिनको तुम कई बार हरा चुके हो, आकर तुमको जीत लेंगे।"

इतना सुनना था कि वही लोग जो अब तक केड के साथी थे अब क्लिफ़र्ड के साथी हो गये और केड अपने को अकेला जानकर भाग गया। उसके पकड़ने के लिए एक हज़ार रुपये का विज्ञापन दे दिया गया। पहले तो वह केण्ट के जङ्गलों या बाग़ों में छिपा रहा। एक दिन आइडिन नामी एक किसान ने उसे मार डाला!

हनरी अभी एक आपत्ति से नहीं निकल पाया था कि उसके सिर पर दूसरी आ पड़ी। यह ऐसी विपत्ति थी जिसने

आयु भर उसे चैन न लेने दिया और एक दिन उसके प्राणों की लेवा हो गई। अभी केड के विद्रोह को दमन करके लोग आये भी नहीं थे कि यार्क की चढ़ाई का कुसमाचार सुनाई दिया। हम ऊपर बता चुके हैं कि रिचार्ड यार्क बहुत सी सेना सहित आयर्लैण्ड के विद्रोह-दमन को गया हुआ था। वहाँ से लौटकर उसने लन्दन पर चढ़ाई कर दी, क्योंकि वह बहुत दिनों से राज छीन लेने का अवसर ढूँढ़ रहा था।

बकिङ्घम एक सेना लेकर डार्टफ़र्ड और ब्लैकहीथ के बीच मे यार्क से मिलने गया और उससे कहा—"यार्क! यदि तुम्हारा उद्देश बुरा न हो तो मैं तुमसे मिलने आया हूँ।"

यार्क—मैं बहुत ख़ुश हूँ। परन्तु क्या तुम राजा के भेजे हुए हो अथवा स्वयं आये हो?

बकिङ्घम—मुझे महाराज ने भेजा है कि तुमसे इस चढ़ाई का कारण पूछूँ।

यार्क—बकिङ्घम! क्षमा करो। मेरे मन मे बड़ा दुःख है। इतनी सेना इकट्ठी करने का कारण यह है कि मैं सोमरसेट को महाराज के पास से हटाना चाहता हूँ। क्योंकि उसका रहना राजा और देश दोनों के लिए हानिकारक है।

बकिङ्घम—यदि तुम्हारा यही प्रयोजन हो तो अच्छी बात है। महाराज ने आपकी इच्छा पूर्ण की और सोमरसेट को क़ैद कर लिया!

यार्क—क्या सत्य कहते हो कि सोमरसेट क़ैद हो गया?

बकिंघम—सत्य कहता हूँ।

यार्क—अच्छा मैं सिपाहियों को लौटाये देता हूँ। मैं महाराज का भक्त हूँ।

यह कहकर वह राजा के सामने गया और उसको प्रजावत् प्रणाम किया। राजा के पूछने पर उसने कहा कि मैं सेना को इसलिए लाया था कि सोमरसेट को क़ैद कर लूँ और दुष्ट केड को अपने किये की सज़ा दूँ।

जिस समय यह बातें हो रही थीं, सोमरसेट मारगरेट के साथ वहाँ पर आ गया। क्योंकि हेनरी ने वास्तव में सोमरसेट को क़ैद नहीं किया था। इसको देखते ही यार्क के तन में आग लग गई और कड़ककर कहने लगा—"क्यों! क्यों! क्या सोमरसेट छूट गया! अच्छा फिर मैं भी अपने गुप्त विचारों को प्रकट करता हूँ। क्या मैं सोमरसेट को देख सकता हूँ? झूठे राजा! तूने मुझे धोखा दिया। मैं तुझे राजा कहता हूँ। पर तू राजा नहीं है। तू राज्य करने के योग्य नहीं है। तू इतने लोगों को वश में नहीं रख सकता। यह सिर राज-मुकुट के योग्य नहीं है। अब मैं तुझे राज करने न दूँगा। राजा मैं हूँ।

सोमरसेट—विद्रोही! विद्रोही! राजद्रोही! मैं तुझे पकड़ता हूँ।

इस पर बड़ा झगड़ा हुआ। यार्क के लड़के भी वहाँ पर आ गये। वारिक और सालिसबरी ने भी आकर यार्क के पक्ष में

ही कहना आरम्भ किया। अब तो खुल्लमखुल्ला लड़ाई आरम्भ हो गई। ऐसी अवस्था में किसका बल था कि यार्क को पकड़ सकता! हनरी ने वारिक और सालसबरी से कहा—

"अरे वारिक! क्या तू अपने राजा को भी भूल गया! सालसबरी! तुझे इन श्वेत केशों पर भी लज्जा नहीं आती। तेरी राजभक्ति क्या हुई। यदि तेरे समान वृद्ध पुरुष भी विद्रोह करने लगें तो औरों का क्या हाल होगा।"

सालसबरी—महाराज! मैंने यार्क के अधिकार पर पूर्ण रीति से विचार किया है। मेरा आत्मा यही कह रहा है कि इँगलेण्ड के राज्य का वास्तविक अधिकारी यही है।

हनरी—क्या तूने मेरी भक्ति की शपथ नहीं खाई थी!

सालसबरी—हाँ।

हनरी—फिर ईश्वर को इससे विमुख होने के लिए क्या उत्तर देगा!

सालसबरी—अनुचित बात के लिए शपथ खाना पाप है और पापयुक्त शपथ के अनुकूल चलना महापाप। यदि किसी ने किसी की हत्या करने, किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करने, किसी अनाथ का माल लेने या किसी विधवा को लूटने की शपथ खाई हो तो क्या उसे ऐसी प्रतिज्ञा का पालन करना उचित है?

अब वारिक और यार्क अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर सेण्ट एलबन्स की ओर चले। उनके मुक़ाबले के लिए क्लिफ़र्ड राज्य

भी सेना लेकर उसी ओर गया और बड़ा घोर युद्ध हुआ। परन्तु क्लिफ़र्ड यार्क के हाथ से मारा गया।

सोमरसेट भी यार्क के लड़के रिचार्ड के हाथ से मारा गया। इस प्रकार यार्क के मुख्य-मुख्य शत्रु नष्ट हो गये। मारगरेट ने हेनरी को खेत में देखकर कहा—"स्वामिन्! भाग जाओ! जल्दी भाग जाओ!"

हेनरी ने निराश होकर कहा—

"मारगरेट! ठहरो। भला ईश्वर से भागकर कहाँ जायँ।"

मारगरेट—अरे! तुम किस चीज के बने हो कि न लड़ते हो और न भागते हो। यही बुद्धिमत्ता और पुरुषत्व है कि शत्रु को मार्ग दे दिया जाय। यदि तुम पकड़े गये तो हम सबकी मौत है। यदि हम भाग जायँ तो जल्दी से लन्दन पहुँच सकते हैं और वहाँ हमारे साथी हमारी सहायता करेंगे।

इस प्रकार हेनरी अपनी महारानी सहित लन्दन को भाग गया और जीत यार्क के हाथ लगी। यह अपने बेटे रिचार्ड से पूछने लगा—

"क्या किसी ने मालसरी को भी देखा है? वह छुआ मालसरी, जो वसन्त में अपने कुसुम को भूल जाता है, वो गर्मी में भी अधिक महकता है। यदि आप मालसरी सा शान्त हो तो वह हमारी जीत नहीं, किन्तु हार है।"

रिचार्ड—पूज्य पिताजी! मैंने आज तीन बार उसे घोड़े पर चढ़ाया और तीन बार लड़ने से निषेध किया। परन्तु वह ऐसी ही जगह पहुँच जाता था जहाँ भय अधिक हो। जिस प्रकार सादे मकान मे सुनहरे परदे लगे हों इसी प्रकार इस वृद्धावस्था में उसका साहस मालूम होता है।

इतने मे सालसवरी वहीं पर आ गया और कहने लगा—

"आज हम सब ख़ूब लड़े। ईश्वर जाने मुझे कितने दिन और जीना है। आज उसने तीन बार मुझे मृत्यु के ग्रास से बचाया! परन्तु यह बात अच्छी नहीं हुई कि शत्रु भाग गये। क्योंकि वे अब फिर युद्ध की तैयारियाँ करेंगे।"

यार्क—हमारा इसी मे भला है कि उनके पीछे-पीछे लन्दन को चलें। मैंने सुना है कि हनरी राजसभा करने लन्दन को गया है। इसलिए हुक्म लिखे जाने से पूर्व ही हम वहाँ पहुँच जायँ तो अच्छा है। कहो वारिक, क्या कहते हो!

वारिक—उनके पीछे नहीं, किन्तु आगे जाना चाहिए।

इस प्रकार यार्क ने सेण्ट एलबन्स की लड़ाई जीतकर हनरी का पीछा किया। इसका वर्णन तीसरे भाग में किया जायगा।



छठा हेनरी—तीसरा भाग

(HENRY VI. PART III.)

दूसरे भाग में यह बताया जा चुका है कि सेण्ट ऐल्बन्स की लड़ाई से हारकर छठा हेनरी राजसभा करने के लिए लन्दन से आया और सभासदों को निमन्त्रित करके सभा की। जिस समय सभाभवन (Parliament House) में राजनैतिक वर्तमान दुर्घटना पर विचार कर रहे थे, यार्क अपने पुत्रों, एडवर्ड और रिचार्ड तथा नार्फोक और वारिक, के साथ वहीं पर आ गया। इनकी टोपियों में श्वेत गुलाब के फूल लगे हुए थे और इनके विपक्षियों अर्थात् हेनरी के साथियों का चिह्न लाल गुलाब था; इसलिए इस युद्ध को जो सेण्टऐल्बन्स की लड़ाई से आरम्भ हुआ और बराबर ३० वर्ष तक रहा गुलाब-युद्ध के नाम से प्रसिद्ध किया गया है।

जिस समय यार्क अपने साथियों सहित राजसभा-भवन की ओर आता था उसका विचार हेनरी को पकड़ लेने का था। परन्तु हेनरी पहले भागकर निकल गया। इसी लिए

जब वारिक ने कहा कि "न जाने हनरी किस तरह हमारे हाथ से निकल गया," तब यार्क ने उत्तर दिया—

"जब हम नार्थम्बरलैण्ड की सेना का पीछा कर रहे थे, हनरी अपने आदमियों को छोड़कर भाग गया और जब नार्थम्बरलैण्ड, स्ट्रटफ़र्ड और *क्लिफ़र्ड ने हमारे ऊपर धावा किया तब नार्थम्बरलैण्ड मारा गया।" इस पर एडवर्ड ने अपनी रक्त-मय तलवार को दिखाकर कहा कि "मैंने स्ट्रटफ़र्ड के बाप बकिङ्घम को मार डाला।"

रिचार्ड ने सोमरसेट के सिर को पटककर कहा—"मेरे पराक्रम को यह स्वयं कह देगा।"

यार्क—रिचार्ड ने सबसे प्रशंसनीय काम किया। परन्तु क्या लार्ड सोमरसेट! आप मर गये?

नार्फ़ोक—जोन आफ़† गाण्ट की सब सन्तान को यही आशा रखनी चाहिए।

रिचार्ड—इस प्रकार मैं हनरी के सिर को हिलाऊँगा!

अब इन लोगों ने भवन में जाकर यार्क को राजगद्दी पर बिठा दिया। बेचारे सभासद इनका मुँह ताकते रहे। किसी की यह हिम्मत न पड़ी कि कुछ कह सकता!

* यह क्लिफ़र्ड उस क्लिफ़र्ड का लड़का था जो पहले मर चुका था।

† चतुर्थ हनरी का पिता।

यार्क का गद्दी पर पैर रखना था कि हेनरी वहाँ पर आ गया। क्लिफ़र्ड, नार्थम्बरलैण्ड (पहले नार्थम्बरलैण्ड का लड़का) वेस्टमोरलैण्ड और एक्सीटर उसके साथ थे। हेनरी ने अपनी गद्दी पर यार्क को बैठा देखकर सभासदों से कहा—

"महाशयो! देखो यह राजशत्रु सिंहासन पर बैठा है और दुष्ट वारिक की सहायता से इँगलैण्ड का राजा होना चाहता है। क्लिफ़र्ड और नार्थम्बरलैण्ड! देखो इसने तुम दोनों के पिताओं का संहार किया है। इसलिए तुमको इससे बदला लेना चाहिए।"

नार्थम्बरलैण्ड—ईश्वर मेरी सहायता करे! मैं अवश्य बदला लूँगा।

क्लिफ़र्ड—इसी लिए मैंने अभी शस्त्र हाथ से नहीं रक्खा।

वेस्टमोरलैण्ड—अभी मैं इस दुष्ट को गद्दी से खींचे लेता हूँ।

वह यार्क को खींचने के लिए आगे बढ़ने लगा। इतने में हेनरी ने कहा—

"यार्क! दुष्ट यार्क! नीचे उतर और मेरे सामने माथा टेक! मैं तेरा राजा हूँ।"

यार्क—मैं तेरा राजा हूँ।

एक्सीटर—छि! छि! अरे तुझे हेनरी ने यार्क का ड्यूक बनाया था।

यार्क—यह जागीर मेरे बाप-दादों की है।

एक्सीटर—तेरा बाप राजशत्रु था।

यार्क—तू स्वयं राजद्रोही है जो हनरी का साथ देता है।

हनरी—अरे क्या मैं खड़ा रहूँ और तू सिंहासन पर बैठा रहे।

यार्क—अवश्य, अवश्य! यही होगा! तुझे संतोष करना चाहिए।

वारिक—लङ्कास्टर की जागीर तुझे मिल सकती है। यार्क राज करेगा।

वेस्टमोरलैण्ड—वह राज भी करेगा और लङ्कास्टर की जागीर भी लेगा।

वारिक—वारिक ऐसा करने न देगा। क्या तुम मुझे भूल गये, जिसने तुम्हारे पिता को हराकर मार डाला था।

नार्थम्बरलैण्ड—वारिक! याद रख! तुझे और तेरे सम्बन्धियों को इसका बदला देना पड़ेगा।

वेस्टमोरलैण्ड—यार्क! तू और तेरे लड़के! नहीं, नहीं! तेरे वंश के इतने आदमी मारे जायँगे जितनी बूँद रक्त मेरे बाप के शरीर में था!

यार्क—(सभासदों से) क्या आप लोग यह जानना चाहते हैं कि मेरा राज पर क्या अधिकार है?

हनरी—तेरा राज पर कुछ भी अधिकार नहीं। तेरा बाप तेरी तरह यार्क का ड्यूक था। तेरा पितामह मार्टीमर, मार्च का जागीरदार था। मैं पाँचवें हनरी का पुत्र हूँ, जिसने डॉफ़िन से फ़्रांस को छीन लिया।

वारिक—फ़्रांस के विषय में क्यों कहता है। उसे तो तू खो चुका!

हनरी—क्या तुम समझते हो कि हनरी अपना राज इस तरह छोड़ देगा! वह राज, जिस पर उसके बाप और दादे ने राज किया है।

यार्क—अच्छा! अपना अधिकार सिद्ध कर दे; और फिर राज लेना है।

हनरी—चौथे हनरी ने इँगलैण्ड को जीतकर राज किया था।

यार्क—नहीं! वह अपने राजा से लड़ पड़ा था।

हनरी—क्या राजा गद्दी नहीं त्याग सकता?

यार्क—इससे क्या प्रयोजन?

हनरी—यदि ऐसा है तो मैं नियमानुसार राजा हूँ, क्योंकि रिचर्ड ने सब लोगों के सामने मुकुट चौथे हनरी को दे दिया था।

यार्क—उससे बलात्कार से मुकुट ले लिया गया!

वारिक ने इस समय अपने पैर ज़मीन पर मारे और बाहर के सुनते ही पुकार के सिपाही राजभवन में घुस आये। अब तो हनरी डर गया और समझा कि मैं क़ैद हुआ। अब उसने यार्क से कहा कि "यावज्जीवन मुझे राज करने दो। इसके पश्चात् राज तुम्हारा और तुम्हारी सन्तान का।" यार्क ने यह बात स्वीकार कर ली और गद्दी से उतर पड़ा। उसने शपथ खाई कि कभी मन, वाणी या कर्म से हनरी का विरोध न करूँगा। हनरी ने लिख दिया कि मेरे पीछे राज यार्क या उसके पुत्रों का होगा।

छठे हनरी के एक लड़का था, जिसका नाम था एडवर्ड और जिसको यार्क के लड़के एडवर्ड से भिन्न करने के लिए हम प्रिंस आफ़ वेल्ज़ कहेंगे। जिस समय महारानी मारगरेट ने सुना कि मेरे लड़के को राज के अधिकार से च्युत कर दिया है, तो वह बहुत बिगड़ी। मारगरेट हनरी की तरह डरपोक या मृदु स्वभाव की नहीं थी। वह कभी राज देने को तैयार नहीं थी। इसलिए इस प्रतिकूल खबर के सुनते ही प्रिंस आफ़ वेल्ज़ को साथ लिये वह वहाँ पर आ पहुँची और हनरी को बुरा-भला कहने लगी। हनरी ने कहा—"प्यारी रानी! सन्तोष करो।"

मारगरेट—ऐसी दशा मे कौन सन्तोष कर सकता है? अभागे आदमी! अच्छा होता अगर मैं तुझसे विवाह न करती और तेरे लिए पुत्र न जनती। क्योंकि तूने अपने पुत्र के साथ ऐसा अन्याय किया! क्या उसका जन्म का अधिकार इस प्रकार नष्ट हो गया। यदि तू उसे मेरी अपेक्षा आधा भी चाहता या तूने उसके जनने मे मुझसे आधा भी कष्ट उठाया होता या जिस प्रकार अपने रुधिर से मैंने उसका पोषण किया उसी प्रकार तूने किया होता तो तू अपने प्राण देना पसन्द करता परन्तु अपने पुत्र को राज के अधिकार से च्युत करना स्वीकार न करता!

प्रिंस आफ़ वेल्ज़—पिताजी! जब आप राजा हैं तो मैं क्यों न होऊँ?

हनरी—मारगरेट! क्षमा करो! प्रिय पुत्र! क्षमा करो! वारिक और यार्क ने मुझे मजबूर करके स्वीकार करा लिया।

मारगरेट—मजबूर करके! हाँ, मजबूर करके! क्या यह राजा है? राजाओं को कौन मजबूर कर सकता है? हे कायर अभागे! तूने अपना, मेरा और अपने पुत्र का नाश कर लिया। क्या तू समझता है कि अब बच जायगा? क्या भेड़ियों से घिरी हुई भेड़ बच जाती है? यदि मैं तेरी जगह होती तो चाहे सिपाही लोग भालों पर उछाल-उछालकर मुझे मार डालते परन्तु इस अन्याय-युक्त बात को स्वीकार न करती! परन्तु तू अपने प्राणों को यश से अधिक चाहता है। अतएव मैं तेरे पास से जाती हूँ और जब तक राजसभा से यह निश्चय न हो जायगा कि तेरे पीछे मेरा लड़का गद्दी पर बैठेगा उस समय तक तेरे पास न आऊँगी। मैं जाती हूँ और नार्थम्बरलैण्ड आदि की सहायता से यार्क का सामना करूँगी।

यह कहकर मारगरेट प्रिंस आफ़ वेल्ज को साथ लिये वहाँ से चली गई और बहुत सी सेना के साथ वेकफ़ील्ड के पास यार्क का मुक़ाबला किया! क्लिफ़र्ड, नार्थम्बरलैंड और बहुत से अन्य योद्धा इसके साथ थे। पहले तो क्लिफ़र्ड ने यार्क के छोटे लड़के रटलैण्ड को जो महल में अपने अध्यापक के साथ पढ़ रहा था पकड़ लिया और उसे मारकर उसके रक्त से रूमाल रँग लिया। फिर वे सब समरक्षेत्र में आकर लड़ने लगे।

बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। यार्क के लड़के बड़े साहस से लड़े। तीन बार रिचार्ड ने यार्क के लिए रास्ता कर दिया और कहा—"पिताजी! साहस से लड़िए।" एडवर्ड कई बार रुधिर-भरे वस्त्रों सहित अपने बाप की सहायता को आया। रिचार्ड अपनी सेना को अपने उत्साह से उत्तेजित कर रहा था और कहता जाता था कि या तो राज मिलेगा या मौत! परन्तु इनकी वीरता काम न आई। यार्क की हार हुई और मारगरेट ने विजय पाई। यार्क के लड़के तो भाग गये। परन्तु वह इतना थक गया था कि खेत से न उठ सका और मारगरेट, क्लिफ़र्ड और नार्थम्बरलैण्ड ने उसे पकड़ लिया! मारगरेट ने उसके साथ बड़े अत्याचार किये। पहले तो काग़ज़ का मुकुट बनाकर उसके सिर पर रख दिया गया, फिर उसके पुत्र रटलेण्ड के ख़ून से भीगा हुआ रूमाल उसके मुँह पर डाल दिया गया। जब वह रोने लगा तब मारगरेट ने उसको बहुत अपशब्द कहे और अन्त में पहले क्लिफ़र्ड ने, फिर मारगरेट ने उसे मार डाला।

इस समय वारिक लन्दन में था। जब उसने सुना कि वेकफ़ील्ड में उसके साथियों की हार हुई और यार्क मारा गया तो वह शीघ्र ही वहां से सेण्ट एलबन्स की ओर बढ़ा कि रानी मारगरेट को लन्दन आने से रोक दे। क्योंकि वेकफ़ील्ड की जीत से प्रफुल्लित होकर मारगरेट लन्दन को आने तथा राजसभा से अपने पुत्र को युवराज नियत कराने के लिए

आ रही थी। हनरी इस समय भी वारिक के साथ था। सेण्ट एलवन्स के निकट आकर फिर भारी युद्ध हुआ। वारिक की सेना हार गई और जिस समय यह लोग भागने लगे, हनरी उनके हाथ से छूटकर रानी मारगरेट से जा मिला।

यार्क के मरने के उपरान्त उसका लड़का एडवर्ड यार्क वालों का मुखिया बना और यद्यपि इन लोगों की दो लड़ाइयों में हार हो चुकी थी तथापि वारिक ने हिम्मत न हारी और इन लोगों को इकट्ठा करके जल्दी से लन्दन में पहुँच गया। यद्यपि जीत मारगरेट की हुई थी परन्तु अभी उसे लन्दन जाने में सफलता नहीं हुई थी कि एडवर्ड लन्दन पहुँचकर वारिक की सहायता से चौथे एडवर्ड के नाम से राजगद्दी पर बैठ गया और देश भर में अपने राजा होने का ढंढोरा पिटवा दिया! अब मारगरेट, हनरी और प्रिंस आफ़ वेल्ज क्लिफ़र्ड और नार्थम्बरलैण्ड समेत यार्क नगर में आये। नगर के द्वार पर यार्क का सिर लटका हुआ था। उसकी ओर संकेत करके मारगरेट ने कहा—

"स्वामिन्! देखिए! आपका शत्रु, जिसने आपका राज-मुकुट लेने का इरादा किया था, वह है। उसे देखकर अपने हृदय को सन्तुष्ट कीजिए।"

परन्तु हनरी को इस दृश्य से संतोष नहीं हुआ, क्योंकि उसका आत्मा कह रहा था कि मेरे पितामह ने बलात्कार और अन्याय से राज ले लिया था और वास्तव में यह राज यार्क को ही मिलना चाहिए। यदि हनरी का बस चलता तो वह

कभी यार्क के विरुद्ध लड़ाई न करता। परन्तु उसकी रानी झगड़ा मचा रही थी। हनरी जैसा न्याय-प्रिय था वैसा बलवान् नहीं था। इसलिए अपनी इच्छा पूर्ण करने में उसे सफलता नहीं होती थी। पहले दिखलाया जा चुका है कि उसका संरक्षक ग्लौस्टर किस प्रकार उसकी इच्छा के विरुद्ध मारा गया, फिर मारगरेट ने किस प्रकार उसे युद्ध के लिए उत्तेजित किया। इन सब बातों से भली भाँति प्रकट होता है कि हनरी का हृदय कोमल और बलहीन था। मारगरेट की बात सुन कर वह कहने लगा—

"मेरे आत्मा को दुःख होता है। हे ईश्वर! क्षमा कर! यह मेरा अपराध नहीं है।

क्लिफ़र्ड ने इस पर कहा—

"महाराज! आपको ऐसी कोमलता उचित नहीं है। सिंह कभी किसी पर दया नहीं करते। क्या साँप उस मनुष्य को बिना काटे छोड़ देता है जो उसकी पीठ पर पैर रखता हो! दबकर तो चींटी भी काट खाती है। यार्क ने आपका राज लेने की इच्छा की थी और आपके लड़के को राज से च्युत कर दिया था। आपने इसका विरोध न किया। पक्षी भी उस मनुष्य पर आक्रमण करते हैं जो उनके बच्चों को मारता हो। इन्हीं से शिक्षा ग्रहण कीजिए। आप अपने लड़के की ओर देखिए। आपके पीछे यह कहेगा कि "जिस राज को मेरे परदादे और दादे ने प्राप्त किया था उसको मेरे

बाप ने खो दिया;" इसलिए राजन्! अपने हृदय को कठोर कीजिए और अपने राज की रक्षा करने का प्रयत्न कीजिए।

हनरी—क्लिफ़र्ड! तुम्हारी युक्तियाँ प्रबल हैं। परन्तु क्या तुमने नहीं सुना कि अन्याय से ली हुई चीज़ दुःखदायी होती है? पुत्र को तो वही पिता अच्छा लगता है जो उसके लिए धन एकत्र करके नरक को चला जाय। मैं अपने पुत्र के लिए अपने शुभ कार्य्य छोड़ जाऊँगा। अच्छा होता अगर मेरे पिताजी मेरे लिए कुछ न छोड़ जाते! हाय! यार्क तेरे सिर को देखकर मुझे कैसा खेद होता है।

जब यह बातें हो रही थीं उसी समय चतुर्थ एडवर्ड और वारिक सेना सहित वहाँ पर आ गये। एडवर्ड ने कहा—

"झूठे हनरी! मेरे आगे माथा टेक और अपना मुकुट मेरे सिर पर रख।"

मारगरेट—चल! छोकरे! परे हट!

एडवर्ड—मैं इसका राजा हूँ। इसलिए इसको चाहिए कि अपने सम्राट् के आगे सिर झुकावे! इसने मुझे अपना उत्तराधिकारी चुना था; अब प्रतिज्ञा भंग करके अपने पुत्र को राज देना चाहता है।

क्लिफ़र्ड—यह तो उचित बात है। पिता के पीछे पुत्र राजा होता है।

रिचार्ड—अरे क़साई! तू भी बोलता है!

क्लिफ़र्ड—हाँ मैं बोलता हूँ। तू या तेरे बड़े मेरा क्या कर सकते हैं ?

रिचार्ड—इस क़साई ने बालक रटलैण्ड को मार डाला।

क्लिफ़र्ड—और बूढ़े यार्क को भी!

वारिक—हनरी! राज देने को तैयार है या नहीं ?

मारगरेट—हा! हा! बातूनी वारिक! सेण्ट एलबन्स में तेरी टाँगों ने तेरे हाथों की अपेक्षा अधिक काम किया था।

वारिक—तब मैं भागा था, अब तेरी बारी है।

क्लिफ़र्ड—तू तो पहले भी यही कहता था।

वारिक—तो क्या तूने मुझे भगाया था ?

एडवर्ड—हनरी! क्या तू मुझे मेरा राज्य देगा ?

वारिक—अगर न देगा तो इतने आदमियों का ख़ून इसके सिर है। क्योंकि एडवर्ड को राज मिलना ही न्याय है।

प्रिंस आफ़ वेल्ज़—यदि यही न्याय है तो अन्याय क्या होगा ?

रिचार्ड—अपनी मा का सिखाया बोल रहा है।

मारगरेट—अरे तू तो बाप मा किसी की कहीं नहीं मानता!

रिचार्ड—हा! हा! तू बोलती है। अब इँगलैण्ड में आकर तुझे यह साहस हो गया! तेरा बाप भी राजा कहलाता है; जैसे कोई* नाले का नाम समुद्र रख दे।

---

* मारगरेट का पिता नेपिल्स आदि कई देशों का राजा कहलाता था, यद्यपि उसके पास मेन और ऐंजू के सिवा और कुछ नहीं था।

इस प्रकार थोड़ी देर तक यह लोग वाक्युद्ध करते रहे। परन्तु इसके पश्चात युद्ध आरम्भ हुआ। टौटन नामी नगर के पास दोनों दल मिले और ऐसा घोर युद्ध हुआ कि समस्त इँगलेण्ड वीरों से ख़ाली हो गया। कहते हैं कि दोनों ओर के बीस-बीस हज़ार आदमी मारे गये। समस्त गुलाब-युद्ध में टौटन की लड़ाई सबसे बड़ी हुई। पहले तो यार्क वाले हारते हुए मालूम हुए, परन्तु अन्त मे उनकी जीत हो गई। इस युद्ध ने हनरी को बहुत निर्बल कर दिया और उसके उभरने की कोई आशा न रही, क्लिफर्ड मारा गया। अन्य बहुत से योद्धा खेत रहे। हनरी अपनी रानी और लडके सहित स्काटलैण्ड को भाग गया। चौथे एडवर्ड का लन्दन मे आकर बड़े समारोह से राज्याभिषेक हुआ।

थोड़े दिनों के पश्चात् हनरी को अपने देश की याद आई और वह उसे बिना देखे न रह सका। इसलिए एक दिन पुजारी का भेष रख, हाथ में धर्मपुस्तक लिये हुए इँगलेण्ड के उत्तरी भाग मे आ निकला और यह देखकर कि वही इँगलेण्ड, जिस पर वह थोड़े दिनों पहले राज करता था और जो उसका देश कहलाता था, आज दूसरों के हाथ में है, उसकी आखो से आँसू निकल पड़े। दो शिकारियों ने, जो उस समय उसी वन मे आखेट के लिए गये हुए थे, उसे पकड़ लिया और चौथे एडवर्ड के हवाले कर दिया। एडवर्ड ने उसे क़ैद कर लिया।

हनरी की रानी मारगरेट अपने पुत्र-सहित स्काटलैण्ड से फ्रांस को भाग गई। उसने फ्रांस नरेश लूइस से सहायतार्थ प्रार्थना की। जिस समय मारगरेट फ्रांस के राजदरबार मे प्रविष्ट हुई, लूइस खडा हो गया और स्वागत करके कहने लगा—

"राजराजेश्वरी! महारानी! आप मेरे आसन पर विराजिए; क्योंकि इस प्रकार खड़ा रहना आपको उचित नहीं है।"

मारगरेट—नहीं! महाराज! अब मुझे उस स्थान पर सेवकाई करनी चाहिए जहाँ राजा शासन करते हैं। मैं मानती हूँ कि पहले मैं इँगलिस्तान की रानी थी, परन्तु अब दुर्भाग्य ने मुझे पददलित कर दिया है और अब मेरा बहुत अपमान हो चुका है। अतएव आप मुझे वही स्थान दीजिए जो मेरी वर्त्तमान अवस्था के अनुकूल हो!

लूइस—भला! आप ऐसी निराश क्यों हैं?

मारगरेट—कहते हुए मेरी जीभ रुकती है और आखो मे आसू भर आते हैं। कलेजा टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है।

लूइस—चाहे कुछ हो! हमारे लिए अब भी आप महारानी हो! इसलिए मेरे पास इस आसन पर सुशोभित हूजिए।

मारगरेट ने बैठकर सब हाल कहा और चौथे एडवर्ड के विरुद्ध उससे सहायता चाही। लूइस ने यद्यपि कोई

निश्चित उत्तर नहीं दिया, परन्तु कुछ-कुछ सहारा अवश्य दिया और प्रतिज्ञा की कि सोच-विचारकर जो कुछ बन पड़ेगा किया जायगा।

अभी मारगरेट वहीं थी कि वारिक भी इँगलेण्ड से आकर वहाँ पहुँच गया। वारिक वस्तुतः बड़ा बुद्धिमान् था। उसने पहले ही से समझ लिया था कि मारगरेट को फ़्रांस से सहायता मिल जायगी और न जाने ऊँट किस करवट बैठे, इसलिए उसने फ्रांस-नरेश से मेल करने का एक नया उपाय सोचा और एडवर्ड (चौथे) को इस बात पर राज़ी करके कि उसका विवाह फ्रांस-नरेश की बहन वोना से हो जाय, उसकी ओर से फ्रांस-दरबार में सन्देसा ले गया।

लूइस ने प्रार्थना स्वीकार कर ली और यह निश्चित हो गया कि वोना इँगलेण्ड की महारानी होगी। मारगरेट को उसने अब स्पष्टतः कह दिया कि यद्यपि मुझे तुम्हारे और हनरी के साथ सहानुभूति है, परन्तु वंशावलि के अनुकूल राज एडवर्ड का ही है, इसलिए मैं सहायता नहीं दे सकता।

परन्तु इस समय वारिक का बना-बनाया खेल एडवर्ड की ग़लती से बिगड़ गया। क्योंकि उसने इस समय वारिक की अनुपस्थिति में, बिना उसकी इच्छा के, एलीज़बेथ ग्रे से विवाह कर लिया। एलीज़बेथ का भूतपूर्व पति हनरी की ओर से लड़ा था। एडवर्ड के राज्याभिषेक पर उसने आकर प्रार्थना की कि मेरे पति की जायदाद मेरे पुत्रों को दे दी जाय। जिस

समय यह राजा के समीप आई, राजा इस पर मोहित हो गया और झट से उसके साथ विवाह कर लिया।

जब इस विवाह के समाचार फ्रांस में पहुँचे तो लूइस को बड़ा क्रोध आया। उसे यह बात अच्छी न लगी कि पहले उसकी बहन के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट करके फिर बिना किसी कारण के एडवर्ड ने दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया, इससे लूइस का बड़ा अपमान हुआ और उसने क्रोध में आकर मारगरेट को सहायता देने और एडवर्ड को गद्दी से उतारने की प्रतिज्ञा कर ली!

उधर वारिक भी एडवर्ड से क्रुद्ध हो गया, क्योंकि वह उसके इस नये विवाह से अप्रसन्न और असन्तुष्ट था। इस-लिए उसने भी मारगरेट की सहायता की और अपनी बड़ी लड़की का विवाह मारगरेट के पुत्र प्रिंस आफ़ वेल्ज़ से करने का निश्चय कर लिया।

जब एडवर्ड ने वारिक के विरोध की ख़बर सुनी तो उसने लड़ाई की तैयारियाँ कर दीं। परन्तु उसका भाई क्लेरेंस वारिक से मिल गया, क्योंकि वारिक की छोटी लड़की का उससे विवाह हो गया था।

जब वारिक ने फ़्रांस से आकर सेना एकत्रित की तो एड-वर्ड उसके मुक़ाबले के लिए आगे बढ़ा, परन्तु पकड़ा गया। वारिक ने एडवर्ड को वार्क में क़ैद कर दिया और हनरी को क़ैद से छुड़ाकर बादशाह बना दिया।

एडवर्ड यार्क से भागकर बरगण्डी को चला गया।

बरगण्डी के राजा ने उसकी सहायता की और बहुत सी सेना उसके साथ भेजी। पहले कवैण्टरी में वारिक के साथी इकट्ठे हुए जिनमें लार्ड मैाण्टेग, लार्ड आक्सफ़ोर्ड, और लार्ड सोमर्सेट भी थे। एडवर्ड का भाई क्लेरेंस जो पहले वारिक से मिल गया था, अब फिर अपने भाई की ओर आ गया और दोनों दलों की बार्निट नामक रणक्षेत्र में मुठभेड़ हुई। एडवर्ड बड़ी वीरता से लड़ा और वारिक उसके हाथ से मारा गया! वारिक के मरते ही उसके साथियों में खलबली मच गई और उसके शत्रुओं के मन बढ़ गये, क्योंकि वारिक से सब डरते थे। यह वारिक ही था जिसने हनरी को गद्दी से उतारकर एडवर्ड को राजा बनाया था। यह वारिक ही था, जिसने एडवर्ड के पिता यार्क को लड़ने के लिए उत्तेजित किया था। यह वारिक ही था जिसने फिर हनरी को सहारा दिया। सच पूछिए तो वारिक ही गुलाब-युद्ध का कारण था। इसी की वजह से युद्ध आरम्भ हुआ। इसी के द्वारा युद्ध की स्थिति हुई और इसी के शान्त होते समय युद्ध भी शान्त हो गया। वारिक अपने समय का बड़ा योद्धा हुआ है। उसके नाम से राजा लोग काँपते थे। इँगलैण्ड की राजगद्दी तो सर्वथा उसके हाथ में थी। उसे सम्राट्-निर्माता-(King-maker) कहा करते थे। वह जिसको चाहता था उसे गद्दी पर बिठा देता था और जब उससे अप्रसन्न होता तो राज-मुकुट उसके

सिर से उतार कर दूसरे के सिर पर रख देता था। अब वार्निंट के रणक्षेत्र में वारिक की मृत्यु होने से युद्ध की जान सी निकल गई।

जब थोड़े दिनों पीछे रानी मारगरेट फ्रांस से सेना लेकर आई तो उसने फिर अपने साथियों को उभारा और ट्यूक्सबरी पर बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। जय एडवर्ड की हुई और मारगरेट अपने पुत्र सहित पकड़ी गई। एडवर्ड ने उसके पुत्र से पूछा—

"कह, दुष्ट! तुझे क्या दण्ड दिया जाय, क्योंकि तूने मेरी प्रजा को मेरे विरुद्ध भड़काया है!"

राजकुमार—"अरे! दुष्ट! अपने बड़ों से धृष्टता करता है। जो प्रश्न मुझे तुझसे करना चाहिए वही प्रश्न करने से क्या तात्पर्य है? क्योंकि तूने मेरे पिता की प्रजा को उसके विरुद्ध भड़काया है, जिसके लिए तुझे भारी दण्ड दिया जायगा!"

जिस समय राजकुमार ये बातें कर रहा था, एडवर्ड ने उसे तलवार मार दी। इसके देखते ही उसके भाई क्लेरेंस और रिचार्ड ग्लोस्टर ने भी बारी-बारी से तलवार चलाई और बेचारा राजकुमार वहीं पर ढेर हो गया। ग्लोस्टर ने मारगरेट की ओर भी तलवार चलाई, परन्तु एडवर्ड ने उसे रोक दिया। मारगरेट रोती रही। जब एडवर्ड ने हुक्म दिया कि इसे यहाँ से ले जाओ तो वह कहने लगी—

"नहीं, नहीं। ले मत जाओ। मुझे यहीं समाप्त कर दो।

इस पर क्लेरेंस ने उत्तर दिया—

"नहीं, नहीं। मैं तुझे इतना आनन्द नहीं देना चाहता।"

मारगरेट को तो बलात्कार से पकड़कर ले गये, और रिचार्ड ग्लौस्टर लन्दन को चल दिया, जहाँ पर हनरी कैद था। हनरी उस समय किताब पढ़ रहा था। रिचार्ड ने जाकर कहा—

"महाराज की जय हो! स्वामिन्! क्या आप पुस्तकावलोकन में ऐसे संलग्न हैं?"

हनरी—हाँ, भले स्वामिन्! नहीं, नहीं! मेरे स्वामिन्—क्योंकि असत्य भाषण पाप है। और 'भले' कहना असत्य है।

रिचार्ड—(जेल के संरत्तक से) यहाँ से हट! हम कुछ गुप्त वार्त्तालाप करना चाहते हैं?

हनरी—(संरत्तक को चलता देखकर) इसी प्रकार गड़रिया भेड़िये को देखकर चला जाता है और बेचारी भेड़ की पहले तो ऊन कतरी जाती है, तत्पश्चात् गला काटा जाता है! (रिचार्ड से) कहिए! आप अब क्या हत्या करना चाहते हैं?

रिचार्ड—अपराधी को सदैव शंका होती है! चोर जिस झाड़ी को देखता है उसको सिपाही ही समझता है।

हनरी—यदि पत्नी एक बार किसी झाड़ी में फँस जाय तो उसे सब झाड़ियों पर शङ्का होती है। मैं स्वतः अपनी आँखों

से देख चुका हूँ कि मेरा छोटा सा बच्चा पकड़ लिया गया और मार डाला गया! क्या तू मेरे प्राण लेगा?

रिचार्ड—क्या तू समझता है कि मैं हत्यारा हूँ?

हनरी—यदि निर्दोष बालकों को मारना हत्या है तो मैं कह सकता हूँ कि तू अवश्य हत्यारा है?

रिचार्ड—मैंने तेरे लड़के को तो उसकी धृष्टता के कारण मार डाला!

हनरी—यदि तुझे भी उसी समय मार डाला जाता, जब तूने पहले पहल धृष्टता की थी, तो तू कभी मेरे पुत्र के मारने को न रहता! मैं अब कहे देता हूँ कि हज़ारों पुरुष, जिनको इस समय मेरी भाँति भय नहीं है, हजारों वृद्ध पुरुष, सहस्त्रों विधवाएँ, सहस्रों अनाथ अपने मा-बाप की अकाल मृत्यु के कारण पछतायँगे और उस घड़ी को कोसेंगे जिसमें तूने जन्म लिया था। जब तूने जन्म लिया था तो उल्लू बोला था और कुत्ते भोंके थे। भूकम्प आया था। तेरे जनमते समय तेरी माँ को बहुत कष्ट हुआ था। मा के पेट से ही तेरे दाँत थे, जिनसे विदित होता था कि तू जगत् को काट खाने के लिए उत्पन्न हुआ है। यदि जो-कुछ मैंने सुना है वह सब ठीक हो तो तूने इसलिए जन्म लिया कि—

रिचार्ड—अब बकबक मत करो! मैंने इसलिए जन्म लिया है कि मैं तुमको मार डालूँ!

यह कहकर उसने हनरी को ऐसे जोर से तलवार मारी कि वह वहीं ढेर हो गया।

रिचार्ड हनरी को मारकर बड़ा ख़ुश हुआ, क्योंकि अब उसके शत्रु नष्ट हो चुके थे। परन्तु अभी वह सन्तुष्ट नहीं हुआ था, क्योंकि उसकी इच्छा अपने भाई चौथे एडवर्ड से राजगद्दी छीनने की थी। इस कार्य्य की पूर्त्ति के लिए वह अपने मँझले भाई क्लेरेंस और अन्य निज-वंशजों को भी मारना चाहता था, जिसका वर्णन 'तृतीय रिचार्ड' में किया जायगा! सच है, गद्दी के लालच में मनुष्य क्या-क्या पाप नहीं करता!

छठे हनरी की मृत्यु के पश्चात चौथे एडवर्ड ने थोड़े दिनों तक शांतिपूर्वक राज किया। उसके मरते ही रिचार्ड ग्लौस्टर ने एडवर्ड के बालक पाँचवें एडवर्ड को मारकर राज ले लिया! यह कथा आगे आवेगी।

एण्टनी और क्लियोपाट्रा

(ANTONY & CLEOPATRA)

अनुभूमिका

पाठकवर्ग! आपने रोम का कुछ हाल 'जूलियस सीज़र' की कथा से जान लिया है। शेष इस वर्त्तमान कहानी से विदित होगा, जिसको 'एण्टनी और क्लियोपाट्रा' नामक नाटक में महाकवि शेक्सपियर ने दर्शाया है। परन्तु नाटकोक्त कहानी का आरम्भ करने से पूर्व उचित यह है कि जूलियस सीज़र की मृत्यु के पश्चात् और इस कहानी के पूर्व तक जो कुछ घटनाएँ रोम में हुई हों उनका संक्षेप से वर्णन कर दें, जिससे इस नाटक के समझने में कुछ सहायता मिले।

आपने जूलियस सीज़र की मृत्यु का हाल पढ़ लिया। आपने यह भी जान लिया कि किस प्रकार फ़िलिपी की लड़ाई में सीज़र के सब घातक आत्मघात करके या किसी अन्य के हाथ से मारे गये। रोम का राज्य तीन पुरुषों के संयुक्त आधिपत्य में आ गया जिनको आधिपत्य-त्रय (Triumvirate)

कहते हैं। इनमें से एक मार्क एण्टनी था, जिसकी वक्तृता आप लोग सीज़र की मृत्यु पर पढ़ चुके हैं और जो सीजर का भक्त सेनापति था। दूसरा आक्टेवियस था जो सीज़र का नाती था और जिसे सीज़र ने गोद रख लिया था। तीसरा लेपीडस था। परन्तु मुख्य इनमें से एण्टनी और आक्टेवियस ही थे। लैपीडस को तो इन दोनों ने इसलिए बीच में मिला लिया था कि एक दूसरे की शक्ति असीम न हो जाय। अपने शत्रुओं के नाश के पश्चात् एण्टनी रोमन राज्य की सैर को निकला और उसने पूर्वी यूरोप तथा पश्चिमी एशिया का चक्कर लगाया जहाँ जिसको मन चाहा उसी को गद्दी से उतार दिया और जिसको चाहा उसकी जगह गद्दी पर बिठा दिया। इस प्रकार राज्यों को बाँटता हुआ एण्टनी अब मिश्र की ओर झुका जहाँ प्रसिद्ध महारानी क्लियोपाट्रा राज करती थी। पहले क्लियोपाट्रा का थोड़ा सा हाल लिखकर हम आगे चलेंगे।

मिश्र का बादशाह अपनी मृत्यु के समय अपना राज्य अपने लड़के टॉल्मी और अपनी लड़की क्लियोपाट्रा को दे गया था* जिन दोनों में देश-नियम के अनुसार विवाह हो गया था। परन्तु क्लियोपाट्रा जो अपने भाई अर्थात् पति से बड़ी थी, अकेले राज्य करना चाहती थी। मिश्र उस समय रोम

---

* मालूम होता है कि मिश्रवाले सगे भाई बहन आपस में विवाह कर सकते थे।

वालों के अधीन था इसलिए रोम की राजसभा ने केवल टौलमी को राज देकर क्लियोपाट्रा और उसकी बहन आर्सीनो को देश से निकाल दिया।

जूलियस सीज़र ने मिश्र पर अपना अधिक स्वत्व प्राप्त करने के लिए क्लियोपाट्रा को नई आशाएँ बँधा दीं और इधर टौलमी से भी बातचीत आरम्भ कर दी। टौलमी ने तो बात का उत्तर युद्ध से दिया, परन्तु हार गया। क्लियोपाट्रा जिसके सौन्दर्य की प्रशंसा ऐतिहासिक हो गई है और जिसका लावण्य प्रायः अत्युक्ति-अतीत समझा जाता है, एक विलक्षण महिला थी। कवियों ने स्त्रियों के रूप में जो जो अच्छी बातें बताई हैं प्रायः उसमें सभी मौजूद थीं। इसके अतिरिक्त उसमें वह वक्तृता भी थी जो शृङ्गार रस का अङ्ग समझी जाती है। सारांश यह है कि मनुष्य को रिझाने के उसमें सब गुण थे। भाषण उसका बहुत प्यारा और प्रभावशाली था। इसके अतिरिक्त उसकी विद्या का यह हाल था कि सात भिन्न भिन्न देशों के राजदूतों से बिना किसी दुभाषिये (Interpreter) के भली प्रकार बातचीत कर सकती थी।

जब क्लियोपाट्रा ने देखा कि सीज़र टौलमी को पराजित कर चुका, वह झट जूलियस के पास पहुँच गई और अपने रूप से उसको ऐसा मोहित किया कि वह उसका पक्षपाती होकर उसके साथ रहने लगा। बहुत से झगड़े और लड़ाइयाँ हुईं। अन्त को सीज़र ने मिश्र से क्लियोपाट्रा के सम्बन्धी

का ताज भेंट दिया और उसे मिश्र की महारानी बनाया। सीज़र का यह भी विचार था कि क्लियोपाट्रा के नाम से इथोपिया को भी जीत ले। परन्तु रोम की सेना ने इस अनुचित व्यवहार में सीज़र का साथ देने से इनकार किया और तब सीज़र इस प्रेम-मुग्ध अवस्था से जागकर रोम को लौट गया।

हम ऊपर कह आये हैं कि फिलिपी के युद्ध के पश्चात् एण्टनी का मिश्र पर दृष्टि-पात हुआ। सुना गया था कि क्लियोपाट्रा सीज़र के घातकों को सहायता दे रही है। इसलिए एण्टनी ने उसे बुलाया कि अपने इस दोष का क्या उत्तर देती है।

क्लियोपाट्रा की अवस्था इस समय २७ वर्ष की थी। वह इस समय पूर्ण युवावस्था को पहुँच चुकी थी और अब उसमें वह छल-बल भी आ गये थे जो स्त्रियों में प्रायः हुआ करते हैं। इसके अतिरिक्त उसे सब बातों से बढ़कर अपने रूप पर विश्वास था। यद्यपि रोम की कई स्त्रियाँ क्लियोपाट्रा के समान रूपसम्पन्ना थीं, परन्तु मोहन-शक्ति जो क्लियोपाट्रा में थी वह अन्य स्त्रियों में नहीं पाई जाती। वह पुरुष की नस-नस पहचानती थी और उस पर अपना स्वत्व जमाने के लिए अनेक विधियों से अभिज्ञ थी। इसलिए एण्टनी के कोप से बचने के लिए उसने अपने लावण्य का ही आश्रय लिया और एक सुन्दर जहाज़ में बैठकर, जिसका पिछला हिस्सा बिलकुल

सुनहरा था, जिसके पर्दे लाल रेशम के थे, जिसके डाँड चाँदी के बने हुए थे, एण्टनी से मिलने आई।

एण्टनी जो उस समय टार्सेन में था क्लियोपाट्रा को देखते ही अपनी चौकड़ी भूल गया और बजाय उस पर स्वत्व प्राप्त करने के स्वयं उसके अधीन बन गया।

क्लियोपाट्रा के स्वत्व से एण्टनी मरणपर्यन्त मुक्त न हो सका और शृङ्गार रस में फँसकर उसने वीर रस को तिलाञ्जलि दे दी। जिस एण्टनी ने सैकड़ों वीर पुरुषों को परास्त करके हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ डाल दीं वही एण्टनी क्लियोपाट्रा की प्रेमरूपी बेड़ियों में फँसकर निकम्मा हो गया और उसके साथी आक्टेवियस ने उसके विरुद्ध अवसर पाकर रोम में प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

एण्टनी की स्त्री फुल्विया ने अपने पति को क्लियोपाट्रा के पञ्जे से छुड़ाने का एक यह उपाय सोचा कि उसने बीच में पड़कर आक्टेवियस और एण्टनी में लड़ाई करा दी। इस बात से उसका केवल यही प्रयोजन था कि एण्टनी मिस्र से आक्टेवियस के विरुद्ध लड़ने के लिए आवेगा। ऐसा ही हुआ। परन्तु इससे फुल्विया की मनोकामना सिद्ध न हुई। एण्टनी उस पर इतना क्रुद्ध हुआ कि वह बेचारी शोक के मारे मर गई। एण्टनी और आक्टेवियस में किञ्चित् काल के लिए सन्धि हो गई जिसके अनुसार आक्टेवियस की बहन आक्टेविया से उसका विवाह भी हो गया और रोमन राज्य

का इस प्रकार विभाग हुआ कि पश्चिमी देश आक्टेवियस के पास रहें, पूर्वी एण्टनी के और अफ्रीका लैपीडस के।

यह सन्धि बहुत दिनों न चली, क्योंकि एण्टनी फिर मिश्र को लौट आया और क्लियोपाट्रा के साथ भोग-विलास करने लगा। आक्टेवियस ने अवसर पाकर उसे रोम में ख़ूब बदनाम कर दिया और अपनी बहन आक्टेविया को भेजा कि वह मिश्र में एण्टनी के पास जाकर अपने पत्नीत्व को स्थापित करे। आक्टेविया भी रूपवती थी। जब एण्टनी और क्लियोपाट्रा को मालूम हुआ कि आक्टेविया अथेंस से आ रही है तब क्लियोपाट्रा ने वह खेल खेले कि एण्टनी ने बीच से ही उसे कहला भेजा कि तुम सीधी रोम को लौट जाओ और तुम मेरी स्त्री नहीं हो।

एण्टनी ने अपनी विषयासक्ति को यहीं तक रहने न दिया किन्तु उसने खुल्लमखुल्ला क्लियोपाट्रा से विवाह कर लिया। सिकन्दरिया नगर में एक बड़ा उत्सव मनाया गया और एक चांदी के चबूतरे पर दो सोने के तख़्त रक्खे गये, जिनमें से एक पर एण्टनी "बेकस बनकर और दूसरे पर क्लियोपाट्रा आइसिस" बनकर बैठे।

क्लियोपाट्रा का एक लड़का सिसारियो, जो जूलियस सीज़र से उत्पन्न हुआ था, एण्टनी के साथ मिलकर राज करने लगा।

"बेकस मिश्र के एक देव और आइसिस एक देवी का नाम है।

और उसके दो लड़के जो एण्टनी से उत्पन्न हुए थे महाराजाधिराज की पदवी पर नियत किये गये।

आक्टेवियस इन बातों से और चिढ़ गया और उसने रोम की राजसभा से सम्मति लेकर एण्टनी पर चढ़ाई की। एण्टनी भी सामना करने चला और दोनों दलों की एक्टियम में मुठभेड़ हो गई। परन्तु एण्टनी क्लियोपाट्रा को भागती हुई देखकर स्वयं भी भाग आया; आक्टेवियस को जय प्राप्त हुई। जय क्यों न प्राप्त होती? क्योंकि एण्टनी तो शृङ्गार रस का ही चख रहा था। एक ओर तो अधीन राजाओं की सेना एकत्रित करने का हुक्म दे रक्खा था, दूसरी ओर नाचने-गाने वाले भोग-विलास के लिए आये हुए थे। लड़ाई क्या थी, एक तमाशा था।

क्लियोपाट्रा एक बनी हुई औरत थी। उसने एण्टनी का तो इस प्रकार सत्यानाश ही कर दिया था, परन्तु दूसरी ओर गुप्त रीति से वह आक्टेवियस से अपने तथा अपने लड़कों के बचाव के लिए बातचीत करने लगी। एण्टनी को इसका पता लग गया और वह बड़ा क्रुद्ध हुआ। क्लियोपाट्रा ने एण्टनी को अप्रसन्न समझकर अपने तईं प्रसिद्ध कर दिया कि क्लियोपाट्रा मर गई। एण्टनी उसकी मृत्यु की खबर सुनकर बहुत दुःखी हुआ और अपने एक नौकर से कहा कि मुझे मार डालो। नौकर ने तो उसको नहीं मारा, परन्तु एण्टनी ने स्वयं अपने कलेजे में ऐसी तलवार मारी कि वह घायल हो गया। क्लियो-

पाट्रा ने इतने में एण्टनी को अपने पास बुला लिया और वह उसी की गोद में मर गया। क्लियोपाट्रा ने अपने प्यारे की मृत्यु पर बड़ा रंज किया और स्वयं अपनी छाती में इतने घूँसे मार लिये कि वह बीमार हो गई। आक्टेवियस इतने में सिकन्दरिया आदि नगरों को जीतता हुआ आ पहुँचा। उसकी इच्छा यह थी कि मैं क्लियोपाट्रा को ले जाकर रोम में अपने जयोत्सव में दिखलाऊँ। क्लियोपाट्रा इस अपमान को सहन नहीं कर सकी और उसने एक साँप को किसी माली से फूलों की टोकरी में मँगाकर अपनी छाती में डसवा लिया और मर गई। आक्टेवियस जब आया तो इस शोकप्रद दृश्य को देखकर बड़ा दुःखी हुआ। एण्टनी और क्लियोपाट्रा एक ही शवालय में गाड़े गये।

यह संक्षेप से एण्टनी और क्लियोपाट्रा का हाल लिखा गया। अब हम शेक्सपियर-लिखित कहानी को आगे वर्णन करते हैं।

एण्टनी के दो साथी डिमीट्रियस और फ़िलो नामी एक दिन एण्टनी के वर्त्तमान आचार-व्यवहार पर बातचीत करने लगे कि—

"देखो आजकल एण्टनी की क्या दशा हो गई है! क्या यह वही एण्टनी है जो युद्ध का शब्द सुनकर उत्तेजित हो जाया करता था? आज यह बिलकुल क्लियोपाट्रा के हाथ में है। देखो, इस चतुर रमणी ने इसको भेड़ा बनाकर रख

लिया है। देखो कहते-कहते ही एण्टनी अपनी प्रमदा सहित आ रहा है।

जब यह बातें हो ही रही थीं कि एण्टनी, क्लियोपाट्रा तथा अनुचरों सहित वहाँ पर आ पहुँचा। उन दोनों स्त्री-पुरुषों मे ये बातें हो रही थीं—

क्लियोपाट्रा—यदि यह सच्चा प्रेम है तो बताओ इसका परिमाण कितना है?

एण्टनी—वह प्रेम प्रेम नहीं जिसकी थाह हो सके।

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारे प्रेम की सीमा लगा लूँगी।

एण्टनी—तो तुमको नया आकाश ढूँढ़ना पड़ेगा।

इतने मे रोम का एक दूत एण्टनी के पास आकर कहने लगा—"महाराज! रोम से ख़बर लाया हूँ।" एण्टनी इस समय कुछ सुनना नहीं चाहता था। इसलिए उसने कहा—"संक्षेप से कहो।"

प्रेमरसिका क्लियोपाट्रा ताड़ गई कि एण्टनी को मिश्र से ले जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। इसलिए बातें बनाकर कहने लगी—

"नहीं! एण्टनी! नहीं! तुमको रोम की ख़बर सुन लेना चाहिए। शायद श्रीमती फुल्विया देवी नाराज़ हों। शायद युवक आक्टेवियस ने हुक्म दिया हो कि 'यह करो या वह करो। उस राज को ले लो और उसे छोड़ दो। ऐसा करो नहीं तो दण्ड मिलेगा।' भला ऐसी बातें न सुननी चाहिएँ?"

एण्टनी—क्यों प्यारी?

क्लियोपाट्रा—शायद अब तुम यहाँ न रह सको। आक्टेवियस ने तुमको मिश्र से चले जाने की आज्ञा दी हो! मालूम होता है कि अब तुम मिश्र में नहीं रह सकते! इसलिए तुमको आक्टेवियस और फुल्विया की बात सुननी चाहिए।

एण्टनी—चाहे रोम टाइबर नदी में बह जाय, चाहे समस्त राज नष्ट हो जाय। मुझे परवाह नहीं है। मेरा तो यही स्थान है। राज क्या है, मिट्टी ही मिट्टी तो है। (क्लियोपाट्रा का आलिङ्गन करके) जीवन का सुख तो केवल इसी में है।

क्लियोपाट्रा—प्रणयचातुरी! जब तुमने फुल्विया से विवाह किया तो उससे प्रेम क्यों नहीं करते होगे।

एण्टनी—अब व्यर्थ न कहो। मैं सुख भोगने के समय को इन बातों में व्यय करना नहीं चाहता।

क्लियोपाट्रा—दूत की बात सुनो।

एण्टनी—चलो चलो! झगड़ो मत! पर तुमको सब बातें शोभा देती हैं! हँसना, रोना और झगड़ना सभी तुममें अच्छे मालूम होते हैं।

इस प्रकार क्लियोपाट्रा बातें बना बनाकर एण्टनी को दूत की बात सुनने से रोकती थी और एण्टनी उसके प्रेम में मुग्ध था। उस समय तो उसने रोम के दूत को बिना बात

सुने हुए ही टाल दिया, परन्तु एक समय उसे अवसर मिल गया और एण्टनी को अकेला पाकर उसने रोम की सब दशा सुना दी। वह कहने लगा—

"आपकी स्त्री फुल्विया पहले पहल रणक्षेत्र में आई।"

एण्टनी—मेरे भाई लूसियस से लड़ने!

दूत—हां। लेकिन उन दोनों में शीघ्र सन्धि हो गई और उन दोनों ने मिलकर आक्टेवियस सीज़र का सामना किया, परन्तु हार खाई।

एण्टनी—अच्छा! और भी कोई बुरी ख़बर है?

दूत—श्रीमहाराज! बुरी बात कहने में कहनेवाले की भलाई नहीं है।

एण्टनी—उसी समय जब उस बात का सम्बन्ध किसी कायर या मूर्ख से हो—कहो डरो मत! जो बात हो चुकी वह हो चुकी! जो मुझसे सच-सच कहता है, चाहे उसमें मृत्यु ही क्यों न हो, मैं उसे प्रिय भाषण समझता हूँ!

दूत—ख़बर बहुत बुरी है। लैबीनस ने एशिया का राज यूफ्रे-टीज़ तक फैला लिया है। पार्थियन सेना के साथ उसने सीरिया से लेकर लीडिया और आयोनिया तक सब देश पर प्रभुत्व पा लिया है। फिर भी—

एण्टनी—क्या तू यह कहना चाहता है कि एण्टनी—

दूत—श्रीमहाराज!

एण्टनी—स्पष्ट कहो—बात को मत चबाओ—बताओ लोग रोम मे क्लियोपाट्रा के लिए क्या कहते हैं। फुलविया क्या कहती है—मेरे दोषों को भली प्रकार प्रकट करो।

दूत—जो श्रीमहाराज की आज्ञा।

"वह दूत तो चला गया। परन्तु उसी समय एक और दूत ने आकर खबर दी कि फुलविया मर गई।"

एण्टनी—कहाँ?

दूत—सिसन में उनका प्राणान्त हुआ! बीमारी आदि का सब हाल इस पत्र मे लिखा है।

दूत तो पत्र देकर चला गया पर एण्टनी पत्र पढ़कर सोचने लगा—

"देखो। एक बड़ी आत्मा संसार से उठ गया। यद्यपि मेरी इच्छा भी यही थी। परन्तु अब मैं चाहता हूँ कि वह जीवित होती। मुझे अब इस जादूगरनी (क्लियोपाट्रा) के फन्दे से छूटना चाहिए। इन बुराइयों के अतिरिक्त जिनको मुझे खबर है बहुत सी अन्य बुराइयाँ भी मेरे यहाँ रहने से उत्पन्न हो रही हैं।

फिर उसने अपने एक साथी एनोबार्बस को बुलाकर कहा कि हमको यहाँ से जाना चाहिए।

एनोबार्बस—तो मालूम होता है कि हम इन स्त्रियों की मृत्यु का कारण होंगे। इस हमारे निर्दयीपन से उनको

दारुण दुःख होगा। हमारे विरह में वे अवश्य अपने प्राण दे देंगी।

एण्टनी—हमको तो जाना ही होगा!

एनोबार्बस—अगर ऐसी ही ज़रूरत है तो स्त्रियों को मरने दो। परन्तु बिना किसी बात के उनको मारना ठीक नहीं है। क्लियोपाट्रा को अगर आपके जाने की सनक भी मालूम हुई तो वह झट मर जायगी। मैंने देखा है कि वह इससे छोटी-छोटी बातों पर बीस-बीस बार मर जाती है। बोध होता है कि मरने में भी कुछ प्रेमाकर्षण है, नहीं तो क्लियोपाट्रा इतनी जल्दी मरना न चाहती।

एण्टनी—उसका चातुर्य मनुष्य की बुद्धि में नहीं आ सकता।

एनोबार्बस—नहीं नहीं, ऐसा मत कहो। इसको प्रेम के सिवा और कुछ नहीं आता। दूसरी स्त्रियों के आँसू और दीर्घ-श्वास क्लियोपाट्रा के सामने तुच्छ हैं। इसके आँसू समुद्र की तरङ्गों से कम नहीं हैं। इनको छल नहीं कह सकते। अगर आप इसको भी छल कहते हैं तो मानना पड़ेगा कि क्लियोपाट्रा भी इन्द्र की भाँति वर्षा कर सकती है।

एण्टनी—अच्छा होता कि मैंने इसको कभी देखा न होता!

एनोबार्बस—तो आप दुनिया की एक अद्भुत जन्तु से वञ्चित रह जाते और आपका देशाटन कलङ्कित हो जाता!

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या महाराज!

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या फुल्विया?

एण्टनी—मर गई।

एनोबार्बस—यह तो ख़ुशी की बात है, ईश्वर को धन्यवाद दो। जब ईश्वर किसी पुरुष की स्त्री को मार डाले तो इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर सांसारिक दर्ज़ी के समान है। क्योंकि जब पुराने वस्त्र फट गये तो नये मिलेंगे। अगर फुल्विया के सिवा दुनिया में कोई अन्य स्त्री न होती तो अवश्य शोक की बात थी। यह शोक तो हर्षसूचक है जीर्ण वस्त्र के स्थान में नया मिलेगा!

एण्टनी—राज के विषय में वह जो कुछ गड़बड़ डाल गई है, इससे तो जाना ही होगा!

एनोबार्बस—और आपने जो यहाँ गड़बड़ डाली है इसके कारण आपका यहाँ से जाना नहीं हो सकता। क्लियोपाट्रा बिलकुल आपके ही आश्रित है।

एण्टनी—अब अधिक हँसी मत उड़ाओ। निश्चय है कि हमको रोम को जाना चाहिए। राज में बड़ी गड़बड़ मची हुई है। रोम से कई मित्रों ने हमारे वहाँ जाने पर आग्रह किया है। सेक्स्टस पोम्पे का ज़ोर हो रहा है। उसने आक्टेवियस पर चढ़ाई की है। हमको

बहुत काम करने हैं। मैं अब क्लियोपाट्रा को जाने की सूचना दूँगा।

क्लियोपाट्रा के छल-बल प्रसिद्ध थे। उसे पहले से ही मालूम हो गया था कि एण्टनी जानेवाला है। इसलिए उसको रोकने के लिए उसने एक और ढङ्ग निकाला और बीमार सी बनकर बैठ गई। जब एण्टनी निकट आकर कहने लगा कि "शोक है मुझे अब मन का भाव कहना ही पड़ा," तब क्लियोपाट्रा सुनी अनसुनी कर गई।

जब एण्टनी ने आगे बढ़कर कहा—"प्रियतम महारानी" तब क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"मुझसे दूर खड़े हो।"

एण्टनी—क्या बात है?

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारी आँखों से पहचान गई कि कोई अच्छी खबर है। विवाहिता स्त्री ने क्या कहला भेजा है कि "तुम चले आओ?" अगर वह तुम्हें कभी यहाँ आने न देती तो अच्छा होता। तुम जाओ! वह यह न कहे कि मैं तुमको रोकती हूँ। मेरा तुम पर कुछ वश नहीं है। तुम उसी के हो!

एण्टनी—ईश्वर जानता है!

क्लियोपाट्रा—कभी किसी महारानी को ऐसा धोखा नहीं दिया गया! मुझे तो पहले ही से शङ्का हो गई थी।

एण्टनी—हे क्लियोपाट्रा—

एनोबार्बस—क्या महाराज!

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या फुल्विया?

एण्टनी—मर गई।

एनोबार्बस—यह तो ख़ुशी की बात है, ईश्वर को धन्यवाद दो। जब ईश्वर किसी पुरुष की स्त्री को मार डाले तो इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर सांसारिक दर्जी के समान है। क्योंकि जब पुराने वस्त्र फट गये तो नये मिलेंगे। अगर फुल्विया के सिवा दुनिया में कोई अन्य स्त्री न होती तो अवश्य शोक की बात थी। यह शोक तो हर्षसूचक है जीर्ण वस्त्र के स्थान में नया मिलेगा!

एण्टनी—राज के विषय में वह जो कुछ गड़बड़ डाल गई है, इससे तो जाना ही होगा!

एनोबार्बस—और आपने जो यहाँ गड़बड़ डाली है इसके कारण आपका यहाँ से जाना नहीं हो सकता। क्लियोपाट्रा बिलकुल आपके ही आश्रित है।

एण्टनी—अब अधिक हँसी मत उड़ाओ। निश्चय है कि हमको रोम को जाना चाहिए। राज में बड़ी गड़बड़ मची हुई है। रोम से कई मित्रों ने हमारे वहाँ जाने पर आग्रह किया है। सेक्स्टस पोम्पे का ज़ोर हो रहा है। उसने आक्टेवियस पर चढ़ाई की है। हमको

बहुत काम करने हैं। मैं अब क्लियोपाट्रा को जाने की सूचना दूँगा।

क्लियोपाट्रा के छल-बल प्रसिद्ध थे। उसे पहले से ही मालूम हो गया था कि एण्टनी जानेवाला है। इसलिए उसको रोकने के लिए उसने एक और ढङ्ग निकाला और बीमार सी बनकर बैठ गई। जब एण्टनी निकट आकर कहने लगा कि "शोक है मुझे अब मन का भाव कहना ही पड़ा," तब क्लियोपाट्रा सुनी अनसुनी कर गई।

जब एण्टनी ने आगे बढ़कर कहा—"प्रियतम महारानी" तब क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"मुझसे दूर खडे हो।"

एण्टनी—क्या बात है?

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारी आँखों से पहचान गई कि कोई अच्छी खबर है। विवाहिता स्त्री ने क्या कहला भेजा है कि "तुम चले आओ?" अगर वह तुम्हें कभी यहाँ आने न देती तो अच्छा होता। तुम जाओ! वह यह न कहे कि मैं तुमको रोकती हूँ। मेरा तुम पर कुछ वश नहीं है। तुम उसी के हो!

एण्टनी—ईश्वर जानता है!

क्लियोपाट्रा—कभी किसी महारानी को ऐसा धोखा नहीं दिया गया! मुझे तो पहले ही से शङ्का हो गई थी।

एण्टनी—हे क्लियोपाट्रा—

क्लियोपाट्रा—जब तुमने फुल्विया के साथ अन्याय किया तब मैं फिर तुम्हारी प्रतिज्ञाओं का कैसे विश्वास करूँ। तुम शपथ खाते जाते हो और प्रतिज्ञा तोड़ते जाते हो!

एण्टनी—प्यारी महारानी!

क्लियोपाट्रा—नहीं नहीं! जाने के लिए बहाना ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं। जाना है तो चले जाओ। बहानों की तो उस समय ज़रूरत थी जब रहना चाहते थे। तब तो जाने का नाम भी न था। तब हम रूपवती थीं। तब हमारा कुरूप से कुरूप अंग भी महा सुन्दर था। वही अङ्ग अब भी हैं—हे एण्टनी! बड़ा वीर होकर भी तू बड़ा झूठा निकला!

एण्टनी—प्रिये क्या कहती हो?

क्लियोपाट्रा—हाय! एण्टनी जो मेरा हृदय तेरे शरीर में चला जाता तो तू जानता कि मिश्र में एक स्त्री तुझे प्राणों से भी अधिक चाहती है।

एण्टनी—सुनो! मुझे कार्य्यवश घर जाना है। लेकिन मेरा मन यहीं रह जायगा। इटली में लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। सेक्स्टस पॉम्पे रोम पर चढ़ा आ रहा है। तुमको डरना नहीं चाहिए। फुल्विया मर गई।

क्लियोपाट्रा—अरे मुझे बच्चों की तरह बहलाते हो! भला फुल्विया मर सकती है?

एण्टनी—हाँ मर गई। देखो यह पत्र आया है। इसे पढ़ो।

क्लियोपाट्रा—हाय! झूठा प्रेम! पवित्र शीशियों में दुःख का पानी! अब मैं जान गई कि फुल्विया के मरने पर मुझसे कैसा प्रेम होगा!

एण्टनी—अब लड़ो मत। सुनो, मुझे जाना है। कहो तो जाऊँ, कहो न जाऊँ। ईश्वर साक्षी है कि मैं तुझे कभी न भूलूँगा।

इसके पश्चात् एण्टनी मिश्र देश से चला गया। चलते समय एण्टनी और क्लियोपाट्रा में दृढ़ प्रेम के लिए प्रतिज्ञाएँ हुईं। एण्टनी के चले जाने पर क्लियोपाट्रा ने बड़ा शोक मनाया। वह प्रतिदिन एक दूत एण्टनी के पास भेजने लगी और सिवा 'एण्टनी! एण्टनी!' के और कुछ बात उसके मुँह से नहीं निकलती थी। वह नित्य एण्टनी का ही ध्यान किया करती थी। न उसे गाना अच्छा लगता था और न किसी और वस्तु से उसका जी बहलता था। परन्तु वह एण्टनी के ही विरह में अपना समय व्यतीत करती थी।

उधर रोम में आक्टेवियस एण्टनी को बदनाम कर रहा था। वह एक दिन लैपीडस से कह रहा था—

"देखो, मैं बिना कारण एण्टनी से घृणा नहीं करता। सिकन्दरिया से ख़बर आई है कि वह रात-दिन नाच-रंग में समय व्यतीत करता है। अब उसमें उतना ही पुरुषत्व है जितना क्लियोपाट्रा में। क्लियोपाट्रा में उतना ही स्त्रीत्व है जितना एण्टनी में। देखो, उसने हमारे दूत को बिना बात किये ही टाल दिया।"

लैपीडस—मुझे तो एण्टनी मे इतने दोष नहीं दिखाई देते कि उसकी समस्त भलाइयों को छिपा लें।

आक्टेवियस—आप तो बड़े नर्मदिल मालूम होते हैं। क्या टाल्मी* के पलँग पर लेटना दोष नहीं है? क्या विषयासक्ति में राज लुटा देना दोष नहीं है?

इस समय एक दूत ने आकर ख़बर दी कि सेक्स्टस पौम्पि मेसीना से युद्ध की तैयारियाँ करके रोम पर चढ़ा आ रहा है।

उसने यह विचार किया था कि एण्टनी क्लियोपाट्रा की गोद को छोड़कर ऐसे युद्ध के लिए क्यों आने लगा। सीजर के पास रुपया है पर लोग उसको नहीं चाहते। लैपीडस ख़ुशामदी आदमी है, पर कोई उसकी परवा नहीं करता, इसलिए रोम को जीतने का यह सबसे उत्तम अवसर है।

परन्तु इसका यह विचार ठीक न निकला। क्योंकि जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, एण्टनी अपने देश की दुर्दशा का हाल सुनकर मिश्र से चल पड़ा था। जब वह रोम पहुँचा तब उसमें और आक्टेवियस में झगड़ा हो गया; क्योंकि आक्टेवियस पहले ही से लोगों को एण्टनी के विरुद्ध भड़का रहा था। लैपीडस इन दोनों में सन्धि कराने का यत्न करता था और कहता था कि हम तीनों मित्रों को इस समय अपने निज झगड़ों को भूल जाना चाहिए; क्योंकि हम सबका शत्रु पौम्पि

* क्लियोपाट्रा टाल्मी की स्त्री थी।

आ रहा है। शत्रु के परास्त करने के लिए हम सबका एक हो जाना ही उत्तम है।

एण्टनी ने कहा—

"आक्टेवियस! मैंने सुना है कि तुम बहुत-सी ऐसी बातों से नाराज़ हो गये हो, जिनका तुमसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।"

आक्टेवियस—भला मैं क्यों नाराज़ हो जाता? और विशेष कर तुमसे? मुझे आपके नाम से भी कुछ सम्बन्ध नहीं है।

एण्टनी—तुम्हारा मेरे मिश्र में रहने से क्या सम्बन्ध था?

आक्टेवियस—वही जो तुम्हारा मेरे रोम में रहने से है। हाँ, अगर तुमने मेरे अधिकार में हस्तक्षेप किया तो तुम्हारा मिश्र में रहना भी मुझसे कुछ सम्बन्ध रखता है?

एण्टनी—कैसा हस्तक्षेप?

आक्टेवियस—तुम मेरा आशय समझ गये होगे! तुम्हारे भाई और स्त्री दोनों ने मुझसे लड़ाई की! वह कहते थे कि तुमने उनको आज्ञा दी है।

एण्टनी—तुम्हारी भूल है! मेरे भाई ने मुझसे कभी युद्ध के लिए नहीं पूछा! मेरे पत्रों से स्पष्ट है कि मेरे भाई ने मेरी इच्छा के विरुद्ध किया! अगर तुमको झगड़ा ही करना है तो दूसरी बात है। नहीं तो इसमें मैं निर्दोष हूँ।

आक्टेवियस—तुम तो आत्मश्लाघा करके मेरी भूल बताते हो। यह केवल बहाना है।

एण्टनी—नहीं नहीं। हाँ, मेरी स्त्री के झगड़ों का और कारण है। ईश्वर तुमको भी ऐसी स्त्री देता तो मालूम पड़ जाता। देखो, तिहाई दुनिया तुम्हारे अधिकार में है। इस पर राज करना सरल है, लेकिन ऐसी स्त्री को वश में करना दुस्तर है। तुमको यह सोचना चाहिए कि मेरी स्त्री पर मेरा वश न था।

आक्टेवियस—मैंने सिकन्दरिया में तुम्हारे पास एक दूत भेजा, जब तुम वहाँ रँगरेलियाँ खेल रहे थे। उसको तुमने अपमान के साथ निकाल दिया।

एण्टनी—वह विना आज्ञा के घुस आया था! दूसरे दिन मैंने उसकी बात सुन ली। यह बात क्षमा माँगने के लगभग थी!

आक्टेवियस—तुमने प्रतिज्ञा भङ्ग की।

लैपीडस—आक्टेवियस! नर्मी से।

एण्टनी—नहीं नहीं, कहने दो। भला कौन-सी प्रतिज्ञा?

आक्टेवियस—मुझे ज़रूरत के समय न तो सेना भेजी और न अन्य सहायता दी; और साफ़ इनकार कर दिया।

एण्टनी—इनकार नहीं किया। भूल गया। बात यह है कि फुल्विया ने मुझे मिश्र से बुलाने के लिए आपसे लड़ाई छेड़ दी थी। मैं इसके लिए क्षमा माँगता हूँ।

और अयोग्यता का विचार करके उसने उनको इतनी शिक्षा प्रदान नहीं की थी जिससे वह उन ग्रन्थों को समझ सकती या उनमें किसी प्रकार की रुचि प्राप्त कर सकती।

भारतवर्ष के आधुनिक कवियों ने प्रायः स्त्रियों के अधिकार की रक्षा नहीं की और इनको उस उच्चश्रेणी से गिरा दिया है जो उन्हें वास्तव में ईश्वर से मिली थी। अबला बेचारी अबला ही है और उसका सताना कोई वीरता का काम नहीं है परन्तु न जाने हमारे बड़े से बड़े कविगण इसके ऊपर क्यों कुपित रहे हैं। यदि शृङ्गार-रस का वर्णन करते हुए इन्होंने स्त्रियों का लोहा माना है तो केवल इतना ही कि इनको विषय-भोग का साधन ठहरा दिया है। इससे अधिक उनको किसी मानवी घटना में सम्मिलित नहीं किया। हाँ, यह ठीक है कि कहीं-कहीं उनके पातिव्रत तथा अन्य प्रशंसनीय गुणों को बड़ी प्रबलता से दिखाया है परन्तु पुरुषों और स्त्रियों के सम्बन्ध में बहुत सी अरोचक बातें लिखी गई हैं। अनेक-पत्नीभाव भारतवर्षीय कवियों में बड़ा प्रबल है। कालिदास की शकुन्तला को ही लीजिए। उसकी माता मेनका किस प्रकार तपोभङ्ग करती है। शकुन्तला को सपत्नी जन हुआ कितना कष्ट पहुँचाता है और दुष्यन्त किस प्रकार [illegible]ण्टनी, [illegible] के प्रेम में शकुन्तला को भूल जाता है। [illegible] उत्सव मनाया। काशिराज-पुत्री को उर्वशी के दर्शनानन्तर [illegible]ण्टनी अपनी नई स्त्री है और पुरूरवा किस प्रकार एक वर्ष रहने लगा।

जिस समय एण्टनी अथेंस में था, क्लियोपाट्रा उसको वहाँ से बुलाने के बहुत-से उपाय सोच रही थी। उसके दूत यहाँ की सब बातें उस तक पहुँचाया करते थे। कई बार उसने गुप्त रीति से एण्टनी को बुलाना चाहा। आक्टेविया के विवाह की ख़बर सुनकर सपत्नीभाव ने उसे बड़ा कष्ट दिया और उसने एक दूत अथेंस को इसलिए भेजा कि देखो एण्टनी और आक्टेविया में कैसी बनती है। सिकन्दरिया में एक दिन जब क्लियोपाट्रा बैठी हुई थी, एक अनुचर ने उसे सूचना दी कि दूत आ गया।

क्लियोपाट्रा—कहाँ है?

अनुचर—आने से डरता है।

क्लियोपाट्रा—क्यों?

अनुचर—महारानी! यह तो बेचारा दूत है। यहूदियों का राजा हीरड भी आपके सम्मुख आने से डरता था!

क्लियोपाट्रा—हा! हा! हीरड का सिर अवश्य कटेगा! लेकिन एण्टनी जिसके हुक्म से ऐसा होता, यहाँ है ही नहीं!

दूत—महारानी की जय हो!

क्लियोपाट्रा—क्या तूने आक्टेविया को देखा?

दूत—हाँ!

क्लियोपाट्रा—कहाँ?

दूत—रोम में एण्टनी और आक्टेवियस के साथ।

क्लियोपाट्रा—क्या वह मुझ जैसी लम्बी है?

दूत—नहीं।

क्लियोपाट्रा—क्या उसे बोलते सुना? धीरे बोलती है या ज़ोर से?

दूत—महारानीजी! धीरे।

क्लियोपाट्रा—ये तो अच्छी बातें नहीं हैं। एण्टनी बहुत दिन उससे प्रेम न करेगा!

एक अनुचर (दूसरे से)—वह महारानी के तुल्य कैसे हो सकती है!

क्लियोपाट्रा—ठिगनी और धीरे बोलनेवाली! उसकी चाल कैसी है?

दूत—रेंगती है। उसका चलना और बैठना एक सा है। उसके देह पर चैतन्यता नहीं। केवल चित्रवत् है!

क्लियोपाट्रा—क्या यह ठीक है?

दूत—हाँ।

क्लियोपाट्रा—कितनी बड़ी है?

दूत—विधवा थी।

क्लियोपाट्रा—ओहो! विधवा?

दूत—तीस वर्ष की होगी!

क्लियोपाट्रा—मुँह कैसा है? लम्बा या गोल?

दूत—गोल! वह भी भद्दा!

क्लियोपाट्रा एण्टनी के मन का भाव जानती थी। अपनी सपत्नी को अपने समान रूपवती न पाकर उसे कुछ सन्तोष

हो गया और भीतर ही भीतर उसने इस प्रकार उद्योग किया कि एण्टनी का मन आक्टेविया से हट गया और वह मिश्र जाने के लिए अवसर खोजने लगा।

दैवगति से यह अवसर भी उसके हाथ शीघ्र ही आ गया, क्योंकि किसी बात पर आक्टेवियस, लैपीडस और पैाम्पे के मध्य मे फिर युद्ध छिड गया ! और विना एण्टनी को सूचना दिये आक्टेवियस और लैपीडस ने पैाम्पे को परास्त कर दिया। इसके पश्चात् आक्टेवियस ने इस दोष मे कि उसने पैाम्पे के साथ गुप्त रीति से देशहित के विरुद्ध पत्र-व्यवहार किया था लैपीडस को पकड़ लिया। इस प्रकार आक्टेवियस और एण्टनी के मध्य मे जो एक प्रकार की रोक थी वह दूर हो गई। एण्टनी को ये सब बाते बहुत बुरी मालूम हुईं। उसने आक्टेविया से कहा कि अब मुझमे और तुम्हारे भाई मे अवश्य लड़ाई होगी क्योंकि उसने पैाम्पे से लड़ाई की और मनमानी बाते राजसभा से स्वीकृत करा ली, और सबके सामने मुझे गालियाँ देता है !

आक्टेविया—प्यारे पति ! इन सब बातो का विश्वास मत करो। यदि युद्ध हुआ तो मेरी बड़ी दुर्गति होगी। मैं भाई के लिए प्रार्थना करूँगी या पति के लिए ! परमात्मा ऐसी प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं करता है।

एण्टनी—जिसका अधिक प्रेम हो उसी के लिए ! यहाँ आत्म-गौरव का प्रश्न है। मुझे अपना गौरव अवश्य रखना

है। अगर तुम चाहती हो तो स्वयं जाकर अपने भाई से कहो और हम दोनों में सन्धि करा दो।

इस समय आक्टेविया तो अथेंस से रोम को गई और एण्टनी वहाँ से क्लियोपाट्रा के समीप चला आया! जब आक्टेविया अपने भाई के पास पहुँची तब आक्टेवियस ने कहा—बहन! क्या तुमको तुम्हारे पति ने छोड़ दिया?

आक्टेविया—तुम ऐसा क्यों कहते हो?

भाई—तुम ऐसे चुपके मेरे पास क्यों आ गईं? तुम उस समारोह के साथ नहीं आईं जिससे आक्टेवियस की बहन को आना उचित है। एण्टनी की स्त्री के साथ सेना होनी चाहिए। घोड़ों के हिनहिनाने से मालूम होना चाहिए कि एण्टनी की स्त्री आ रही है। लोग वृक्षों पर तुमको देखने के लिए चढ़ जायँ। धूल घरों की छत तक पहुँचने लगे। तुम तो साधारण स्त्री के समान चली आईं! हम तुम्हारा सत्कार भी न कर सके।

बहन—मैं उस प्रकार आ सकती थी। परन्तु मुझे और काम था, जिसके कारण मैंने इसी तरह आना उचित समझा। मेरे स्वामी एण्टनी ने सुना था कि तुम युद्ध की तैयारी कर रहे हो। इसलिए मैंने यहाँ आने की आज्ञा चाही।

भाई—और उसने झट आज्ञा दे दी, क्योंकि तुम अपने पति तथा उसकी विषय-वासना के बीच में एक प्रकार की रोक थीं।

बहन—भाई! ऐसा मत कहो।

भाई—मैं उसे ख़ूब जानता हूँ। मुझे पल-पल की ख़बर मिलती रहती है। वह अब कहाँ है?

बहन—अथेंस में।

भाई—नहीं! बहन नहीं! तुम्हें धोखा हुआ। उसे क्लियोपाट्रा ने बुला लिया। उसने अपना राज उस दुष्ट स्त्री को दे डाला! वे दोनों युद्ध के लिए राजाओं को इकट्ठा कर रहे हैं। लिबिया का राजा बोकस, कैपेडोसिया का आर्कीलस, पैफ्लेगोनिया का फिलेडैल्फस, थिरेस का एडालस, अरब का माल्कूस और अन्य राजा हमारे विरुद्ध तैयारी कर रहे हैं।

थोड़े दिनों पश्चात् दोनों दल एक्रियम के निकट एकत्रित हुए। एण्टनी की भौमिक सेना तो बहुत थी, परन्तु सामुद्रिक सेना इतनी सुशिक्षित नहीं थी, इसलिए एण्टनी के सेनापतियों ने प्रार्थना की कि महाराज आप भौमिक युद्ध कीजिए, क्योंकि आक्टेवियस के जहाज़ बड़े मज़बूत हैं। परन्तु एण्टनी के विचार क्लियोपाट्रा के अधीन थे। क्लियोपाट्रा उसके साथ थी और वह जो कुछ कहती थी, एण्टनी वही करता था। क्लियोपाट्रा तो स्त्री ही थी परन्तु उसने एण्टनी पर स्वत्व पाकर एण्टनी को भी स्त्रीवत् कर दिया; क्योंकि स्त्रैण मनुष्यों में पुरुषत्व कम हो जाता है; और उनके विचार भी बिगड़ जाते हैं। क्लियोपाट्रा के कथनानुसार, एण्टनी ने

अपने सेनापतियों की बात न मानी और सामुद्रिक युद्ध आरम्भ कर दिया।

जब युद्ध हो रहा था उस समय क्लियोपाट्रा रणक्षेत्र से भाग निकली। उसके जहाज़ों को भागते देखकर एण्टनी भी उसके पीछे चल दिया। क्योंकि "विनाशकाले विपरीतबुद्धिः"। इस प्रकार आक्टेवियस ने उस एण्टनी पर जय पाई, जिसने पहले कभी रण में पीठ नहीं दिखाई थी। जब वह सिकन्दरिया में आया तब पछताने लगा और अपने कायरपन पर बड़ा लज्जित हुआ। उसने अपने को एक कमरे में बन्द कर लिया और जब कुछ अनुचर उसके समीप गये तब कहने लगा—

"सुनो! पृथ्वी मुझे अब अपने ऊपर चलने की आज्ञा नहीं देती। वह मेरा भार उठाने से लज्जित है। मित्रो! यहाँ आओ। मैं ऐसा मार्ग भूला कि सदा के लिए भूल गया। मेरे पास रुपयों से भरा हुआ एक जहाज़ है। उसे आपस में बाँट लो और आक्टेवियस से जा मिलो। यहाँ से भाग जाओ।"

अनुचर—हम नहीं भाग सकते।

एण्टनी—मैं स्वयं भाग आया और कायरों को पीठ दिखाने की विधि बता दी! मित्रो जाओ। अब मेरा ऐसा विचार है, जिसमें आपकी ज़रूरत नहीं है। हाय, मैं उसके पीछे भाग आया जिसको देखकर मुझे लज्जा आती है। हाय! मेरे केश मुझे लज्जा दिखाते हैं। श्वेत केश काले केशों

से कहते हैं कि तुम मूर्ख हो। काले श्वेतों से कहते हैं कि तुम कायर हो। मित्रो! अब जाओ।

इतने में क्लियोपाट्रा वहाँ आ गई और कहने लगी—

"यहाँ बैठ जाऊँ।"

एण्टनी—नहीं, नहीं!

क्लियोपाट्रा—हाय, हाय!

एण्टनी—धिक् धिक्! फिलिपी के रणक्षेत्र में इस आक्टेवियस ने तलवार तक न छुई। यह तो इधर-उधर नाचता ही रहा! केसियस और ब्रूटस दोनों को मैंने ही पराजित कर दिया था। परन्तु हाय!

अनुचर—महाराज! महारानी खड़ी हैं।

एण्टनी—हाय! मेरा यश मिट्टी में मिल गया। हाय क्लियोपाट्रा! तू मुझे कहाँ ले आई! इन लज्जित आँखों से मैं तुझे कैसे देखूँ!

क्लियोपाट्रा—नाथ! क्षमा करो। मेरे जहाज भयभीत हो गये। मैं नहीं जानती थी कि आप मेरे पीछे-पीछे भाग उठेंगे!

एण्टनी—अरी क्लियोपाट्रा! तू नहीं जानती कि मेरा मन तेरे पतवार से बँधा था। तू जानती है कि तेरा मुझ पर कितना स्वत्व है और तेरा संकेतमात्र मुझे खींचने के लिए काफ़ी है।

क्लियोपाट्रा—(रोकर) क्षमा करो! क्षमा करो!

एण्टनी—आँसू न गिराओ। तुम्हारा एक-एक आँसू एक-एक राज से बढ़कर है।

अब एण्टनी ने आक्टेवियस सीज़र की सेवा में एक आदमी भेजा और प्रार्थना की कि मैं आपके अधीन रहना अङ्गीकार करता हूँ—अगर आप मुझे मिश्र मे रहने दे। अगर यह बात आपको स्वीकृत न हो तो आप मुझे साधारण मनुष्य की भाँति अथेंस में रहने की आज्ञा दीजिए। इसके अतिरिक्त इसी दूत द्वारा क्लियोपाट्रा ने भी प्रार्थना की थी कि "मैं आपका स्वत्व स्वीकार करती हूँ, आप कृपा करके * टालमी राज मेरी सन्तान के लिए छोड़ दीजिए, क्योंकि इस विजय से यह राज आपके अधीन हो गया है।" सीज़र ने एण्टनी की प्रार्थना स्वीकृत नहीं की, किन्तु क्लियोपाट्रा की बात मान ली और एक दूत भेजा जो उसको मिश्र में आकर फुसलावे।

जब एण्टनी का दूत सीज़र के पास से लौटकर आया उस समय क्लियोपाट्रा सिकन्दरिया में बैठी हुई एनोबार्बस से बातें कर रही थी। उसने कहा—एनोबार्बस! अब हम क्या करें?

एनोबार्बस—सोचो और मर जाओ!

क्लियोपाट्रा—इसमें हमारा दोष है या एण्टनी का?

* मिश्र के राजा टॉल्मी कहलाते थे।

एनोबार्बस—केवल एण्टनी का ! क्योंकि उसने अपनी बुद्धि को अपनी इच्छा के अधीन कर दिया, आप युद्ध से भागीं। वह क्यों भागा ? उस समय वीरता प्रेम के अधीन नहीं होनी चाहिए थी। ऐसे समय मे जब आधी-आधी दुनिया दोनों ओर से लड़ रही हो, और सब एण्टनी की ओर देख रहे हों तब तुम्हारे जहाज़ों के साथ भाग आना न केवल हानिकारक ही है किन्तु बड़ी भारी लज्जा का स्थान है।

इतने में एण्टनी दूत सहित आ गया और कहने लगा—"क्या सीज़र ने यह उत्तर दिया है ?"

दूत—जी हाँ !

एण्टनी—क्लियोपाट्रा को क्षमा कर दिया जायगा, और मुझे वह उसके हवाले कर देगी !

दूत—सीज़र की यही इच्छा है।

एण्टनी—अच्छा, इससे (क्लियोपाट्रा से) कह दो "लो, इस श्वेत केश वाले सिर को युवक सीज़र के समीप भेज दो। और वह तुमको बहुत सा राज दे देगा !"

क्लियोपाट्रा—इस सिर को ?

एण्टनी—(दूत से) अच्छा, सीज़र से इतना और कह दो कि अभी उसकी नई उम्र है—मैं बूढ़ा हो चुका—रुपया, जहाज़, सेना तो एक कायर के पास भी हो सकती हैं। इनकी सहायता से एक बच्चा भी ऐसी ही प्रबलता से

लड़ सकता है जैसे सीज़र—इसमें कोई वीरता नहीं है। इसलिए हम तुम अकेले युद्ध करें।

एण्टनी तो यह कहता हुआ दूत के साथ बाहर चला गया परन्तु क्लियोपाट्रा के नौकर ने आकर सूचना दी कि सीजर का एक दूत महारानी के दर्शन करना चाहता है। यह वही दूत था जिसे सीज़र ने क्लियोपाट्रा को फुसलाने के लिए भेजा था।

क्लियोपाट्रा—कहो, सीज़र की क्या आज्ञा है?

दूत—अकेले में सुनिए।

क्लियोपाट्रा—कोई बाहरी आदमी नहीं है, स्पष्ट कहो।

दूत—महारानीजी! सीज़र जानता है कि आपने एण्टनी को प्रेमवश ग्रहण नहीं किया किन्तु डर के कारण।

क्लियोपाट्रा—हाँ।

दूत—इसलिए जो दोष आपमें आ गये उन पर आपका कोई वश नहीं था।

क्लियोपाट्रा—सीजर तो साक्षात् देव है। वह ठीक बात जानता है। मैं स्वयं एण्टनी के वश में नहीं हो गई किन्तु मुझे जीत लिया गया।

दूत—सीजर आपसे बड़ा प्रसन्न होगा अगर आप उसके आश्रित हो जायँ और एण्टनी को छोड़ दें।

क्लियोपाट्रा—अच्छा, सीज़र से कह दो कि मैं उसके आश्रित हूँ। ज्योंही दूत ने सम्मान के लिए क्लियोपाट्रा

ज़ोर से लड़ाई हो रही थी, क्लियोपाट्रा का संकेत पाकर बहुत से सिपाहियों ने सामुद्रिक युद्ध की भाँति पीठ दिखा दी और बेचारा एण्टनी देखता का देखता ही रह गया। परन्तु अब हो ही क्या सकता था। एण्टनी की रही-सही आशाओं का भी अन्त हो गया। वह कहने लगा—

"सर्वनाश हो गया! इस दुष्ट स्त्री ने मुझे धोखा दिया। मेरी सेना शत्रु से मिल गई। देखो, वे ख़ुशी के मारे टोपियाँ उछाल रहे हैं। हे व्यभिचारिणी, तूने मुझे एक युवक के हाथ बेच दिया। हाय! अब मेरा मन चाहता है कि तुझे यहीं समाप्त कर दूँ। हे सूर्यदेव! आपके उदय होने तक मैं न बचूँगा! आज एण्टनी और भाग्य दोनों एक दूसरे से पृथक् होते हैं। आज वे लोग जो मुझसे परम मित्रता रखते थे और जो मेरे इशारे पर काम करते थे, मेरे शत्रु से मिल रहे हैं। मिस्र की इस दुष्ट स्त्री ने मुझे पकड़वा दिया। इसी ने मुझसे युद्ध कराया। यह मेरे शिर का मुकुट थी और आज इसने फुसलाकर मुझे नष्ट कर दिया। (क्लियोपाट्रा को देखकर) अरी चुड़ैल, आ तो सही।

क्लियोपाट्रा—महाराज, अपनी प्यारी से क्यों कुपित हैं?

एण्टनी—चल, हट! नहीं तो अभी तेरे प्राण ले लूँगा। जा, सीज़र के साथ जा—वह तुझे रोम के बाज़ार में लटका कर दिखावेगा। लोग तुझे देखकर हँसेंगे। तू उसके रथ के पीछे चलेगी और चारों ओर से थू-थू का शब्द

सुनाई देगा। तुझसे समस्त स्त्री-जाति कलङ्कित हो गई। आक्टेविया अपने नाख़ूनों से तेरे मुँह को फाड़ेगी। (क्लियोपाट्रा भाग गई) अच्छा हुआ भाग गई। परन्तु यदि मेरी तलवार के नीचे आ जाती तो अच्छा होता, क्योंकि एक की मृत्यु से सैकड़ों बच जाते। अब मैं अवश्य इसे मार डालूँगा।

अब एण्टनी का मन क्लियोपाट्रा से बिल्कुल खट्टा हो चुका था। अब वह स्वयं देख चुका कि यह चुड़ैल छल करती है। इसलिए क्लियोपाट्रा को भी उसे समझाने का कोई उपाय सूझता न था।

पहले तो दो-चार आँसू गिराकर वह एण्टनी को प्रसन्न कर देती थी और एण्टनी उसकी मुसकुराहट देखते ही उसके सब दोष भूल जाता था। परन्तु इस समय एण्टनी के हृदय में बड़ा भयङ्कर घाव लगा था, जो एक-दो चिकनी-चुपड़ी बातों से अच्छा नहीं हो सकता था। इसलिए अपनी सहेलियों की अनुमति से (क्योंकि क्लियोपाट्रा की सहचरियाँ भी कुछ कम छली न थीं) उसने अपने आपको एक मन्दिर में बन्द कर लिया और एण्टनी के पास कहला भेजा कि क्लियोपाट्रा मर गई और अन्तिम समय उसके मुँह से यही शब्द निकलते थे—एण्टनी! एण्टनी!

जब वह दूत एण्टनी के पास पहुँचा, एण्टनी ने कहा—

"देख, आज तेरी रानी ने मेरे हाथ से तलवार छुड़ा दी।"

दूत—नहीं महाराज! रानी को आपसे अगाध प्रेम था और उसका परिणाम भी आपका ही सा हुआ!

एण्टनी—नहीं दुष्ट! चुप रह! तेरी रानी ने मुझे नष्ट कर दिया। मैं उसे अवश्य प्राणदण्ड दूँगा!

दूत—श्रीमन्! मनुष्य को एक ही बार प्राणदण्ड दिया जाता है! यह वह स्वयं पा चुकी। आप जो चाहते थे वह हो गया! अन्त मे उसने यही कहा था "एण्टनी, सुयोग्य एण्टनी!" फिर उसका दम घुटने लगा और उसने "एण्टनी" कहना चाहा परन्तु शब्द मुँह का मुँह ही में रह गया!

एण्टनी—तो कह, मर गई?

दूत—हा मर गई!

एण्टनी—अच्छा तो अब समस्त दिन का काम समाप्त हो गया। अब हमें सोना चाहिए। क्लियोपाट्रा! मैं तेरे पीछे आता हूँ। महारानी ठहर। मेरे लिए ठहर। मैं रो-रोकर तेरे लिए क्षमा माँगूँगा। हम दोनो स्वर्गलोक में मिलेंगे! (नौकर से) क्लियोपाट्रा मर गई इसलिए हमारा जीना व्यर्थ है। मैंने अपनी तलवार से समस्त संसार जीत लिया था, परन्तु आज मुझमें एक स्त्री के बराबर भी साहस नहीं है। तूने प्रतिज्ञा की थी कि जब कभी कोई अत्यावश्यक कार्य होगा तब आपकी सेवा करूँगा। सो आज सब से जरूरी काम है क्योंकि अब जीते रहने

मे लज्जा और अपयश के सिवा और कुछ नहीं है। इसलिए आज तलवार से इस जीवन को समाप्त कर।

नौकर—भला मैं वह काम कब कर सकता हूँ जो आपके शत्रु भी नहीं कर सके ?

एण्टनी—अरे! क्या तू यह चाहता है कि रोम की खिड़कियों से अपने स्वामी को सीज़र के रथ के पीछे घसिटता हुआ देखे। क्या वर्त्तमान अपयश कुछ कम है ?

नौकर—नहीं, मैं नहीं चाहता।

एण्टनी—नहीं चाहता तो तैयार हो जा। एक घाव से मेरा सब रोग दूर हो जायगा! तलवार उठा!

नौकर—श्रीमन्! क्षमा कीजिए।

एण्टनी—अरे क्या तूने प्रतिज्ञा नहीं की थी कि समय पर काम आऊँगा ? सो तू आज क्यों हटता है ?

नौकर—अच्छा, महाराज अपना मुख दूसरी ओर को कर ले; क्योंकि मुख को देखकर अत्याचार नहीं किये जा सकते।

एण्टनी—(पीठ फेरकर) ले।

नौकर—मेरी तलवार खिंच गई।

एण्टनी—अच्छा, फिर कार्य समाप्त कर!

नौकर—श्री महाराज! इस अन्त समय मे आज्ञा दीजिए कि मैं प्रणाम कर लूँ।

एण्टनी—अच्छा प्रणाम।

नौकर—क्या अब मारूँ ?

एण्टनी—हाँ।

"अच्छा लो ! अब मुझे एण्टनी की मृत्यु का शोक न भोगना पड़ेगा।" यह कहकर नौकर ने अपने सिर में तलवार मार ली और गिर पड़ा।

"अरे वीर नौकर, तू मुझे शिक्षा दे गया कि मुझे क्या करना चाहिए। मेरी रानी और तू दोनों मुझसे अच्छे रहे; अब मैं मृत्यु से विवाह करता हूँ।" यह कहकर एण्टनी तलवार के ऊपर गिर पड़ा परन्तु उसकी जान न निकली। उसने पहरे के सिपाहियों से प्रार्थना की कि एक तलवार से शेष सम्बन्ध को तोड़ दो, लेकिन किसी ने स्वीकार न किया। जब वह इस प्रकार घायल पड़ा हुआ था क्लियोपाट्रा का नौकर वहाँ पर आ गया, जिसे रानी ने यह सोचकर एण्टनी के पास भेजा था कि कहीं एण्टनी उसकी कल्पित मृत्यु के शोक में प्राण न दे दें। एण्टनी ने नौकर से प्रार्थना की कि "तलवार-द्वारा इस कष्ट से छुड़ा दो।"

नौकर—श्री महाराज ! महारानी क्लियोपाट्रा ने मुझे भेजा है।

एण्टनी—अरे कब भेजा था ?

नौकर—अभी।

एण्टनी—वह कहाँ है ?

नौकर—श्रीमहाराज, मन्दिर मे। जब उसने देखा कि आप बहुत क्रुद्ध हैं और समझते हैं कि वह सीज़र से मिल गई तब उसने आपके पास अपनी मृत्यु का समाचार भेज दिया, परन्तु फिर वह डरी कि कहीं आप आत्मघात न कर लें। इसलिए मुझे आपकी सेवा मे सच-सच कहने को भेजा है। पर अब क्या होता है।

एण्टनी—अच्छा अभी थोड़ी सी देर और है। पहरेवालों के द्वारा मुझे क्लियोपाट्रा के पास ले चलो।

इधर क्लियोपाट्रा ने सुना कि एण्टनी ने आत्मघात कर लिया इसलिए वह सिर पीटने लगी। परन्तु मन्दिर से बाहर जाना उचित नहीं था क्योंकि आक्टेवियस सीज़र के नौकर चारों ओर मँडला रहे थे और क्लियोपाट्रा को जीवित पकड़ना चाहते थे। जब लोग एण्टनी को मन्दिर के पास लाये तब खिड़की में होकर उसने बड़ी मुश्किल से उसे भीतर खींच लिया। उसके मुँह से इतना ही निकला—

"एण्टनी! एण्टनी!"

एण्टनी—सीजर मुझे न मार पाया। एण्टनी का अन्त एण्टनी के ही हाथ से हुआ!

क्लियोपाट्रा—उचित भी यही था। एण्टनी के सिवा और कौन एण्टनी को जीत सकता था!

एण्टनी—रानी मेरा अन्त निकट है. मुझे प्यार कर ले।

क्लियोपाट्रा ने कुछ शराब पिलाई, जिसके नशे से वह थोड़ी देर तक बोलता रहा। उसने अन्त में कहा—प्यारी क्लियोपाट्रा, सीजर के पास जा और रक्षा तथा यश की प्रार्थी हो।

क्लियोपाट्रा—यश और रक्षा दोनों में परस्पर विरोध है।

एण्टनी—मेरी इस शोचनीय दशा पर शोक मत करो! किन्तु मेरी उस अवस्था का ध्यान करके ख़ुशी मनाओ जिसको मैं भोग चुका हूँ। न तो नीचता से मरा और न मेरे कवच को किसी अन्य रोमन के हवाले करो। अब मेरा अन्त आ गया। मैं कुछ नहीं कह सकता।

क्लियोपाट्रा—हे वीर! तुझे मेरी कुछ परवा नहीं है, और मरा जा रहा है। क्या मैं अब इस संसार में रहूँगी! क्योंकि बिना तेरे यह घर सुअर के घर से उत्तम नहीं है। देखो! देखो! दुनिया का मुकुट पिघला जा रहा है। स्वामिन्! युद्ध की जयमाल मुरझा गई। अब लड़के और लड़कियाँ वीरों के समान हैं; क्योंकि जो भेद था सो जाता रहा।

इतने में एण्टनी का प्राणान्त हो गया और क्लियोपाट्रा को यह देखकर मूर्छा आ गई। बड़ी देर के पश्चात् उसे होश आया और मृतकसंस्कार की तैयारियाँ कीं।

सीज़र ने भी एण्टनी की मृत्यु के विषय में सुना और बड़ा पश्चात्ताप किया, क्योंकि यद्यपि सीज़र एण्टनी का शत्रु

हो गया था तथापि उसे विश्वास था कि एण्टनी बड़ा वीर पुरुष था। वीर लोग अपने शत्रुओं की मृत्यु पर भी आँसू बहाया करते हैं।

सीज़र को अब यह भी खयाल हुआ कि कहीं क्लियोपाट्रा एण्टनी के सोच में मर न जाय। इसलिए उसने जल्दी-जल्दी उसे सन्तोष देने के लिए दूत भेजे। एक दूत ने मन्दिर के निकट आकर कहा कि महारानी सीज़र से क्या चाहती हैं।

क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"अगर तुम्हारा स्वामी चाहता है कि मैं उससे भीख माँगूँ तो मैं यही माँगूँगी कि मेरे लड़के को मिश्र का देश दे दिया जाय।"

इसके पश्चात् यह दूत खिड़की में रस्सी लगाकर मन्दिर के भीतर चढ़ गया। रानी डरी और तलवार उठाकर अपना अन्त करना चाहा परन्तु उस दूत ने झट उसके हाथ से तलवार छीन ली। इस प्रकार क्लियोपाट्रा आत्मघात करने में सफल न हो सकी। परन्तु उसने खाना-पीना छोड़ दिया। दिन-रात रोती रहती। ज्वर ने उसे आ घेरा। सीज़र ने वैद्यों को उसकी चिकित्सा के लिए भेजा, परन्तु उसने औषध नहीं खाई। रोते-रोते उसकी आँखें सूज गईं।

इसके पश्चात् सीज़र स्वयं मन्दिर में आया। क्लियोपाट्रा उठ खड़ी हुई और पृथ्वी में सिर झुकाकर प्रणाम किया। सीज़र ने कहा—

"दुखी मत हो। जो हानि तुमने हमको पहुँचाई है उसको हम भूल जायँगे।"

क्लियोपाट्रा—महाराज! मैं केवल इतना कहती हूँ कि मुझसे ऐसी भूलें हो गई हैं जैसी प्रायः स्त्री-जाति से हो जाया करती हैं।

सीज़र—सुनो। अगर हमारे आश्रय में आओगी तो हम तुम्हारे ऊपर दया करेंगे। पर जो एण्टनी की तरह आत्मघात किया तो हमारा क्रोध बहुत बढ़ जायगा और हम तुम्हारी सन्तान को मार डालेंगे।

क्लियोपाट्रा—आप जो चाहें करें। हम आपके आश्रित हैं।

अब सीज़र ने हुकम दिया कि मिश्र का कोष उसको दे दिया जाय। सिल्यूकस, क्लियोपाट्रा का कोषाध्यक्ष उसके साथ था। क्लियोपाट्रा ने कुछ बहुमूल्य रत्न छिपाकर शेष सब कुछ उसके सामने रख दिया। परन्तु सिल्यूकस ने कहा कि अभी बहुत कुछ छिपा लिया गया है। इस पर तो क्लियोपाट्रा को बड़ा क्रोध आया और सीज़र के सामने ही उसके कई घूँसे मारे और निकाल दिया। सीज़र ने कुछ न कहा और वहाँ से चला गया।

इन्द्रिय-लालसा तो क्लियोपाट्रा के मन में अन्तिम समय तक रही। उसने बातों तथा शृङ्गार में सीज़र का मन भी आकर्षित करना चाहा। जिस समय सीज़र उसके समीप आया उस समय यद्यपि एण्टनी के शोक से उसकी आँखें सूज

रही थी, बाल बिखरे हुए थे परन्तु फिर भी उसका स्वरूप कुछ कम लुभानेवाला न था। लेकिन सीज़र के सामने उसका चातुर्य कुछ न चला और वह अपने कार्य की सिद्धि मे सफल न हो सकी।

सीज़र के चले जाने के पश्चात् क्लियोपाट्रा ने उसके एक दूत की बड़ी ख़ुशामद की और पूछा कि वास्तव मे सीज़र मेरे साथ कैसा व्यवहार करना चाहता है? उस दूत ने क्लियोपाट्रा की इस शोचनीय दशा पर तरस खाकर उत्तर दिया—मिश्रेश्वरि! दो-तीन दिन और सुख कर लो। सीज़र का मुख्य प्रयोजन तो यही है कि तुमको वन्दी बनाकर रोम को ले जाय। वह इस समय सीरिया होकर रोम को जा रहा है और तीन दिन मे तुमको अपने पुत्रों सहित रोम को जाना होगा।

यह बात सुनते ही क्लियोपाट्रा का शरीर कॉप उठा। उसे अब पूरा विश्वास हो गया कि दुर्दशा अवश्य होनेवाली है। उस समय क्लियोपाट्रा को चारों ओर अन्धकार मालूम होने लगा; वह कहने लगी कि अब जीवित रहने मे ही मृत्यु है। इस मृत्यु से बचने की केवल एक ही विधि है अर्थात् किसी प्रकार आत्मघात करना चाहिए। उस समय उसे एण्टनी का एक उपदेश याद आया जो उसने मरते समय दिया था कि "रानी की मौत मरना"। अब उसने विचार लिया कि मरने मे ही कल्याण है।

यह सोचकर उसने अपनी प्रधान सहचरी चारमियन को बुलाया और कहा—

"प्यारी सखी! आज का दिन और बाक़ी है। हमको रानी की भाँति भले प्रकार शृङ्गार कराओ जिससे हम सम्मान के साथ मर सकें। मर कर ही हमको प्रियतम एण्टनी के दर्शन होंगे।"

उसी समय एक किसान तरकारी की एक टोकरी दरवाज़े पर लाया और भीतर आने की आज्ञा चाही। इस किसान को क्लियोपाट्रा के किसी चाकर ने नील नदी के साँप लेकर भेजा था। इन साँपों की ऐसी प्रकृति कही जाती है कि वह जिसको काट लेते हैं वह किसी औषध से भी नहीं बच सकता, और सिफ़त यह कि इनके काटने में थोड़ा सा भी कष्ट नहीं होता। क्लियोपाट्रा उसको देखकर ख़ुश हुई और पूछा—

"क्या तेरे पास नील नदी का सर्प है जिसके काटने से सहज में ही मृत्यु हो जाती है?"

किसान—हाँ सर्प है। देखो, देखने में यह कितना सुन्दर है।

क्लियोपाट्रा—अच्छा तुम इस टोकरी को रखकर बाहर चले जाओ।

किसान के जाने पर चारमियन से कहा—

"सखि! मुझे शृङ्गार कराओ। मैं अवश्य मरूँगी। एण्टनी मुझे बुला रहा है। देर हो गई है। वह कहता होगा कि मैं सीज़र के वश में आ गई। स्वामिन! प्राणेश्वर! मैं तुम्हारे पास आ रही हूँ। अब देर नहीं है।"

इसके पश्चात् उसने सब सहचरियों को गले लगाया और एक सर्प को उठाकर अपने वक्षःस्थल से लगा लिया और कहने लगी—

"देखो! हमारे वक्ष मे बालक दूध पी रहा है।"

फिर उसने एक और सर्प को लेकर बाँह में लगा लिया। सर्प ने क्लियोपाट्रा के कोमल शरीर को झट काट लिया। वह मूर्छा खाकर गिर पड़ी।

क्लियोपाट्रा की मृत्यु पर उसकी सहचरी चारमियन ने भी सर्प-द्वारा आत्मघात किया।

जिस समय मिश्रेश्वरी इस प्रकार स्वर्ग को सिधार गई उसी समय सीजर के दूत उसे पकड़ने के लिए आ पहुँचे। सीज़र भी उनके साथ था, क्योंकि उसको यह समाचार मिल गया था कि क्लियोपाट्रा अब आत्मघात करना चाहती है। इसलिए वह जल्दी से उसे रोकने के लिए आया था। परन्तु अब क्या हो सकता था। क्लियोपाट्रा अपने एण्टनी के पास थी और वे दोनों स्त्री पुरुष सांसारिक बन्धनों से छूट चुके थे।

सीज़र आया और अपने परिश्रम को विफल देखकर शोकातुर हुआ। अन्त में उसका मृतक-संस्कार बड़े सम्मान के साथ किया गया। उसका शव एण्टनी के शव के साथ समाधिस्थ कर दिया गया।

इति

हिन्दी-शेक्सपियर

षष्ठ भाग

गंगाप्रसाद, एम. ए.

हिन्दी-शेक्सपियर

छठा भाग

लेखक

गंगाप्रसाद, एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९२५

[मूल्य ॥=)

Published by
K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd.,
Allahabad.

Printed by
A. B[illegible],
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch.

The eye of Genius glistens to admire
How memory hails the sound of Shakespeare's lyre
One tear I'll shed to form a crystal shrine
Of all that's grand, immortal and divine
Let princes o'er their subject kingdoms rule,
'Tis Shakespeare's province to command the soul!

—*L. Buonaparte*

विषय-सूची

शेक्सपियर और बेकन

(छठे भाग की जीवनी)

पिछले पाँच भागों में हम शेक्सपियर के जीवन और ग्रन्थों के विषय में बहुत कुछ लिख चुके हैं। यहाँ अपने पाठकों के सूचनार्थ एक और विषय संक्षेप से लिखते हैं। आशा है, यह भी उनको अप्रिय न होगा।

थोड़े दिनों से पाश्चात्य देशों में एक विचित्र लहर उठ रही है, जिसका नाम हम ऐतिहासिक सन्देह रख सकते हैं। इससे हमारा तात्पर्य्य यह है कि पाश्चात्य विद्वान् प्रायः ऐतिहासिक पुरुषों के अस्तित्व पर शङ्का कर रहे हैं। बहुतों का मत है कि ईसा मसीह ने कभी संसार में जन्म नहीं लिया और जो काम उसके जीवन से सम्बद्ध माने जाते हैं वे अन्य पुरुषों ने उसके नाम के साथ मिला दिये हैं। बहुत से मानते हैं कि महात्मा बुद्ध का नाम निरी कल्पना है; शाक्यमुनि नाम का कोई पुरुष था ही नहीं। बहुत से विद्वानों का सिद्धान्त है कि रामायण कोई ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं, किन्तु उपन्यास-मात्र है। इसी प्रकार विचित्र बुद्धिवाले पुरुष बैठे-बिठाये नये-नये सिद्धान्त अपने विलक्षण मस्तिष्क से निकाला करते हैं।

महाकवि शेक्सपियर भी वैसी ही कल्पनाओं से नहीं बच सका और यद्यपि आज तक कोई मनुष्य शेक्सपियर के अस्तित्व से इनकार नहीं कर सका परन्तु ६२ वर्ष से बहुत से लोग यह मानने लगे हैं कि जो नाटक इस महाकवि के बनाये प्रसिद्ध हैं उन सबका वास्तविक बनानेवाला फ्रान्सिस बेकन था, जो १५६१ ईसवी में उत्पन्न हुआ और १६२६ ईसवी में मरा! यह शङ्का सबसे पहले जोज़िफ़ हार्ट ने की थी जिसने १८४८ ईसवी में 'रोमांस आफ़ याटिंग' (Romance of Yachting) नाम की पुस्तक में शेक्सपियर की महत्ता पर सन्देह प्रकट किया था। ७ अगस्त १८५२ ईसवी के 'चेम्बर्स जर्नल' पत्र में इसी विषय पर एक और लेख निकला। जनवरी १८५६ ई० के 'पटनम्स मंथली' (Putnam's Monthly) नामक पत्र में मिस डेलिया नामक बेकनवंशीया कुमारी ने एक लेख में बड़ी विचित्र युक्तियों से यह दिखाया कि ये सब नाटक शेक्सपियर के नहीं, किन्तु बेकन के लिखे हुए हैं। इस सिद्धान्त का प्रचार करनेवाली सबसे पहली यही कुमारी थी, जो पागल होकर २ सितम्बर १८५९ ईसवी में मर गई। परन्तु इसके पश्चात् अमेरिकावालों ने इस सिद्धान्त को बड़ी गम्भीर-दृष्टि से देखा और १८६६ ईसवी में नेथेनियल होम्स नामक एक वकील ने बेकन के पक्ष में एक बहुत बड़ी पुस्तक लिखी। १८८८ ईसवी में इग्नेशियस डोनेली साहब ने, जो मिनिसोटा का रहनेवाला था, 'दी ग्रेट

कृष्टो ग्राम' नामक पुस्तक मे सिद्ध किया कि न केवल शेक्स-पियर के नाटक ही किन्तु मार्लो के नाटक, मौण्टेन के लेख और वर्टन का 'एनोटमी और मेलंकली' भी बेकन के लिखे हुए हैं। इन सबका उत्तर लन्दन के प्रसिद्ध पत्र 'दी टाइम्स' मे दिसम्बर १६०१ और जनवरी १६०२ में निकल चुका है।

१८८५ ईसवी मे इन सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए एक सभा लन्दन में स्थापित हुई, जिसने बेकोनियाना नामक एक पत्र निकालना आरम्भ किया। १८६२ मे चिकागो से भी इसी नाम का एक त्रैमासिक पत्र निकला। कहते हैं कि इस विषय की अब तक—इस ६३ वर्ष के भीतर—५०० से अधिक पुस्तके लिखी जा चुकी हैं। परन्तु बहुत से प्रमाण इस बात के हैं कि लार्ड बेकन इन नाटकों को नहीं लिख सकता था।

फ्रांसिस बेकन एलीज़िबिथ के समय का बहुत बड़ा फ़िला-सफ़र और गद्य-लेखक हो गया है। वह बड़ा विद्वान् था। उसके ग्रन्थों में बहुत सी ऐसी बातें पाई जाती हैं जिनका वर्णन शेक्सपियर ने भी किया है। इसके अतिरिक्त बेकन कुछ ऐसे ग्रन्थों का भी अपने पत्रों में वर्णन करता है जो उसके नाम से प्रचलित नहीं हैं। इन्हीं के आधार पर लोगों का विचार है कि ये विचित्र नाटक बेकन ने लिखे। दूसरी बात यह है कि बहुत से विद्वान् जब इन नाटकों को विचारशील बातों को शेक्सपियर के उस जीवन के साथ संयुक्त करते हैं जब वह लूसी के पार्क में हरिण पकड़ते पाया गया और

उस पर मार पड़ी तब उनको लज्जा के मारे विश्वास नहीं आता और वे झट यह स्वीकार कर लेते हैं कि जिस मस्तिष्क से ऐसे-ऐसे रत्न निकले वह कदापि स्ट्रेटफोर्ड का खरगोश-चोर न था। और, जहाँ इसी कारण से बहुत से विद्वानों ने शेक्सपियर की घृणित घटनाओं से इनकार कर दिया है वहाँ बेकन का सहारा पाकर बहुत-से लोग इधर चले गये हैं। परन्तु, हमारे विचार में इन दोनों की भूल है। संसार में हम बहुत से मनुष्यों को देखते हैं जिनके भिन्न-भिन्न अवस्था के कार्यों में पूर्व-पश्चिम का भेद है। इसके अतिरिक्त बेकन-सिद्धान्त तो ऐसा निर्मूल है कि उसमें कल्पना के सिवा और कुछ भी नहीं। इस पर हमारी ऑर्बिङ्ग ने एक अच्छा लेख लिखा है, जिसकी कुछ युक्तियाँ हम यहाँ उद्धृत करेंगे।

सबसे पहले इस बात के बहुत से प्रमाण हैं कि शेक्सपियर अपने प्रारम्भिक जीवन में दूसरों के नाटकों को काट-छाँटकर, नाट्य-सभाओं की प्रार्थना पर, समयानुकूल बना दिया करता था और इस काम में वह इतना प्रवीण और इसलिए प्रसिद्ध हो गया था कि कई बड़े नाटक-लेखक उससे डाह करने लगे थे और जब-तब उसको बुरा-भला भी कहते थे। उनमें से एक ग्रीन (Green) था जिसने उसे "कौए" की उपमा दी है जो "हमारे पर लगाकर उड़ने लगा है" और शेक्सपियर के बदले उसे शेकसीन (नाटकीय भड़ों का हिलानेवाला) लिखा है। यहाँ दो बातें सिद्ध हैं। (१) शेक्स-

पियर की कीर्त्ति उस समय इतनी बढ़ती जाती थी कि बड़े-बड़े लेखक भी चौंक गये थे, (२) जिसकी ओर ग्रीन ने संकेत किया है वह बेकन नहीं किन्तु शेक्सपियर है जिसके लिए शेक्स-सीन शब्द का प्रयोग किया गया है। इसके सिवा समकालीन लेखक बेन जौनसन का उसको "एवन-मराल" कहना सिद्ध करता है कि यदि बेकन इन नाटकों का लेखक होता तो कम से कम बेन जौनसन आदि मनुष्य अवश्य इस बात को जानते, क्योंकि इनका सम्बन्ध शेक्सपियर के साथ बहुत निकट का था। जो लोग शेक्सपियर की अयोग्यता के कारण बेकन को यह सब यश देना चाहते हैं उनको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यद्यपि कभी-कभी शेक्सपियर बेकन से मिला करता था, परन्तु उसकी उससे परम मित्रता नहीं थी। ऐसी अवस्था में कैसे सम्भव था कि बेकन अपने अपूर्व लेखों को गुप्त रीति से शेक्सपियर के हवाले कर देता। और अगर शेक्सपियर ऐसा ही अयोग्य था तो बेकन जैसे विद्वान् पुरुष का शेक्स-पियर जैसे नीच पुरुष से कैसे मेल हुआ और उसने क्यों इसे अपना स्थानापन्न नियत किया? यदि बेकन शेक्सपियर से मिलता था तो केवल इसलिए कि दोनों साहित्य के प्रेमी थे। इसके सिवा उनमें कोई सम्बन्ध नहीं था।

सबसे बड़ा और अच्छा प्रमाण बेकन-सिद्धान्त के विरुद्ध यह है कि यद्यपि बेकन बड़ा विद्वान् और फ़िलासफ़र था परन्तु उसे नाट्य-शास्त्र का कुछ भी ज्ञान न था। सम्भव है, बेकन

शेक्सपियर से भी उच्च विचारों को प्रकट कर सके परन्तु यह कैसे सम्भव है कि उन विचारों को नाट्य-विद्या जाने बिना नाट्यशाला के योग्य नाटकों का रूप दे सके। हमने 'शेक्सपियर का नाट्य' नामक लेख में बहुत कुछ यह दिखलाने की कोशिश की है कि शेक्सपियर बड़ा प्रवीण नाट्यकार था। उसके नाटकों से यह बात भली भाँति प्रकट होती है कि नाट्य-शाला के नियमों का उसे खासा ज्ञान था। जो बातें उसे सूझी हैं वे नाट्य-कार के सिवा दूसरे को सूझ नहीं सकती थीं। वह नाटक और नाट्यविद्या से इतनी उपमाएँ लेता है कि हम चकित रह जाते हैं और मानना पड़ता है कि इन नाटकों का निर्माता बड़ा भारी नाट्य-कार है। "कोरियोलेनस" में लिखा है—

"It is a part that I shall blush in acting."

"यह वह पार्ट है जिसके खेलने में मुझे लज्जा होगी।"

"You have put me now to such a part which never
I shall discharge to the life."

"आपने मुझे वह पार्ट दिया है जिसे मैं यथा-पर्यन्त नहीं खेल सकता।" बेकन नाट्य-कार न था। भला उसे ये बातें कैसे सूझ सकती थीं। फिर "द्वितीय रिचार्ड" में देखिए—

[illegible]

Even so, or with much more contempt, men's eyes
Did Scowl on gentle Richard."

"जिस प्रकार एक उत्तम नाट्य-कार के रङ्गभूमि से चले जाने के पश्चात् दूसरे की ओर लोग रुचि के साथ नहीं देख सकते, इसी प्रकार अथवा इससे भी अधिक घृणा से लोग सुयोग्य रिचार्ड की ओर देखने लगे।"

बेकन जैसा इतिहास-वेत्ता रिचार्ड के इस अपमान को नाट्य-सम्बन्धी शब्दों में कभी प्रकट न करता।

बेकन वकील भी था। अब देखिए, शेक्सपियर नाट्य-सम्बन्धी सूचनाओं में कभी भूल नहीं करता; परन्तु क़ानूनी बातों में उससे प्रायः चूक हो जाती है।

बेकन कभी अपनी कविता के लिए प्रसिद्ध नहीं हुआ। शेक्सपियर सदा से प्रसिद्ध है। अपनी मृत्यु से पहले बेकन ने इञ्जील के भजनों का पद्य में अनुवाद किया है जिससे विदित होता है कि उनकी कविता और इस महाकवि की कविता में आकाश-पाताल का भेद है।

बहुत सी अन्य त्रुटियाँ भी शेक्सपियर के नाटकों में ऐसी पाई जाती हैं जो एक नाट्य-कार या नाटक-लेखक के लिए तो बुरी नहीं, परन्तु एक ऐतिहासिक अथवा भूगोल-वेत्ता के लिए सचमुच लज्जाप्रद हैं। रोम के देवताओं का नाम ग्रीक लोगों के साथ संयुक्त कर दिया गया है और राजा जॉन के समय में तोपों का वर्णन है। यह बड़ी भारी ऐति-

हासिक भूल है। फिर देखिए, वैलिण्टायन वैरोना से मिलान को समुद्र-यान-द्वारा जाता है और 'तूफान' मे प्रोस्पैरो मिलान के फाटक पर ही जहाज़ मे सवार होता है। बेकन-जैसा भूगोल-वेत्ता कभी यह भूल न करेगा। इसलिए शेक्सपियर के गुण और दोष दोनों यह बता रहे हैं कि ये शेक्सपियर के ही गुण और दोष हैं न कि किसी अन्य के। बेकन-सिद्धान्त के प्रचारक चाहे कितना ही प्रयत्न क्यों न करें परन्तु जो यश शेक्सपियर को प्राप्त हुआ है उससे वे उसे वञ्चित नहीं कर सकते।

सम्भव है, बहुत से पाठकों को हमारा शेक्सपियर-बेकन लेख रुचिकर न हो। परन्तु इससे उनको यह विदित हो जायगा कि पाश्चात्य देशों मे साहित्यसम्बन्धी वादानुवाद किस प्रकार हुआ करते हैं और उनसे हम अपना देशीय साहित्य सुधारने में क्या-क्या शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

हिन्दी-शेक्सपियर

छठा भाग

विण्डसर की हँसमुख स्त्रियाँ

(Merry Wives of Windsor)

विण्डसर* में पेज और फ़ोर्ड नामी दो धनी भले आदमी रहते थे, जिनकी स्त्रियाँ बड़ी रूपवती थीं। परन्तु पेज की पुत्री ऐनी अतीव सुन्दरी थी। उससे विवाह करने की लालसा कई पुरुषों के मन में थी। उनमें से एक का नाम डाक्टर कैयस था, जो एक फ़रांसीसी वैद्य था। दूसरा स्लेण्डर, गाँव के शैलो नामी एक मुखिया का भतीजा था। ऐनी का तीसरा चाहनेवाला फ़ैण्टन था, जिसे ऐनी भी चाहती थी। परन्तु उसके मा-बाप अर्थात पेज और उसकी स्त्री फ़ैण्टन को अपना दामाद बनाना स्वीकार नहीं करते थे। उन्होंने फ़ैण्टन से स्पष्ट कह दिया था कि तुम हमारे घर न आया करो; हम अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ कदापि न करेंगे।

* विण्डसर इंगलिस्तान में एक स्थान का नाम है।

यद्यपि बिना उनकी राज़ी के भी यह विवाह हो सकता था, परन्तु जब कभी फ़ैण्टन ऐनी से इस सम्बन्ध में वार्तालाप करता था तब ऐनी यही कह देती थी कि आप मेरे पिताजी को प्रसन्न कीजिए। एक दिन निराश होकर फ़ैण्टन ने ठण्डी साँस लेकर ऐनी से कहा—प्यारी ऐनी, मुझे दीखता है कि कभी तुम्हारे पिताजी मुझसे ख़ुश न होंगे। इसलिए तुम उनके आसरे पर मत छोड़ो।

ऐनी—हाय! फिर क्या हो?

फ़ैण्टन—तुम स्वयं कार्य्यवाही करो। तुम्हारे पिताजी मुझसे नाराज़ हैं। वे कहते हैं कि तुम बड़े धनी घराने के थे। तुमने सब धन लुटा दिया। इसलिए केवल धन-प्राप्ति के लिए ऐनी से विवाह करना चाहते हो। तुम्हें ऐनी से कुछ प्रेम नहीं है।

ऐनी—शायद उनका कहना ठीक हो।

फ़ैण्टन—नहीं प्रिये, नहीं! मुझमें जो कुछ दोष हैं उनको तुमसे न छिपाऊँगा। सच बात यह है कि पहले पहल मैंने धन के लिए ही विवाह की इच्छा की थी, परन्तु मन चलाते ही मैं तुम पर इतना आसक्त हो गया हूँ कि तुम्हारे प्रेम को धन से भी अधिक समझता हूँ।

ऐनी—फ़ैण्टन, भले फ़ैण्टन! मेरे पिताजी से फिर प्रार्थना करो। सम्भव है, वे मान ही जायँ। यदि वे न मानेंगे तो कुछ और उपाय किया जायगा।

जिस समय ये बातें हो रही थीं उसी समय स्लेण्डर शैलो के साथ वहाँ आ गया। उसके साथ एक वृद्धा स्त्री किकली भी थी जिसका हाल हम आगे चलकर लिखेंगे। यहाँ यही कह देना काफ़ी है कि यह डाक्टर केअस की दासी थी और प्रेमासक्त स्त्री-पुरुषों के बीच पत्र पहुँचाया करती थी। डाक्टर केअस इसी के द्वारा ऐनी को सँदेसा पहुँचाया करता था और ऐनी की माता डाक्टर केअस से राजी होने के कारण इसे घर में आने दिया करती थी। ऐनी का बाप स्लेण्डर से राज़ी था। इस प्रकार एक घर में तीन मत थे। लड़की चाहती थी कि जिस प्रकार हो सके, फ़ैण्टन से विवाह हो जाय। पिता उसका स्लेण्डर को दामाद बनाना चाहता था। माता केअस को अपनी कन्या देना चाहती थी।

स्लेण्डर धनी पुरुष था। उसकी वार्षिक आय ३०० पौण्ड था, परन्तु उसमें बुद्धि न थी। ऐनी का पिता पेज उसे केवल धनी देखकर ही अपनी बेटी देना चाहता था, जिस प्रकार आजकल भारतवर्ष के लोग केवल धनियों के साथ बिना उनके गुणों का विचार किये अपनी पुत्रियाँ ब्याह देते हैं।

जब ये लोग वहाँ आये तब शैलो ने किकली से कहा—किकली! ऐनी को बुलाओ। मेरा भतीजा उससे कुछ बात-चीत करना चाहता है।

ऐनी ने स्लेण्डर को देखकर अपने जी में कहा—"यह मेरे पिता का प्रस्ताव है। हाय तीन सौ पौण्ड के लिए दोप

भी लोगों को गुण जँचने लगते हैं।" जब वह उनके निकट आई तब शैलो ने कहा—ऐनी, मेरा भतीजा तुमसे प्रेम करता है।

स्लेण्डर—हाँ, मुझे ऐनी सब स्त्रियों से अधिक प्यारी है।

शैलो—वह तुमको सहधर्मिणी बनाना चाहता है।

स्लेण्डर—सहधर्मिणी! हाँ, जो मेरा धर्म है वह इसका होगा।

शैलो—वह आपको १५० पौण्ड देगा।

ऐनी—श्रीमन्, आप उसको स्वयं कहने दीजिए।

शैलो—बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! (स्लेण्डर से) लड़के! चल, ऐनी तुझे बुलाती है।

ऐनी—कहिए स्लेण्डरजी!

स्लेण्डर—भली ऐनी!

ऐनी—क्या आज्ञा है?

स्लेण्डर—मुझे तो कुछ कहना नहीं है। तुम्हारे पिता और मेरे चचा ने विवाह का प्रस्ताव किया है। यदि हो जाय तो हरि-इच्छा! वही मेरी अपेक्षा अधिक कह सकते हैं। देखो, तुम्हारे पिताजी आते हैं।

इस समय पेज और उसकी स्त्री दोनो वहाँ पर आ गये। पेज ने फैण्टन को देखकर क्रोध से कहा—"फैण्टन! यह बुरी बात है। तुम मेरे घर क्यों आते हो। मैं कई बार कह चुका हूँ कि ऐनी को वर मिल गया।

फैण्टन—पेज, क्रोध न कीजिए। शान्त हूजिए।

पेज की स्त्री—फ़ैण्टन ! मेरी बेटी के समीप न आया करो।

पेज—वह आपके लिए नहीं है।

फ़ैण्टन—अजी सुनिए तो सही।

पेज ने फ़ैण्टन की बात न सुनी और स्लेण्डर तथा शैलो के साथ बातचीत करता हुआ बाहर चला गया। क्किकली के संकेत पर फ़ैण्टन ने पेज की स्त्री से कहा—मिसिस पेज* ! मुझे आपकी कन्या से सच्चा प्रेम है। आप चाहे कितनी ही मुझसे घृणा करें, मैं इस प्रेम को त्याग नहीं सकता। आप मेरे ऊपर दया कीजिए।

ऐनी—पूज्य माताजी, मेरा विवाह इस मूर्ख (स्लेण्डर) से न कीजिए।

पेज की स्त्री—नहीं नहीं। मैं तेरे लिए एक उत्तम वर ढूँढूँगी।

मिसिस पेज का तात्पर्य यहाँ डाक्टर कैअस से था। परन्तु वह अपने विचार की सूचना अपने पति को नहीं देती थी।

इन उपर्युक्त पुरुषों के अतिरिक्त विण्डसर में एक और मनुष्य रहता था जिसका नाम सर जौन फ़ौल्स्टाफ़ था। यह आदमी था तो बहुत मोटा परन्तु उसमें बुद्धि न थी। उसके पास धन भी नहीं था परन्तु उसके साथी प्रायः इधर-उधर से लूट-मारकर लाया करते थे और उसी से उसका निर्वाह होता

* अंगरेज़ी नियम यह है कि पेज की स्त्री मिसिस पेज और फ़ोर्ड की स्त्री मिसिस फ़ोर्ड कही जाती है। अर्थात् पति के नाम के पहले मिसिस लगा देते हैं।

था। वह बहुधा एक सराय में रहा करता था, जहाँ पथिकों को मद्य पिलाकर नशे की दशा में वह उनकी सम्पत्ति हरण कर लेता था। इस प्रकार छोटे-छोटे झगड़े नित्य-प्रति वहाँ हुआ करते थे। एक दिन फ़ौल्स्टाफ़ ने पेज और फ़ोर्ड की स्त्रियों के विषय में सुना कि वे रूपवती होने के अतिरिक्त धनवती भी हैं और उनके पति का रुपया उन्हीं के स्वत्व में रहता है। इस पर फ़ौल्स्टाफ़ के मुँह में पानी भर आया और उसने इन दोनों स्त्रियों से प्रेम करके धन-प्राप्ति की इच्छा की, क्योंकि प्रायः असती स्त्रियाँ अपने मित्रों को बहुत धन लुटा दिया करती हैं।

इस इच्छा की पूर्त्ति के लिए फ़ौल्स्टाफ़ ने केअस की दासी किकली को गाँठना चाहा। किकली वास्तव में इन बातों में बड़ी निपुण थी और स्वयं भी यह चाहती थी कि इस प्रकार के कार्यों से अपना निर्वाह किया करे और आँख के अन्धों और गाँठ के पूरों को लूटा करे। किकली ने फ़ौल्स्टाफ से कुछ इनाम लेकर उसके पत्र मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज तक पहुँचाने का ज़िम्मा ले लिया और उद्योग करने लगी। परन्तु असल में किकली का प्रयोजन केवल धनोपार्जन था। वह व्यर्थ किसी स्त्री को बहकाना न चाहती थी।

मिसिस पेज ने फ़ौल्स्टाफ़ का पत्र पढ़ा, जिसमें लिखा हुआ था—"यह न पूछो कि मैं तुमसे क्यों स्नेह करता हूँ, क्योंकि प्रेम किसी कारण से नहीं होता। तुम यदि युवती

नहीं हो तो क्या चिन्ता, क्योंकि मैं भी तो युवक नहीं हूँ। प्रेम तो है। तुम हँसमुख हो और मैं भी हँसमुख हूँ। यहाँ इतना ही कहना काफ़ी है कि मैं तुम पर आसक्त हूँ। मैं यह नहीं कह सकता कि मुझ पर दया करो, क्योंकि मैं वीर हूँ और वीरों को ऐसा कहना अनुचित है। हाँ, यही प्रार्थना है कि मुझसे प्रेम करो।

तुम्हारा सच्चा और दिन-रात
चाहनेवाला
जौन फौल्स्टाफ़।"

मिसिस पेज पत्र को देखते ही क्रोध में भर गई और कहने लगी कि देखो, मेरी युवावस्था में भी ऐसे प्रेम-पत्र मेरे पास नहीं आये थे। फिर यह कौन मूर्ख है जो इस प्रकार मुझसे परिचय जताता है। वह फ़ौल्स्टाफ़ को जानती थी। दो-चार बार उससे बातचीत भी हो चुकी थी। परन्तु यह जान-कर कि फ़ौल्स्टाफ़ उसे कुदृष्टि से देखता है बड़ा क्रोध आया और कहने लगी कि ऐसे दुष्टों को दण्ड देने के लिए अँगरेज़ी पार्लमेण्ट की ओर से नियम होने चाहिएँ।

इतने में मिसिस फ़ोर्ड वहाँ पर आ गई और कहने लगी—
मिसिस पेज, मैं तुम्हारे घर को जा रही थी।
मिसिस पेज—और सच मानो मैं तुम्हारे घर आ रही थी।
मिसिस फ़ोर्ड—देखो, मेरे पास एक पत्र आया है।

मिसिस पेज—अहा! यह तो मेरे ही पत्र के समान है। अक्षर-अक्षर मिलता है। भेद केवल इतना है कि मेरे प में पेज लिखा है और तुम्हारे में फ़ोर्ड। प्रतीत होता है कि उसने बहुत से पत्र छपवा लिये हैं, जिसको चाहे उसके पास भेज देता है। मैं सच कहती हूँ, संसार मे पवित्र पुरुषों का नाम तक नहीं मिलता।

मि० फ़ोर्ड—यह तो वैसा ही पत्र है। और एक ही हाथ के लिखे हुए हैं। भला यह दुष्ट हमारे विषय में क्या समझता है?

मि० पेज—मुझे स्वयं सोच है। उसने मेरा कौन सा काम ऐसा देखा जिससे उसे इस दुष्टता की आशा हुई। हमको अवश्य उससे बदला लेना चाहिए।

मि० फ़ोर्ड—हाँ जी, यह ठीक है। अगर मेरे पतिजी इस पत्रको देख पावें तो उनके मन में मेरी ओर से सन्देह हो जाय।

अब इन दोनों ने चालाकी से फ़ौल्स्टाफ़ को दण्ड देने के लिए यह विचार किया कि किसी प्रकार धोखा देकर उसे अपने घर बुलाना चाहिए। इसलिए उन्होंने किकली के द्वारा फ़ौल्स्टाफ़ के पास एक सँदेसा भेज दिया।

जब किकली फ़ौल्स्टाफ़ के पास लौटकर गई तब उसने कहा—प्रणाम, महाशय!

फ़ौल्स्टाफ़—बहुत-बहुत प्रणाम। कहो क्या है?

कि०—महाशय, मिसिस फ़ोर्ड ने मुझे भेजा है—पास आकर सुनिए। गुप्त बात है—मैं डाक्टर केअस के पास रहती हूँ।

फ़ौल्०—कहिए, मिसिस फ़ोर्ड ने क्या कहा है?

कि०—अजी पास आइए।

फ़ौल्०—कहो। यहाँ कोई नहीं सुनता। ये सब अपने ही आदमी हैं।

कि०—सारांश यह कि मिसिस फ़ोर्ड पर तुमने ऐसा जादू फैलाया है जैसा किसी बड़े से बड़े पुरुष ने भी न फैलाया हो। मैंने ऐसे-ऐसे सुन्दर युवक देखे हैं जिनके चमकीले वस्त्रों के सामने आँख नहीं ठहरती। परन्तु उन पर भी स्त्रियाँ ऐसी जल्दी नहीं रीझतीं जैसी आप पर।

फ़ौल्०—(फूलकर) तो फिर उसने क्या कहा है?

कि०—उसको आपका पत्र मिला था जिसके लिए वह आपकी कृतज्ञ है। अब उसने कहला भेजा है कि मेरा पति आज दस और ग्यारह बजे के बीच में बाहर जायगा।

फ़ौल्०—दस और ग्यारह के बीच में?

कि०—हाँ, उसी समय आप उससे भेंट कर सकते हैं। क्योंकि फ़ोर्ड उसी समय घर से जायगा। बेचारी स्त्री को वह तङ्ग करता है।

फ़ौल्०—दस और ग्यारह के बीच में! अच्छा, कह देना, मैं अवश्य आऊँगा।

कि०—एक सँदेसा और है। मिसिस पेज ने आपके प के उत्तर में कहला भेजा है कि मैं आपसे बहुत प्रसन्न हूँ। परन्तु मुझे शोक है कि मेरा पति सदा वहीं रहता है। हा, कभी न कभी तो समय मिलेगा ही। जान पड़ता है कि फ़ौलस्टाफ़! तुम्हारी आंखों में जादू है।

फ़ौल्०—नहीं नहीं। सच्चे और हार्दिक प्रेम से अधिक कुछ गुण नहीं है।

किक्ली—ईश्वर आपका भला करे! मिसिस पेज ने कहला भेजा है कि आप अपने छोटे नौकर को उसके पास भेज दें। वह आप दोनों के बीच में आया-जाया करेगा। मिसिस पेज बड़ी हँसमुख स्त्री है। विण्ड-सर भर में ऐसी कोई स्त्री नहीं जो उसके समान सुग्र हो। उसका पति उसे बड़े प्रेम से रखता है। वह अपनी नींद सोती है। अपनी भूख खाती है। अपनी प्यास पीती है। घर का हिसाब-किताब उसी के पास रहता है।

फ़ौल्—बहुत अच्छा!

फ़ौलस्टाफ़ ने अपने नौकर रौबिन को किक्ली के साथ कर दिया और उसे बहुत कुछ इनाम दिया।

परन्तु जिस समय फ़ौलस्टाफ़ यहाँ मन के लड्डू बाँध रहा था उसी समय लोग उसके विरुद्ध फ़ोर्ड को भड़का रहे थे। उनमें सबसे मुख्य फ़ौलस्टाफ़ का ही नौकर पिस्टल था, जिसको किसी कारण फ़ौलस्टाफ़ ने घर से निकाल दिया था। उसने फ़ोर्ड से जाकर कहा कि सर जौन फ़ौलस्टाफ़ आपकी स्त्री से गुप्त स्नेह रखता है।

फ़ोर्ड—मुझे आशा नहीं है।

पिस्टल—आशा से क्या होता है। मैं सच कहता हूँ।

फ़ोर्ड—मेरी स्त्री तो युवती नहीं है।

पिस्टल—अरे वह तो बड़ी-छोटी, युवती-वृद्धा, धनी-निर्धन सभी प्रकार की स्त्रियों से प्रेम करता है। फ़ोर्ड, सचेत हो! जौन से सचेत हो!

फ़ोर्ड—क्या मेरी स्त्री को चाहता है?

पिस्टल—हां तेरी स्त्री को और पेज की स्त्री को। देखना हो तो देख, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

अब पिस्टल तो चला गया और फ़ोर्ड ने पेज से कहा—तुमने सुना कि इस दुष्ट ने क्या कहा!

पेज—हां! और क्या तुमने नहीं सुना कि उसने मुझसे क्या कहा?

फ़ोर्ड—क्या तुम इनकी बात को सच जानते हो?

पेज—नहीं नहीं! सर जौन ऐसा नहीं है। इन दुष्टों को उसने निकाल दिया है। इसी लिए ये उसके विरुद्ध लोगों को भड़काते फिरते हैं।

फ़ोर्ड—क्या यह उसी के नौकर थे ?

पेज—हाँ जी!

फ़ोर्ड—मैं उसको दण्ड दूँगा। मुझे यह बात अच्छी नहीं मालूम होती।

पेज—अगर वह मेरी स्त्री के पास आवे तो मैं उसे स्वयं उसके पास भेज दूँ। मैं जानता हूँ कि वह झिड़कने के सिवा उससे और कुछ न कहेगी। मुझे अपनी स्त्री का विश्वास है।

फ़ोर्ड—अपनी स्त्री पर मुझे भी विश्वास है परन्तु मैं ऐसा करने को तैयार नहीं हूँ। अति-विश्वास ठीक नहीं।

अब फ़ोर्ड ने यह विचार किया कि भेस बदलकर फ़ौल्स्टाफ़ के पास जाना चाहिए और उससे अपनी स्त्री का कुछ भेद लेना चाहिए। इसलिए वह अपना नाम ब्रुक रखकर वहाँ गया और कहने लगा—आपकी जय हो।

फ़ौल्०—आपकी भी जय हो। क्या आप मुझसे बात करेंगे?

फ़ोर्ड—जी हाँ। मैं यहाँ का एक भद्र पुरुष हूँ। मैंने बहुत कुछ व्यय किया है। मेरा नाम ब्रुक है।

फ़ौल्०—श्रीमन् ब्रुक! मैं आपसे अधिक परिचित होना चाहता हूँ।

फ़ोर्ड—सर जौन! मैं आपसे कुछ लेने नहीं आया। क्योंकि स्पष्ट बात यह है कि मेरी आर्थिक दशा आपसे अच्छी है। और इसी धन के ज़ोर से मैं बिना जाने-बूझे

यहाँ तक आ गया हूँ। कहावत है कि धन के सामने सब मार्ग खुल जाते हैं।

फ़ौल्०—रुपया बड़ी चीज़ है।

फ़ोर्ड—मेरी थैली में कुछ रुपया है जिसके बोझ से मैं दबा जाता हूँ। सो आप आधा या सब लेकर मुझे हलका कीजिए।

फ़ौल्०—मैं नहीं समझता कि मेरा इस पर क्या अधिकार है।

फ़ोर्ड—यदि आप सुनें तो मैं अभी आपको बताये देता हूँ।

फ़ौल्०—कहिए महाशय ब्रुक, मैं आपकी सेवा करने का उद्योग करूँगा।

फ़ोर्ड—मैंने सुना है कि आप बड़े विद्वान् हैं। और मैं आपको बहुत दिनों से जानता हूँ, यद्यपि आप मुझे नहीं जानते। मैं आपसे ऐसी बात कहूँगा जिससे मेरी त्रुटियाँ मालूम हों, पर मैं चाहता हूँ कि आप एक आँख से मेरी त्रुटियाँ देखें और दूसरी से अपनी जिससे मेरी त्रुटियाँ बहुत बड़ी न मालूम हों। क्योंकि आप भली भाँति जानते हैं कि इस प्रकार के दोष बहुत से लोगों में पाये जाते हैं।

फ़ौल्०—कहिए!

फ़ोर्ड—यहाँ एक स्त्री है, जिसके पति का नाम फ़ोर्ड है।

फ़ौल्०—अच्छा!

फ़ोर्ड—मैं बहुत दिनों से उसे चाहता हूँ और बहुत रुपया ख़र्च कर चुका हूँ। कई बार अच्छी-अच्छी चीज़ें उसके लिए भेजीं और नौकरों-द्वारा भी बहुत कुछ व्यय किया। परन्तु इन सब कष्टों के बदले कुछ न मिला। मुझे उसकी प्राप्ति नहीं हुई।

फ़ौल्०—क्या कभी वह तुमसे नहीं बोली?

फ़ोर्ड—कभी नहीं।

फ़ौल्०—तो फिर तुम्हारा प्रेम कैसा?

फ़ोर्ड—जैसा और की भूमि में बनाया हुआ मकान, क्योंकि वह केवल इसलिए छोड़ना पड़ता है कि भूमि के चुनाव में भूल हुई।

फ़ौल्०—तो मुझसे क्या चाहते हो?

फ़ोर्ड—यद्यपि मुझे दिखलाने को वह एक सती स्त्री है परन्तु मैंने सुना है कि अन्य पुरुषों में वह प्रेम रखती है। आप मुझे बड़े सज्जन, सुशील, सुन्दर और मनोहर मालूम होते हैं।

फ़ौल्०—अजी नहीं।

फ़ोर्ड—यह ठीक है। यह रुपया रक्खा हुआ है। आप इच्छानुसार व्यय कीजिए। मैं आपका दास हूँ। केवल यही प्रार्थना है कि इस मिसिस फ़ोर्ड के सतीत्व पर आक्रमण किया जाय। यदि वह अन्य पुरुषों की बात मानेगी तो आपकी अवश्य मानेगी।

फ़ॉल०—यह तो ठीक नहीं जान पड़ता कि मैं उद्योग करूँ और उसका फल आप भोगें।

फ़ोर्ड—आप मेरा तात्पर्य नहीं समझे। इस समय वह बड़ी सती बनती है और मेरी बात नहीं मानती। मेरा प्रयोजन यह है कि यदि वह आपके वश में हो जाय तो उसकी पवित्रता नष्ट हो जायगी, फिर वह मुझे झट स्वीकार कर लेगी। इस समय वह एक ऐसे पवित्र और तेजोमय मणि के तुल्य है कि मैं उसकी ओर नहीं देख सकता।

फ़ॉल०—महाशय ब्रुक! पहले तो मैं आपका रुपया लिये लेता हूँ। फिर आपसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपकी मनोकामना सिद्ध होगी।

फ़ोर्ड—भले मित्र!

फ़ॉल०—महाशय ब्रुक, आप सफल होंगे।

फ़ोर्ड—यदि आपको रुपये की आवश्यकता हो तो और ले लेना।

फ़ॉल०—यदि रुपया है तो मिसिस फ़ोर्ड की भी कमी नहीं है। मुझे उसने बुलाया है सो मैं आज दस-ग्यारह बजे के बीच में जाऊँगा। क्योंकि उस समय उसका दुष्ट पति घर से बाहर चला जायगा। उसी समय तुम मेरे पास आना।

फ़ोर्ड—क्या आप फ़ोर्ड को जानते हैं?

फ़ौल्०—मैं उस दुष्ट को नहीं जानता। मैंने सुना है कि उसके पास गठरी भर रुपया है। इसी लिए मैंने उसे गाँठा है कि कुछ रुपया मिल जाय।

फ़ोर्ड—यदि आप फ़ोर्ड को पहचानते तो अच्छा होता क्योंकि यदि वह कहीं मार्ग में मिल जाय और आप न पहचान सकें तो बड़ी दुर्गति होगी।

फ़ौल्०—मैं ऐसे मूर्खों से नहीं डरता। वह मेरा क्या करेगा। एक थप्पड़ में उसकी आँखें निकाल लूँगा। आज रात को आओ। मैं उस दुष्ट से बाहर लड़ता रहूँगा और तुम उसके घर में घुस जाना।

ये बातें करके फ़ोर्ड वहाँ से चल दिया। परन्तु उसे यह जानकर बड़ा खेद हुआ कि जो कुछ पिस्टल कहता था वह ठीक था। वह पछताने लगा कि मैंने ऐसी दुष्ट और कुटिला स्त्री से क्यों विवाह किया। वह कहने लगा कि पेज मूर्ख है जो अपनी स्त्री को अच्छी जानता है। अब इसका कुछ उपाय करना चाहिए। उसने इरादा कर लिया कि दस और ग्यारह बजे के बीच में घर आकर अपनी स्त्री और फ़ौल्स्टाफ़ दोनों को दण्ड दूँगा।

शाम हुई और फ़ौल्स्टाफ़ के आने का समय निकट आया। मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज दोनों फ़ोर्ड के घर में बैठी बातचीत कर रही थीं। अन्त में कुछ वाद-विवाद के पश्चात् यह निश्चित हुआ कि एक पीपा—जिसमें धुलने के कपड़े रक्खे जाया करते थे—तैयार रक्खा जाय। मिसिस

फ़ोर्ड ने अपने नौकरों को बुलाकर कहा—देखो, पास के घर में बैठे रहो। मैं जिस समय पुकारूँ, चुपके से चले आओ और इस पीपे को ले जाकर टेम्स नदी के समीप की खाईं में इसके कपड़ों को फेंक आओ।

जब वे लोग वहाँ से चले गये तब फ़ौल्स्टाफ़ के नौकर रौबिन ने आकर कहा—मेरा स्वामी घर के पिछले द्वार पर खड़ा हुआ है।

अब मिसिस पेज तो वहाँ से चली गई और फ़ौल्स्टाफ़ घर में आकर कहने लगा—हे मेरे बहुमूल्य रत्न! आज मैंने तुझे पा लिया। आज मेरी मनोकामना पूरी हुई। अब यदि मैं मर भी जाऊँ तो भी कुछ चिन्ता नहीं।

मिसिस फ़ोर्ड—प्यारे सर जौन!

फ़ौल्०—मिसिस फ़ोर्ड, मुझे बहुत बातें नहीं आतीं। पर यदि तुम्हारा पति मर जाय तो मैं तुमको अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।

मिसिस फ़ोर्ड—मैं तुम्हारी पत्नी! भला मैं किस योग्य हूँ?

फ़ौल्०—वाह! फ़्रांस के राजमहल में भी ऐसी सुन्दर स्त्री नहीं है। तुम्हारी आँखें मणि के समान चमकती हैं। तुम्हारी भौंहें कैसी मनोहारिणी हैं। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ और तुम्हारे सिवा किसी को नहीं।

मिसिस फ़ोर्ड—महाशय, मुझे धोखा मत देना। मैंने सुना है कि मिसिस पेज से तुम्हारा स्नेह है।

फ़ौल्०—नहीं! नहीं!

मिसिस फ़ोर्ड—ईश्वर जानता है, मुझे तुमसे कितना स्नेह है और एक दिन तुमको भी मालुम हो जायगा।

जिस समय ये बातें हो रही थीं उसी समय मिसिस पेज ने आकर द्वार खटखटाया। फ़ौल्स्टाफ़ डर के मारे किवाड़ के भीतर हो गया और मिसिस पेज आकर कहने लगी—मिसिस फ़ोर्ड तुमने क्या किया? आज तुम्हारी बदनामी हो गई! तुम बरबाद हो गईं!

मिसिस फ़ोर्ड—क्या बात है?

मिसिस पेज—ऐसा अच्छा पति पाकर भी तुमने उसे धोखा दिया!

मिसिस फ़ोर्ड—कैसा धोखा?

मिसिस पेज—कैसा धोखा! मुझे बहकाती हो! मैं तुम्हें ऐसा नहीं जानती थी।

मिसिस फ़ोर्ड—बात क्या है?

मिसिस पेज—अरे भोली स्त्री! देख, तेरा पति पुलिस के साथ अपने घर की खोज में आ रहा है। उसे ज्ञात हुआ है कि तुमने किसी मनुष्य को यहाँ छिपा रक्खा है।

मिसिस फ़ोर्ड—क्या? क्या?

मिसिस पेज—यदि यहाँ कोई न हो तो अच्छा है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारे पति के साथ नगर का नगर उस सन्दिग्ध मनुष्य की खोज में लगा है।

रहा है। यदि तुम निरपराधी हो तो बहुत अच्छी बात है और मैं ख़ुश हूँ। पर यदि कोई हो तो उसे शीघ्र ही निकाल दो। चकित मत हो। अपने नाम में धब्बा न लगाओ।

मिसिस फ़ोर्ड—बहिन! एक आदमी तो अवश्य है परन्तु मुझे अपनी बदनामी का इतना डर नहीं जितना उसकी जान का है। यदि मेरे हजार पौंड ख़र्च हो जायँ और वह भले प्रकार बाहर निकल जाय तो भी अच्छा हो।

मिसिस पेज—तुमने मुझे धोखा दिया। अब तुम उसे घर में नहीं छिपा सकती। देखो, तुम्हारा पति तो दरवाज़े पर आ गया। यदि वह छोटे कद का आदमी हो तो उसे इस पीपे में बिठला दो और उसके ऊपर से मैले कपड़े रख दो जिससे किसी को कुछ सन्देह न हो।

मिसिस फ़ोर्ड—हाय! अब मैं क्या करूँ! वह तो इतना बड़ा है कि इसमें नहीं समा सकता।

इतने में फ़ॉल्स्टाफ़ निकलकर बाहर आया और घबराकर कहने लगा—मैं घुसा जाता हूँ: मैं घुसा जाता हूँ! मैं पीपे में घुसा जाता हूँ। किसी प्रकार मुझे बाहर निकाल दो।

मिसिस पेज—अरे सर जॉन फ़ॉल्स्टाफ़! क्या ये तुम्हारे ही पत्र हैं?

फ़ौल्०—मैं तुम्हें चाहता हूँ और तुम्हारे सिवा किसी को नहीं। मुझे बैठ जाने दो। इस समय अधिक बातें नहीं हो सकतीं।

जब फ़ौल्स्टाफ़ पीपे में बैठ गया तब उसके ऊपर से मैले कपड़े ठूँस दिये गये और मिसिस फ़ोर्ड ने अपने नौकरों द्वारा उसे धोबिन के घर भेज दिया कि उसको खाई में डाल दिया जाय जैसी पहले से उनको शिक्षा दी जा चुकी थी।

इतने में फ़ोर्ड पुलिसवालों के साथ घर में आ गया और लोग इधर-उधर फ़ौल्स्टाफ़ को देखने लगे। पेंज ने कहा—महाशय फ़ोर्ड, क्यों सन्देह करते हो? यहाँ कोई नहीं है।

फ़ोर्ड—अजी ऊपर देखिए; अवश्य कोई मिलेगा।

डाक्टर केअस—यह तो अच्छा तमाशा है। हमारे फ़्रांस के पति ऐसे नहीं होते।

फ़ोर्ड—यहाँ तो मिलता नहीं। सम्भव है, उस दुष्ट ने डींग मारी हो!

केअस—यहाँ कोई नहीं है।

पेंज—धिक् धिक् फ़ोर्ड! क्या तुमको लज्जा नहीं आती! तुम्हें किसने बहका दिया।

फ़ोर्ड—पेंज महाशय, यह मेरा दोष है और मैं ही भोगता हूँ।

केअस—आपकी स्त्री बड़ी धर्मात्मा है!

यहाँ ये लोग फ़ौल्स्टाफ़ को ढूँढ़ते रहे वहाँ फ़ोर्ड के नौकरों ने कपड़ों सहित उसे खाई में डाल दिया जहाँ से निकलकर

वह बड़ी कठिनाई से घर आया। ऐसी विपत्ति उस पर आज तक कभी न पड़ी थी। उसके कपड़े ख़राब हो गये थे, उसके सिर में कुछ चोट भी आई थी। पर यह अच्छा हुआ कि उसके प्राण बच गये। जैसे-तैसे वह घर आया। दूसरे दिन क्विकली उसके पास आई; क्योंकि मिसिस पेज और मिसिस फ़ोर्ड ने सिखाकर उसे भेजा था।

कि०—मुझे मिसिस फ़ोर्ड ने आपके पास भेजा है।

फ़ौल्०—मिसिस फ़ोर्ड! चल हट। मिसिस फ़ोर्ड से मेरा पेट भर गया।

कि०—हाय! हाय! यह तो उसका दोष नहीं था। उसको पश्चात्ताप है कि उसके नौकरों से भूल हुई!

फ़ौल्०—भूल तो मुझसे भी हुई कि ऐसी मूर्खा स्त्री का विश्वास किया।

कि०—अजी उसे स्वयं बड़ा शोक हो रहा है; आप चलकर देखेंगे तो मालूम होगा। आज उसका पति आखेट को जा रहा है। इसी लिए आज आपको उसने आठ और नौ बजे के बीच में बुलाया है। आप शीघ्र तयार होजिए। वह आज आपकी कल की हानि का प्रत्युपकार कर देगी।

फ़ौल्०—अच्छा, मैं आऊँगा, उससे कह दो।

कि०—मैं कह दूँगी।

जब किकली वहाँ से चली गई तब मिस्टर फ़ोर्ड फौल्स्टाफ़ के पास आया; जिसे देखकर उसने कहा—मिस्टर ब्रुक! क्या आप यह पूछने आये हैं कि मिसिस फ़ोर्ड और मुझमें कैसी बीती?

फ़ोर्ड—हाँ महाशय, यही मेरा प्रयोजन है।

फ़ौल्०—ब्रुक महाशय! मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगा। मैं कल नियत समय पर वहाँ गया था।

फ़ोर्ड—तो क्या हुआ?

फ़ौल्०—बड़ी बुरी बात हुई।

फ़ोर्ड—क्या उसका विचार पलट गया?

फ़ौल्०—नहीं नहीं। उसका दुष्ट पति आ गया और अपने घर को खोजने लगा।

फ़ोर्ड—क्या उस समय आप वहीं थे?

फ़ौल्०—जी हाँ!

फ़ोर्ड—क्या उसने तुम्हें पकड़ लिया?

फ़ौल्०—मैं कहता हूँ, ईश्वर ने अच्छा किया कि मिसिस पेज आ गई और उसने फ़ोर्ड के आने की सूचना दी। बस मैं कपड़ों के पीपे में बैठ गया और उसके नौकर मुझे खाई में डाल आये।

फ़ोर्ड—फिर आप वहाँ कितनी देर पड़े रहे?

फ़ौल्०—अजी महाशय, मैंने आपके लिए बहुत कष्ट सहे। थोड़ी देर पीछे मैं वहाँ से उठ के आया।

फ़ोर्ड—मुझे आपके इस कष्ट पर बड़ा दुःख होता है। तो अब आप मेरे लिए फिर उपाय न करेंगे ?

फ़ौल्०—अजी, अभी तो टेम्स में ही डाला गया हूँ। मैं तो इटना* में कूदने को तैयार हूँ। आज उसका पति आखेट को जा रहा है, सो मैं आठ और नौ बजे के बीच में वहाँ जाऊँगा।

उस समय आठ बज चुके थे, इसलिए फ़ौल्स्टाफ़ ने फ़ोर्ड के घर को प्रस्थान कर दिया। जब वहाँ पहुँचा तब मिसिस फ़ोर्ड से कहने लगा—मिसिस फ़ोर्ड, तुम्हारे दुःख ने मुझे बेहाल कर दिया। मैं जानता हूँ कि तुम मुझे बहुत प्यार करती हो। क्या अब तुम्हें निश्चय है कि तुम्हारा पति चला गया ?

मिसिस फ़ोर्ड—हाँ, जौन, आज वह आखेट को गया है।

अभी ये बातें हो ही रही थीं कि मिसिस पेज ने आकर द्वार पर दस्तक दी। फ़ौल्स्टाफ़ फिर पहले दिन की भाँति भीतर छिप गया और मिसिस पेज ने आकर कहा—क्या घर में कोई और है ?

मिसिस फ़ोर्ड—नहीं तो।

मिसिस पेज—ठीक बताओ।

मिसिस फ़ोर्ड—ठीक कहती हूँ।

* इटना सिसली में ज्वालामुखी पर्वत है।

मिसिस पेज—अच्छा हुआ कि कोई नहीं है।

मिसिस फ़ोर्ड—क्यों ?

मिसिस पेज—अरे देख ! कल की भाँति तेरा पति फिर लोगों को ला रहा है और समस्त स्त्री-जाति को फांस रहा है। मैंने ऐसा सन्दिग्धात्मा कोई नहीं देखा। अच्छा हुआ कि वह मोटा आदमी यहाँ नहीं है।

मिसिस फ़ोर्ड—क्या वह उसके विषय में कुछ कह रहा है ?

मिसिस पेज—हाँ हाँ ! वह शपथ खाकर कह रहा है कि कल तुमने अपने साथी को पीपे में बिठालकर निकाल दिया। वह अभी मेरे पति से कह रहा है कि फ़ौल्स्टाफ़ यहाँ अवश्य छिपा है। परन्तु मुझे हर्ष है कि वह मनुष्य इस समय यहाँ नहीं है।

मिसिस फ़ोर्ड—मेरा पति यहाँ से कितनी दूर है ?

मिसिस पेज—गली में।

मिसिस फ़ोर्ड—हाय अब मैं क्या करूँ ? वह तो यहीं है !

मिसिस पेज—फिर क्या है। अब तुम मारी गईं और उसके प्राण बचाना तो असम्भव ही है। कैसी स्त्री हो ! तुम्हें लज्जा नहीं आती। यदि उसके प्राण बचाने हों तो घर से निकाल दो।

मिसिस फ़ोर्ड—क्या उसे पीपे में बिठाल दूँ।

फ़ौल्०—(बाहर आकर) नहीं नहीं। मैं पीपे में न घुसूँगा। क्या इतनी देर में भाग नहीं सकता ?

मिसिस पेज—नहीं, कदापि नहीं। तीन आदमी बन्दूक लिये द्वारों पर खड़े हैं।

फ़ील्०—अब क्या करूँ? क्या धुआँकश में घुस जाऊँ?

मिसिस फ़ोर्ड—नहीं, वहाँ तो वह अपनी बन्दूक रक्खा करता है। पकड़े जाओगे।

फ़ील्०—तो मैं बाहर निकाला जाता हूँ।

मिसिस पेज—इस दशा में तो मारे जाओगे। भेस बदल लो!

मिसिस फोर्ड—भेस क्या बदला जाय?

मिसिस पेज—क्या किया जाय? यदि किसी मोटी स्त्री के कपड़े होते तो उनको पहनाकर निकाल दिया जाता!

फ़ील्०—कुछ सोचिए। कुछ सोचिए। आज मेरी जान बच जाय!

मिसिस फ़ोर्ड—मेरी दासी की एक चाची ब्रण्टफ़ोर्ड इतनी ही मोटी थी। उनके कपड़े ऊपर कोठे पर रक्खे हैं।

मिसिस पेज—ठीक-ठीक! सर जॉन, जल्दी जाकर पहन लो!

फ़ील्स्टाफ़ ने जल्दी से बुड्ढी ब्रण्टफोर्ड का भेस धारण कर लिया और मिसिस फोर्ड ने अपने नौकरों-द्वारा पिछले दिन की भाँति कपड़ों का पीपा बाहर भिजवाया।

इतने में फ़ोर्ड, पेज और बहुत से आदमी वहाँ पर आ गये। फ़ोर्ड ने आते ही पीपे के कपड़े निकाल डाले। इस समय वह क्रोध में भरा हुआ था और अपनी भार्या को अन्धान्ध अपशब्द कह रहा था। उसको स्त्री ने बहुत कुछ कहा कि

"हैं! हैं! आज तुम क्या कर रहे हो" परन्तु उसने एक न सुनी। जब सब कपड़े देख चुका और किसी मनुष्य का पता न लगा तब कहने लगा—पेज महाशय! मैं सच कहता हूँ कि कल इसी में बैठकर वह दुष्ट यहाँ से चला गया। मुझे ठीक सूचना मिली है कि वह यहीं है। अजी इसी घर में है।

मिसिस फ़ोर्ड—अगर तुम यहाँ किसी आदमी को पा जाओ तो मक्खी की तरह मार डालना।

पेज—यहाँ कोई नहीं है।

शैलो—फ़ोर्ड, यह ठीक नहीं है। तुम व्यर्थ सन्देह करते हो।

फ़ोर्ड—तो वह यहाँ नहीं है?

पेज—अजी तुम्हारे मन के सिवा कहीं नहीं है।

फ़ोर्ड—अजी आज और खोज कीजिए. यदि इस समय न मिला तो कभी फिर न कहूँगा।

इस समय मिसिस पेज और फ़ौल्स्टाफ़ दोनों कोठे पर थे। मिसिस फ़ोर्ड ने आवाज़ दी कि तुम दोनों नीचे उतर आओ, क्योंकि पतिजी ऊपर किसी पुरुष की खोज में आ रहे हैं। मिस्टर फ़ोर्ड इस बुड्ढी स्त्री अर्थात ब्रण्टफोर्ट से बड़ा नाराज़ था और उसे घर में नहीं आने देता था। इसलिए जब उसने सुना कि मेरे कहने पर भी ब्रण्टफोर्ड मेरे घर में आ गई तब वह आग-भभूका हो गया और उसे (अर्थात फ़ौल्स्टाफ़ को) ख़ूब मारा।

मिसिस पेज—हैं हैं फ़ोर्ड! क्या करते हो। बेचारी बुढ़िया मर जायगी।

मिसिस फ़ोर्ड—नहीं नहीं। वह इसी योग्य है।

मार-पीटकर फ़ोर्ड तो आदमियों को लेकर कोठे पर चढ़ गया और फ़ौल्स्टाफ़ बुढ़िया के भेस में मार खाकर घर आ गया। इस समय मिसिस फ़ोर्ड को निश्चय हो गया कि मेरा पति मेरे सतीत्व पर सन्देह करता है। इसलिए उसने और मिसिस पेज ने अपने अपने पतियों से फ़ौल्स्टाफ़ के पत्रों और अपने कामों को क्रमशः कह दिया। इस पर सब लोगों में बड़ी हँसी हुई और मिस्टर फ़ोर्ड को अपनी स्त्री की ओर से कुछ भी शङ्का न रही।

परन्तु इस तमाशे की समाप्ति यहीं न हुई। अबकी बार पुरुषों ने भी अपनी स्त्रियों की सम्मति से इस विचित्र तमाशे में हिस्सा लेना चाहा। बड़े वाद-विवाद के पश्चात् यह निश्चित हुआ कि फ़ौल्स्टाफ़ को फिर बुलाना चाहिए और उसे सबके सामने लज्जित करना चाहिए। परन्तु अब फ़ौल्स्टाफ़ का फ़ोर्ड के घर में आना कठिन था। वह दो बार भुगत चुका था, अतएव निर्लज्ज पुरुष के लिए भी फिर यहाँ आने का साहस करना दुस्तर था। यह जानकर यह बात ठहरी कि विण्डसर नगर के बाहर मैदान में एक पीपल है, जिसके लिए प्रसिद्ध है कि रात के समय वहाँ एक सींगोंवाला भूत आया करता है। इसलिए फ़ौल्स्टाफ़

वहाँ पर भूत के भेस मे बुलाया जावे और कह दिया जाय कि ऐसी दशा मे कोई उसे पकड़ने का साहस न करेगा। जब वहा पर वह आवे तब पेज की पुत्री ऐनी और छोटे-छोटे लड़के चमकीले वस्त्र पहनकर किसी गुप्त जगह से वहाँ पर आ जावे और कोलाहल मचावें। फ़ीलस्टाफ़ इनको परियाँ समझकर भागने लगेगा। उसी समय पेज और फ़ोर्ड वहाँ आकर उसे पकड़ लेगे।

उपर्युक्त तमाशे के अतिरिक्त पेज इस समय एक और कार्य्य भी सिद्ध करना चाहता था। हम ऊपर बता चुके है कि उसकी इच्छा अपनी बेटी ऐनी को स्लेण्डर के साथ ब्याहने की थी। इस बात को घर के लोग स्वीकार नहीं करते थे। इसलिए उसने विचार किया कि यदि स्लेण्डर उसी भीड़-भाड़ में, जिसका वर्णन ऊपर किया गया है, ऐनी को पकड़कर ले जाय और झट विवाह कर ले तो कोई फिर कुछ न कहेगा। इस प्रयोजन के लिए उसने अपनी पुत्री के श्वेत वर्ण के पर लगा दिये जिनको देखकर स्लेण्डर परियों के रूप में उसे पहचान सके।

मिसिस पेज अपने पति की बात समझ गई। इसलिए उसने ऐनी को हरे वस्त्र पहनने की सम्मति दी, जिससे डाक्टर कैअस उसे पहचानकर अपने साथ ले जा सके।

ऐनी ने वैसे तो माता और पिता दोनों की बात मान ली, परन्तु उसे करना कुछ और ही था। वह स्लेण्डर या कैअस

किसी को नहीं चाहती थी। उसका मन फ़ैण्टन में लगा हुआ था। इसलिए उसने दो लड़कों को हरे और श्वेत वस्त्र पहना दिये और अपने प्यारे को इसकी सूचना दे दी। इस समय स्लेण्डर, केअस और फ़ैण्टन अलग-अलग तीन पुरोहितों को अपने घरों पर तैयार कर आये थे कि जिस समय हम ऐनी को लावें उसी घड़ी विवाह-संस्कार हो जाय।

यहाँ एक बात और कह देनी चाहिए। जिस समय मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज ने फ़ॉल्स्टाफ़ के बुलाने का विचार ठीक कर लिया तो उन्होंने किकली के हाथ उसको निमन्त्रण भेजा। जब किकली वहाँ पहुँची तब फ़ॉल्स्टाफ़ ने पूछा—कहाँ से आई हो?

कि०—मिसिस पेज और मिसिस फ़ोर्ड ने भेजा है।

फ़ॉल्०—भाड़ में जायँ वे दोनों। मैं उनके लिए बहुत कुछ अपमान सह चुका।

कि०—और क्या तुम समझते हो, उनका निरादर नहीं हुआ? बेचारी मिसिस-फ़ोर्ड पर तो इतनी मार पड़ी कि उसका शरीर नीला पड़ गया।

फ़ॉल्०—अरे मुझ पर भी तो बहुत मार पड़ी थी! मैं तो दम साध गया नहीं तो न जाने क्या दुर्गति होती।

कि०—जो हुआ सो हुआ। देखो, मिसिस फ़ोर्ड ने यह पत्र भेजा है। उसमें लिखा है कि आप अब किसी प्रकार वहाँ चलें।

फ़ौल्स्टाफ़ एक तो मूर्ख था, दूसरे उसके दुराचार ने उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर रक्खी थी। कहते भी हैं—"कामातुराणां न भयं न लज्जा।" पत्र को पढ़ते ही उसकी बाछें खिल गई। फिर एक बार मुँह में पानी भर आया और वह फिक्रों में कहने लगा—अच्छा मैं आऊँगा। 'यह तीसरी बार है। कहते हैं कि तीसरी बार मनोकामना सिद्ध हो ही जाती है।

इतने में फ़ोर्ड भी ब्रुक के भेस में वहाँ पहुँच गया जिसे देखकर फ़ौल्स्टाफ़ ने उसको भी उस रात नियत पीपल तले जाने की सम्मति दी और पिछले दिन की अपनी कहानी सुनाई।

जिस समय फौल्स्टाफ सिर पर सींग लगाये भूत के भेस में पीपल तले पहुँचा तो पहले मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज से भेंट हुई। जब कुछ बातचीत होने लगी तब संकेत पाकर ऐनी और उसके साथी परियों के रूप में कोलाहल मचाते हुए एक खाई से निकले। किसी के कपड़े काले थे, किसी के पीले, किसी के श्वेत, किसी के हरे।

इनको देखकर मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज ने, "परी, परी" कहना आरम्भ किया और फ़ौल्स्टाफ़ बेचारा इतना घबराया कि वहीं भूमि पर पट लेट गया! परियाँ वहाँ पर आने लगीं और मशालों से इधर-उधर देखने लगीं। जब वे फ़ौल्स्टाफ़ के पास आईं तब उनमें से एक कहने लगी—अरे! यह आदमी पवित्र है या अपवित्र?

दूसरी ने उत्तर दिया—इसकी उँगलियों को मशाल दिखाओ। यदि यह शुद्ध होगा तो चुप पड़ा रहेगा। यदि अशुद्ध होगा तो जलकर चिल्ला उठेगा।

अब तो उन्होंने उसकी उँगलियाँ जलाईं और जब वह चीखने लगा तब कहने लगीं—अरे कोई पापी है! कोई पापी है।

फिर उन्होंने उसे नोचना आरम्भ किया। फ़ौल्स्टाफ़ रोने-पीटने लगा। इतने में पेज, फ़ोर्ड और अनेक पुरुष आ गये जिन्होंने उसे पकड़ लिया। मिसिस पेज कहने लगी—कहिए सर जौन! क्या आपको विण्डसर की स्त्रियाँ पसन्द हैं?

अब तो फ़ौल्स्टाफ़ समझ गया और कहने लगा—अरे मुझे लोगों ने गधा बना लिया।

फ़ोर्ड—अजी गधा नहीं बैल! अपने सींग तो देखो।

फ़ौल्स्टाफ़ अपने किये पर बड़ा लज्जित हुआ। परन्तु इसी समय एक और बड़ा तमाशा हुआ। स्लेण्डर और केयस श्वेत और हरी परियों को अपने साथ ले गये जो वास्तव में दो लड़के थे। उन्होंने इनको ऐनी समझा था। इसलिए विवाह-संस्कार के समय जब इनको मालूम हुआ कि ये लड़के हैं तब वे बड़े घबराये और पेज और उसकी स्त्री से कहने लगे—हमको धोखा हुआ, हमने तो लड़कों से विवाह कर लिया।

जिस समय फ़ोर्ड और पेज इस अद्भुत घटना पर चकित हो रहे थे उसी समय फ़ैण्टन और ऐनी भी अपना विवाह

करके वहाँ पर आ गये। ऐनी ने कहा—पिताजी, क्षमा कीजिए। माताजी, क्षमा कीजिए।

पेज—अरे तू स्लेण्डर के साथ क्यों नहीं गई?

मिसिस पेज—अरे तू डाक्टर के साथ क्यों नहीं गई?

फ़ैण्टन—क्षमा कीजिए। आप इसे ऐसों के साथ व्याहते जहाँ इसका प्रेम नहीं था। अब इसका अपरा क्षमा कीजिए।

ऐनी के मा-बाप ने अपनी पुत्री के विवाह की खबर सुन कर इसी पर सन्तोष किया और फ़ैण्टन पेज का दामाद हुआ



निष्फल प्रेम

(Love's Labours Lost)

फ्रांस में नैवर नामी एक स्थान है। बहुत दिन हुए, वहाँ एक भद्र पुरुष फर्डीनण्ड राज करता था। एक समय उसके मन में यह समाई कि ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके तीन वर्ष तक विद्या पढ़ने में अपना जीवन व्यतीत करे। इस प्रयोजन के लिए उसने वे कठिन से कठिन नियम बनाये जो एक ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक हैं और अपने तीन दरबारियों को भी अपने साथ यथार्थ ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के लिए कहा। इन दरबारियों का नाम बाइरन, लोंगविल और डूमेन था। व्रत धारण करते समय उनसे एक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कराये गये कि हम कभी अमुक नियमों का उल्लङ्घन न करेंगे। लोंगविल ने हस्ताक्षर करते हुए कहा—मैं प्रतिज्ञा कर चुका। यह तीन वर्ष का व्रत है। चाहे शरीर दुर्बल हो जाय, परन्तु आत्मा उन्नति करेगा।

डूमेन—महाराजाधिराज, आज मैं सांसारिक वैभव को विषयी पुरुषों के लिए त्यागता हूँ। मेरा जीवन अब दार्शनिक विद्या के उपार्जन में व्यतीत होगा। राग, मन तथा वैभव के लिए तो मैं मृतवत् हूँ।

बाइरन—राजन्, मेरी भी यही प्रतिज्ञा है। श्रीमन्, मैंने अभी यही व्रत किया है कि तीन वर्ष तक विद्याप्राप्ति करूँ। परन्तु और भी नियम हैं जिनकी प्रतिज्ञा मैंने नहीं की: जैसे स्त्रीदर्शन न करना, सप्ताह में एक दिन उपवास करना, रात में तीन घण्टे से अधिक न सोना और दिन में आँख न लगाना। ये ऐसे कठिन व्रत हैं जिनका पालन मेरे लिए दुस्तर है। अब तक मैं दोपहर तक सोया करता था। स्त्रीदर्शन न करना, स्वाध्याय करना, उपवास करना और कम सोना—ये सब कैसे हो सकेंगे?

राजा—तो तुम्हारा व्रत ही क्या हुआ?

बाइरन—श्रीमन्, मैंने तो केवल स्वाध्याय का प्रण किया है।

लोंगविल—नहीं बाइरन, एक व्रत के अन्तर्गत सब व्रत आ जाते हैं।

बाइरन—तो मेरा व्रत हास्य मात्र था। भला स्वाध्याय से क्या लाभ है?

राजा—स्वाध्याय से हमको उस ज्ञान की प्राप्ति होती है जो अन्यथा नहीं आ सकता।

बाइरन—आपका तात्पर्य उन वस्तुओं के ज्ञान से है, जो साधारण बुद्धि के परे हैं।

राजा—हाँ! स्वाध्याय का पवित्र उद्देश्य यही है।

बाइरन—साधु, साधु! मैं अवश्य स्वाध्याय करूँगा। क्योंकि मुझे वे बातें मालूम होंगी जिनके जानने का निषेध किया गया है। अर्थात् ऐसी जगह खाना खाना सीखूँगा जहाँ खाने की मनाही है; या ऐसे स्थान पर किसी स्त्री का दर्शन करना जहाँ साधारण दृष्टि से कोई स्त्री दिखाई नहीं देती।

राजा—इन बातों से स्वाध्याय में बाधा पड़ेगी। हमको झूठे सुखों से घृणा करनी चाहिए।

बाइरन—सुख तो सभी झूठे हैं और सबसे झूठे वे सुख हैं जिनके आदि और अन्त दोनों में कष्ट हो। जैसे पुस्तकों का पढ़ना। हम सत्य के प्रकाश के लिए पुस्तकें पढ़ते हैं। परन्तु यह प्रकाश हमारे नेत्रों के प्रकाश को हर लेता है। इससे तो अपने नेत्रों को किसी मृगनयनी की ओर जमाने से अधिक लाभ हो सकता है।

राजा—इसने विद्या के विरोध में कैसी विद्वत्ता दर्शाई है? बाइरन, अब घर जाओ।

बाइरन—नहीं राजन, मैंने आपके साथ रहने की प्रतिज्ञा की है। मैं उसका यथार्थ पालन करूँगा। हाँ और सदा निरत हूँ।

राजा—खैर।

बाइरन—"कोई स्त्री मेरे दरबार से पाँच कोस के भीतर न आने पावे।" क्या इस नियम का नगर में ढँढोरा हो चुका?

लोंग०—चार दिन हुए।

बाइरन—नियम-उल्लङ्घन का दण्ड क्या? अरे इसमें तो लिखा है कि "उसकी जीभ काट ली जायगी।" यह किसका प्रस्ताव था?

लोंग०—मेरा।

बाइरन—क्यों?

लोंग०—जिससे कि वे डर जायँ।

बाइरन—अबलाओं पर ऐसी कठोरता! देखो, इसी नियम में यह भी लिखा है "यदि इन तीन बरसों में कोई पुरुष किसी स्त्री से बातचीत करता पकड़ा जायगा तो उसको सभा के इच्छानुसार दण्ड दिया जायगा।" (राजा की ओर देखकर) क्यों महाराज, इसको तो स्वयं आप ही तोड़ देंगे। क्योंकि आप जानते हैं, फ्रांसनरेश की रूपवती कन्या एक्विटन—देश के छुड़ाने के लिए—आपसे प्रार्थना करने आ रही है। इसलिए यह नियम व्यर्थ बनाया गया या राजकुमारी का यहाँ आना वृथा होगा।

राजा—अरे! इसका तो ध्यान ही नहीं था। परन्तु राजकुमारी यहाँ विशेष कार्य्यवश आरही है। इसलिए उसे आज्ञा मिल सकती है।

बाइरन—यदि ऐसा ही है तो आवश्यकता के वशीभूत होकर हम तीन वर्ष में तीन हजार बार नियमोल्लङ्घन करेंगे, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य की भिन्न-भिन्न आवश्यकताएँ हैं, और उन आवश्यकताओं के कारण ही लोग नियमों को तोड़ते हैं।

बाइरन ने इसके पश्चात प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। परन्तु उसी समय कौस्टार्ड नामक एक गँवार राजा के सम्मुख लाया गया। उसको कर्म्मचारियों ने राज-आज्ञा के विरुद्ध एक स्त्री जैकिण्टा के साथ कुत्सित व्यवहार करते पकड़ा था। राजा ने उसी समय उसको हवालात में भिजवा दिया और हुक्म दिया कि सात दिन तक इसको सिवा पानी के और कुछ न दिया जाय, यही इसका दण्ड है।

जिस कर्म्मचारी ने कौस्टार्ड और जैकिण्टा को पकड़ा था उसका नाम आर्मेडो था। वह हस्पानिया का रहनेवाला था। यद्यपि इस पुरुष ने एक आदमी को स्त्री से व्यवहार करने के अपराध में पकड़ लिया था परन्तु वास्तविक बात यह है, कि वह स्वयं जैकिण्टा पर मोहित था और कौस्टार्ड के पकड़ने की असली वजह यही थी।

उपर्युक्त घटना के दूसरे दिन फ़्रान्स की राजकुमारी अपनी सहेलियों—रोज़ालिन, मैरिया, और कैथराइन तथा एक राज-मन्त्री बोइट—के साथ नैवर के राज में उपस्थित हुईं। इनके आगमन की सूचना राजा को दी गई। राजा अपने साथियों—

बाइरन, लोंगविल और डूमेन—के साथ दरबार के बाहर ही राजकुमारी से भेंट करने आया। उसके आराम के लिए राजदरबार से बाहर डेरे तान दिये गये थे; क्योंकि तीन वर्ष तक किसी स्त्री को भीतर आने की आज्ञा न थी।

राजा को देखते ही राजकुमारी और उसकी सहचरियों ने अपने मुँह पर वस्त्र डाल लिये। राजा ने कहा—सुन्दर कुमारी! मैं नैवर के दरबार में आपका स्वागत करता हूँ।

राजकुमारी—मैं "सुन्दर" शब्द आप ही को लौटाती हूँ। यह 'दरबार' भी नैवर का नहीं। इस* की छत इतनी ऊँची है कि यह आपका दरबार नहीं हो सकता। रहा "स्वागत," सो क्या खेतों और जंगल में ठहराकर स्वागत किया जाता है?

राजा—आप मेरे दरबार को भी चलेंगी?

राजकुमारी—उस समय मेरा स्वागत होगा। चलो, मुझे ले चलो!

राजा—राजकुमारी, मैंने एक प्रतिज्ञा कर रक्खी है।

राजकुमारी—प्रतिज्ञा टूट भी सकती है।

राजा—नहीं देवि, कदापि नहीं। मेरी इच्छा यही है।

राजकुमारी—यह इच्छा ही तोड़ देगी।

* राजकुमारी के कहने का तात्पर्य यह है कि वह नगर के अन्दर लाई गई थी, न कि दरबार में। इसलिए राजा का यह कहना कि तुम नैवर के दरबार में आई हो, गलत था।

राजा—श्रीमतीजी, यह नहीं जानतीं कि मेरी इच्छा कितनी प्रबल है।

राजकुमारी—मैंने सुना है कि आपने स्त्रियों को न देखने की प्रतिज्ञा की है। ऐसी प्रतिज्ञा तो खण्डनीय ही है। अस्तु। मुझे अपना काम करना चाहिए। श्रीमन्, इस पत्र को (एक काग़ज देकर) देखिए और जो कुछ इसमें लिखा है उसे स्वीकृत कीजिए।

राजा—यह काम भी धीरे-धीरे हो जायगा।

राजकुमारी—आप मुझे जल्दी ही उत्तर दे दीजिए, क्योंकि यदि मैं यहाँ देर तक रहूँगी तो आपके अध्ययन में विघ्न होगा और आपकी प्रतिज्ञा भूठी होगी।

इस समय बाइरन रोज़ालिन से बातें करने लगा। उसने कहा—क्या मैं तुम्हारे साथ एक बार ब्रबण्ट में नहीं नाचा था?

रोज़ालिन—क्या मैं तुम्हारे साथ एक बार ब्रबण्ट में नहीं नाची थी?

बाइरन—मुझे मालूम है कि तुम नाची थीं।

रोज़ालिन—फिर प्रश्न करने से क्या प्रयोजन?

इस प्रकार बाइरन और रोज़ालिन परस्पर बातचीत करने लगे। यदि कोई और इनकी बातों को सुनता तो यही समझता कि बाइरन रोज़ालिन पर मोहित हो गया है। ड्यूमेन भी मन ही मन कैथराइन के रूप की प्रशंसा करने लगा। लांगविल को मेरिया का सौन्दर्य ऐसा मनोहर प्रतीत हुआ कि

उसने उसके विषय में अधिक परिचित होने के लिए बोइट से पूछा—यह श्वेत वस्त्र पहने कौन है ?

बोइट—एक स्त्री।

लोंग०—मैं इसका नाम चाहता हूँ।

बोइट—इसका एक ही नाम है। वह आपको नहीं मिल सकता।

लोंग०—यह किसकी लड़की है ?

बोइट—अपनी माता की।

लोंग०—ईश्वर आपकी दाढ़ी को चिरायु करे।

बोइट—नाराज़ न हूजिए। यह फाकन बृज की बेटी है।

लोंग०—यह तो परम सुन्दरी है।

जिस प्रकार राजा के साथी, प्रतिज्ञा के विरुद्ध, राजकुमारी की सहचरियों पर मोहित हो गये थे इसी प्रकार राजा का हृदय भी मदनबाणों से विध चुका था और जो कुछ बातें उनकी राजकुमारी के साथ हुईं उनसे प्रकट होता था कि वह उससे प्रेम करने लगा है। इस प्रकार जिन-जिन पुरुषों ने ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा की थी वे सबके सब इन्द्रियवश हो गये। आर्मेडो जैकिण्टा पर आसक्त था, बाइरन रोज़ालिन पर, लोंगविल मेरिया पर, डूमेन कैथराइन पर और राजा राजकुमारी पर।

आर्मेडो ने कॉस्टार्ड को बुलाकर उसे छोड़ देने का वादा किया; बशर्ते कि वह उनका एक पत्र जैकिण्टा को दे आवे। कॉस्टार्ड ने यह सेवा स्वीकार कर ली। इसी प्रकार बाइरन

ने भी उसी के हाथ एक पत्र अपनी प्राणप्यारी रोज़ालिन को भेजा।

कौस्टार्ड ने चाहा कि जैकिण्टा के पत्र को फेंक दे और बाइरन की चिट्ठी रोज़ालिन के पास पहुँचा दे। परन्तु दैव-गति से कुछ का कुछ हो गया। कौस्टार्ड पढ़ा तो था ही नहीं, उसने जैकिण्टा के पत्र को जाकर रोजालिन के हवाले कर दिया; जिसको पढ़कर उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ—क्योंकि वह आमैंडो को नहीं जानती थी।

यहाँ बाइरन का पत्र, जिसे कौस्टार्ड ने जंगल में फेंक दिया था, दो शिकारियों के हाथ पड़ गया। उन्होंने बाइरन का ऐसा प्रेमपूरित पत्र देखकर बड़ा आश्चर्य किया, क्योंकि यह एक प्रसिद्ध बात थी कि राजा और उसके साथियों ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया है। इसलिए उन शिकारियों ने उस पत्र को राजा की सेवा में उपस्थित कर दिया।

इस पत्र को देने से पहले एक अद्भुत घटना हुई। बाइरन ने अपनी प्रेयसी के लिए एक और पत्र लिखा था, जिसको वह एक पार्क (बाग़) में टहलते-टहलते बार-बार पढ़ रहा था; क्योंकि प्रेमीजनों का स्वभाव है कि वे प्रेमपत्र को लिखकर बार-बार पढ़ा करते हैं। ऐसा करने में उनको प्रायः वही आनन्द होता है जो प्यारी के साथ बातचीत करने से। जिस समय बाइरन इस कार्य में संलग्न था, दूसरी ओर से राजा भी एक पत्र को पढ़ता हुआ आता दिखाई दिया।

छिपने के लिए बाइरन एक वृक्ष पर चढ़ गया और वहाँ से सुनता रहा कि राजा क्या पढ़ रहा है।

राजा ने पढ़ा—हे सुमुखि, स्वर्णमयी सूर्य्यकिरणें भी प्रातःकाल की गुलाब की ओस का इस प्रकार चुम्बन नहीं करतीं जिस प्रकार तुम्हारे नयनों की ज्योति मेरे मुख पर बहते हुए आँसुओं को चूमती है। और न समुद्र के स्वच्छ जल में रुपहले चन्द्रमा का आभास ऐसा झलकता है जैसा आपका चन्द्रवदन मेरे आँसुओं के कणों में। जो जल-बिन्दु मेरे नेत्रों से निकलते हैं उनमें तुम्हारी ही ज्योति झलकती है। अश्रु-बिन्दु क्या हैं, आपको सैर करने की सवारी है। मेरा रुदन है आपकी सैर। यदि आप मेरे आँसुओं की ओर दृष्टि करें तो उनमें अपना ही प्रकाश आपको मिलेगा। हे सुन्दरियों में सुन्दरी, मैं आपके रूप का कहाँ तक वर्णन करूँ!

पढ़ता-पढ़ता राजा आगे बढ़ गया। उसके पीछे लौंगविल भी एक प्रेमपत्र पढ़ता हुआ वहाँ पर आया जिसमें लिखा था—क्या आपके कटाक्ष मुझे मजबूर नहीं करते कि मैं अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ दूँ? किन्तु हे सुमुखि, मेरी प्रतिज्ञा यह थी कि किसी स्त्री का दर्शन न करूँगा परन्तु आप तो स्त्री नहीं स्वर्ग की अप्सरा हैं। मेरा प्रण सांसारिक था, परन्तु आप पारलौकिक हैं। मेरी प्रतिज्ञा ओस के समान है और आप की आँखें सूर्य के सदृश हैं, जिनकी गर्मी से प्रतिज्ञा-रूपी ओस सूख जाती है। यदि मैं प्रतिज्ञा-भङ्ग करूँ तो इसमें मेरा क्या

दोष ? क्योंकि ऐसा कौन मूर्ख है जो एक स्वर्ग की देवी के लिए बात को न तोड़ दे।

थोड़ी देर बाद डूमेन भी प्रेमालाप में मग्न होता हुआ वहाँ पर आ निकला, और पत्र पढ़ने के पीछे कहने लगा—कैसा अच्छा होता यदि राजा, बाइरन और लोंगविल भी मेरी तरह प्रेमासक्त होते, क्योंकि इस दशा में मेरे ऊपर प्रतिज्ञा-भङ्ग करने का दोष न लग सकता।

यह सुनकर राजा और लोंगविल डूमेन के पास चले गये।

राजा ने कहा—मैंने तुम दोनों के पत्र सुन लिये हैं। कोई तो स्वर्ग की अप्सरा के लिए प्रतिज्ञा-भङ्ग करने को तैयार है और कोई अपनी प्रेयसी से मिलने को उत्सुक हो रहा है। तुमने तो ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया था, परन्तु उस व्रत का खण्डन हो गया। यदि बाइरन सुनेगा तो क्या कहेगा?

जिस समय राजा यह कह रहा था, बाइरन ने वृक्ष की शाखा से उतरकर कहा—महाराज, क्षमा कीजिए। आप किसलिए इन लोगों का, प्रेमासक्त होने के कारण तिरस्कार करते हैं? क्योंकि श्रीमान् भी तो इसी जाल में फँसे हुए हैं। क्या आपके अश्रु-बिन्दुओं में आपकी प्यारी का मुख नहीं झलकता? आप इन बेचारों की आँखों का तिनका देख रहे हैं, परन्तु मुझे आपकी आँखों में शहतीर दिखाई देता है। अहा! मैंने कैसा तमाशा देखा।

राजा—अरे! क्या तूने मुझे देख लिया? मुझे धोखा हो गया!

वाइरन—नहीं महाराज, मुझे धोखा हो गया कि आप लोगों के साथ ऐसा व्रत धारण किया। क्या आपने कभी मुझसे इस प्रकार की बातें सुनीं? क्या मैंने कभी किसी रमणी के लिए इस प्रकार के पत्र लिखे? क्या मैं किसी के प्रेम मे इस प्रकार विकल हुआ? आपको धिकार है!

जिस समय वाइरन इस प्रकार अपनी सचाई की डींग मार रहा था उसी समय राजा के पास वह पत्र आया जिसे वाइरन ने रोज़ालिन के पास भेजा था और जो कौस्टार्ड की मूर्खता के कारण राजा के हाथ लग गया था। राजा ने इस चिट्ठी को वाइरन के हाथ मे देकर कहा—"पढ़िए।" वाइरन ने अपना भण्डा फूटता देख जल्दी से उस पत्र को फाड़ डाला।

डूमेन ने पत्र के टुकड़ों को जोड़कर पढ़ लिया। फिर क्या था, उन सबमें वाइरन भी शामिल हो गया।

राजा ने पूछा—क्या इस पत्र मे कुछ प्रेम-सम्बन्धी बात थी?

वाइरन ने उत्तर दिया—वाह वाह! कौन ऐसा मनुष्य है जो रोज़ालिन के रूप को देखकर उस पर मोहित न हो जाय!

अब सब आपस में मिल गये। उन्होंने इन फ्रांसीसी रमणियों से विवाह करने का उपाय सोचा। पहले तो सबने अपनी-अपनी प्रिया के लिए उत्तम-उत्तम वस्त्र और आभूषण भेजे। फिर उनके साथ नृत्य-क्रीडा के लिए लिखा। राजकुमारी ने वस्त्र आदि को देखकर अपनी सखियों से कहा—अहा! हम तो जब तक घर जाने का समय आवेगा, बहुत अमीर हो जायँगी। ओहो! राजा ने तो हमको हीरों से जड़ दिया।

रोज़ालिन—श्रीमतीजी, क्या इनके साथ और कुछ भी आया है?

राजकुमारी—हाँ! काग़ज़ के इन पूरे तख़्तों की दोनों ओर हाशिये पर भी लिखा हुआ यह पत्र आया है। रोज़ालिन, तुम्हारे पास भी तो कुछ आया है। भला बताओ तो सही, किसने भेजा है?

रोज़ालिन—हां! हां! देखिए, बाइरन का यह पत्र है।

राजकुमारी—कैथरायन, तुमको भी तो डूमेन ने कुछ भेजा है।

कैथरायन—हां, यह दस्ताना है।

राजकुमारी—क्या एक ही दस्ताना है। दो नहीं?

कैथरायन—हां हैं तो, दो! और इसके अतिरिक्त एक लम्बा-चौड़ा सौन्दर्य की प्रशंसा में पत्र भी लिखा है।

मेरिया—लांगविल ने मेरे लिए ये मोती भेजे हैं और एक आध मील लम्बा चिट्ठा!

अब इन सबने राजा की पार्टी को धोखा देने के लिए ऐसा किया कि एक के वस्त्र दूसरी ने पहन लिये। रोजालिन ने राजकुमारी के और राजकुमारी ने मैरिया के इत्यादि। इस प्रकार जब राजा अपने मित्रों सहित आया तब नृत्य के समय हर एक ने अपनी-अपनी कल्पित प्रेयसी का हाथ पकड़ कर एकान्त मे अपनी-अपनी प्रेम की कहानी सुनाई और अपनी-अपनी अँगूठियाँ भी दे आये। परन्तु किसी ने यह न पहचाना कि हम अपनी प्यारियों के बदले दूसरों को अँगूठियाँ दिये जाते हैं। क्योंकि राजकुमारी और उसकी सहेलियों के मुख वस्त्रों से ढके हुए थे।

जब दूसरे दिन राजा फिर राजकुमारी से मिलने आया और निवेदन किया कि आप हमारे महल मे चलकर उसको अपने चरणों से सुशोभित कीजिए तो राजकुमारी ने उत्तर दिया—नहीं नहीं। मैं तो इसी जंगल मे रहूँगी। क्योंकि झूठे आदमियों को मैं पसन्द नहीं करती।

राजा—देवि, मैंने क्या कुछ झूठ कहा है ?

राजकुमारी—आपने प्रतिज्ञा-भङ्ग की है।

राजा—देवि, यह केवल आपके नेत्रों का प्रताप था।

राजकुमारी—नहीं नहीं। प्रताप किसी के व्रत का खण्डन नहीं करता। क्या तुम कल यहाँ नहीं आये थे ?

राजा—आया तो था।

राजकुमारी—फिर तुमने अपनी प्रिया से क्या प्रतिज्ञा की थी ?

राजा—यही कि जीवन-पर्यन्त मैं तुम्हारा दास रहूँगा।

राजकुमारी—जब वह तुमसे कहेगी तब तुम उसको छोड़ दोगे?

राजा—अपनी क़सम! कभी नहीं।

राजकुमारी—शपथ न खाओ। तुम एक बार उसे तोड़ चुके हो।

राजा—यदि मैं अबकी बार शपथ तोड़ूँ तो फिर कभी मेरा विश्वास न करना।

राजकुमारी—कभी नहीं। (रोज़ालिन से) कहो रोज़ालिन, रात को तुमसे इन्होंने क्या कहा था?

रोज़ालिन—कहते थे कि तुम मुझे नेत्रों की ज्योति से भी अधिक प्यारी हो और संसार भर से अधिक सुन्दर हो। मैं या तो तुमसे विवाह करूँगा या तुम्हारे ही प्रेम में मर जाऊँगा।

राजकुमारी—कहो राजन, क्या तुम अब इस प्रतिज्ञा का पालन करोगे?

राजा—अपने जीवन की क़सम! देवि, मैंने उस स्त्री के साथ कभी इस प्रकार की प्रतिज्ञा नहीं की।

रोज़ालिन—ईश्वर की क़सम, तुमने की थी। इसका साक्षात् प्रमाण यह लीजिए। क्या यह आपकी ही अँगूठी है? और क्या यह रात को आपने मुझे नहीं दी थी?

राजा—नहीं नहीं। यह अँगूठी मैंने राजकुमारी को दी थी। इसकी आड़ पर यह हीरा लगा था।

राजकुमारी—क्षमा कीजिए। यह वस्त्र रोजालिन पहने हुए थी। (बाइरन से) और देखिए, आपने मुझे यह मोती दिया था। क्या आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं या अपना मोती वापिस लेना?

बाइरन—कुछ नहीं! मैं दोनों छोड़ता हूँ। अब मैं चाल समझ गया! इन सबने हमारी हँसी उड़ाने के लिए यह जाल रचा था।

इसी समय राजकुमारी ने सुना कि उसके पिता का देहान्त हो गया। यह सुनते ही उसने अपने देश जाने की तैयारियाँ कर दीं।

राजा ने आग्रह करके कहा—श्रीमतीजी ठहरें, परन्तु राजकुमारी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। जब राजा ने फिर आग्रह करके कहा कि यदि आप जाती ही हैं तो हमसे प्रेम करने की प्रतिज्ञा करती जाइए। तब राजकुमारी ने उत्तर दिया—राजन्, इस समय आपने व्रत-खण्डन करके बड़ा अपराध किया है, इसलिए आपकी शपथ का विश्वास नहीं कर सकती। यदि आप बारह वर्ष के लिए राजपाट छोड़कर किसी एकान्त स्थान में निवास करें और यम-नियम के अनुसार तपस्वी का जीवन व्यतीत करने के पश्चात् मेरे पास आवें तो मैं अवश्य आपसे ब्याह कर लूँगी।

राजा—मैं शपथ खाता हूँ कि ऐसा ही करूँगा।

राजकुमारी—आपकी शपथ का कुछ भरोसा नहीं।

बाइरन—(रोज़ालिन से) प्यारी मुझसे क्या कहती हो ?

रोज़ालिन—आप भी अपना प्रायश्चित्त कीजिए और तीन वर्ष तक अस्पताल में दरिद्र रोगियों की सेवा कीजिए। तब मेरी ओर ध्यान दीजिए।

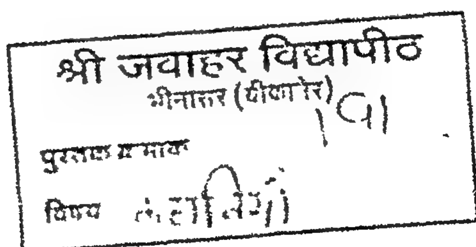
डूमेन—(कैथरायन से) प्यारी, मेरे लिए क्या उत्तर है ?

कैथरायन—साल भर और एक दिन तप कीजिए। तब मैं आपकी बात सुनूँगी।

लांग०—(मेरिया से) तुम भी कहो।

मेरिया—आपको भी साल भर प्रतीक्षा करनी चाहिए।

बस, वे सबकी सब चली गईं और ये लोग हाथ मलते रह गये।



तृतीय रिचार्ड

(Richard III)

"छठे हनरी" के 'तीसरे भाग' में हम दिखला चुके कि रिचार्ड ग्लौस्टर ने छठे हनरी को बन्दीगृह में मार डाला। यह भी बतलाया जा चुका है कि चौथे एडवर्ड के एक लड़का उत्पन्न हो गया था। उसका नाम भी एडवर्ड था और वह अपने पिता की मृत्यु पर पाँचवें एडवर्ड के नाम से गद्दी पर बैठा।

रिचार्ड ग्लौस्टर कुटिल प्रकृति का मनुष्य था। यद्यपि इस समय लंकास्टर वंश के लोग मर चुके थे और यार्कवंश को विजय प्राप्त हुई थी परन्तु अब ग्लौस्टर स्वयं राज्य छीनना चाहता था। यह मालूम हो चुका है कि ग्लौस्टर चौथे एडवर्ड का सबसे छोटा भाई था। मँझला क्लेरेंस था। एडवर्ड के पीछे ग्लौस्टर स्वयं गद्दी पर बैठना चाहता था। इसलिए उसने कुटिलता से क्लेरेंस को मारने का उपाय सोचा।

पहले तो उसने राजा के कान भर दिये कि बहुत से लोग आपका प्राण लेना चाहते हैं और उनमें हमारा भाई क्लेरेंस और लार्ड हेस्टिंग्ज़ भी हैं। उसके पश्चात् क्लेरेंस को यह निश्चय दिला दिया कि यह सब रानी की करतूत है। ए

वर्ड ने अपने प्राणों को सन्दिग्ध अवस्था में देखकर क्लेरेंस को क़ैद कर दिया जिस समय वह लार्ड ब्रेकनबरी के साथ, जो लन्दन के मीनार नामी बन्दीगृह का दारोग़ा था, जा रहा था। मार्ग में रिचार्ड ग्लौस्टर मिला और उसे प्रणाम करके पूछा—भाई! आपके साथ पुलिस कैसी?

क्लेरेंस—महाराज ने मेरे शरीर की रक्षा के लिए बन्दी-गृह तक सिपाही साथ कर दिये हैं।

ग्लौस्टर—क्यों?

क्लेरेंस—क्योंकि मेरा नाम जार्ज क्लेरेंस है।

ग्लौस्टर—यह तो आपका दोष नहीं। इस अपराध के लिए तो आपके नाम रखनेवाले को पकड़ना चाहिए था। क्या बन्दी-गृह में आपका फिर नामकरण होगा? भला बताइए तो क्या बात है?

क्लेरेंस—मुझे भी ज्ञात नहीं। परन्तु मैंने केवल इतना सुना है कि किसी ज्योतिषी ने उनसे कह दिया है कि तुम्हारी सन्तान को 'ज' से हानि पहुँचेगी। अब चूँकि मेरा नाम 'ज' से प्रारम्भ होता है इसलिए मुझी पर सन्देह किया गया है।

ग्लौस्टर—भाई, इसका कारण केवल यह है कि लोग स्त्रियों के वश में हैं। आपको क़ैद में भेजनेवाला राजा नहीं किन्तु रानी है। इसी रानी ने अपने भाई की सहायता से लार्ड हेस्टिंग्ज़ को क़ैद करा दिया।

क्लेरेंस—ईश्वर, ईश्वर! अब तो रानी के सम्बन्धियों के सिवा और किसी का ठीक नहीं है।

ग्लौस्टर—आप बहुत दिनों कैद न रहेंगे। मैं बहुत जल्द छुड़ाने का उपाय करूँगा।

क्लेरेंस तो बन्दी-गृह में चला गया और ग्लौस्टर ने बजाय छुड़ाने के उसको मार डालने की तैयारियाँ कीं और दो घातकों को रुपया देकर इस काम की पूर्ति के लिए भेजा।

एक दिन क्लेरेंस किसी सोच में बैठा हुआ था। उसे उदास देखकर ब्रेकनबरी ने पूछा—"श्रीमान्, आज क्यों दुखित हैं?

क्लेरेंस—मैंने कल की रात इस कष्ट से काटी है और ऐसे ऐसे भयानक स्वप्न देखे हैं कि यदि मुझे संसार का राज्य मिले तो भी ऐसी दूसरी रात्रि जीना नहीं चाहता।

ब्रेकनबरी—श्रीमान् ने क्या स्वप्न देखा है? कृपया बताइए।

क्लेरेंस—मैंने देखा कि मैं क़ैदख़ाने को तोड़कर ग्लौस्टर के साथ बरगण्डी (फ्रांस) को भागा जा रहा हूँ। जब मैंने इँगलैण्ड की ओर देखा तब गुलाब युद्ध (War of Roses) की बहुत सी बातें याद आ गईं! जिस समय हम तख़्तों पर टहल रहे थे उस समय ग्लौस्टर का पैर फिसला और ज्योंही मैंने उसे सँभाला, उसने मुझे समुद्र में डाल दिया। परमात्मन्, डूबने में कैसा कष्ट होता है। पानी की भयानक आवाज़ मेरे कानों में

रही थी और मृत्यु आँखें फाड़-फाड़कर मेरी ओर देख रही थी। मैंने सैकड़ों आदमियों को देखा जिनको मछलियाँ खा रही थीं। समुद्र की तह में सैकड़ों जहाज़ों के टूटे-फूटे तख्ते पड़े हुए थे मानो सोने के आभूषण और मोती रक्खे हुए थे। बहुत से मुर्दों की खोपड़ियों में गड़ गये थे। बहुत से उनकी पुतलियों में घुस गये थे।

ब्रेकनबरी—क्या आपको मृत्यु के समय यह सब देखने का अवसर मिल गया?

क्लैरेंस—मुझे तो मिल गया। मैंने कई बार चाहा कि आत्मा शरीर से निकल जाय पर न निकला और पानी मेरे शरीर में घुस-घुसकर मुझको कष्ट देने लगा।

ब्रेकनबरी—क्या आप इतने कष्ट से जागे नहीं?

क्लैरेंस—नहीं। मेरा स्वप्न मरण के बाद भी रहा। और उस समय आत्मा को बहुत दुःख हुआ। मैं नरक में पहुँचा। वहाँ पहले मुझे मेरा ससुर वारिक मिला और कहने लगा—"पापी क्लैरेंस, इस अन्धकाररूपी राज में तुझे मिथ्या-शपथ का क्या दण्ड मिल सकता है?" अब वह तो छिप गया और एक रक्त-सना आत्मा आकर कहने लगी—"अब पापी क्लैरेंस आ गया, जिसने मुझे ट्यूक्सबरी के रणक्षेत्र में मारा था। इसे पकड़ लो और अनेक प्रकार कष्ट दो।" यह सुन-

कर बहुत सी दुरात्माएँ आ गईं और मेरे कानों में भयानक-भयानक शब्द करने लगीं। मैं काँपने लगा और काँपते ही जाग उठा। परन्तु जागने के पश्चात् भी मुझे बहुत देर तक यही मालूम होता रहा कि मैं नरक में हूँ।

ब्रेकनबरी—स्वामिन्, आपके डरने का कुछ आश्चर्य नहीं है। मैं तो सुनकर ही भयभीत हो रहा हूँ।

क्लेरेंस—मैंने एडवर्ड के लिए वे काम किये हैं जो अब मेरी आत्मा के विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं। देख लो अब इसका कैसा इनाम मिल रहा है। ईश्वर, यदि मेरी हार्दिक प्रार्थनाएँ और पश्चात्ताप मेरे पापों को दूर नहीं कर सकते तो आप केवल मुझे ही दण्ड दे लें और मेरी निर्दोष स्त्री तथा बच्चों पर दया करें।

यह कहकर क्लेरेंस बेहोश हो गया और थोड़ी देर में सो गया। इतने में वहाँ पर रिचार्ड के भेजे हुए घातक आये और कहने लगे—कौन है?

ब्रेकनबरी—अरे क्या चाहता है और कैसे आया है?

१ घातक—मैं क्लेरेंस से बातें करना चाहता हूँ और अपनी टाँगों के बल आया हूँ।

ब्रेकनबरी—ऐसा सूक्ष्म उत्तर!

२ घातक—व्यर्थ बातचीत से मितभाषण अच्छा है।

यह कहकर उसने ब्रेकनबरी को ग्लौस्टर का लिखा एक पत्र दिया जिसमें लिखा था कि इन दोनों के संरक्षण में क्लेरेंस को छोड़ दो। ब्रेकनबरी तो इस आज्ञा-पत्र को देखकर चला गया और दूसरा घातक कहने लगा—क्या सोते हुए को ही मार दें?

१ घातक—नहीं, नहीं। जब वह जागेगा तब कहेगा कि धोखे से मार डाला।

२ घातक—अरे मूर्ख, वह जागने कब लगा?

१ घातक—तो वह कहेगा कि सोते में मारा।

२ घातक—न्याय* के दिन ही कह सकेगा, परन्तु 'न्याय' शब्द को कहने से मेरे मन में कुछ पछतावा होता है।

१ घातक—अरे क्या डर गया?

२ घातक—हत्या से नहीं, किन्तु दण्ड से। क्योंकि ईश्वर के दण्ड से कौन बचा सकता है?

१ घातक—मैं तो समझता था तू दृढ़ है।

२ घातक—मैं उसे जीवित रखने में दृढ़ हूँ।

१ घातक—अच्छा मैं जाता हूँ, ग्लौस्टर से यही कह दूँगा।

२ घातक—ठहर जा, ठहर जा। शायद मेरा यह शुद्ध विचार थोड़ी देर में जाता रहे। क्योंकि मेरी आत्मा के पुण्य के भाव आधे मिनट से अधिक नहीं रहते।

---

* ईसाइयों का विश्वास है कि प्रलय के दिन सब मुर्दे कब्रों में से उठेंगे और ईश्वर उनका न्याय करेगा।

१ घातक—(थोड़ी देर मे) अब तेरा क्या हाल है ?

२ घातक—अभी तक तो कुछ दया बाक़ी है ।

१ घातक—सोच तो सही कि इस काम की पूर्ति पर हम कितना इनाम मिलेगा ।

२ घातक—अरे मैं इनाम तो भूल ही गया था । अब तो अवश्य मारा जायगा ।

१ घातक—अब तेरी दया कहाँ गई ?

२ घातक—रिचार्ड ग्लौस्टर की थैली में ।

१ घातक—जब वह इनाम देने के लिए थैली खोलेगा तब दया भाग जायगी ।

२ घातक—अच्छा, जल्दी करो । दया को भाग जाने बहुतेरों को दया होती तक नहीं !

१ घातक—अगर फिर तुझे दया आ जाय तो कैसा हो ?

२ घातक—अब मैं इसकी परवा न करूँगा । इससे भीरु हो जाते हैं । न आदमी चोरी कर सकता है, झूठी शपथ खा सकता है । यह आदमी को निक कर देती है ।

१ घातक—मेरे मन मे तो यह अब तक कह रही है कि क्यों को न मारो ।

२ घातक—चल हट । इसकी बात मत सुन ।

१ घातक—मेरा हृदय वज्र का है । यह मेरा क्या करेगी

२ घातक—क्या कार्य आरम्भ कर दें ?

१ घातक—इसको तलवार पर उठाकर शराब के पीपे में डाल दो।

२ घातक—अच्छी बताई।

१ घातक—यह तो जाग उठा।

२ घातक—अच्छा, मारो।

१ घातक—नहीं, पहले बातें करेंगे।

क्लेरेंस (जागकर)—अरे आदमी, कहाँ गया? मुझे एक ग्लास शराब दे।

१ घातक—श्रीमन, आपको बहुत शराब मिलेगी।

क्लेरेंस—तू कौन है?

१ घातक—आदमी, जैसे आप हैं!

क्लेरेंस—हमारी तरह नहीं। हम तो राजवंशी हैं।

१ घातक—हमारी तरह भक्त नहीं।

क्लेरेंस—तेरे शब्द कठोर हैं यद्यपि तेरी आँखें नम्र हैं।

१ घातक—मेरे शब्द राजा के शब्द हैं, परंतु मेरी आँखें अपनी ही हैं।

क्लेरेंस—कैसे भयानक शब्द बोलता है। अब तेरी आँखों से मुझे डर लगता है। अरे भाई! तुम्हारा मुँह क्यों पीला पड़ गया? तुमको किसने भेजा है? और क्यों?

दोनों घातक—मा-मा-मा—

क्लेरेंस—मारने को?

घातक—हाँ, हाँ!

क्लेरेंस—तुम्हारा जी तो कहने को भी नहीं चाहता, फिर मारोगे कैसे? मित्रो, मैंने आपका क्या अपराध किया है?

१ घातक—आपने हमारा कुछ नहीं किया, राजा का किया है।

क्लेरेंस—तो मुझसे और उससे मेल हो जायगा।

२ घातक—नहीं महाराज, अब मरने की तैयारी कीजिए।

क्लेरेंस—तो क्या तुम्हारा यही काम है कि निर्दोषों को मारा करो? मेरा क्या अपराध है? मेरे विरुद्ध प्रमाण ही क्या है? किस न्यायाधीश ने किस न्यायालय में मेरे विरुद्ध हुकम दिया है? जब तक मुझ पर नियमानुसार अभियोग न चलाया जाय, मुझे मारना बड़ा ही अनुचित है। मैं तुमको ईसामसीह की शपथ दिलाता हूँ कि तुम चले जाओ। मेरा मारना बड़ा पाप है।

१ घातक—हम जो कुछ करते हैं, आज्ञा से करते हैं।

२ घातक—और आज्ञा देनेवाला हमारा राजा है।

क्लेरेंस—मूर्ख राजभक्तो, राजाओं के राजा ने अपने पवित्र शास्त्र में आज्ञा दी है कि हत्या न करो। फिर क्या तुम उसकी आज्ञा को भंग करके मनुष्य की आज्ञा का पालन करोगे? याद रक्खो, वह अवश्य उनको दण्ड देगा जो उसके नियमों का उल्लङ्घन करेंगे।

२ घातक—और इसी लिए ईश्वर ने तुझे दण्ड दिया है। तू ने प्रतिज्ञा की थी कि लंकास्टर वंश के लिए लड़ूँगा।

१ घातक—और फिर इस प्रतिज्ञा को भंग करके अपने राजा के लड़के की आँतें निकाल लीं।

२ घातक—तेरा कर्तव्य था कि इसकी रक्षा करता।

१ घातक—जब तूने स्वयं ऐश्वरीय आज्ञा को भंग किया तब हमको किस प्रकार शिक्षा दे सकता है?

क्लेरेंस—हाय! मैंने यह सब अपने भाई एडवर्ड के लिए किया। वह तुमको मेरे मारने के लिए नहीं भेज सकता, क्योंकि वह भी तो उसी पाप का भागी है जिसका मैं हूँ। यदि ईश्वर इसका दण्ड देगा तो डङ्के की चोट देगा। तुम ईश्वर का काम क्यों करते हो!

१ घातक—तूने ईश्वर का काम क्यों किया जब राजकुमार के प्राण लिए?

क्लेरेंस—क्रोध और भ्रातृ-स्नेह के कारण।

१ घातक—तो हम भी तेरे भाई के प्रेम, अपने कर्तव्य और तेरे अपराधों से प्रेरित होकर यह काम कर रहे हैं।

क्लेरेंस—अगर तुमको मेरे भाई से प्रेम है तो मुझसे घृणा मत करो। क्योंकि मुझे वह प्यारा है। यदि इनाम के लिए तुम इस काम को करने के लिए उद्यत हुए हो तो मैं ग्लौस्टर को लिख दूँगा। वह तुम्हें एडवर्ड से भी अधिक इनाम देगा।

२ घातक—तुमको धोखा हुआ है। ग्लौस्टर तुमसे वैर रखता है।

क्लेरेंस—नहीं नहीं। वह मुझसे प्रेम रखता है। तुम मेरी ओर से उसके पास जाओ।

दोनों घातक—हम तो जायँगे ही।

क्लेरेंस—और उससे कह दो कि हमारे पिता यार्क ने मरते समय उपदेश किया था कि सर्वदा प्रेमपूर्वक रहना। जब ग्लौस्टर यह बात सुनेगा तब रो पड़ेगा।

१ घातक—आँसू नहीं, पत्थर रोयेगा। जैसा हम रो रहे हैं।

क्लेरेंस—उसको बुरा न कहो। वह दयालु है।

१ घातक—जैसे जाड़ों में पाला! चलो हटो। तुम धोखे में हो। उसी ने तो हमको भेजा है।

क्लेरेंस—ऐसा नहीं हो सकता। वह तो मुझे क़ैद में देखकर रोता था और कहता था कि मैं तुम्हें छुड़ाऊँगा।

१ घातक—वह ठीक कहता था। इस संसाररूपी क़ैद से छुड़ाने के लिए उसने हमें भेजा है।

२ घातक—श्रीमान् ईश्वर का ध्यान करें: क्योंकि मृत्यु-समय निकटस्थ है।

क्लेरेंस—जब तुम्हारी आत्माएँ ऐसी पवित्र हैं कि तुम मुझे ईश्वर की आराधना के लिए प्रेरणा करते हो तो तुम अपनी आत्मा का क्यों ख़याल नहीं करते और मुझे मारकर ईश्वर से वैर करते हो?

२ घातक—हम क्या करें!

क्लेरेंस—दया करके अपनी आत्मा को पाप से बचा लो!

१ घातक—दया करना कायरता और स्त्रीपन है।

क्लेरेंस—निर्दयी होना पशुपन है।

२ घातक—पीछे की ओर देखो!

यह कहकर उन दोनों ने क्लेरेंस का वध कर दिया और उसकी लाश को पीपे में छिपा दिया।

यद्यपि एडवर्ड ने पहले ग्लौस्टर की चालाकियों से क्लेरेंस की मृत्यु के लिए हुक्म दे दिया था परन्तु फिर क्षमा कर दिया। लेकिन रिचार्ड ग्लौस्टर ने जल्दी से उसे मरवा डाला। जिस समय एडवर्ड ने क्लेरेंस की मृत्यु की खबर सुनी, उसे बहुत खेद हुआ। वह दाढ़ें मारकर रोने लगा। क्योंकि अब उसे अपने भाई के वे सब पराक्रम याद आ गये जो उसने ट्युक्सबरी के रणक्षेत्र में किये थे। एडवर्ड उस समय बीमार था और थोड़े दिनों में मर गया।

अब तो रिचार्ड की चढ़ बनी। एडवर्ड ने मरते समय यह निश्चय किया था कि राजकुमार एडवर्ड राजा हो और रिचार्ड उनका संरक्षक। रिचार्ड दिखलाने को तो सबसे प्रेम करता था परन्तु उसके मन में सदा कपट-कतरनी चलती रहती थी। क्लेरेंस को मरवा ही चुका था। अब राजकुमार एडवर्ड और उसके भाई राजकुमार रिचार्ड की बारी आई। राजकुमार एडवर्ड और उसकी माता एलीज़बेथ उस समय भाई रिवर्स और भाई ग्रे की संरक्षकता में थे।

लार्ड रिवर्स एलीज़िबेथ का भाई था और लार्ड ग्रे उसके पहले पति से उत्पन्न हुआ पुत्र। इन दोनों से रिचार्ड को डर था। इनके सामने वह अपने भतीजों को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकता था। इसलिए सबसे पहले उसने इन्हीं की खबर ली और बकिङ्घम की सहायता से इनको पौम्फ्रेट के किले में क़ैद कर दिया। इलीज़िबेथ ने जब अपने सम्बन्धियों का इस दुर्दशा का हाल सुना तब बड़ी दुःखित हुई। उसे मालूम हो गया कि रिचार्ड मेरा और मेरे वंशजों का नाश करना चाहता है। इसलिए वह भागकर अपने छोटे बेटे रिचार्ड के साथ किसी धर्म-सम्बन्धी मठ को चली गई।

राजकुमार एडवर्ड ने जब अपने मामा का हाल रिचार्ड ग्लौस्टर से पूछा तो उसने कह दिया कि वे तुम्हारे सम्बन्धी तुमको मार डालना चाहते हैं। इसलिए यही उचित मालूम होता है कि इनको तुम्हारे पास से अलग कर दिया जाय और तुमको तुम्हारे भाई-सहित लन्दन के मीनार में भेज दिया जाय। वह जगह बहुत अच्छी है। एडवर्ड ने यद्यपि इस बात को पसन्द न किया परन्तु बेचारे को जाना पड़ा। उसका छोटा भाई रिचार्ड भी महारानी इलीज़िबेथ के पास से छीनकर वहीं भेज दिया गया। इस समय यद्यपि नाममात्र को पंचम एडवर्ड देश का राजा था परन्तु सब अधिकार रिचार्ड ग्लौस्टर के हाथ में था। वह जो चाहता सो करता था और धीरे धीरे अपने को गद्दी पर बिठाने का उपाय करता जाता था।

पहले तो उसने लार्ड रिवर्स और ग्रे को इस अपराध में फाँसी लगवा दी कि ये लोग मेरे मारने की तैयारियाँ कर रहे हैं। फिर लार्ड हेस्टिंग्ज का सिर कटवा लिया, क्योंकि वह रिचार्ड को राजा बनाना स्वीकार नहीं करता था।

इतने आदमियों के मरने पर लन्दन में शोर मच गया। नगर के लोग उत्तेजित हो गये, परन्तु बकिंघम और रिचार्ड ने नई-नई झूठी बातें गढ़कर उनको शान्त करना चाहा। रिचार्ड मक्कारी से एक कमरे में दो पादरियों के साथ धर्मशास्त्र को पढ़ने और ईश्वर की आराधना में संलग्न हो गया और बकिंघम को सिखलाकर लोगों को शान्त करने के लिए भेजा।

बकिंघम ने लोगों से हेस्टिंग्ज़ को प्राणदण्ड देने का कारण बतलाकर कहा कि प्रथम तो चौथा एडवर्ड* रिचार्ड ड्यूक आफ़ यार्क का लड़का नहीं था, क्योंकि उसका जन्म ऐसे समय हुआ था जब रिचार्ड फ्रांस की लड़ाइयों में फँसा रहा था, इसलिए वह जारज मालूम होता है और यह बात यों भी सिद्ध होती है कि चौथे एडवर्ड का आकार अपने पिता के सदृश न था। दूसरे, पाँचवाँ एडवर्ड चौथे एडवर्ड का धार्मिक पुत्र नहीं है क्योंकि उसकी माता इलीज़बेथ का विवाह होने से पहले चौथे एडवर्ड की मँगनी फ्रान्स में हो चुकी थी। इस दशा में इलीज़बेथ न तो उसकी धर्मपत्नी हो सकती है

* यह रिचार्ड सन् १४६० ई० में युद्ध में मारा गया था और यह चौथे एडवर्ड का बाप था।

और न उसके लड़के उसके धर्मपुत्र। इसलिए अब राज का वास्तविक अधिकारी रिचार्ड ग्लौस्टर ही है। यह अपने पिता रिचार्ड आफ़ यार्क का सच्चा पुत्र है। इसका आकार भी अपने पिता के तुल्य है और यह धर्मात्मा भी है।

लोग इस विचित्र कथा को सुनकर चकित हो गये, क्योंकि उनको स्वप्न में भी इन झूठी बातों का ध्यान न था। वे अपने छोटे राजा को गद्दी से उतारना नहीं चाहते थे। परन्तु रिचार्ड ग्लौस्टर और बकिङ्घम ने बड़े-बड़े आदमियों को ऐसा भर रक्खा था और अपने विरोधियों के मुँह तलवार से बन्द कर रक्खे थे कि लन्दन का लार्ड मेयर (मुख्य शासक) और अन्य लोग रिचार्ड को राज देने पर राज़ी हो गये और बकिङ्घम चालाकी से उन सब लोगों को साथ लेकर उस महल में आया जहाँ रिचार्ड बगलाभगत बना पादरियों सहित शास्त्राध्ययन कर रहा था।

जब रिचार्ड को इन सबके आने की सूचना दी गई तब दूत ने आकर उत्तर दिया—महाराज इस समय ईश्वर की आराधना में संलग्न हैं। कृपा करके कल आइए। पारलौकिक विचारों में सांसारिक बातों से बाधा पड़ेगी।

बकिङ्घम—भाई, महाराज से कह दो कि इस समय बड़ा आवश्यक कार्य है।

जब दूत चला गया तब लार्ड मेयर और अन्य पुरुषों से बकिङ्घम कहने लगा—देखिए, रिचार्ड ग्लौस्टर कोई एडवर्ड

तो है ही नहीं कि हमेशा सांसारिक व्यसनों में लिप्त रहे। यह तो धर्मात्मा है और ईश्वर के ध्यान में मग्न है। एडवर्ड की भाँति यह मंत्रियों और राजसभासदों सहित केवल राज-काज मे ही नहीं रहता किन्तु पादरियों की सत्सङ्गति में अपनी आत्मा की उन्नति किया करता है। वह दिन बड़ा उत्तम होगा जब यह धर्मात्मा पुरुष इंगलैण्ड का राजा होगा।

इतने मे ग्लौस्टर कोठे पर आया। उसके हाथ मे इञ्जील थी और दो पादरी दोनों ओर खड़े हुए थे। उसे देख कर बकिङ्घम ने कहा—धर्मावतार, हमारी विनती सुनिए।

रि० ग्लौस्टर—आप लोग क्षमा कीजिए। मैं इस समय परम-पिता परमात्मा की सेवा मे था, अतएव आपकी सेवा न कर सका। आपकी क्या आज्ञा है?

बकिङ्घम—वही जो ईश्वर चाहता है और इस द्वीप के लोग पसन्द करते हैं।

रि० ग्लौस्टर—क्या मैंने कुछ अपराध किया है कि इतने लोग इकट्ठे होकर यहाँ आये हुए हैं?

बकिङ्घम—हाँ, आपने किया है और हमें आशा है कि आपने इस दोष की निवृत्ति कीजिएगा।

रि० ग्लौस्टर—जब मैं ईसाई हूँ तब अवश्य करूँगा।

बकिङ्घम—आपका यह अपराध है कि आपने अपने पूर्वजों की राजगद्दी को अधार्मिक लोगों के लिए छोड़ रक्खा

है। आप अभी सोये हुए हैं और यह देश ऐसे लोगों के अधिकार में फँसा हुआ है जिनके धर्म, कर्म तथा जन्म किसी का ठिकाना नहीं। हमारी प्रार्थना है कि आप अपने कन्धों पर इस भार को लीजिए क्योंकि राज के वास्तविक अधिकारी आप ही हैं और देश की प्रजा आपको ही चाहती है।

रि० ग्लौस्टर—समझ में नहीं आता कि आपको इसका क्या उत्तर दूँ। यदि चुप रहूँ तो आप कहेंगे कि राज का लालच आ गया, यदि आप ऐसे प्रेमियों को तिरस्कार दूँ तो मुझे डर है कि मेरे मित्र मुझसे अप्रसन्न हो जायँगे। इसलिए मेरा स्पष्ट उत्तर यह है कि आपके प्रेम के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, परन्तु आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकता। यदि राज का कोई और अधिकारी न होता तो भी मैं राज न लेता, क्योंकि मेरी योग्यता इतनी कम है कि मैं इस भार को नहीं उठा सकता। परन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरी आवश्यकता नहीं है। राजवृक्ष ने ऐसे छोटे फल छोड़ दिये हैं जो समय पाकर पक जायँगे और मैं खुश हूँ कि हमारा योग्य राजा एडवर्ड किसी दिन भले प्रकार से हमारे ऊपर राज करेगा। ईश्वर न करे कि मैं अपने भतीजे से राज छीनने का विचार तक करूँ।

बकिङ्घम—महाराज, आप धर्मात्मा हैं, इसी लिए ऐसा कहते हैं। आपका विचार है कि एडवर्ड आपके भाई का पुत्र है, हम भी यही कहते हैं परन्तु हमारा आक्षेप यह है कि वह आपके भाई की धर्मपत्नी का पुत्र नहीं है। पहले आपके भाई की मँगनी लेडी लूसी से हुई थी, यह बात आपकी माताजी को मालुम है। इसके पश्चात् उसकी मँगनी फ्रांस-नरेश की बहन बोना से हुई। परन्तु आपके भाई ने इन दोनों योग्य स्त्रियों को छोड़कर एक अधेड़ विधवा को ग्रहण कर लिया जिसके कई बच्चे हो चुके थे। इस स्त्री से यह एडवर्ड उत्पन्न हुआ जो आज राजकुमार—. नहीं, नहीं, राजा—कहलाता है। शोक है कि मैं प्रत्येक बात स्पष्ट नहीं कह सकता। क्योंकि इससे आपके ही पूर्वजों पर दोष आता है।

रि० ग्लौस्टर—शोक, शोक! आप मेरे सिर पर इतना भार रखते हैं। मैं इस योग्य नहीं कि राज कर सकूँ।

बकिङ्घम—यदि आप राज न ग्रहण करेंगे तो हम अन्य देश के किसी योग्य पुरुष को गद्दी दे देंगे, क्योंकि जारज एडवर्ड हमारा राजा नहीं हो सकता।

रि० ग्लौस्टर—अच्छा, यदि आपकी यही इच्छा है तो मुझे कुछ संकोच नहीं, परन्तु यदि पीछे मुझ पर कोई दोष रक्खे तो यह अपराध मुझ पर नहीं है, क्योंकि ईश्वर

जानता है और कुछ-कुछ आपको भी मालूम है कि मेरी इच्छा राज लेने की नहीं है।

इस धोखेबाज़ी से रिचार्ड ने इँगलैण्ड का राज ले लिया, और दूसरे दिन अपने भतीजों—एडवर्ड और रिचार्ड—को क़ैद करके तृतीय रिचार्ड के नाम से गद्दी पर बैठ गया।

इनकी माता एलीज़िबेथ को कुछ ख़बर नहीं थी। इसलिए जब वह अपनी सास अर्थात् तृतीय रिचार्ड की माता के साथ लन्दन के मीनार के पास अपने पुत्र-पौत्रों को देखने गई तो ब्रेकनबरी ने, जो मीनार का अधिष्ठाता था, उनको भीतर न जाने दिया और कहा, राजा ने आज्ञा दी है कि कोई भीतर न जाने पावे।

एलीज़िबेथ—राजा ने! अरे राजा कौन है?

ब्रेकनबरी—वही संरक्षक (अर्थात् तीसरा रिचार्ड)!

एलीज़िबेथ—अरे क्या उसने मुझमें और मेरे पुत्रों में भेद करा दिया? मैं उनकी मा हूँ और मुझे भीतर जाने से कौन रोक सकता है?

सास—मैं इनके बाप की माता हूँ। इसलिए उन्हें अवश्य देखूँगी।

ब्रेकनबरी—नहीं श्रीमतीजी, मुझे शपथ दिलाई गई है। मैं आपको नहीं जाने देने का।

इस समय स्टेनली आया और उसने तीसरे रिचार्ड के राज्याभिषेक की सूचना दी। एलीज़िबेथ ने जब यह कुसमा-

चार सुने तब उसे बड़ा दुःख हुआ। उसे निश्चय हो गया कि मेरे पुत्र जीते न बचेंगे। इसलिए उसने अपने एक और पुत्र डैर्सिट को हनरी रिचमौण्ड के पास भेजा कि वह आकर रिचार्ड को उसके पापों का दण्ड दे। यह हनरी रिचमौण्ड कौन था, इसका वर्णन हम आगे करेंगे।

अब दोनों राजकुमारो अर्थात् पाँचवे एडवर्ड और उसके छोटे भाई का मृत्यु-समय आ पहुँचा, क्योंकि उनका चचा हर घड़ी उन्हीं के मारने का उपाय सोच रहा था। जिस बकिङ्घम की कुटिल सहायता से उसे राजगद्दी मिली थी उसी के द्वारा वह यह काम भी कराना चाहता था। राजा होने से पूर्व उसने बकिङ्घम से प्रतिज्ञा की थी कि मैं गद्दी पर बैठकर तुम को हियरफोर्ड की जागीर दे दूँगा। एक दिन जब वह गद्दी पर बैठा हुआ था, उसने बकिङ्घम को बुलाकर कहा—मुझे आपकी सहायता से इस उच्च पद की प्राप्ति हुई है। परन्तु क्या यह गद्दी केवल एक ही दिन के लिए है या मैं बहुत दिनों तक इसका सुख भोगूँगा ?

बकिङ्घम—ईश्वर करे, आप सदा राज्य करें।

रिचार्ड—अभी एडवर्ड जीवित है। देखें, आप क्या राजभक्ति दिखाते हैं ? आप जानते हैं कि मैं क्या कहूँगा ?

बकिङ्घम—श्रीमहाराज कहें।

रिचार्ड—मैं राजा होना चाहता हूँ।

बकिङ्घम—श्रीमान् तो राजा हैं ही।

रिचार्ड—अरे क्या मैं एडवर्ड के जीते जी राजा हूँ? मैं चाहता हूँ कि आप इसे शीघ्र मरवा डालें।

यह सुनकर बकिङ्घम के पेट में पानी हो गया। यद्यपि उसने रिचार्ड की राजगद्दी के लिए उचित अनुचित सभी काम किये थे परन्तु एडवर्ड की हत्या से अपने माथे में कलंक का टीका लगाना नहीं चाहता था। रिचार्ड इस कारण बकिङ्घम से क्रुद्ध हो गया और हियरफोर्ड की जागीर उसे न दी, क्योंकि बुरे आदमी अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं कर सकते। जब बकिङ्घम उसकी दुष्ट इच्छाओं को सन्तुष्ट न कर सका तब उसने टाइरल नामी एक हत्यारे के द्वारा एडवर्ड और उसके छोटे भाई रिचार्ड को सोते समय मरवा डाला।

उनकी माता एलीज़िबेथ ने जब यह कुसमाचार सुना तो उसकी छाती फट गई। वह रो-रोकर कहने लगी—हे मेरे लाल, हे मेरे बच्चो, हे कुम्हलाये हुए फूलो, यदि तुम्हारी आत्माएँ अभी वायु में उड़ती हों तो मेरे सिर के चारों ओर उड़ो और अपनी माता के विलाप को श्रवण करो।

उसकी सास रोकर कहने लगी—मेरे ऊपर दुखों का ऐसा पहाड़ आ पड़ा है कि मैं कुछ नहीं कह सकती। हाय मेरे एडवर्ड! तू क्यों मर गया।

छठे हनरी की रानी मारगरेट ने, जो उस समय सती ही थी, उत्तर दिया—एडवर्ड* के बदले एडवर्ड मर गया। ी ।

एलीज़िबेर्थ—हे ईश्वर, क्या तूने इन मैमनों को त्यागकर भेड़िये के मुख मे डाल दिया। हे ईश्वर, ऐसे भयानक पाप के समय तू कहाँ था ?

मारगरेट—जब मेरे पति और पुत्र मारे गये।

एली० की सास—हे ईश्वर, इस पृथ्वी को शीघ्र ही नष्ट कर, क्योंकि इसने निरपराधियों का रक्त बहुत पिया है।

मारगरेट—मेरे एक एडवर्ड था, जिसे रिचार्ड ने मार डाला! मेरे एक हनरी (उसका पति) था उसे भी रिचार्ड ने मरवा दिया। (एलीज़िबेथ से) तेरे एक एडवर्ड था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला। तेरे एक रिचार्ड था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला।

एली० की सास—मेरे एक रिचार्ड† था जिसे तूने मरवा डाला। मेरे एक रटलेण्ड था जिसे तूने मरवा डाला।

मारगरेट—तेरे एक क्लेरेंस था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला। तेरे गर्भ से एक ऐसा कुत्ता उत्पन्न हुआ है जो हम सबको खाये जाता है। हे ईश्वर, तू कैसा न्यायी

---

* मारगरेट के लड़के एडवर्ड को चौथे एडवर्ड ने रिचार्ड द्वारा मरवाया था।

† उसके पति अर्थात् चौथे एडवर्ड के पिता का नाम रिचार्ड था।

रिचार्ड—है कि इसी कुत्ते से अपनी माता की सन्तान को मरवा कर उसे औरों की भाँति दुखी करता है।

वकि
एली० की सास—हनरी की बहू, तू मेरे दु:खों पर मत हँस। ईश्वर जानता है कि तेरे दुःखों पर मैंने शोक किया है।

मारगरेट—मेरी आत्मा बदला लेने की आग से जल रही है। तेरा एडवर्ड, जिसने मेरे एडवर्ड को मारा था, म गया। तेरा दूसरा एडवर्ड मार डाला गया। तेर रिचार्ड भी मर गया। क्योंकि इन सबकी मृत्यु मेरे दुःखों का बदला नहीं हो सका। तेरा छोट मर गया, क्योंकि उसने मेरे एडवर्ड के तलवार मार थी। हेस्टिंग्ज़, रिवर्स, ग्रे आदि सब—जिन्होंने मु दुःख दिया था—नरक में पहुँचा दिये गये। रिचार्ड अभी जीवित है। हे ईश्वर, इसकी मृत्यु मेरी आँखों के सामने हो।

एलीजिवेथ—तूने तो पहले ही कहा था कि मैं तेरे साथ कोसूँगी।

मारगरेट—मैंने तो कहा था कि तू भी मुझसी ही होगी। अब देख, तेरा पति कहाँ है? तेरे भाई अब क्या हुए? तेरे पुत्रों का भी कुछ पता है?

एलीज़िवेथ—तेरा शाप ठीक होता है। मुझे भी बता दे कि अपने शत्रुओं को किस प्रकार शाप दूँ।

मारगरेट—रात को सो मत, दिन को खा मत। कोसती ही जा! फिर देख कि तेरा शाप ठीक होता है या नहीं।

एलीज़िबेथ—मेरे शब्द तीक्ष्ण नहीं हैं।

मारगरेट—दुःख सबको तीक्ष्ण बना देता है।

मारगरेट वहाँ से उठ गई और रिचार्ड थोड़ी देर मे वहाँ होकर गुज़रा। उसे देखकर उसकी माता रोने लगी। रिचार्ड ने एक स्त्री को दूर से आर्त्तस्वर से रोते देखकर पूछा—यह कौन है?

माता ने उत्तर दिया—मैं वह हूँ जो चाहती तो तुझे जन्म समय ही गला घोंटकर मार डालती।

एलीज़िबेथ—अरे दुष्ट, हत्यारे, तूने मेरे बच्चो को मारकर यह मुकुट सिर पर रक्खा है। अरे निर्दयी, बता मेरे लाल कहाँ हैं?

माता—मेरा क्लेरेंस कहाँ है? अरे दुष्ट बता, और उसका लड़का नेड कहाँ है?

एलीज़िबेथ—मेरा भाई रिवर्स और मेरा बेटा ग्रे कहाँ हैं?

माता—दयालु हेस्टिंग्ज कहाँ है? अरे क्या तू मेरा पुत्र है?

रिचार्ड—हाँ। उसके लिए मैं पिताजी का और आपका कृतज्ञ हूँ।

माता—तू मेरी बात सुन।

रिचार्ड—कहो, पर मैं सुन नहीं सकता।

माता—मैं कोमल शब्द कहूँगी।

रिचार्ड—संक्षेप से कहो—मुझे जल्दी है।

माता—तुझे इतनी जल्दी है। मैं रो-रोकर तेरी प्रतीक्षा कर रही थी।

रिचार्ड—फिर मैं आपको शान्ति देने के लिए आ तो गया।

माता—नहीं नहीं। तूने तो इस पृथ्वी को मेरे लिए नरक बना दिया। तेरे जन्म पर मुझे बड़ा कष्ट हुआ था। बचपन में भी तू बड़ा चञ्चल और कुटिल था। लड़कपन में भी तू बड़ा उत्पाती था। युवा अवस्था में तू बड़ा घातक निकला। भला तुझसे मुझे कब सुख मिला है?

रिचार्ड—यदि मैं ऐसा ही हूँ तो मुझे जाने दो।

माता—एक बात सुन।

रिचार्ड—तुम्हारे शब्द बड़े कर्कश हैं।

माता—मैं एक बात कहूँगी। फिर कभी न कहूँगी।

रिचार्ड—अच्छा।

माता—या तो ईश्वर तुझी को तेरे पापों के बदले में परास्त करेगा और यदि तेरी जीत हुई तो मैं मर जाऊँगी। पर कभी तेरा मुँह न देखूँगी। इसलिए यह अन्तिम शाप तुझे देती हूँ कि जिस प्रकार तूने हत्या की है उसी प्रकार तू बुरी मौत मरेगा।

माँ-बाप के शाप बहुधा ठीक होते हैं और रिचार्ड की माता का शाप यथार्थ हुआ। हम ऊपर कह चुके हैं कि

एलीज़िबेथ ने डोर्सेट को हनरी रिचमौण्ड की सेवा में भेजा था कि वह आकर रिचार्ड से उसके अत्याचारों का बदला ले।

इस हनरी रिचमौण्ड का राज-अधिकार समझने के लिए हमको दूसरे रिचार्ड और चौथे हनरी के पूर्वजों की ओर ध्यान देना चाहिए। चौथे हनरी के पिता गाण्ट की तीसरी स्त्री कैथरायन सिनफोर्ड थी। हनरी रिचमौण्ड इस कैथरायन की परपोती का लड़का था और इसका बाप एडमण्ड टूडर हनरी पञ्चम की विधवा कैथरायन का पुत्र था, जिसने हनरी की मृत्यु के पश्चात् वेल्ज के एक सिपाही औविन टूडर से विवाह कर लिया था।

यद्यपि हनरी रिचमौण्ड का यह दूरस्थ सम्बन्ध राज पर अधिकार जमाने के लिए सन्तोषजनक नहीं था परन्तु उसने इस अवसर को बहुत ही अच्छा समझा। उधर महारानी एलीज़िबेथ ने अपनी पुत्री एलीज़िबेथ का विवाह भी उससे करना अङ्गीकार कर लिया। रिचमौण्ड ने डोर्सेट का सँदेसा सुनते ही बहुत सी सेना इकट्ठी की और मिलफोर्ड बन्दर पर आ गया। उसको देखते ही बहुत से जागीरदार, जो तीसरे रिचार्ड की दुष्टता से तङ्ग आ रहे थे, विद्रोह करके रिचमौण्ड से जा मिले। बकिङ्घम भी उनमें से एक था जिससे और रिचार्ड से पाँचवें एडवर्ड की मृत्यु पर कुछ अनबन हो गई थी। किन्तु उसकी सेना एक तूफान के कारण तितर-बितर हो गई और वह स्वयं पकड़ा गया। रिचार्ड ने उसी समय उसका सिर कटवा लिया।

अब दोनों दलों की बौस्वर्थ के रणक्षेत्र में मुठभेड़ हु

रात के समय जब रिचार्ड और रिचमैाण्ड अपने-अपने डेरों

सो रहे थे, रिचार्ड ने स्वप्न मे देखा कि छठे हनरी के पु

राजकुमार एडवर्ड ने आकर उससे कहा—मैं कल रण में तु

पराजित करूँगा, क्योंकि तूने मुझे युवावस्था में

में मार डाला था।

इसके पश्चात् छठा हनरी आकर कहने लगा—मैं जि

समय जीवित था उस समय तूने मेरे शरीर में छिद्र ही छि

कर दिये। इसलिए कल तू निराश होकर मरेगा।

फिर राजकुमार क्लेरेन्स ने कहा—देख रिचार्ड, तूने मु

छल करके मरवाया है। याद रख, कल तू जीता न रहेगा

इसके पीछे रिवर्स और ग्रे कहने लगे—तूने हमको पाम्फ्रे

में मरवाया था। इसका बदला कल लिया जायगा।

फिर हेस्टिंग्ज आया और कहने लगा—पापी हत्यारे

जाग। याद रख, जिस प्रकार तूने हेस्टिंग्ज को मारा है उसी

प्रकार कल तू मारा जायगा।

इसके पश्चात् पाँचवें एडवर्ड और उसके भाई रिच

ने आकर कहा—अपने भतीजों की याद कर जिनको तूने

खाने में मरवाया था। ये ही कल तेरी मौत के कारण होंगे

सबसे पीछे बकिङ्घम आकर कहने लगा—अरे दुष्ट,

ही तुझे राजगद्दी दिलाई थी! और सबसे पीछे मैं ही

अत्याचार की भेंट हुआ। कल मुझे याद करके

ष्टता पर पश्चात्ताप करना, क्योंकि तेरे कुकर्म कल रणक्षेत्र में फलीभूत होंगे।

रिचार्ड अब जाग पड़ा और मारे डर के काँपने लगा। अब उसे अपनी सब दुष्टताएँ याद आ गईं। क्योंकि अन्त समय पापियों को अपने सब पाप याद आ जाते हैं। उसका अन्तःकरण उसे दुःख देने लगा। कुकर्मों का चित्र उसकी आँखों के सामने खिंच गया।

वह कहने लगा—ईश्वर, ईश्वर, दया करो! मैंने कैसा भयङ्कर स्वप्न देखा है। कायर अन्तःकरण, तू मुझे क्यों सताता है। यहाँ तो और कोई नहीं। मैं अकेला ही हूँ। फिर क्यों डर लगता है। क्या रिचार्ड अपने आप से ही भय खाता है। क्या यहाँ पर कोई घातक है? नहीं, नहीं! अगर घातक हूँ तो मैं ही। फिर क्या मैं अपने को ही मारूँगा? नहीं नहीं! मुझे अपनी आत्मा प्रिय है! क्यों, क्या मैंने इसका हितकर कुछ काम किया है? नहीं; अब मुझे अपने आपसे घृणा है क्योंकि मैंने बड़े-बड़े पातक किये हैं। मैं बड़ा दुष्ट हूँ। परन्तु मैं झूठ बोलता हूँ। मैं ऐसा नहीं हूँ। मेरे अन्तःकरण में सहस्रों वाणियाँ हैं और हर एक उनमें से आ-आकर मेरे कुकर्मों की कथा सुनाती है। मेरे पाप एक-एक करके सामने आते हैं और कहते हैं कि मैं हत्यारा हूँ। मुझे कोई प्यार नहीं करता और यदि मैं मर गया तो कोई मेरे लिए आँसू न बहावेगा। औरों की तो बात ही क्या, मैं स्वयं

अपने से घृणा करता हूँ। प्रतीत होता है कि उन सब मनुष्यों की आत्माएँ, जिनको मैंने मरवाया था, आ-आकर मुझे धमकाती हैं और कल बदला लेंगी!

जब वह इस प्रकार अनुताप कर रहा था, उसके गढ़ सेनापति रैटक्लिफ़ ने आकर कहा—स्वामिन्!

रिचार्ड—कौन है?

रैटक्लिफ़—श्रीमन्, मैं हूँ रैटक्लिफ़। मुर्ग़ा दो बार प्रातःकाल को प्रणाम कर चुका है और आपके साथियों ने शस्त्र धारण कर लिये हैं।

रिचार्ड—मैंने एक बुरा स्वप्न देखा है। क्या मेरे साथी कल मेरा साथ देंगे?

रैटक्लिफ़—निस्सन्देह।

रिचार्ड—मुझे भय है। मुझे भय है।

रैटक्लिफ़—नहीं महाराज, स्वप्न से क्या डरना।

रिचार्ड—आज जितना भय स्वप्न से हुआ है उतना रिचमौण्ड के दस सहस्र शस्त्रधारियों से भी नहीं हो सकता।

उधर रिचमौण्ड को आज की रात भले प्रकार नींद आई और उसे अच्छे-अच्छे स्वप्न दिखाई दिये। उसने उठकर लार्डों से कहा—ईश्वर हमारी सहायता करेगा और हमारे शुभ कार्य में सफलता होगी। सिवा रिचार्ड के और सब हमारी जय के अभिलाषी हैं। क्योंकि हमारे विपक्षी भले प्रकार जानते हैं कि वे एक दुष्ट के लिए लड़ रहे हैं, जो अवसर पाकर उन्हें

का शत्रु हो जायगा। यह वही मनुष्य है जिसने हत्या के द्वारा राज पाया है और जिसने उन्हीं के सिर लिये हैं जिन्होंने उसे सहायता दी थी। यह पातकी, जिसने इँगलैण्ड की राजगद्दी को अपवित्र किया है, सदैव ईश्वर का विरोधी रहा है। फिर यदि आप लोग ईश्वर के इस शत्रु के विरुद्ध लड़ेंगे तो ईश्वर अवश्य आपसे प्रसन्न होगा। यदि आप इस घातक के मारने का प्रयत्न करेंगे तो आपको शान्ति की नींद आवेगी। यदि आप देश-शत्रुओं के विरुद्ध लड़ाई करेंगे तो देश आपका कल्याण करेगा। यदि आप अपनी स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा के लिए युद्ध करेंगे तो स्त्रियाँ आपको साधुवाद देंगी। यदि आप अपने बच्चों को अत्याचाररूपी तलवार से बचावेंगे तो आपके बच्चो के बच्चे आपको असीस देंगे। इसलिए ईश्वर का नाम लेकर इन अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध कीजिए।

अब युद्ध प्रारम्भ हुआ। रिचार्ड को जिन लोगों की सहायता की आशा थी वे सब उसके विरोधी हो गये। नार्थम्बरलैण्ड ने कहला भेजा कि मेरी सेना सुशिक्षित नहीं है, इसलिए इसका भेजना व्यर्थ है। सरे रिचार्ड का सँदेसा सुनकर हँसने लगा। स्टेनले जाकर रिचमौण्ड से मिल गया। इस प्रकार रिचार्ड के साथी बहुत कम हो गये। और जो रहे वे भी आधे मन से लड़े। परिणाम यह हुआ कि रिचार्ड मारा गया। उसकी सेना पराभूत हो गई और उसका मुकुट एक जगह झाड़ी में पड़ा पाया गया।

हनरी रिचमौण्ड ने उसको अपने सिर पर रख लिया और वह सातवें हनरी के नाम से गद्दी पर बैठा। मृत पुरुषों का यथायोग्य मृतक-संस्कार किया गया और जो लोग रिचार्ड के साथ लड़े थे उनको क्षमा कर दिया गया।

सातवें हनरी ने चौथे एडवर्ड की पुत्री एलीज़िबेथ से विवाह किया और इस प्रकार लङ्कास्टरवंशी हनरी के यार्कवंशी एलीजिबेथ को विवाहने से ये दोनों वंश मिल गये और जो झगड़ा तीस वर्ष पूर्व गुलाब-युद्ध के नाम से आरम्भ हुआ था उसको बौस्वर्थ की लड़ाई ने समाप्त कर दिया।

आठवाँ हनरी

(Henry VIII)

'तृतीय रिचार्ड' मे कहा जा चुका है कि हनरी रिचमौण्ड ने तृतीय रिचार्ड को मारकर स्वय अपने को इँगलैण्ड का राजा बना लिया। उसने १५०६ ई० तक राज किया। उसके मरने पर उसका छोटा लड़का हनरी, अष्टम हनरी के नाम से, गद्दी पर बैठा; क्योंकि ज्येष्ठ पुत्र आर्थर अपने पिता के जीवन-समय में ही मर चुका था।

हनरी को लड़ाई बहुत पसन्द थी। वह यूरोप के जिस राजा को प्रबल समझता था उसी के विरुद्ध उठ खड़ा होता था। यहाँ तक कि आज इस देश से सन्धि करता और उससे लड़ता, कल उससे सन्धि करता और इससे लड़ता। इस प्रकार पहले उसने फ़्रांस के राजा बारहवे लूइस से लड़ाई की। परन्तु इस युद्ध से अँगरेज़ों को बहुत हानि उठानी पड़ी। १५१४ ई० मे फ़्रांस से सन्धि हो गई और हनरी की छोटी बहिन मैरी का विवाह लूइस से कर दिया गया। थोड़े दिनों पीछे लूइस की मृत्यु पर उसका भतीजा फ़्रांसिस फ़्रांस की गद्दी पर बैठा और अँगरेज़ों से फिर उसकी लड़ाई छिड़ गई। परन्तु शीघ्र

ही मेल हो गया और १५२० ई० में हनरी फ़्रांस-नरेश से भेंट करने के लिए फ़्रांस गया। कैले के पास दोनों नरेशों का मिलाप हुआ और फ़्रांसवालों ने ऐसे समारोह से इँगलैण्ड-नरेश का सत्कार किया और ऐसे सुनहरे कपड़े उसके मार्ग में बिछाये गये कि आज तक उस स्थान का नाम स्वर्णाम्बर-क्षेत्र (Field of cloth of gold) चला आता है।

इन सब कामों में उसका प्रसिद्ध मंत्री वुल्ज़े था, जिसकी सम्मति बिना राजा कुछ काम न करता था। वुल्ज़े इप्स-विच नगर के एक कसाई का लड़का था जो अपनी विद्या तथा बुद्धि के बल से इस उच्च पद को पहुँच गया था। वुल्ज़े यद्यपि बड़ा विद्वान्, नीतिज्ञ और राजकाज में दक्ष था परन्तु उसकी अभिलाषाएँ अनन्त थीं। वह बड़े से बड़े उच्च पद को प्राप्त करना चाहता था। मंत्री होने के कारण उसे देश भर में सबसे अधिक अधिकार था। राजा को छोड़कर वह सबसे ऊँचा समझा जाता था। इस पर भी उसे सन्तोष न था और प्रसिद्ध पुरुषों को वह झट से गिरा दिया करता था। २० वर्ष तक उसने राज का काम किया और मनमाना प्रबन्ध किया। राजा बिल्कुल उसके हाथ में था। छल-कपट उसका इतना बढ़ा हुआ था कि जिस प्रतिष्ठित पुरुष को न चाहता उसी से झट राजा को नाराज़ कर देता और उसे फाँसी या क़ैद करा देता। इन दिनों उसकी शक्ति बहुत बढ़ रही थी और फ़्रांस से लौटकर राजा उसे और भी अधिक मानने

लगा था। इस समय उसे यार्क का लाट पादरी बना दिया गया और पोप* ने उसे अपना प्रतिनिधि भी चुन लिया था। इस प्रकार अब उसकी शक्ति कैण्टरबरी के लाटपादरी से भी अधिक बढ़ गई थी और उसे इस पर बड़ा अभिमान था।

एक समय बकिङ्घम, नारफ़ाक और एबर्गेवनी की लन्दन में भेंट हुई। वे आपस में फ़्रांसिस और हनरी के मिलाप के विषय में वार्तालाप करने लगे। बकिङ्घम ने कहा—ज्वर के कारण मैं घर में ही पड़ा रहा, जब कि कैले में उत्सव मनाया जा रहा था।

नारफ़ाक—मैं उस समय वहाँ था। मैंने अपनी आँखों से इस महोत्सव का अवलोकन किया था। दोनों राजा घोड़ों पर सवार दोनों ओर से आये। एक ने दूसरे को प्रणाम किया। दोनों घोड़ों से उतरे और एक ने दूसरे को गले लगा लिया।

बकिङ्घम—मैं उस समय ज्वर के बन्दीगृह में क़ैद था।

नारफ़ाक़—तो तुमने इस भौमिक उत्सव का अवलोकन न किया। हर एक दिन पहले दिन से अधिक समारोह था। आज अगर फ़रासीसी लोग स्वर्ण-वस्त्र पहने हुए अँगरेज़ों से मिलने आये तो दूसरे दिन उन्होंने इँगलैण्ड को हिन्दुस्तान बना दिया। हर एक आदमी यह

---

* रोमन कैथलिक ईसाइयों का सबसे बड़ा धर्मराज, जो रोम में रहता है, पोप कहलाता है।

मालूम होता था कि सोने की खान है। छोटे-छोटे नौकर सुनहरी वरदियाँ पहने दमकते फिरते थे और युवतियाँ, जिनका परिश्रम करने का स्वभाव नहीं था, माल के बोझ से दबी जाती थीं।

बकिङ्घम—यह सब प्रबन्ध किसने किया था ?

नारफ़ाक—यार्क के लाटपादरी ने।

बकिङ्घम—बुरा हो इसका। यह किसी के सुख की बात नहीं सोचता। दिन प्रति दिन इसका अभिमान बढ़ता जाता है और यह अपने काम के लिए दूसरों का नाश कर देता है। भला इनको क्या पड़ी थी कि इस भीड़भाड़ से फ़्रांस को जाना।

एबर्गैवनी—तीन पुरुषों को तो मैं जानता हूँ कि इस यात्रा के कारण ही उनकी जायदाद नष्ट हो गई।

बकिङ्घम—सैकड़ों अपनी जायदादों को पीठ पर लादकर इस यात्रा को गये और उनकी दुर्गति हो गई। भला इस भीड़भाड़ से क्या परिणाम निकला ?

नारफ़ाक—मुझे बड़ा शोक है कि हमारी और फ़्रान्सीसियों की सन्धि में, इतने व्यय को देखते हुए, कुछ भी नतीजा न निकला।

बकिङ्घम—मुझे तो यह जान पड़ता है कि शीघ्र ही यह सन्धि टूट जायगी।

नारफ़ाक—यह तो ठीक है। देखो फ़्रांसवालों ने हमारे व्यापारी जहाज़ों को बोर्डो में पकड़ लिया है।

एवर्ग्रेवनी—यह तो अच्छा मेल है। क्या इसी के लिए इतना ख़र्च हुआ?

वकिङ्घम—यह सब इस वुल्ज़े की करतूत है।

नारफ़ाक—आप आजकल होशियार रहिए। क्योंकि वुल्ज़े और आपसे जो विरोध हो गया है उसका परिणाम अच्छा न होगा। वुल्ज़े की शक्ति को देखते हुए असावधानी ठीक नहीं।

थोड़े दिनों से बुल्ज़े और वकिङ्घम मे कुछ अनबन हो गई थी। इसी लिए नारफ़ाक ने इस ओर संकेत किया था। ये बातें हो ही रही थीं कि वुल्ज़े वहाँ पर आ गया। उसके कटाक्षों से विदित होता था कि वह वकिङ्घम के विरुद्ध कोई अभियोग चलाने का उपाय सोच रहा है। वास्तव में यही हुआ। वुल्ज़े का तो स्वभाव ही यह था कि जिसके विरुद्ध हो जाता उसकी जड खोदके फेंक देता। अब बेचारे वकिङ्घम की बारी आ गई। उसके एक निकाले हुए भृत्य को रुपया देकर वुल्ज़े ने ऐसा सिखाया कि वह राजविद्रोह का अभियोग उस पर सिद्ध करने को राज़ी हो गया। उधर राजा के ऐसे कान भरे गये कि उसने वारण्ट काटकर वकिङ्घम और उसके सम्बन्धी एवर्ग्रेवनी को क़ैद करा लिया। जब वुल्ज़े और राजा इस मुक़द्दमे को सुनने के लिए बैठे तब वकिङ्घम के

नौकर ने आकर यह साक्षी दी—महाराज, बकिंघम रोज़ यह कहा करता था कि यदि राजा बिना सन्तान के मर जाय तो मैं उसकी गद्दी पर बैठूँ। ये शब्द मैंने इसको अपने दामाद एबर्गेवनी से कहते हुए सुने थे। और यह कहता था कि मैं शीघ्र वुल्ज़े से बदला लूँगा।

वुल्ज़े—देखिए महाराज, इसकी इच्छाएँ कैसी कुटिल हैं।

राजा—अच्छा कहो, यह अपना अधिकार राजगद्दी के लिए किस प्रकार सिद्ध करता है?

नौकर—श्रीमन्, किसी पुजारी ने उससे यह भविष्यत्-वार्त्ता कही है कि राजा सन्तान-रहित मर जायगा और यदि बकिंघम को प्रजा पसन्द करे तो वह राजा हो सकता है।

राजा—अच्छा कहो।

नौकर—मैं सत्य कहता हूँ। मैंने उसे बहुत समझाया कि वह पुजारी झूठा है। आप कोई ऐसी बात न कीजिए जिससे हानि उठानी पड़े। परन्तु उसने झिड़ककर कहा 'नहीं, मुझे कुछ हानि नहीं पहुँच सकती।' उसने यह भी कहा कि यदि पिछली बीमारी में राजा मर गया होता तो वुल्ज़े और सर लाविल के सिरों का पता भी न लगता।

राजा—ऐसी दुष्टता! और क्या?

नौकर—एक बार जब महाराज ने इसे कुछ कहा था तब यह कह रहा था कि यदि आज मुझे क़ैद का हुक्म होता तो

मैं वह करता जो मेरे पिताजी तीसरे रिचार्ड के साथ करना चाहते थे—अर्थात् राजा के पेट मे छुरी भोंक देता।

राजा—बड़ा हत्यारा है।

नौकर—यह कहकर उसने अपनी तलवार पर हाथ रखकर एक बड़ी शपथ खाई।

राजा ने बकिङ्घम पर अभियोग चलाया और उसके नौकरों की साक्षी पर उसको फाँसी का आदेश दिया गया। जिस समय लोग बकिङ्घम को पकड़े लिये जा रहे थे और सैकड़ों आदमी मार्ग मे उसके दर्शनों के लिए एकत्रित हो रहे थे, बकिङ्घम ने कहा—सज्जन पुरुषो! आप इतनी दूर से यहाँ मेरे ऊपर दया करने पधारे हैं तो मेरी बात सुनिए और फिर घर चले जाइए। मुझे आज राजविद्रोह के दोष मे फाँसी का हुक्म हुआ है। परन्तु ईश्वर जानता है कि मेरा कुछ भी अपराध नहीं है। यदि मैं सच न कहता हूँ तो ईश्वर मुझे दण्ड दे। यह दोष राजनियम का नहीं है। क्योंकि न्यायालय में साक्षी के अनुसार न्याय किया गया। परन्तु मैं चाहता हूँ कि साक्षी देनेवालों में अधिक ईसाईपन (धर्मत्व) होता। ख़ैर, जो कुछ उन्होंने किया, अच्छा किया। मैं उनको क्षमा करता हूँ। परन्तु उनको चाहिए कि वे प्रतिष्ठित पुरुषों पर इस प्रकार झूठे दोष लगाने का परिश्रम न किया करे, नहीं तो ईश्वर उनको अपने किये की सज़ा देगा। मैं अपने प्राण बचाना नहीं चाहता और न राजा से क्षमा का

प्रार्थी हूँगा। मेरे सच्चे मित्रो! जो मेरी मृत्यु पर रोने के लिए आये हो, कृपा करके मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए जिससे मेरी मुक्ति हो जाय।

सर निकोलस वौक्स ने, जो उसके साथ था, कहा कि आप अब नौका पर सवार हूजिए। आपके उस पद के अनुकूल यह सजा दी गई है। इस पर बकिंघम ने उत्तर दिया—नहीं, सर निकोलस रहने दीजिए। मेरा कुछ पद नहीं है। आप व्यर्थ मेरे सम्मान में क्यों कष्ट करते हैं। मैं जिस समय आया था उस समय सब कुछ था। अब कुछ भी नहीं। परन्तु इस समय भी मैं अपने शत्रुओं से उच्च हूँ, क्योंकि मैं कभी झूठ नहीं बोला। मेरी वही दशा हुई जो मेरे पिताजी की हुई थी। जब उन्होंने तीसरे रिचार्ड के अत्याचारों का विरोध किया और विपत्ति में पड़ गये तब उन्होंने अपने नौकर का आश्रय लिया। परन्तु उस दुष्ट ने उनको पकड़वा दिया। मुझे भी मेरे ही नौकरों ने पकड़वाया। परन्तु प्यारे सज्जन पुरुषो, यह बात याद रखना कि जो मनुष्य तुमसे प्रेम करता है उसी को नाश करवा डालता है। अब मैं तुमसे बिछुड़ता हूँ। ईश्वर तुम्हें सुखी रक्खे।

बकिंघम के मरने के पीछे एक और घटना हो गई। उसकी कथा इस प्रकार है—

हम ऊपर कह चुके हैं कि हेनरी का बड़ा भाई आर्थर अपने पिता के सामने ही मर गया था। उसका विवाह आरागन

(हस्पानिया) की राजकुमारी कैथरायन से हुआ था। आर्थर की मृत्यु पर उसकी मँगनी हनरी से हो गई। जब हनरी राजा हुआ तब कैथरायन का नियमानुकूल विवाह भी हो गया और वह अठारह वर्ष तक महारानी रही। उसके एक बेटी भी उत्पन्न हुई, जिसका नाम राजकुमारी मेरी था।

एक दिन राजा वुल्ज़े के घर भोजन करने गया। वहाँ नगर की युवती सुन्दरियाँ इकट्ठी थीं। उनमें से एक रूपवती का नाम ऐन बोलिन था। ऐन बोलिन महारानी कैथरायन की सहेली थी; परन्तु उसके रूप की प्रशंसा बहुत थी। हनरी उसको देखते ही मोहित हो गया और उससे विवाह करने का विचार किया। अकस्मात् उसे ऐसा करने के लिए एक बहाना भी हाथ आ गया। ईसाइयों में यह बात धर्मविरुद्ध समझी जाती है कि विधवाएँ अपने मृत पति के भाई से विवाह कर सकें। इस सिद्धान्त के अनुसार कैथरायन हनरी की धर्मपत्नी नहीं हो सकती थी। परन्तु उसके पिता सातवें हनरी ने नीतिज्ञता के विचार से यह विवाह स्वीकार कर लिया था और इन अठारह वर्षों में किसी को यह विचार नहीं हुआ कि हनरी का विवाह धर्मविरुद्ध हुआ है। परन्तु अब ऐन बोलिन के प्रेम में मग्न होकर राजा को धर्माधर्म का विचार हुआ और उसने कैथरायन को परित्याग करने (तलाक़ देने) का इरादा किया।

यह परित्याग बिना धर्मराज—अर्थात् पोप—की आज्ञा के असम्भव था। अतएव उसने १५२७ ई० में क्लीमेण्ट सप्तम को,

जो उस समय पोप था, एक प्रार्थना-पत्र लिखा कि मुझे अपने धर्म-विरुद्ध विवाह पर पश्चात्ताप है। मैं चाहता हूँ कि नियमानुसार कैथरायन का परित्याग करूँ। उसे पूर्ण आशा थी कि पोप उसकी प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेगा; क्योंकि थोड़े दिनों पहले हनरी ने मार्टिनलूथर* के विरुद्ध एक लेख लिखा था जिस पर पोप लियो दशम ने उसको धर्मरक्षक की पदवी दी थी। परन्तु पोप को कैथरायन के भतीजे पाँचवें चार्ल्स का भय था; क्योंकि उस समय चार्ल्स यूरोप में बड़ा बलवान् गिना जाता था। उसके अधीन हस्पानिया, आस्ट्रिया और जर्मनी आदि कई देश हो गये थे। ऐसी अवस्था में पोप स्वयं तो इस परित्याग को स्वीकृत न कर सका, लेकिन उसने कार्डीनल कम्पियस को अपना प्रतिनिधि बनाकर इँगलैण्ड में भेजा कि इस मामले को नियमानुसार तय कर सके। ब्लैक फ्रायर्स नामक महल में कार्डीनल कम्पियस और वुल्ज़े इस मुक़द्दमे को सुनने के लिए बैठे और हेनरी और कैथरायन भी वहाँ पर आये। नियमानुसार चपरासी ने न्यायालय† के बाहर पुकारकर कहा—इँगलैण्ड-नरेश हनरी हाज़िर है?

हनरी—हाज़िर।

---

* जर्मनी का एक पादरी था जो प्रोटेस्टेण्ट मत का संस्थापक हुआ। लूथर पोप के विरुद्ध था।

† इँगलैण्ड में चर्चकोर्ट (धर्मन्यायालय) अलग थे, जिनमें पुजारी लोग उन बातों का निश्चय किया करते थे जो ईसाई-धर्म से सम्बन्ध रखती थीं।

चपरासी—इँगलैण्ड की महारानी कैथरायन हाजिर है?

कैथरायन ने कुछ उत्तर न दिया। वह कुर्सी से उठकर हनरी के पैरों पर गिर पड़ी और रोकर कहने लगी—श्रीमन्, आप मेरे साथ न्याय कीजिए और दया कीजिए। क्योंकि मैं एक अशक्त स्त्री हूँ। यहाँ मेरा कोई नहीं है। मेरा जन्म आपके देश में नहीं हुआ। परदेश में मेरा कोई मित्र नहीं है। शोक है कि आप मुझसे न जाने क्यों नाराज़ हैं। भला मैंने कौन सा ऐसा अपराध किया है कि आप मुझे त्यागना चाहते हैं! ईश्वर जानता है कि मैं सदा आपकी आज्ञा-कारिणी स्त्री रही हूँ। मैंने वही किया जो आपने चाहा है। जब आपके मुँह से प्रसन्नता प्रकट हुई है मैं प्रसन्न हुई हूँ। जब आप दुखी हुए हैं मैं भी दुखी हुई हूँ। भला कब मैंने आपकी इच्छा के विरुद्ध काम किया और कब आपकी इच्छा को अपनी इच्छा नहीं माना? आपका कौन ऐसा मित्र है जिससे, अपना शत्रु होते हुए भी, मैंने प्रेम नहीं किया? ऐसा कौन मेरा मित्र था जिस पर आपकी दृष्टि बदली देखकर मैं नाराज़ नहीं हुई? श्रीमन्, याद तो कीजिए कि बीस वर्ष से अधिक मैं आपकी आज्ञा-कारिणी स्त्री रही और आपसे कई बच्चे भी उत्पन्न हुए। यदि आपके पास एक भी ऐसा प्रमाण हो जिससे मेरा असतीत्व सिद्ध होता हो तो आप अभी मुझे निकाल दीजिए और ईश्वर मेरी आत्मा को काला करे। श्रीमहाराज, आपके पिताजी बड़े बुद्धिमान् और शास्त्रज्ञ थे। और मेरे

पिताजी फ़र्डीनण्ड, जो हस्पानिया-नरेश थे, बहुत से राजाओं मे बुद्धिमान् गिने जाते थे। इन दोनों ने देश-देश के धर्मात्मा विद्वानों की सभा करके यह निश्चय कराया था कि हमारा विवाह धर्मानुकूल है। फिर क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि विवाह धर्म-विरुद्ध नहीं था? इसलिए महाराजाधिराज, आप कृपा करके मुझे समय दीजिए कि मैं अपने हस्पानियावाले मित्रों से सम्मति मँगा लूँ।

वुल्ज़े—श्रीमतीजी, यहाँ देश भर के चुने-चुने विद्वान् बैठे हुए हैं जो अपने न्याय तथा सत्य के लिए प्रसिद्ध हैं। ये लोग आपके अधिकारों की रक्षा करेंगे इसलिए अब न्याय-सभा से अधिक समय माँगना व्यर्थ है।

कम्पियस—श्रीमान् ने यथार्थ कहा है। इसलिए देवीजी, उचित यही है कि अब कार्य्यवाही की जाय और प्रमाणों पर विचार किया जाय।

कैथरा०—(वुल्ज़े से) मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ।

वुल्ज़े—देवीजी की आज्ञा?

कैथरा०—श्रीमन्, मैं रोने को थी। परन्तु यह विचार करके कि हम महारानी हैं, या कम से कम अपने को महारानी समझती रही हैं, और एक महाराजा की पुत्री हैं, हम अपने आँसुओं को आग की चिनगारियों में परिवर्त्तित कर देंगी।

वुल्ज़े—आप सन्तोष कीजिए।

कैथरा०—उसी समय जब आप उचित व्यवहार करेंगे। इससे पूर्व सन्तोष करने से ईश्वर मुझे दण्ड देगा। बहुत से दृढ़ प्रमाणों से मुझे ज्ञात हो गया है कि आप मेरे शत्रु हैं। इसलिए मैं कह सकती हूँ कि आप मेरे न्यायाधीश नहीं हो सकते। आपने ही मेरे और मेरे स्वामी के बीच मे आग भड़का दी है। ईश्वर इसे शान्त करे। इसलिए मैं फिर कहती हूँ कि मुझे आपसे घृणा है और आप मेरे न्यायाधीश नहीं हो सकते। मैं आपको बड़ा बुरा शत्रु मानती हूँ और आप कभी सत्य के प्रेमी नहीं हो सकते।

वुल्जे—आपका ऐसा कहना उचित नहीं। देवीजी, आप मेरे साथ अनर्थ करती हैं। मुझे आपसे वैर नहीं है और न मैं आप या किसी अन्य के साथ अन्याय कर सकता हूँ। जो कुछ मैंने किया है या करूँगा वह सब पोप के प्रतिनिधि की सम्मति के अनुकूल करूँगा। आप मुझे इस आग के भड़काने का दोष लगाती हैं, परन्तु मैं इस बात का विरोध करता हूँ। राजा यहाँ उपस्थित हैं। अगर वे कह दे कि मैं झूठ कहता हूँ तो मुझे दण्ड दीजिए और यदि वे जानते हैं कि मैं सत्य कहता हूँ तो आपका कथन ठीक नहीं है। अब महाराज के अधीन है कि मुझे सच्चा करें या झूठा। परन्तु महाराज से प्रार्थना करने के पूर्व

मेरी आपसे यह विज्ञप्ति है कि आप अपने मन से यह विचार दूर कर दीजिए।

कैथरा०—श्रीमन्, मैं एक सरल स्त्री हूँ और आपके कपट-छल का सामना नहीं कर सकती। आप अपने धर्मपद के अनुसार नम्र और मृदुभाषी हैं, परन्तु आपकी आत्मा अभिमान और वैर से युक्त है। आप अपने भाग्य और श्रीमहाराज की कृपा से बहुत बढ़ गये हैं और अब अपने ही बढ़ानेवालों पर शासन करना चाहते हैं। मैं आपको अपना न्यायाधीश नहीं मानती और आप सबके सम्मुख पोप से प्रार्थना करती हूँ कि वही मेरा न्याय करें।

यह कहकर राजा को प्रणाम करके उसने वहाँ से जाना चाहा। कम्पियस उसे बुलाता रहा परन्तु महारानी ने किसी की बात न सुनी और चली गई।

राजा ने कम्पियस और अन्य उपस्थित पादरियों को यह बात दिखलानी चाही कि वह अपनी स्त्री का परित्याग किसी शत्रुता या अन्य कारण से नहीं करता है किन्तु विवाह धर्म-विरुद्ध होने से उसे पश्चात्ताप हुआ है। इसलिए वह कहने लगा—वुल्ज़े ने मुझे कभी परित्याग के लिए नहीं कहा। पहले पहल यह बात मुझे उस समय सूझी जब मेरी पुत्री मेरी का विवाह ऑर्लियन्स के ड्यूक के साथ होनेवाला था और बेयन के पादरी ने, जो इस विवाह को निश्चय करने के लिए आया

था, यह प्रश्न उठाया कि क्या 'मेरी' मेरी धर्म की पुत्री है; क्योंकि मैंने अपने भाई की विधवा से विवाह किया था। उसी समय से मुझे अपने अधर्म पर अनुताप होने लगा। पहले तो मैंने यही समझा कि ईश्वर मुझसे इस धर्मविरुद्ध विवाह के कारण अप्रसन्न है; क्योंकि इस रानी से मेरे जो पुत्र हुआ वह मर गया। इसलिए मैंने सोचा कि इस वंश का नाम केवल मेरे अधर्म के कारण नष्ट हुआ चाहता है। मेरी आत्मा में इस अधर्म का ऐसा पश्चात्ताप हुआ कि उसका प्रायश्चित्त करने के लिए मैंने इस गुणवती स्त्री का परित्याग करने की ठान ली, जिसके लिए आप सब यहाँ उपस्थित हुए हैं। मैंने हर एक पादरी की सम्मति ली, लिङ्कोलन और कैण्टरबरी के लाटपादरी से पूछा। सबने शास्त्र विचारकर यही उत्तर दिया जिसका परिणाम आज यहाँ पर देख रहे हैं।

लिङ्कोलन और कैण्टरबरी के पादरियों ने राजा की साक्षी दी। इसके पश्चात् सभा विसर्जित हुई। परन्तु हनरी को यह बात अच्छी न लगी कि कम्पियस और वुल्ज़े ने मुक़द्दमा इस समय नहीं किया। क्योंकि उसकी यही इच्छा थी कि जिस प्रकार होता, परित्याग की व्यवस्था जल्दी से मिल जाती और वह ऐन वोलिन से विवाह कर सकता।

इसके उपरान्त हनरी ने ऐन वोलिन से अधिक प्रेम प्रकट करना आरम्भ कर दिया। कैथरायन बेचारी लन्दन के आइवैल नामी महल में अपने दिन काटने लगी। ऐन वोलिन

को पैम्ब्रोक की मार्शनेस (रानी) की पदवी दी गई और उसके गुज़ारे के लिए एक सहस्र पौंड सालाना नियत कर दिया गया।

कैथरायन को अपने दुर्भाग्य पर अत्यन्त शोक था। शोक क्यों न हो? वह अब तक समस्त इँगलैण्ड की महारानी थी। आज पल भर में वह एक साधारण स्त्री हो गई। दुःख का पहाड़ उसके सिर पर आ पड़ा। वह बेचारी बड़े कष्ट से रहने लगी। एक दिन वह अपने महल मे बैठी हुई थी और दासी काम कर रही थी तो उसने कहा—मेरी आत्मा शोक-ग्रसित हो रही है। अरे बाजा उठा ले और गीत गाकर इन दुःखों को मेरे मन से हटा दे।

उसी समय वुल्ज़े और कम्पियस वहाँ पर आ गये। वुल्ज़े ने कहा—श्रीमहारानीजी को शान्ति हो।

कैथरा०—आपके यहाँ आने का क्या प्रयोजन है?

वुल्ज़े—आप अपने निज के कमरे मे अकेली चलिए। वहाँ हम आपको अपने आने का पूरा कारण बतलायेंगे।

कैथरा०—यहीं कहो। अभी तक मैंने कोई ऐसा पातक नहीं किया है कि कोने में छिपने की आवश्यकता हो। ईश्वर करे, अन्य स्त्रियाँ भी अपनी स्वतन्त्र आत्मा से इसी प्रकार कह सकें। श्रीमन्, मुझे इस बात की परवा नहीं कि क्यों सब लोगों ने मेरे कामों के विषय में वाद-विवाद किया। मुझे मालूम है कि मेरा जीवन अब तक स्वच्छ रहा है और इस बात से मुझे ख़ुशी

है। यदि आपको कुछ कहना है तो स्पष्ट कहिए; क्योंकि सत्य बातें स्पष्ट ही हुआ करती हैं।

इस पर वुल्जे ने लैटिन भाषा में रानी से कुछ कहना चाहा। क्योंकि उसका प्रयोजन यह था कि उसकी दासियाँ न समझ सकें। परन्तु कैथरायन ने बात काटकर कहा—श्रीमन्, लैटिन न बोलिए। जब से मैं इस देश में आई हूँ कभी इँगलैण्ड से बाहर नहीं गई। मुझे यह भाषा भली भाँति आती है। अन्य भाषा में कहने से मेरा झगड़ा और भी सन्दिग्ध हो जाता है। यहाँ कुछ स्त्रियाँ बैठी हुई हैं, ये आपके सत्य वचनों को सुनकर आपको साधुवाद देंगी।

वुल्ज़े—श्रीमतीजी, मुझे शोक है कि जो सेवा मैंने आपकी और श्रीमहाराज की की है और जिस सत्यता से मैं काम करना चाहता था उसको सन्देह की दृष्टि से देखा गया है। हम यहाँ इसलिए नहीं आये कि आपके सर्वप्रिय आचरण में कुछ दोष लगावें या आपके दुःख को, जो इस समय बहुत बढ़ रहा है, अधिक करें। हमारा प्रयोजन केवल यह जानने का है कि आप अपने स्वामी की अप्रसन्नता के समय में किस प्रकार से हैं? और आपकी क्या सम्मति है?

कम्पियस—महारानीजी, वुल्ज़े आपका सच्चा सेवक है। इसलिए यद्यपि आपने उसको बहुत कुछ बुरा-भला कहा है परन्तु तिस पर भी वह आपको यथोचित सम्मति देने आया है।

कैथरा०—श्रीमन्, मैं आपको, इस कृपा के लिए, धन्यवाद देती हूँ। आप धार्मिक पुरुष की भाँति कह रहे हैं। ईश्वर करे, आपका मन आपकी वाणी के अनुकूल हो। परन्तु समझ में नहीं आता कि ऐसे आवश्यक समय में मैं इतनी जल्दी कैसे उत्तर दे सकती हूँ। मैं तो इस समय अपनी सहेलियों के साथ काम में लगी हुई थी। मुझे क्या मालूम था कि आप जैसे प्रतिष्ठित पुरुष आ रहे हैं। हाय! यहाँ मेरा कोई नहीं है?

वुल्ज़े—देवीजी, आपका कथन ठीक नहीं है। आपके मित्र बहुत हैं।

कैथरा०—इँगलैण्ड में कोई नहीं। क्या तुम समझते हो कि कोई अँगरेज़ मुझे सम्मति देगा? या राजा के विरुद्ध होकर मुझसे मित्रता करेगा? सच तो यह है कि मेरे मित्र, जो मेरे भले की सोच सकें, यहाँ नहीं हैं; किन्तु यहा से दूर मेरे ही देश (हस्पानिया) में हैं।

कम्पियस—मेरी प्रार्थना है कि आप शोक को छोड़कर मेरा कहा मानें।

कैथरा०—क्या?

काम्पियस—अपने को केवल राजा के भरोसे छोड़ दीजिए। क्योंकि वे बड़े दयालु हैं। इससे आपके मान में भेद न पड़ेगा। यदि न्यायालय में मुक़द्दमा चला तो आप बदनाम हो जायँगी।

बुल्ज़े—हाँ, ये ठीक कहते हैं।

कैथरा०—आप वही कहते हैं जो चाहते हैं—अर्थात् मेरा सर्वनाश। क्या यह कोई सम्मति है? ईश्वर मेरे ऊपर है। वह ऐसा न्यायाधीश है कि उसे कोई राजा नहीं बिगाड़ सकता।

कम्पियस—क्रोध आपको धोखा दे रहा है।

कैथरा०—आपके लिए और लज्जा है। मैंने समझा था कि आप बड़े पवित्र हैं, परन्तु आपके हृदय कैसे काले हैं। आप मुझ दुखियारी को ऐसी सम्मति देते हैं। मैं नहीं चाहती कि ईश्वर आपको मुझसे आधा भी दुःख दे। परन्तु एक बात याद रक्खो। कहीं ऐसा न हो कि मेरे दुःखों का भार आपके ऊपर आ पड़े।

बुल्ज़े—देवीजी, मैं आपके भले की कहता हूँ और आप उससे भागती हैं।

कैथरा०—श्रीमन्, मैं अपने को इतनी पापिन नहीं बना सकती कि अपनी इच्छा से उस पदवी को त्याग सकूँ जो मुझे राजा ने विवाह करके प्रदान की थी। मेरी पदवी मेरी मृत्यु पर ही छूट सकती है।

बुल्ज़े—रानीजी, सुनिए।

कैथरा०—अच्छा होता कि मैं कभी इस देश में पैर न रखती और इस मिथ्या व्यवहार से मेरा परिचय ही न

होता। आप लोगों के मुख देवताओं के से हैं, परन्तु आपके मन को ईश्वर जानता है। हाय! संसार में मुझसे अधिक कौन अभागिन होगी। (अपनी सहेलियों से) अभागिनो! कहो अब तुम्हारा भाग्य कहाँ गया! मैं ऐसे स्थान पर विनष्ट हुई जहाँ कोई मेरा हितैषी नहीं है। हाय! कोई मेरे लिए रोनेवाला भी नहीं है। आज मैं उस कमलिनी के सदृश, जो एक दिन खेतों की महारानी बनी हुई थी, मुरझा जाऊँगी।

वुल्ज़े—अगर आप हमारा कहना मानें तो आपको अधिक शान्ति होगी। भला हम आपसे क्यों शत्रुता करने लगे? आप सोचिए तो सही। राजा लोग नम्रता से बहुत प्रसन्न होते हैं और धृष्टता से नाराज़। मैं जानता हूँ कि आपकी आत्मा बड़ी नम्र है। यदि आप सोचेंगी तो ज्ञात होगा कि हम आपके कैसे सच्चे सुहृद् हैं।

कम्पियस—हाँ श्रीमतीजी, ऐसा ही है। आप व्यर्थ भय करके अपनी आत्मा के साथ अनर्थ करती हैं। ईश्वर ने आपके शरीर में एक महान् आत्मा का प्रवेश किया है। राजा को आपसे प्रेम है। और यदि आप हम पर विश्वास करें तो हम आपके अनुकूल भरसक उद्योग करने को तैयार हैं।

कैथरा०—जो चाहो सो करो। मुझे क्षमा करो। आप जानते हैं कि मैं एक स्त्री हूँ। मुझमे ऐसा चातुर्य कहाँ जो आप ऐसे योग्य पुरुषों की बात का उत्तर दे सकूँ। आप राजा से कह दीजिए कि अब भी मेरा मन उन्हीं के चरणकमलों में है और जब तक मैं जीवित रहूँगी, उनकी भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती रहूँगी।

अब वुल्ज़े और कम्पियस चले गये। उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया कि कैथरायन के कथनानुसार इस झगड़े का फ़ैसला पोप ही करेगा।

जब हनरी ने देखा कि वुल्ज़े और कम्पियस स्वयं उसकी इच्छा के अनुकूल नही करते और टालमटोल कर रहे हैं तब वह बहुत क्रुद्ध हो गया और वुल्ज़े के ऊपर टूट पड़ा।

वुल्ज़े के शत्रु देश मे बहुत थे। और जिस प्रकार आज तक वुल्ज़े दूसरे लोगों को तंग किया करता था इसी प्रकार ये लोग अपने बदले का अवसर ढूँढ़ रहे थे। नारफ़ाक, सफ़ोक और लार्ड सरे ने सलाह की और राजा के महल मे परस्पर यों बातें करने लगे—

नारफ़ाक—यदि आप सब मिलकर इस समय वुल्ज़े की शिकायत करें तो उसकी एक न चलेगी। यदि इस अवसर को छोड़ दिया तो फिर आपको इस समय से भी अधिक लज्जित होना पड़ेगा।

सरे—मैं छोटे से छोटे अवसर के लिए भी तैयार हूँ। अपने ससुर की मृत्यु से मुझे शोक हो रहा है।

सफ़ोक—कौन ऐसा प्रतिष्ठित पुरुष है जो इस दुष्ट की घातों से बचा हो।

लार्ड चैम्बरलेन—आप व्यर्थ बातें कर रहे हैं। मुझे भय है कि हम क्या कर सकते हैं। जब तक आप वुल्ज़े का आना-जाना राजा तक बन्द नहीं कर सकते तब तक कुछ नहीं हो सकता।

नारफ़ाक—इससे न डरिए। राजा के पास इसकी दुष्टता का काफ़ी प्रमाण है। अब वह इसकी मीठी बातों में नहीं आने का।

सरे—मुझे यह बात सुनकर बड़ा हर्ष है।

नारफ़ाक—सच जानो, जो कार्यवाही इसने कैथरायन के परित्याग के विरुद्ध की है, उसका राजा को पता लग गया है।

सरे—यह भेद कैसे खुला?

सफ़ोक—अकस्मात्।

सरे—कैसे? कैसे?

सफ़ोक—वुल्ज़े ने पोप के लिए जो पत्र भेजे थे वे राजा के हाथ लग गये। उनमें इसने लिखा था कि आप अभी परित्याग की आज्ञा न दीजिए, नहीं तो राजा ऐन बोलिन से विवाह कर लेगा।

सरे—क्या राजा ने इस पत्र को देखा है ?

सफ़ोक—अवश्य।

चैम्बरलेन—राजा को अब इसकी करतूत मालूम हो गई है। परन्तु राजा ने पहले ही काम कर लिया अर्थात् चुपचाप ऐन बोलिन से विवाह कर लिया।

सरे—क्या राजा इस पत्र पर कुछ न करेगा ?

नारफ़ाक—ईश्वर ईश्वर ! इस समय उचित यह है कि जो कुछ कहना हो कह डाले; क्योंकि राजा वुल्ज़े से बड़ा अप्रसन्न हो रहा है। कम्पियस देश से बिना कहे चला गया और राजा समझता है कि यह सब वुल्ज़े की करतूत है।

चैम्बरलेन—ईश्वर राजा को और क्रोध दे।

नारफ़ाक—क्या क्रेनमर लौट आया ?

सफ़ोक—हाँ, और उसने राजा को दूसरा विवाह करने की व्यवस्था भी दे दी। अब ऐन बोलिन नियमानुसार महारानी होगी और कैथरायन केवल आर्थर की विधवा कही जायगी।

जिस समय ये बातें हो रही थीं, वुल्ज़े को कुछ ख़बर न थी। वह यह कोशिश कर रहा था कि हनरी का विवाह फ़्रान्स-नरेश की बहन से हो। अतएव उसने इसी के लिए चालें चलनी आरम्भ कर दी थीं। परन्तु राजा ने क्रेनमर नामी एक पादरी-द्वारा व्यवस्था ले ली और विवाह कर लिया।

राजा वुल्ज़े से नाराज़ हो गया। अकस्मात् उसे वुल्ज़े का एक काग़ज़ मिल गया जिसमें उस रुपये का सब हिसाब था जो वुल्ज़े ने अपने व्यय के लिए लोगों से लिया था। राजा ने वुल्ज़े को बुलाया और उस पर राजविद्रोह का दोष लगाया।

वुल्ज़े झट समझ गया कि मेरा अन्त अब निकट आ पहुँचा। वह राजा के स्वभाव को जानता था। और इसी चिन्ता में लन्दन को आते हुए लीसेस्टर में मर गया।

इस प्रकार एक ऐसे बड़े पुरुष का अधःपतन हो गया जिसकी चालें समस्त यूरोप को चला रही थीं और हनरी तो उसकी मुट्ठी में आ गया था।

अब क्रेनमर का मान बढ़ा। उसको कण्टरबरी का लाट पादरी बना दिया गया और ऐन बोलिन अब महारानी होकर राजा के साथ गद्दी पर बैठने लगी।

थोड़े दिनों पीछे लोग क्रेनमर के भी शत्रु हो गये। उस समय जर्मनी में मार्टिन लूथर ने पोप के धर्म के विरुद्ध प्रचार करना आरम्भ कर दिया था और यूरोप के बहुत से लोग उसके अनुयायी हो गये थे।

क्रेनमर की रुचि भी उसी ओर थी। इसलिए बहुत से लोगों ने उस पर अभियोग चलाया कि यह देश में अधर्म फैला रहा है। परन्तु हनरी उसके विरुद्ध नहीं था। इसलिए

यद्यपि लोग उसे कैद करना चाहते थे और जो सभा इसका निश्चय करने के लिए नियत की गई थी उसने कैद का हुक्म भी दे दिया था, तथापि हनरी ने क्रेनमर को बचा लिया।

उन्हीं दिनों ऐन बोलिन के एक लड़की उत्पन्न हुई, जिसका नाम एलीज़िबेथ रक्खा गया। इस पर राजा को अत्यन्त हर्ष हुआ और एक महोत्सव मनाया गया। क्रेनमर ने ही उसका नामकरण किया।

राजा के पूछने पर पादरी कहने लगा—ईश्वर की प्रेरणा से मैं कह सकता हूँ कि यह राजकुमारी पालने में ही बड़ी तेजस्विनी मालूम होती है। ईश्वर ने कृपा की तो यह एक दिन सब राजाओं में प्रभावशालिनी होगी। संसार इसका मान करेगा। इसके राज में प्रजा शान्ति से रहेगी, देश उन्नति को प्राप्त होगा।

राजा—आप तो बहुत कह रहे हैं।

क्रेनमर—नहीं महाराज, इससे इँगलैण्ड भर को सुख मिलेगा। इसकी आयु बहुत बड़ी होगी और यह कुमारी ही मरेगी।

राजा—लाटपादरी, आज आपने मेरा जीवन सफल कर दिया। इसके जन्म से पहले मुझे कभी ऐसा आनन्द नहीं हुआ। आपकी भविष्यवाणी से मेरे मन में ऐसी उत्कण्ठा हो रही है कि स्वर्ग में पहुँचकर मैं वहाँ से इसके पराक्रमों को देखा करूँ।

वास्तव में एलीज़िबेथ ऐसी ही हुई। क्योंकि १५५८ ई० में वह इँगलैण्ड की गद्दी पर बैठी और उसके समय में राज की ऐसी उन्नति हुई जैसी कई सौ वर्ष से सुनने में नहीं आई थी। ४५ वर्ष राज करके १६०३ ई० में वह कुमारी मर गई।

कोरियोलेनस

(Cariolanus)

खीष्टीय संवत् के ५०० वर्ष पूर्व जब रोम (इटली का प्रसिद्ध नगर) के लोगों ने अपने राजवंश के अत्याचारों से तङ्ग आकर राजाओं को देश से निकाल दिया और बड़ा प्रयत्न करने पर भी ये राजा अपने पूर्व स्वत्व को प्राप्त न कर सके तब रोम की उच्च और नीच जातियों मे एक प्रकार का वैमनस्य था। उच्च जातियाँ भारतवर्ष की उच्च जातियों के समान नीच जातियों से घृणा करती थीं और उनकी उन्नति मे बाधा डालती थीं। नीच जातियाँ इस घृणा से अप्रसन्न होकर उनके विरुद्ध उत्पात किया करती थीं। उच्च जातियों को पैट्रीशियन और नीच को प्लीबियन कहते थे। प्रथम राज-काज केवल पैट्रीशियन लोगों के हाथ मे था, परन्तु होते-होते प्लीबियन लोगों को भी यह अधिकार मिल गया था कि अपने प्रतिनिधि चुनें और नीच जातियों मे से कुछ मजिस्ट्रेट चुन लिये जाते थे, जिनका कर्तव्य नीच जातियों के अधिकारों का सुरक्षित रखना था।

जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय लड़ाई के कारण लोग अपने खेत नहीं जोत-बो सके, इसलिए दुर्भिक्ष हो

गया। अन्न का अभाव होने के कारण नीच जातियों में आपत्ति फैल गई। वे लोग उन पैट्रीशियन लोगों को, जिनके घरों में अन्न भरा हुआ था, और भी अधिक शत्रु समझने लगे। बहुत से लोगों ने हथियार लेकर नगर में विद्रोह करना आरम्भ कर दिया कि ज़बर्दस्ती अन्न प्राप्त करें। वे केशस मार्शस और अन्य पैट्रीशियनों को बुरा-भला कहने लगे। इस भीड़-भाड़ में से एक बोला—आगे फिर बढ़ना। पहले मेरी बात सुन लो।

सब लोग—कहो, कहो।

पहला आदमी—तुम सब मरने को राजी हो, पर भूखे रहने को नहीं।

सब लोग—हाँ, हाँ।

१ ला आदमी—तुम जानते हो कि केशस मार्शस प्रजा का शत्रु है?

सब लोग—हाँ, हम जानते हैं। हाँ, हम जानते हैं।

१ ला आदमी—इसको मार डालो और मनमाना अन्न मिल जायगा। क्यों, ठीक है न?

सब लोग—बहुत ठीक। कहो मत, कर डालो! चलो चलो!

इस समय एक दूसरे आदमी ने उन्हीं में से कहा—भद्र पुरुषो, एक बात सुन लो।

१ ला आदमी—हम दरिद्र पुरुष हैं। भद्र पुरुष तो पैट्रीशियन ही हैं। अगर ये अपना बचा-खुचा भी हमको दे दें

तो हम बच जायँ। पर हमारी दरिद्रता ही उनको धनी बना रही है। जिस कारण हम दुखी हैं उसी कारण वे लोग सुखी हैं। इसलिए अगर इन आपत्तियों से बचना चाहते हैं तो हमको तलवारों का आश्रय लेना चाहिए। मैं यह बात भूख से कहता हूँ, क्रोध से नहीं।

दूसरा आदमी—क्या तुम विशेष कर केअस मार्शस के ही विरुद्ध हो?

१ ला आदमी—पहले तो उसी के। वह बड़ा सुअर है।

२ रा आदमी—तुम जानते हो कि उसने देश के लिए क्या-क्या सेवा की?

१ ला आदमी—हाँ! और इसलिए प्रशंसा करते हैं। परन्तु उसका अभिमान उसे इस प्रशंसा से वञ्चित कर देता है।

२ रा आदमी—पक्षपात से मत कहो।

१ ला आदमी—पक्षपात से नहीं। मैं सच कहता हूँ कि जिसको तुम देश की सेवा कहते हो वह उसने अपनी माता को प्रसन्न करने और अभिमान करने के लिए की थी।

जिस समय केअस मार्शस के विरुद्ध ये बातें हो रही थीं उस समय एक योग्य पुरुष मिनीनियस अग्रीपा वहाँ पर आ गया। इसको प्रजा भी आदर की दृष्टि से देखती थी। वहाँ

आकर उसने कहा—देशभाइयो, इन हथियारों-सहित कहाँ जा रहे हो ?

१ ला आदमी—राजसभा को भी हमारे विचारों की ख़बर मिल गई है। और हम जो कहते हैं सो कर दिखायेंगे। वे लोग कहते हैं कि दरिद्र पुरुषों की हाय प्रबल होती है। अब उनको मालूम पड़ जायगा कि उनके बाहु भी प्रबल होते हैं।

मिनी० अग्रीपा—भले मित्रो, तितर-बितर हो जाओ।

१ ला आदमी—नहीं। कदापि नहीं। हम तो वैसे ही तितर-बितर हो रहे हैं।

मिनी० अग्रीपा—मित्रो, मैं कह सकता हूँ कि पैट्रीशियन लोगों को आपका बड़ा ध्यान है। दुर्भिक्ष के उत्तरदाता देवता हैं न कि पैट्रीशियन। इसलिए हथियारों के बजाय ईश्वर की प्रार्थना कीजिए। विपत्ति के कारण तुम्हारी मति भ्रष्ट हो रही है और तुम उन राज-प्रबन्ध करनेवालों को कोस रहे हो जिनको तुमसे पितृवत् स्नेह है।

१ ला आदमी—स्नेह! कभी नहीं। वे स्नेह करते ? उनकी ख़त्तियाँ भरी हुई हैं और हम भूखों मर रहे हैं। ब्याज खानेवालों के अनुकूल नियम बन रहे हैं। प्रजा-हितैषी नियमों की रोक हो रही है। अगर हम लोग युद्ध में बच गये तो वे लोग हमको खाने के लिए तैयार हैं।

मिनी० अग्रीपा—या तो तुम लोग पक्षपाती और झूठे हो या मूर्ख। मैं तुमसे एक विचित्र कहानी कहना चाहता हूँ।

१ ला आदमी—कहिए, कहिए। पर कहानी-द्वारा हमारे दु:खों को कैसे निवृत्त करोगे!

मिनी० अग्रीपा—एक समय शरीर के अङ्गों मे झगडा हुआ और वे सब पेट के विरुद्ध हो गये कि यह सुस्त पडा रहता है और अच्छे-अच्छे माल खाया करता है। हमारे साथ कुछ काम नहीं करता। हम इसके लिए देखते, सुनते, चलते-फिरते, सूँघते, बोलते, पकाते और अन्य काम करते हैं। पेट ने उत्तर दिया—

१ ला आदमी—पेट ने क्या उत्तर दिया?

मिनी० अग्रीपा—मैं कहता हूँ। उसने इन असन्तोषी अङ्गों को, जो पेट को उसी तरह दोष लगाते हैं जैसे तुम राजसभा को, मुसकराके यह उत्तर दिया—'मित्र-गण, यह सच है कि सबसे पहले उस भोजन को मैं ही लेता हूँ जो आपके जीवन का आधार है। और यही बात ठीक है। क्योंकि मैं समस्त शरीर की दुकान या कोश हूँ। परन्तु याद रखिए कि मैं उसे रुधिररूपी नदियों-द्वारा दिल तक पहुँचाता हूँ। फिर यही भोजन मस्तिष्क मे जाता है। सब नसें और नाड़ियाँ मुझी से भोजन पाती हैं और यदि आप सब एक साथ यह नहीं देख सकते कि मैं क्या करता हूँ

तो मुझसे हिसाब ले लीजिए कि सब तत्त्व खींचकर मैं आपको भेज देता हूँ और केवल फोक मेरे पास रह जाता है।

१ ला आदमी—यह उत्तर था। भला हम पर यह कैसे संघटित होता है ?

मिनी० अग्रीपा—रोम की राजसभा यह पेट है और तुम लोग विद्रोही अङ्ग। विचार करो तो मालूम होगा कि जो कुछ लाभ तुमको मिलते हैं, सब राजसभा ही से मिलते हैं।

जिस समय अग्रीपा अपनी अपूर्व युक्तियों से विद्रोहियों को शान्त कर रहा था, कैयस मार्शस वहाँ पर आ गया और झिड़ककर उनको कहने लगा—अरे दुष्टो, क्या चाहते हो ? तुम्हें न तो शान्ति प्रिय है और न युद्ध। युद्ध से डरते हो, शान्ति पर अभिमान करते हो और सिंह की तरह लड़ने के समय स्यार बन जाते हो। मामला क्या है कि तुम नगर के भिन्न-भिन्न स्थानों में इस प्रकार कोलाहल कर रहे हो ?

मिनी० अग्रीपा—इनका विचार है कि धनाढ्य पुरुषों की खत्तियाँ भरी हुई हैं इसलिए मनमाने भाव में अन्न ख़रीदा जाय।

कैयस मार्शस—चूल्हे में जायँ। घर बैठे ये समझते हैं कि इनको राजसभा की ख़बर है। अमुक पुरुष धनाढ्य है, अमुक दरिद्र है। ये कहते हैं कि अन्न बहुत भरा

पड़ा है। यदि पेट्रीशियन लोग दयाभाव को उठा रक्खें और मुझे आज्ञा दें तो मैं तलवार से इन सबकी सफ़ाई कर दूँ।

मिनी० अग्रोपा—नहीं नहीं। ये लोग तो अब मान गये हैं। अन्य विद्रोहियों का क्या हुआ?

के० मार्शस—वे भी तितर-बितर हो गये। वे कह रहे थे कि हम भूखे हैं। भूख दीवारों को तोड़ डालती है। कुत्तों को भी खाना मिलता है। अन्न ईश्वर ने केवल धनी पुरुषों के लिए ही नहीं दिया। जब उनके साथ कुछ रिआयत कर दी गई तब वे ख़ुशी के मारे टोपियाँ उछालने लगे।

मिनी० अग्रोपा—क्या रिआयत?

के० मार्शस—उनको शान्त करने के लिए पाँच प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दे दिया गया। एक जूनियस ब्रूटस है, दूसरा सिसीनियस विल्टस और मैं भूल गया।

उसी समय एक दूत-द्वारा ज्ञात हुआ कि वौल्सी लोग रोम पर चढ़ाई करने की तैयारियाँ कर रहे हैं। वौलिसया रोम के उत्तर में एक देश था जिसके साथ रोमवालों की सदा लड़ाई हुआ करती थी। इस समय वौल्सी लोगों में टूलस अफ़ीडियस नामी एक प्रसिद्ध सेनापति था जिसकी वीरता से रोमवासी भी डरते थे और केअस मार्शस के सिवा और कोई मनुष्य ऐसा नहीं था जो इस भयानक शत्रु का मुक़ाबला कर

सकता। अन्त में राज-सभा ने यह निश्चय किया कि केअस मार्शस, कमीनियस और टीटस लार्शस एक बड़ी सेना लेकर शत्रु का सामना करें।

उधर वौलिसया मे अफ़ीडियस को रोमवालों की तैयारियों की ख़बर लग गई और वे और भी होशियार हो गये। अफ़ीडियस सेना लेकर मुक़ाबले को चला परन्तु अन्य वौल्सी लोग कोरियोली नामक दुर्ग की रक्षा करने में कटिबद्ध हुए।

केअस मार्शस बड़ी प्रवीण माता का पुत्र था। उस समय रोम की स्त्रियाँ बड़ी निर्भय हुआ करती थीं और उनके पुत्र युद्ध-सम्बन्धी साहस को अपनी माताओं की गोद मे ही प्राप्त किया करते थे। यही कारण था कि रोम में ऐसे वीर हो गये हैं। केअस मार्शस की माता वौलम्निया अपनी पतोहू वर्जीलिया के साथ घर मे बैठी सी रही थी। मार्शस के युद्ध पर चले जाने के कारण वर्जीलिया को दुखी देखकर उसने कहा—बेटी, जाओ या अन्यथा प्रसन्न हो। अगर मेरा पुत्र मेरा पति होता तो मैं उसकी ऐसी अनुपस्थिति को, जिसमे उसे यश मिले, ऐसी उपस्थिति से अच्छा समझती जिसमें वह मुझसे अधिक प्रेम प्रकट कर सकता। जब यह मेरा इकलौता बेटा अभी छोटा ही था और जब कोई माता अपने पुत्र को बादशाह को देना भी स्वीकार न करती उसी समय मैंने यह समझकर, कि चित्रवत घर में सुस्त पड़ा रहने से यशस्वी होना अच्छा है, उसे युद्ध की आपत्तियों में भेज दिया था। और वहाँ से वह विजयी होकर

आया। मैं सच कहती हूँ कि मुझे इस मनुष्य-पुत्र का पहले-पहल मुख देखकर ऐसी ख़ुशी नहीं हुई जैसी यह जानकर हुई कि अब यह मनुष्य बन गया।

वर्जी०—और अगर मर जाता?

वैल०—तो उसका यश मेरा पुत्र होता। मैं सच कहती हूँ कि अगर मेरे बारह पुत्र होते और सब मार्शस की भाँति ही प्रिय होते तो भी मैं उनमे से ११ का युद्ध मे मरना अच्छा समझती और एक का भागना पसन्द न करती।

वर्जीलिया ने वियोग से दुखित होकर कहा—माताजी, मुझे एक स्थान मे उठ जाने की आज्ञा दीजिए।

वैल०—नहीं नहीं। मैं अपने मानसिक नेत्रों से तुम्हारे पति को रण-क्षेत्र मे लड़ता हुआ देख रही हूँ। वह अपने माथे से लोहू की बूँदें पोंछ रहा है।

वर्जी०—लोहू, हे ईश्वर!

वैल०—मूर्ख लड़की, क्षत्रिय के माथे पर ख़ून ही शोभा देता है।

इतने मे वर्जीलिया की एक सहेली वैलीरिया वहाँ आ गई और कहने लगी—श्रीमतीजी, प्रणाम।

वैल०—बेटी, जीती रहो।

वर्जी०—आपने बड़ी कृपा की।

वैलीं०—आप दोनों कैसी हैं? क्या सी रही हैं? आपका छोटा बच्चा कैसे है?

वर्जी०—अच्छा है। ईश्वर की दया है।

वैल०—ईश्वर करे वह चटसाल मे जाने के बजाय तलवार और युद्ध के बाजों मे संलग्न हो।

वैलीं०—वह तो ऐसे ही बाप का बेटा है। मैंने उसे गत बुधवार को देखा था। वह बड़ा सुन्दर और वीर प्रतीत होता था। वह एक मक्खी के पीछे दौड़ा और जब वह उसके हाथ न लगी तब उसने ऐसे दाँत पीसे, ऐसे दाँत पीसे—

वैल०—ऐसे ही उसका बाप किया करता था।

वैलं०—(वर्जीलिया से) सीना उठा रक्खो। चलो जी वहलावें।

वर्जी०—नहीं बहन, आज घर से बाहर न जाऊँगी।

वैलीं०—क्यों?

वैल०—जायगी।

वर्जी०—नहीं देवीजी, जब तक पतिजी घर नहीं आते, मैं नहीं जा सकती।

वैलीं०—यह तो मूर्खता की बात है, चलो।

वर्जी०—नहीं, क्षमा करो।

वैलीं०—नहीं नहीं। चलो, मैं तुमको तुम्हारे पति का हाल सुनाऊँगी।

वर्जी०—नहीं देवी। अभी कुछ हाल नहीं मिला होगा।

वैली०—मिला है। राज-सभा में पत्र आया है। कमीनियस वौल्सी लोगों से लड़ रहा है, टीटस लार्शस और तुम्हारे पतिजी कोरियोली के पास उसको जीतने की कोशिश कर रहे हैं।

अब कुछ युद्ध का हाल सुनिए। केअस मार्शस और टीटस लार्शस कई दिनों तक कोरियोली को लेने का प्रयत्न करते रहे। यहाँ तक कि एक बार वौल्सी लोगों ने दुर्ग से निकलकर शत्रु पर छापा मारा और ऐसे लड़े कि रोमवालों के दाँत खट्टे हो गये और वे भाग निकले। मार्शस घायल हो गया। परन्तु उसने हिम्मत न हारी और फिर अपनी तितर-बितर सेना को इकट्ठा करके वौल्सी लोगों से युद्ध करने लगा।

अन्त को वौल्सी लोग पराजित हो गये। जिस समय नगरवालों ने अपने भागते हुए भाइयों को आश्रय देने के लिए फाटक खोले उस समय मार्शस भी उनके साथ नगर में घुस गया। वहाँ उसने ऐसी मार-धाड़ मचा दी कि नगर-वासियों के छक्के छूट गये और मार्शस और उसके आदमी लूट-मार करके बाहर निकल आये।

कमीनियस पहले वौल्सी लोगों के सामने से अपने को निर्बल समझकर हट गया। परन्तु फिर लार्शस और मार्शस की अफ़ीडियस से मुठभेड़ हो गई। मार्शस बोला—अफ़ी-डियस, मुझे तू ऐसा बुरा लगता है कि मैं तेरे सिवा किसी से नहीं लड़ना चाहता।

अफ़ीडि०—हम भी तुझसे ऐसी ही घृणा करते हैं।

मार्शस—जो भागे सो ही दूसरे का दास।

अफ़ीडि०—अगर मैं भागूँ तो ख़रगोश की मौत मारना।

मार्शस—मैं अभी तीन घण्टे तक कोरियोली में लड़ता रहा। जो रक्त तू मेरे मुँह पर देखता है, मेरा नहीं है।

जब इन दोनों में युद्ध हुआ तब थोड़ी देर पीछे वौल्सी लोग अपने सेनापति की मदद को आ गये। परन्तु मार्शस ने उन सबको भगा दिया। अन्त में कोरियोली ले लिया गया और लज्जा के मारे अफ़ीडियस ऐण्टियम में चला गया और वहाँ रहने लगा। जब कमीनियस और लार्शस मार्शस के साथ अपने कम्प में मिले तब कमीनियस बोला—मार्शस, अगर मैं तुमसे तुम्हारे पराक्रमों की कथा कहूँ तो शायद तुम्हें विश्वास न होगा। परन्तु मैं इनका उस समय वर्णन करूँगा जब सीनेट के सभासद् रोम में आनन्द के आँसू बहावेंगे; और जब पेट्रीशियन लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और जहाँ प्लीबियन लोग भी—जिनको तुमसे अत्यन्त वैर है—अपनी इच्छा के विरुद्ध यह कहने पर मजबूर होंगे कि परमात्मन्, तुम धन्य हो। आज रोम में एक वीर मौजूद है।

मार्शस—बस बस! रहने दो। मेरी माता को अपने वंश की प्रशंसा करना बड़ा प्रिय है। परन्तु मुझे इससे दुःख होता है। जो मैंने किया है सो तुमने भी

किया है। जिसने भक्तिभाव से अपने देश के लिए यथाशक्ति परिश्रम किया वही मेरे तुल्य है।

कमीनि०—अपने गुणों को छिपाना चोरी है। यहाँ समस्त सेना के सामने खड़े होकर जो मैं कहता हूँ उसे सुनो।

मार्शस—मेरे घाव हो रहे हैं और इनमे अपनी प्रशंसा सुनकर पीड़ा हो रही है।

कमीनि०—यह तो ठीक है। अगर उनमे पीड़ा न हो तो वे कृतघ्नता देखकर निर्जीव हो जायँगे। जो कुछ लूट का माल है उसमे से बाँटने से पहले हम दशांश आपकी भेंट करते हैं। इसको स्वीकार कीजिए।

मार्शस—आपका अनुग्रह है। परन्तु मैं अपनी तलवार को रिश्वत नहीं दे सकता। मुझे यह अङ्गीकार नहीं है। मैं तो उतना ही लूँगा जो बाँट के अनुसार हर एक को मिलेगा।

यह सुनकर समस्त सेना के मुख से 'मार्शस' 'मार्शस' के जयकारे निकलने लगे। इस पर मार्शस बोला—बस करो। बस करो। इन हथियारों को, जिनका काम धर्मयुद्ध है, झूठी और अनर्थक प्रशंसा मे न लगाओ। मुझे ऐसी अत्युक्ति-सूचक प्रशंसा न चाहिए। जैसे मेरे घाव लगे हैं ऐसे ही औरों को भी।

कमीनि०—आप तो बड़े सादे हैं। आज आपको जयमाल पहनाई जायगी और मैं इस उत्सव की ख़ुशी में अपना सजा सजाया घोड़ा आपकी भेंट करता हूँ। चूँकि

आपने कोरियोली को जीता है इसलिए आज से
आपका नाम केअस मार्शस कोरियोलेनस हुआ।

कमीनियस के मुख से इस शब्द के निकलते ही फिर जयकारों के मारे आकाश गूँज उठा। लोग ख़ुशी के मारे कूदने-उछलने लगे और टोपियाँ सिरों के ऊपर उछलने लगीं। टीटस लार्शस ने कोरियोली के राज का प्रबन्ध किया और सन्धि के नियम निश्चित होकर नगर वौल्सी लोगों को ही लौटा दिया गया। कम्पू से रोम को विजय की सूचना भेज दी गई और यहाँ रोमवासी—राजसभा के सभासदों से लेकर छोटे पुरुष तक—बड़ी उत्कण्ठा से विजयी कोरियोलेनस का स्वागत करने की तैयारियाँ करने लगे। उसकी माँ वौलम्निया और धर्मपत्नी वर्जीलिया भी अपने प्यारे से भेंट करने के लिए बाहर निकलीं और मिनीनियस अग्रीपा को मार्ग में मिलकर कहने लगीं--

वौल०— भद्र मिनीनियस, मेरा लड़का आज आ रहा है!

मिनी० अग्रीपा—क्या मार्शस आ रहा है?

वौल०—हाँ, और विजय के साथ।

मिनी० अग्रीपा—ईश्वर को धन्यवाद हो। क्या सचमुच मार्शस आ रहा है?

वौल० और वर्जी०—हाँ, सचमुच।

वौल०—देखो, यह पत्र मेरे पास आया है। एक पत्र राजसभा में आया है। एक उसकी स्त्री के पास। एक शायद अभी आपके घर गया है।

मिनी॰ अग्रीपा—मेरे लिए बड़े हर्ष की बात है। क्या उसके घाव नहीं लगे? वह पहले तो रोम को घायल होकर आया करता था।

वर्जी॰—नहीं नहीं।

वैाल॰—हाँ लगे हैं और मुझे इस बात से हर्ष है।

मिनी॰ अग्रीपा—उसे घाव ही शोभा देते हैं।

वैाल॰—उसे विजयी होकर रोम मे आने की यह तीसरी बारी है।

मिनी॰ अग्रीपा—क्या उसने अफ़ीडियस को मज़ा चखा दिया?

वैाल॰—लार्शस लिखता है कि उन दोनों का परस्पर युद्ध हुआ। परन्तु अफ़ीडियस भाग गया।

मिनी॰ अग्रीपा—उसके कहाँ घाव लगे हैं?

वैाल॰—कन्धे और बायें हाथ मे। जब वह राजसभा मे खड़ा होगा तब बड़े अभिमान के साथ इन सब लोगों को दिखा सकेगा। टार्क्विन* लोगों के निकालने मे उसे सात घाव लगे थे।

मिनी॰ अग्रीपा—एक गर्दन मे है और दो जाँघ में। मैंने कुल नौ घाव देखे हैं।

वैाल॰—पहले युद्ध में उसके पच्चीस घाव लगे थे।

मिनी॰ अग्रीपा—अब सत्ताईस हो गये। हर एक घाव एक-एक शत्रु की क़बर है।

---

* रोम के पूर्व राजवंशी।

जब इस प्रकार वैालम्निया अपने पुत्र के घावों का वर्णन कर रही थी और उसके वीर चरित्रों का स्मरण करके ख़ुश हो रही थी उसी समय कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया। सब लोग ऊँचे स्वर से 'कोरियोलेनस' 'कोरियोलेनस' के जयकारे बोलने लगे। कमीनियस ने वैालम्निया की ओर संकेत करके कहा—देखिए, आपकी माताजी खड़ी हुई हैं।

कोरियोलेनस ने दौड़कर उसके पैर छुए और कहने लगा—माताजी, मैं जानता हूँ कि आपने ईश्वर से मेरी विजय के लिए ख़ूब प्रार्थना की है।

वैाल०—उठो बेटे, उठो। मेरे पूत मार्शस, उठो। आज तुम पराक्रमों-द्वारा कोरियोलेनस हुए। देखो, तुम्हारी स्त्री खड़ी हैं।

कोरियोलेनस ने अपनी स्त्री की आँखों में प्रेमभरे आँसू देखकर नम्रता से कहा—प्यारी, मेरी विजय पर क्यों रोती हो? क्या मेरा शव देखकर हँसती? इस प्रकार तो कोरियोली की विधवाएँ रो रही हैं।

उसी समय एक दूत ने आकर ख़बर दी कि 'आप लोगों को दरबार में चलना चाहिए।' वहाँ मार्शस को कौंसल नियत करने की तैयारियाँ हो रही थीं। कौंसल का पद वास्तव में रोम का सबसे बड़ा अधिकार था। जिस समय से रोम से राजा लोग निकाल दिये गये उसी समय से प्रजा राज-प्रबंध के लिए एक मुख्य आदमी को चुन लेती थी जिसका

नाम कौंसल था। कोरियोलेनस की देश सेवा को देखकर लोगों ने अब यह सम्मान उसी को देना चाहा जिसके लिए दूत ने आकर उसे निमंत्रण दिया। सब लोग जब राज-दरबार में उपस्थित हुए तब अधिकारियों ने कौंसल के निर्वाचन की यथोचित कार्य्यवाही करनी आरम्भ की और सब प्रजा से सम्मति (वोट) ली गई।

थोड़ी देर पीछे सिनीनियस ने खड़े होकर सभा में यह वक्तृता की—वैाल्सी लोगों के विषय में निश्चित हो गया। इसलिए अब सभा की एक कार्य्यवाही की ओर हम सबका ध्यान होना चाहिए। सभ्यगण, इस समय कौंसल को कोरियोलेनस के पराक्रमों के विषय में संक्षेप से वर्णन कर देना चाहिए।

सभासद—कमीनियस, आप पूर्ण रीति से वर्णन कर दीजिए जिससे हम सबको ज्ञात हो जाय कि इस वीर पुरुष ने हमारे हित के लिए क्या किया।

प्लीबियन लोगों के प्रतिनिधि ब्रूटस ने कहा—हमको भी इस बात के सुनने से हर्ष है अगर वह पहले की अपेक्षा प्रजा से अधिक प्रेम करे।

मिनी० अग्रीपा—यह हो गया, यह हो गया, चुप रहो।

ब्रूटस—मैं मानता हूँ। पर मेरा कथन आपकी धमकी से अधिक उचित था।

मिनी० अग्रीपा—उसे प्रजा से हित है।

कोरियोलेनस इस समय सभा से उठकर चलने लगा। इस पर एक सभासद् ने कहा—आप जाइए नहीं। अपने पराक्रम सुनने मे लज्जा की बात नहीं है।

कोरियोलेनस—क्षमा कीजिए। अपने घावों की प्रशंसा सुनने से तो यह अच्छा है कि मैं जाकर दूसरी बार के लिए इनको अच्छा कर रक्खूँ।

ब्रूटस—आप मेरे कहने का बुरा तो नहीं मान गये?

कोरि०—नहीं, नहीं। लेकिन जहाँ चोटों से मैं नहीं भागता वहाँ शब्दो को नहीं सुन सकता।

कोरियोलेनस के चले जाने पर कमीनियस ने कहा—मेरे पास शब्द नहीं हैं कि कोरियोलेनस की प्रशंसा कर सकूँ। कहा जाता है कि वीरता सबसे बड़ा गुण है और वह धन्य है जिसमें यह गुण हो। अगर यह ठीक है तो मैं जिस पुरुष के विषय मे कह रहा हूँ उसे संसार भर में कोई नहीं जीत सकता। १६ वर्ष हुए, जब टार्क्विन ने रोम पर चढाई की थी उस समय इनने सबसे बढ़कर वीरता दिखाई थी। हमारे डिक्टेटर* ने इनके महान् युद्ध का अवलोकन किया था। स्वयं टार्क्विन से यह भिड़ गया और उसके घुटने को घायल

* रोम में आपत्ति के समय एक डिक्टेटर नियत हो जाता था जिसको बिना किसी सभा की सम्मति के सब कुछ करने का अधिकार था। डिक्टेटर उसी नियत समय के लिए होता था। इसके बाद उससे यह उपाधि ले ली जाती थी।

कर दिया। उस दिन से १७ लड़ाइयाँ लड़ चुका है। कोरियोली के युद्ध का मैं पूरा वर्णन करने में अशक्त हूँ। उसने भगोड़ों को रोक लिया और अपनी तलवार के नीचे समाप्त कर दिया। सिर से पैर तक लोहू से सन गया था परन्तु उसके हर एक इशारे पर सिर कट रहे थे। वह अकेला नगर के फाटक मे घुस गया और आफ़त मचा दी। विना किसी की सहायता के कोरियोली को ले लिया। वहाँ से आकर उसने युद्ध मे रक्तपात करना आरम्भ किया और जब तक सबने हमारा स्वत्व नही माना, उसके हाथ चलते ही रहे। यद्यपि इसका शरीर थक गया था परन्तु उसका साहस बढ़ता जा रहा था।

मिनी० अग्रीपा—वीर पुरुष!

सभासद—वह हमारे सम्मान के योग्य है।

कमी०—उसने लूट का माल लेने से इनकार कर दिया। वह अपने पराक्रमों का यही पारितोषिक देना चाहता है कि वे उसके पराक्रम हैं।

मिनी० अग्रीपा—बडा योग्य पुरुष है।

सभासद—कोरियोलेनस को बुलाओ।

इतने में कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और मिनीनियग्स ने कहा—कोरियोलेनस, राजसभा तुमको कौंसल बनाना चाहती है।

कोरियो०—मेरा जीवन आपकी सेवा के लिए है।

मिनी० अग्रीपा —अब आपको प्रजा से कहना चाहिए।

कोरियो०—मेरी प्रार्थना है कि इस नियम से मुझे क्षमा किया जाय। क्योंकि मैं नंगा होकर उनको अपने घाव नहीं दिखा सकता और न उनसे अपने वोट के लिए प्रार्थना कर सकता हूँ।

सिसीनियस (प्रजा का प्रतिनिधि)—लोग अपने अधिकार को खोना नहीं चाहते।

मिनी० अग्रीपा—कोरियोलेनस, चलो चलो, विधिपूर्वक कार्य्य करो और अपने पूर्वजों के समान अपनी पदवी को नियमानुसार प्राप्त करो।

कोरियोलेनस—इस नाट्य के करने में मुझे लज्जा आती है।

ब्रूटस—देखो देखो, क्या कह रहा है!

कोरियो०—घावों के चिह्न इन्हें दिखाओ। क्या मैंने ये घाव इसलिए पाये थे कि इन लोगों की प्रशंसा प्राप्त करूँ?

कोरियोलेनस वास्तव में प्लीबियन लोगों को अपने से नीच समझता था और उसको यह बात कदापि प्रिय न थी कि वोट लेने के लिए सर्वसाधारण के हाथ जोड़े या उनका मुँह ताके। परन्तु राजसभा उसे कौंसल बनाने पर कटिबद्ध थी इसलिए कोरियोलेनस के बदले अग्रीपा ने सब काम कर दिया। अब कॅंअस मार्सेस कोरियोलेनस को कौंसल बना दिया गया।

यद्यपि कार्यवाही हो गई परन्तु प्लीवियन लोगों को कोरियोलेनस की बात अच्छी न लगी। वे जानते थे कि जब उसे अवसर मिलेगा, वह इन्हें तङ्ग करेगा। परन्तु अब क्या हो सकता था। जब तक वोट नहीं दिये गये थे, लोगों को हर एक अधिकार था। परन्तु अब कौंसल होकर यह सब अधिकार कोरियोलेनस को मिल गया। जब नागरिक लोग इस निर्वाचन पर पश्चात्ताप करने लगे तब सिसीनियस और ब्रूटस ने उनको उनकी भूल बताई। सिसीनियस ने कहा—क्या तुम इस कोरियोलेनस के स्वभाव को नहीं जानते थे! और अगर जानते थे तो इसे कौंसल चुनने में तुमने कैसा लड़कपन किया?

ब्रूटस—अरे हमने तो इन लोगों को समझा दिया था पर क्या करें! उस समय ये लोग जोश में आ गये। तब तो यह अशक्त था और राज्य का एक दास था। उस समय यदि कह दिया जाता कि यह मनुष्य प्रजा का शत्रु है, सदा इनके विरुद्ध कहता है तो अवश्य यह कौंसल न बनाया जाता। अगर समर्थ होकर वह अब भी प्लीवियन लोगों का शत्रु बना रहा तो तुम क्या कर सकते हो?

सिसीनियस—उसने तुम लोगों से वोट नहीं माँगी किन्तु वह चिढ़ाता रहा और तुम ऐसे मूर्ख हो गये कि बिना माँगे वोट दे बैठे।

१ नागरिक—अभी हम इनकार कर सकते हैं।

२ नाग०—मैं इसके विरुद्ध ५०० वोट इकट्ठे कर सकता हूँ।

३ नाग०—मैं १०००!

ब्रूटस—अच्छा अब जल्दी करो और लोगों से कह दो कि जिसको तुमने कौंसल चुना है वह तुम्हारा अहित चाह रहा है।

सिसीनि०—उनको अच्छी तरह समझा दो कि वह हमेशा प्लीबियन लोगों से घृणा करता रहा है और निर्वाचन के समय भी चिढ़ाता था। अगर कोई कहे कि पहले वोट क्यों दे दिया तो कह देना कि उसके पराक्रमों को देखकर हमने समझा था कि अब वह हमसे हित करेगा।

ब्रूटस—हमारे ऊपर दोष रख देना और कहना कि हमारी इच्छा वोट देने की नहीं थी किन्तु हमारे प्रतिनिधियों ने मजबूर करके हमसे वोट ले लिया। उन्होंने कहा कि 'यह बड़ा वीर पुरुष है। लड़कपन से अपने देश के हित के लिए लड़ता रहा है। यह बड़े उच्च वंश का पुरुष है और इसी आदर के योग्य है।' हमारी कभी यह इच्छा नहीं थी कि ऐसे अभिमानी पुरुष को कौंसिल बनाते जो हमारे अधिकारों को पद-दलित करता है।

इस प्रकार ब्रूटस और सिसीनियस ने लोगों को सिखला-सिखलाकर राजसभा की ओर भेजा। थोड़ी देर में हज़ारों

रोमन लोग कोरियोलेनस के विरुद्ध अपना वोट देने के लिए वहाँ पहुँच गये। जब कोरियोलेनस ने देखा कि लोग मुझे अपने नवीन पद से अलग करना चाहते हैं तब वह बड़ा क्रुद्ध हुआ और अपने स्वभाव के अनुसार लोगों को बुरा-भला कहने लगा। इस पर प्रजा के प्रतिनिधियों और सभासदों में झगड़ा हो गया और ब्रूटस और सिसीनियस ने कोरियोलेनस को पकड़ना चाहा। इस पर लोगों के दो दल हो गये। एक पेट्रीशियन लोग, जिन्होंने कोरियोलेनस का साथ दिया और दूसरे प्लीबियन, जो उसके विरुद्ध थे। थोड़ी देर तक बड़ी भारी लड़ाई हुई, परन्तु कोरियोलेनस की वीरता ने उनके विरोधियों को वहाँ से भगा दिया। अब कोरियोलेनस तो घर चला आया परन्तु राजमंत्रियों को निश्चय हो गया कि रोम पर बड़ी भारी आपत्ति आनेवाली है। क्योंकि प्लीबियन लोग पेट्रीशियनों के शत्रु हो रहे थे। जिस नगर के लोग दो दलों में विभाजित हो जायँ उसमें शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है?

मिनीनियस अग्रीपा और अन्य देशहितैषियों ने शान्ति के लिए बहुत कुछ प्रयत्न किया और जब फिर नगरनिवासी झुण्ड के झुण्ड कोरियोलेनस की तलाश में जा रहे थे कि उसे पकड़ लें और टार्पियन* पहाड़ी से ढकेलकर मार डालें उस समय

---

* रोम में एक पहाड़ी है जहां से अपराधी जन गिराकर मार डाले जाते थे।

उसने लोगों को बहुत-कुछ समझाया कि कोरियोलेनस की अपूर्व देश-सेवा पर ध्यान रखना चाहिए और कृतघ्न नहीं होना चाहिए। परन्तु प्लीबियनों के मस्तिष्क का पारा कई दर्जे चढ़ा हुआ था। वे क्रोधानल में जल रहे थे। जो उनसे कोरियोलेनस के अनुकूल कहता उसे वे अपना और अपने देश का बहुत बड़ा शत्रु समझते थे। इसलिए उन्होंने मिनीनियस की एक न सुनी और कोरियोलेनस के घर की ओर चलने लगे। परन्तु अन्त में मिनीनियस ने उन सबको इस बात पर राज़ी किया कि वह स्वयं जाकर घर से कोरियोलेनस को ले आवेगा और बाज़ार में, जहाँ पञ्चायत हुआ करती थी, वह प्लीबियन लोगों से अपनी क्षमा का प्रार्थी होगा। उस समय यदि लोगों को उस पर दया न आवे तो नियमानुसार जो चाहें उसको दण्ड दें। परन्तु इस प्रकार हठ करने से परस्पर वैर की आग प्रज्वलित होगी, जिसमें भस्म होकर समस्त देश नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा।

लोग यह बात मान गये और बाज़ार में कोरियोलेनस की प्रतीक्षा करने लगे। उधर मिनीनियस ने कोरियोलेनस के घर जाकर उसको समझाना शुरू किया। क्योंकि अपराध उसी का था। कौंसल लोग प्रजा के वोट से बनाये जाते थे और उनका कर्त्तव्य था कि जिन्होंने उनको ऐसे पद पर नियत किया उनके हित का ध्यान रक्खें। कोरियोलेनस स्वभावतः अभिमानी था। वह नीच लोगों से मित्रता का व्यवहार करना नहीं

चाहता था। इसलिए, कुछ भी क्यों न हो, वह उनसे क्षमा माँगने के लिए उद्यत नहीं था। वौलम्निया भी अपने पुत्र को अनेक भाँति उपदेश कर रही थी कि अपने पूर्वजों की भाँति उसको भी प्रजापालित राज्य से संतुष्ट रहना चाहिए और प्रजा के लिए अपशब्द नहीं कहने चाहिएँ, परन्तु कोरियोलेनस नहीं मानता था।

अन्त में जब उसकी माता ने बहुत आग्रह किया तब वह मान गया और मिनीनियस के साथ बाज़ार को चल दिया कि लोगों से अपने किये की क्षमा माँगे। पहले उसने जाकर लोगों से नम्रता के साथ सम्भाषण किया और सबको आशा हो गई कि अब काम बन जायगा। परन्तु थोड़ी देर में, जिस समय वह लोगों से यह पूछ रहा था कि भला मेरा क्या अपराध है जिसके कारण आपने थोड़ी ही देर में मुझे पदच्युत करने की ठान ली है, उस समय ब्रूटस बोल उठा—तुम देशद्रोही हो और अपनी शक्ति का अनुचित प्रयोग करना चाहते हो।

देश-द्रोही शब्द सुनते ही कोरियोलेनस के तन में आग लग गई। वह अपनी समस्त प्रतिज्ञाओं को—जो उसने अपनी माता के साथ की थी—भूल गया। वह कहने लगा—भाड़ में जाओ सब लोग। मैं कैसे देश-द्रोही हो सकता हूँ! ब्रूटस तो झूठा है। अगर तेरे हाथ में सहस्र मौतें भी हो तो भी मैं कहूँगा कि तू झूठा है। महा झूठा है।

सिसीनियस—देखो लोगो, देखो।

सब लोग—ले चलो। इसे टार्पियन पहाड़ी को ले चलो।

सिसीनियस—देखो, देखो। अन्य अपराधों के गिनाने की क्या ज़रूरत है। इसने हमको और हमारे आदमियों को मारा है और राजनियम का उल्लङ्घन किया है। इसने प्रजा के अधिकारों को पददलित किया है। दुर्भिक्ष के समय इसने अन्न बाँटने के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई थी। यह विद्रोही है। यह विद्रोही है।

मिनीनियस—(कोरियोलेनस से) देखो, तुमने अपनी माता से क्या प्रतिज्ञा की थी।

कोरियो०—मैं कुछ नहीं देखता। मैं कभी इन दुष्ट कमीने और नीच लोगों के आगे सिर नहीं झुकाऊँगा।

यह सुनकर लोग और बिगड़ गये और जो कुछ शान्ति की आशा बाक़ी रही थी वह भी जाती रही। सबने मिलकर विद्रोह और प्रजा-अहित के अपराध में कोरियोलेनस को एकस्वर होकर देश से निकाल दिया। कमीनियस ने बहुत-कुछ प्रार्थना की कि कोरियोली के युद्ध का विचार कर लें और ऐसा मार्शस को ऐसा घोर दण्ड न दें। परन्तु किसी ने न माना। जब कोरियोलेनस बाज़ार से घर को चला तब लोग उसको चिढ़ाते और तालियाँ बजाते उसके पीछे-पीछे चले गये।

देशनिकाले की ख़बर सुनकर कोरियोलेनस के घर में हाहाकार मच गया। उसकी माता तथा स्त्री ऊँचे स्वर से रोने-

हनरी रह गये। हनरी ने कहा—रूपवती कैथरायन, क्या आप कृपा करके मुझ जैसे सिपाही को सिखावेंगी कि आपसे किस प्रकार प्रेम प्रकट करना चाहिए ?

कैथरायन—श्रीमान् मेरी हँसी करेंगे; क्योंकि मैं आपकी भाषा (अँगरेज़ी) नहीं बोल सकती।

हनरी—प्यारी, अगर आप अपने फ़रासीसी हृदय से मुझे चाहने लगें तो मैं ख़ुश हूँगा कि आप इसका प्रकाश टूटी-फूटी अँगरेज़ी मे कर दें। क्या आप मुझे चाहती हैं ?

कैथरायन—क्या यह सम्भव है कि मैं फ़ान्स के शत्रु को चाह सकूँ ?

हनरी—नहीं। यह सम्भव नहीं कि आप फ़ान्स के शत्रु को चाह सकें। परन्तु मैं तो फ़ान्स का मित्र हूँ और ऐसा मित्र कि इसके एक गाँव को भी छोड़ना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि फ़ान्स सब मेरा हो जाय और कैथरायन भी। जब फ़ान्स मेरा है और मैं तुम्हारा हूँ तब फ़ान्स तुम्हारा है और तुम मेरी हो। क्या तुम मुझे चाहती हो ?

कैथरायन—मैं नहीं कह सकती।

-फिर कौन कह सकता है ? क्या तुम्हारे पड़ोसी ? पाओ, आओ। मैं जान गया, तुम मुझे चाहती हो। ाहे तुम कितना ही इनकार करो, तुम्हारा हृदय

कोरियो०—वह नाम जो वौल्सी लोगों को बुरा मालूम होता है और जिससे तेरे कान चौंक पड़ते हैं।

अफ़ी०—तेरा क्या नाम है? यद्यपि तेरे कपड़े फटे हैं परन्तु तू बड़ा आदमी मालूम होता है।

कोरियो०—अच्छा क्रोध करने के लिए तैयार हो, क्या तूने मुझे पहचाना?

अफ़ी०—मैंने नहीं पहचाना। नाम?

कोरियो०—मेरा नाम केअस मार्शस है, जिसने तुझे और वौल्सी लोगों को बड़े-बड़े कष्ट दिये हैं और जिसके बदले मुझे कोरियोलेनस की पदवी दी गई थी। परन्तु, अब केवल यह नाम ही शेष रह गया है। मेरे कृतघ्न देशभाइयों ने मेरा सब कुछ छीन लिया और मुझे देश से निकाल दिया। मैं अब ऐसी अवस्था में तेरे घर आया हूँ। मेरी यह इच्छा नहीं है कि तू मेरे प्राण बचा दे। क्योंकि, हम दोनों एक दूसरे के बड़े शत्रु रहे हैं। अगर तू चाहता है तो मेरा सिर काट ले, क्योंकि ऐसा अवसर तुझे न मिलेगा। परन्तु यदि तू रोम से लड़ना चाहता है तो मैं भी तेरी ओर से उन कृतघ्न लोगों से लड़ना चाहता हूँ।

अफ़ीडियस तो ऐसे ही अवसर की तलाश में था, जिससे वह अपने देश के शत्रु रोमवालों पर विजय पा सके। इस-

लिए उसने झट कोरियोलेनस को गले लगा लिया और वे दोनों मित्रवत् रहने लगे।

थोड़े दिनों रोमवाले बड़ी शान्ति के साथ रहे और किसी दल मे किसी प्रकार का झगड़ा नहीं हुआ। ऐसे समय मे साधारण पुरुषों को किसी वीर की आवश्यकता ही क्या हो सकती थी। वे समझते थे कि अच्छा हुआ, मार्शल कोरियो-लेनस निकाल दिया गया और जो कहते थे कि उसके जाने से हानि होगी सो भी नही हुई; क्योंकि रोम उसके विना भी सुरक्षित है। प्रजा के प्रतिनिधि ब्रूटस और सिसीनियस उन पेट्रोशियनों को चिढ़ाने लगे जो कोरियोलेनस के मित्र समझे जाते थे और जिनका यह विचार था कि शत्रुओं से रोम की रक्षा करने के लिए उस-जैसे वीर पुरुषों की आवश्यकता थी। इनमे बहुत-से ऐसे थे जो फिर कोरियोलेनस के बुलाने के पक्षपाती थे; परन्तु प्लेबियन लोग उन्हें हँसी में उड़ा देते थे।

परन्तु ये सुख के दिन बहुत समय तक न रहे और कृतघ्न रोमवालों को बहुत शीघ्र मालूम हो गया कि पाप का फल मीठा नहीं होता। एक दिन खबर लगी कि वौल्सी लोग दो बड़ी सेनाएँ लेकर रोम पर आक्रमण करना चाहते हैं। उस भयानक वार्त्ता को सुनकर सब घबरा उठे, क्योंकि इस समय रोम में कोई ऐसा वीर नहीं था कि अफीडियस का सामना कर सकता। इस पर, जब उन्होंने सुना कि कोरियोलेनस

स्वयं सेनापति होकर आ रहा है तब तो इस घबराहट की कुछ सीमा ही नहीं रही। मिनीनियस अग्रीपा कहने लगा—यदि वह वीर पुरुष दया न करेगा तो हम अवश्य नष्ट हो जायँगे।

कमीनियस ने कहा—उससे प्रार्थना कौन करे? मजिस्ट्रेट लोग किस मुँह से कह सकते हैं। प्लेबियन लोग उसी दया के अधिकारी हैं जिसकी भेड़िया गड़रिये से आशा कर सकता है। उसके मित्र भी कैसे कह सकते हैं कि 'रोम पर दया करो' क्योंकि उन्होंने भी उसके शत्रुओं के समान व्यवहार किया था।

मिनी०—यह तो सच है। यदि वह दियासलाई लेकर मेरा घर जलाने लगे तो भी मुझे यह कहने का साहस नहीं हो सकता कि 'कृपया क्षमा कीजिए'। (ब्रूटस से) यह तुम्हारे ही कर्मों का फल है।

कमीनियस—हाँ। ये तुम्हारे ही कर्म थे जिन्होंने रोम को इस घोर विपत्ति में डाल दिया।

ब्रूटस और सिसीनियस—हमने क्या किया?

मिनी०—क्यों, क्या हमने किया है, हम तो उसे चाहते थे। हाँ, इतना हमारा अपराध है कि पशुओं की भाँति हम तुम्हारे कहने में आ गये।

जैसे-तैसे लड़ाई की तैयारियाँ की गईं, मगर जैसी आशा थी वैसा ही परिणाम हुआ। सब रोमन लोग बुरी तरह पराजित हुए और कारिओलेनस और अफीडियस ने रोम के बाहर

कैम्प डालकर अपनी विजय के दूसरे दिन रोम को जन-बच्चे-सहित जलाने का हुक्म दे दिया।

अब तो रोम में खलबली मच गई। हर घर में रोना-पीटना पड गया। हाहाकार होने लगा। कोई उपाय बचने का न सूझा। अन्त में कमीनियस बड़ी नम्रता-पूर्वक कोरियोलेनस के पास गया और हाथ जोड़, आँखों मे आँसू भरकर, क्षमा का प्रार्थी हुआ। परन्तु कोरियोलेनस ने उसे सूखा जवाब दे दिया। जब कमीनियस ने कहा कि आप हमारे परम, मित्र थे, हम और आप साथ-साथ युद्ध में लड़ा करते थे, इस मित्रता पर ध्यान दीजिए, तब कोरियोलेनस ने उत्तर दिया—"हम कुछ नहीं जानते। जब तक रोम का सम्पूर्ण नगर भस्मीभूत न हो जाय तब तक हम किसी को नहीं पहचानेंगे।" जब कमीनियस ने कहा—"दया कीजिए। दया राजाओं का धर्म है" तब उसने उत्तर दिया—"ऐसे मनुष्य से दया की प्रार्थना क्या, जिसे घृणा करके देश से निकाल दिया हो!" जब कमीनियस ने कहा—"अपने निज मित्रों की तो रक्षा कीजिए" तब उसने उत्तर दिया—मैं मनों भूसी के ढेर मे एक-दो अन्न के दानों को उठाने का कष्ट सहन नहीं कर सकता।

इस प्रकार कमीनियस के निराश लौट आने पर वृद्ध मिनीनियस से सब लोगों ने मिलकर प्रार्थना की—"भगवन्, अब आप जाइए, मार्शस आपको पिता के समान समझता रहा है। वह अवश्य आपके कहने से मान जायगा।"

यद्यपि मिनीनियस को कोरियोलेनस की दया पर किञ्चित् भी विश्वास न था; यद्यपि वह देख चुका था कि कमीनियस को किस अपमान के साथ लौटना पड़ा और यद्यपि कोरियोलेनस के निश्चल विचारों को वह भली भाँति जानता था, परन्तु सबके कहने से अन्त में उसने जाना उचित समझा।

मिनीनियस जब वोल्सियन सेना के कैम्प में घुसा तब सिपाही ने टोका—ठहरो, कहाँ से आते हो?

मिनी०—मैं रोम का सरदार हूँ और कोरियोलेनस से सम्भाषण करना चाहता हूँ।

सिपाही—चले जाओ। हमारा स्वामी रोम के किसी मनुष्य से मिलना नहीं चाहता।

मिनी०—सिपाहीजी, मैं मार्शस का मित्र मिनीनियस हूँ।

सिपाही—चले जाओ। नाम से भीतर जाने का अधिकार नहीं मिल सकता।

मिनी०—सुनो। तुम्हारा स्वामी मेरा बड़ा मित्र है। जाकर कहो, वह अवश्य मुझसे भेंट करेगा।

सिपाही—अगर तुम उसके मित्र होते तो तुम भी रोम से उसी के समान घृणा करते क्योंकि रोमवाले बड़े कृतघ्न हैं; अपने रक्षक को ही मारते हैं और अपनी मूर्खता से अपने शत्रुओं के हाथ में डाल दे बैठते हैं। क्या तुम समझते हो कि स्त्रियों के रोने-चिल्लाने से यह बदला लेना छोड़ देगा? जाओ। रोम को

दया करो। चलो हटो और अपने नष्ट होने की तैयारियाँ करो। उसने शपथ खाई है कि किसी रोम-निवासी को जीता न छोड़ूँगा।

जब ये बातें हो रही थीं तब कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया। उसे देखकर मिनीनियस कहने लगा—बेटे, तुम हमारे लिए आग जलवा रहे हो और मैं अपने आँसुओं से इसे बुझाना चाहता हूँ। मैं कभी यहाँ न आता परन्तु मुझे निश्चय हो गया है कि तुम मेरे सिवा किसी की न सुनोगे। ईश्वर तुम्हारे क्रोध को शान्त करे।

कोरियो०—चलो, हटो।

मिनी०—क्यों, क्यों ?

कोरियो०—मा, स्त्री, लड़का किसी को मैं नहीं जानता। मैं इस समय दूसरे का काम कर रहा हूँ। वही करूँगा जो वौल्सियन लोगों के लिए हितकर होगा।

उसने मिनीनियस को निकाल दिया। वह बेचारा अपना-सा मुँह लेकर रोम को लौट आया। अब क्या उपाय हो सकता था ? लोगों के छक्के छूट रहे थे। बच्चे आग की खबर सुनकर बिलख रहे थे। स्त्रियों की आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी। ऐसे समय में कोरियोलेनस की माता वोलम्निया, उसकी स्त्री वर्जीलिया और रोम की सब प्रतिष्ठित देवियों को लेकर, अपने बेटे के राज़ी करने को चल दी। इनके साथ कोरियोलेनस का पुत्र भी था।

यद्यपि मिनीनियस को कोरियोलेनस की दया पर किञ्चित् भी विश्वास न था; यद्यपि वह देख चुका था कि कमीनियस को किस अपमान के साथ लौटना पड़ा और यद्यपि कोरियोलेनस के निश्चल विचारों को वह भली भाँति जानता था, परन्तु सबके कहने से अन्त में उसने जाना उचित समझा।

मिनीनियस जब वोलसियन सेना के कैम्प में घुसा तब सिपाही ने टोका—ठहरो, कहाँ से आते हो?

मिनी०—मैं रोम का सरदार हूँ और कोरियोलेनस से सम्भाषण करना चाहता हूँ।

सिपाही—चले जाओ। हमारा स्वामी रोम के किसी मनुष्य से मिलना नहीं चाहता।

मिनी०—सिपाहीजी, मैं मार्शस का मित्र मिनीनियस हूँ।

सिपाही—चले जाओ। नाम से भीतर जाने का अधिकार नहीं मिल सकता।

मिनी०—सुनो। तुम्हारा स्वामी मेरा बड़ा मित्र है। जाकर कहो, वह अवश्य मुझसे भेंट करेगा।

सिपाही—अगर तुम उनके मित्र होते तो तुम भी रोम से उसी के समान घृणा करते क्योंकि रोमवाले बड़े कृतघ्न हैं; अपने रक्षक को ही मारते हैं और अपनी मूर्खता से अपने शत्रुओं के हाथ में डाल के बैठते हैं। क्या तुम समझते हो कि स्त्रियों के रोने-चिल्लाने से वह बदला लेना छोड़ देगा? जाओ। रोम को

दया करो। चलो हटो और अपने नष्ट होने की तैया-
रियाँ करो। उसने शपथ खाई है कि किसी रोम-
निवासी को जीता न छोड़ूँगा।

जब ये बातें हो रही थीं तब कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया। उसे देखकर मिनीनियस कहने लगा—बेटे, तुम हमारे लिए आग जलवा रहे हो और मैं अपने आँसुओं से इसे बुझाना चाहता हूँ। मैं कभी यहाँ न आता परन्तु मुझे निश्चय हो गया है कि तुम मेरे सिवा किसी की न सुनोगे। ईश्वर तुम्हारे क्रोध को शान्त करे।

कोरियो०—चलो, हटो।

मिनी०—क्यों, क्या?

कोरियो०—मा, स्त्री, लड़का किसी को मैं नहीं जानता। मैं
इस समय दूसरे का काम कर रहा हूँ। वही करूँगा
जो वौलिसयन लोगों के लिए हितकर होगा।

उसने मिनीनियस को निकाल दिया। वह बेचारा अपना-सा मुँह लेकर रोम को लौट आया। अब क्या उपाय हो सकता था? लोगों के छक्के छूट रहे थे। बच्चे आग की ख़बर सुनकर बिलक रहे थे। स्त्रियों की आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी। ऐसे समय में कोरियोलेनस की माता वौलम्निया, उसकी स्त्री वर्जीलिया और रोम की सब प्रतिष्ठित देवियों को लेकर, अपने बेटे को राज़ी करने को चल दी। इनके साथ कोरियोलेनस का पुत्र भी था।

कॉरियोलेनस ने दूर से इस मण्डली को देखकर पहले ही से अपना हृदय पत्थर-सा कड़ा कर लिया और निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो, किसी की बात न मानूँगा। जब ये स्त्रियाँ निकट पहुँचीं तब वर्जीलिया ने कहा—मेरे स्वामिन्! मेरे पति!

कॉरियो०—ये वे आँखें नहीं हैं जो रोम में थीं।

वर्जी०—हमारी दुर्दशा के कारण आपको यह विचार होता है।

कॉरियो०—सुस्त नाट्य-कार के समान मैं अपना पार्ट भूल गया।

फिर उसने अपनी रोती हुई माता के चरण छुए और विनय-पूर्वक कहा—आप मुझे क्षमा कीजिए। मुझसे चाहे जो कहिए, परन्तु रोम पर दया करने की आज्ञा न दीजिए। क्योंकि, मैंने शपथ खाई है कि जो कह चुका उसे करके रहूँगा।

वॉल०—(अपने पुत्र के पैरों पर गिरकर) ईश्वर तुझे चिरंजीव करे। मैं तेरे चरणों पर गिरकर तुझसे प्रार्थना करती हूँ। मैंने तुझे शूरवीर बनाया था। तुझे खबर है कि हम सब तुझसे प्रार्थना करने आये हैं!

कॉरियो०—शान्त हो। जो मैं कह चुका सो कह चुका! मुझसे यह मत कहो कि रोम को क्षमा कर दो या सेना को ले जाओ।

वौल०—बस बस ! तुम कह चुके कि हमारा कहना न करोगे। क्योंकि, हम वही माँगती हैं जिसको तुम देना नहीं चाहते। इसलिए अब केवल एक प्रार्थना है। उसे सुन लो; जिससे यदि तुम उसे अस्वीकार करो तो दोष हमारा न हो किन्तु तुम्हारी कठोरता का हो।

कोरियो०—अच्छा !

वौल०—क्या हम चुप रहें और मुँह न खोलें ? हमारे वस्त्र और हमारी दशा कह रही है कि जिस दिन से तू देश से गया है तभी से हमारी क्या गति हुई है। अपने हृदय से पूछ कि कैसी अभागिन हम स्त्रियाँ तेरे पास आई हैं। तुझे देखकर हमारा हृदय ख़ुश होता और हम आनन्द के मारे गद्गद होतीं। परन्तु आज हम डर के मारे तेरा मुँह देख-देखकर रो रही हैं। क्योंकि हम देखती हैं कि मेरा लड़का, वर्जीलिया का पति और इस लड़के का बाप अपने देश को नष्ट कर रहा है। तू हमारी प्रार्थनाओं पर पानी फेर रहा है। हम किस प्रकार ईश्वर से नगर-रक्षा के लिए प्रार्थना करें और अपने देश का बुरा चाहें ! हमको उचित था कि अपने पुत्र की विजय पर ख़ुशी मनातीं, पर ऐसी विजय से कैसे आनन्द हो सकता है जो अपने ही देश की घातिनी हो ! क्या तू अपनी स्त्री, बच्चे और देशवासियों का रक्तपात

करके अपनी विजय पर अभिमान कर सकेगा? रही मैं, सो याद रख कि मैं उस समय तक जीती न रहूँगी जब तू उसी गर्भाशय को पददलित कर सके जिससे तूने जन्म लिया है।

वर्जी०—और न मेरे उदर को, जिससे तेरा नामलेवा पुत्र उत्पन्न हुआ है।

पुत्र—और न मुझे। मैं भाग जाऊँगा और फिर लड़ूँगा।

कॉरियोलेनस पर कुछ असर होने लगा और वह उसको टालने के लिए वहाँ से उठ चला; परन्तु उसकी मा फिर बोली—जाता कहाँ है? बैठ, हम यह नहीं कहतीं कि तू हमको बचा दे और वॉल्स्की लोगों को दण्ड दे। हम यह चाहती हैं कि दोनों में सन्धि हो जाय। यदि तूने आज अपना देश न बचाया तो भविष्यत् में तेरा नाम बड़े अपमान के साथ लिया जायगा और लोग कोस-कोसकर कहा करेंगे कि 'आदमी तो बहादुर था परन्तु अन्त में देशघातक निकला।' सोच तो सही, तूने बड़ा भारी यश प्राप्त किया और देवताओं के समान शोभा पाई। पर अब तू अपने देश को ही नष्ट करना चाहता है! (वर्जीलिया की ओर सङ्केत करके) बेटी, तू ही कह; पर वह तेरी क्या परवा करता है। (लड़के की ओर देखकर) अरे तू ही कह! सम्भव है, तेरी भोली-भाली बातें इसे पसन्द आ जावें। अपनी माता का कहना सभी मानते हैं। परन्तु मैं इतनी देर से बक रही हूँ और यह चुपचाप खड़ा सुन रहा

है। अरे यही कह दे कि मैं अनुचित कह रही हूँ। हम चली जायँगी। परन्तु यदि तू यह नहीं कह सकता तो फिर अनुचित करने में कैसी वीरता! ईश्वर तुझे दण्ड देगा कि तू कर्त्तव्यपालन से जी चुराता है और अपनी माता की उचित आज्ञा का पालन नहीं करता। देवियो, तुम सब इसके पैरों पड़ो और अगर यह अब भी नहीं सुनता तो चलो। हम सब अपने पड़ोसियों-सहित जान देंगी। जाने दो। जान पड़ता है, इसकी माता कोई वोल्सी स्त्री होगी। इसकी स्त्री भी कोरियोली में होगी जिसके इसी के समान कठोर पुत्र होगा।

अपनी पूज्य माता की ऐसी विचित्र वक्तृता सुनकर कोरियोलेनस का हृदय पिघल गया। उसकी आँखों में आँसू भर आये और वह अपनी माता के गले लगकर कहने लगा— मा! तुमने क्या किया! आकाश के द्वार खुल गये! देखो, देवता लोग इस अनहोने दृश्य पर हँसी उड़ा रहे हैं। मा! तुमने रोम के लिए तो विजय पा ली परन्तु अपने पुत्र के लिए अच्छा नहीं किया।

बस, कोरियोलेनस ने रोम को क्षमा कर दिया और वोल्सी लोगों के साथ एण्टियम को चला गया। रोम में इन देवियों के लौट आने पर ख़ुशी के बाजे बजाये गये। सब लोगों का नया जन्म हुआ और एक देवी ने वह काम कर दिखाया जो बड़े-बड़े वीरों से न हुआ था।

परन्तु कोरियोलेनस की इस कार्य्यवाही से वौल्सी लोग प्रसन्न न हुए। अफ़ीडियस थोड़े दिनों से इससे डाह करने लगा था क्योंकि इसकी वीरता को देखकर वौल्सी लोग अफ़ीडियस से अधिक इसकी प्रतिष्ठा करते थे। इसलिए जब यह एण्टियम में पहुँचा तब इस पर विद्रोह और देश के अहित का दोष लगाया गया और जिस समय इस पर राज-सभा में अभियोग चलाया जा रहा था उसी समय अफ़ीडियस के कुछ साथियों ने तलवार से इसे मार डाला।

टीटस एण्ड्रोनीकस

(Titus Andronicus)

बहुत दिन हुए, रोम मे एण्ड्रोनीकस नामक एक पेट्रीशियन वंश था जिसकी वीरता, देशभक्ति तथा राजभक्ति जगत्-प्रसिद्ध थी। कोई ऐसा काम न था जिसे ये लोग अपने राजा और देश के लिए नहीं कर सकते थे। इन्हे अपने भाई-बहन-बच्चे, यहाँ तक कि अपने प्राण भी इतने प्रिय नहीं थे जितना अपना देश। इस वंश के अग्रगन्ता दो वीर पुरुष थे। बड़े का नाम टीटस और उसके छोटे भाई का नाम मार्कस एण्ड्रोनीकस था। टीटस ने अपने नगर की रक्षा में बड़े-बड़े पराक्रम कर दिखाये थे। कहा जाता है कि उसके २१ लड़के रोम के शत्रुओं से लड़कर मारे जा चुके थे; परन्तु वह इसको अपना बड़ा भाग्य समझता था कि उससे उत्पन्न हुए पुत्रों का ऐसी वीरता से अन्त हुआ।

हम जिस समय का वर्णन कर रहे हैं उस समय टीटस और उसके पुत्रों ने गाथ लोगों पर विजय पाई थी जो बहुत दिनों से रोम से शत्रुता रखते थे; और वे उनकी महारानी तमोरा को उसके तीन पुत्रों—अलार्बस, डिमीट्रियस और

चीरन—सहित पकड़कर रोम मे ले आये थे। इस लड़ाई मे टीटस के भी कई पुत्र मारे गये थे, जिनकी लाशें मृतक-संस्कार के लिए अपने देश मे लाई गई थी।

उस समय रोम के लोगों मे एक भयानक रीति यह थी कि वे अपने शत्रुओं को मार-मारकर अपने देवताओं को वलिप्रदान किया करते थे। इसलिए जब इन पुत्रो के मृतक-संस्कार का समय आया तब इनके भाइयों ने अपने पिता से प्रार्थना की कि हम महारानी तमोरा के सबसे बड़े पुत्र की वलि देना चाहते हैं जिससे हमारे भाइयों की आत्मा को शान्ति हो सके; क्योंकि उन्होने इन्ही गाथ लोगों के विरुद्ध लड़कर अपने प्राण दिये हैं। टीटस ने उत्तर दिया कि मैं हर्ष-पूर्वक तुमको आज्ञा देता हूँ कि इस अभागी महारानी के सबसे बड़े पुत्र की वलि चढ़ा दो।

इस आज्ञा के होते ही वेचारी तमोरा खड़ी-खड़ी सूख गई और आँखो मे आँसू भरकर कहने लगी—विजयी टीटस, मेरे आँसुओ पर दया करो। एक माता के आँसुओं का ध्यान करो जो वह अपने प्रिय पुत्र के लिए बहा रही है। यदि कभी तुमको तुम्हारे लड़के प्यारे थे तो याद रक्खो कि उतने ही मेरे बच्चे मुझे प्यारे हैं। यही काफ़ी है कि हम और हमारे बच्चे क़ैद होकर आपके इस विजय-उत्सव की शोभा को बढ़ाने के लिए यहाँ खींच लाये गये हैं। अब क्या आप इन वीर पुत्रों का रोम की गलियों मे वध करना चाहते

हैं, जिनका अपराध इतना ही है कि वे अपने देश के लिए जी तोड़कर लड़े थे ? यदि अपने देश और राजा के लिए लड़ना तेरे पुत्रों के लिए यश और प्रशंसा का कारण है तो मेरे लड़कों के लिए भी होना चाहिए। एण्ड्रोनीकस, अपने वंश की समाधियों को रुधिर से अपवित्र न करो ! यदि तुम देवताओं के समान हुआ चाहते हो तो दया करो। क्योंकि दया ही भद्र पुरुषों का चिह्न है। वीर टीटस, मेरे ज्येष्ठ पुत्र पर कृपा करो।

टीटस ने तमोरा के विलाप की कुछ भी परवा नहीं की और लोग अलार्बस को पकड़कर ले गये; क्योंकि टीटस ने कहा था कि हमको धर्मकार्य्य करना है। लाशों को समाधिस्थ करते समय बलि चाहिए और बलि के लिए अलार्बस ही सबसे उत्तम पुरुष है।

तमोरा ने रोते हुए कहा—हाय ! यह कैसा निर्दयी धर्म है।

चीरन—सिथियावाले भी इतने जंगली नहीं थे।

डिमीट्रियस—अरे कुछ परवा नहीं। अलार्बस के लिए यह बहुत अच्छा हुआ। अब वह शान्ति की नींद सोवेगा और हम टीटस के क्रोधानल में जला करेंगे। हे रानी, साहस करो। जिन देवताओं ने ट्रोय* की रानी को साहस दिया था वही तुमको भी बल देंगे।

---

* ट्रोय की रानी का वर्णन होमर ने अपने काव्य में किया है।

टीटस के पुत्रों ने अलार्बस के टुकड़े-टुकड़े करके देवता पर चढ़ा दिये और अपने पिता को अपने कार्य्य की समाप्ति की सूचना दी।

जिस समय गाथवालों पर रोमन लोगों ने विजय पाई उन्हीं दिनों रोम के राजा का देहान्त हो गया था और उसकी गद्दी के लिए सेटरनीनस और बैसियेनस दोनों भाई आपस में झगड़ा कर रहे थे। टीटस के रोम में आने पर दोनों ने इसकी सहायता चाही। परन्तु टीटस सेटरनीनस को चाहता था। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जब कोई नया विजयी किसी बड़े देश पर विजय प्राप्त करके आता था तब रोमन लोग उस समय के लिए उस विजयी पर अपना सर्वस्व वार दिया करते थे, फिर चाहे थोड़े दिनों पीछे वे उसका कुछ भी क्यों न करें। इसी रीति के अनुसार लोगों ने टीटस को राजा बनाने का विचार प्रकट किया। परन्तु हम ऊपर कह चुके हैं कि टीटस राजभक्त था; वह अवसर पाकर राज छीनना नहीं चाहता था। अतएव अपने विचारानुसार उसने सर्वसाधारण से आग्रह करके सेटरनीनस को राजा बना दिया।

सेटरनीनस ने राजा होकर टीटस को कोटिशः धन्यवाद दिये और उसका मान बढ़ाने के लिए उसकी बेटी लैवीनिया से विवाह करने की इच्छा प्रकट की, जिससे टीटस की कन्या रोम की महारानी हो सके।

टीटस ने राजा की बात मान ली और अपनी कन्या देने को उद्यत हो गया। विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। संस्कार करने के लिए पुरोहित भी आ गया। परन्तु वास्तव में लैवीनिया का वैसियेनस से प्रेम था और उन दोनों की मँगनी भी हो चुकी थी। इसलिए यही उचित था कि लैवीनिया वैसियेनस की स्त्री होती। यद्यपि वैसियेनस राज्य दे देने पर राजा हो गया था परन्तु स्त्री भी दे देना उसे पसन्द न था। अतएव उसने टीटस के भाई मार्कस और उसके लड़कों—लूशियस, क्विण्टस और मार्शस —की सहायता से लैवीनिया को बीच मन्दिर से हरण कर लिया और जितनी देर में टीटस और राजा की आँख उधर को उठे, आन की आन मे भगा ले गया और विवाह कर लिया। टीटस को अपने वंशवालों के इस अनुचित व्यवहार पर बड़ा क्रोध आया। जब वह उनका पीछा करने को चला तब उसका छोटा पुत्र म्यूशियस अपनी बहन को बचाने के लिए दौड़ा। इस झगड़े में टीटस ने अपने इस पुत्र को मार डाला और अपने लड़कों के अत्याचार पर पश्चात्ताप करने लगा।

सेटरनीनस को स्त्री-हरण-रूपी अपमान असह्य हो गया। चूँकि वह उसी समय अपना विवाह करना चाहता था इसलिए उसने रूपवती तमोरा से अपनी शादी कर ली। इस प्रकार अभागिनी तमोरा एक देश को छोड़कर फिर दूसरे देश की महारानी हो गई। उसके पुत्र, बिना किसी दण्ड के,

स्वतंत्र कर दिये गये। परन्तु तमोरा को टीटस से वैर था, क्योंकि टीटस की बदौलत ही उसका राज्य नष्ट हुआ, उसी के द्वारा उसके पुत्र मारे गये और उसी के कारण यह सब अपमान सहना पड़ा। इसलिए रोम में शक्ति पाकर तमोरा तन-मन-धन से एण्ड्रोनीकस वंश को निर्बीज करने के उपाय सोचने लगी।

हमारी शेप कहानी में केवल यही वर्णन किया जायगा कि किस प्रकार तमोरा को पथम अपने मनोरथ की प्राप्ति में सफलता हुई और फिर किस प्रकार उसका भी नाश हो गया।

लैवीनिया के हरण पर सेटरनीनस टीटस और उसके भाई-बेटों से नाराज हो गया। तमोरा एक बनी हुई औरत थी। वह उसी समय से इनके नाश का उपाय सोचने लगी और चूँकि टीटस का रोम में बहुत ज़ोर था, इसलिए केवल दिखावे के लिए राजा को समझाकर उस समय मेल करा दिया। राजा ने न केवल टीटस को ही क्षमा कर दिया किन्तु अपने भाई बैसियेनस और लैवोनिया तथा उनके सब भाइयों का अपराध भी क्षमा कर दिया और एण्ड्रोनीकस वंश को राजा की ओर से जो पहले सन्देह था वह जाता रहा।

डिमीट्रियस और चीरन, जो तमोरा के पुत्र थे, दोनों के दोनों लैवीनिया के रूप पर आसक्त हो गये। परन्तु लैवी-निया सती स्त्री थी और बैसियेनस को मारना भी सरल

कार्य नहीं था। इसलिए उन्होंने एरन नामी एक हबशी की सहायता से, जो तमोरा का गुप्त प्रेमी था, लैवीनिया का सतीत्व भङ्ग कराने की ठान ली।

तमोरा बड़ी दुष्टा थी। जब एरन ने इस विचार को उस पर प्रकट किया तब वह बड़ी ख़ुश हुई, क्योंकि उसे टीटस के वंश का अपमान होता देखकर बड़ी ख़ुशी होती थी। थोड़े दिनों मे एक दिन राजा शिकार को गया और रोम की सब बड़ी-बड़ी स्त्रियाँ भी अपने पतियों के साथ गईं। मार्ग में बहुत से गुप्त स्थान थे, जहाँ पुरुष छिप सकते थे। पहले तो एरन और तमोरा वहाँ खड़े-खड़े गुप्त बातें करने लगे। फिर जिस समय वैसियेनस और लैवीनिया उसी स्थान पर होकर गुजरे तो बिना बात के तमोरा ने उनसे झगड़ा करना आरम्भ कर दिया। बात का बतङ्गड़ हो गया और कोलाहल तक नौबत आ गई। इधर एरन ने डिमीट्रियस और कीरन को सिखाकर वहाँ भेज दिया। जिस समय ये युवक अपनी कुटिला माता के पास पहुँचे, तमोरा चिल्ला-चिल्लाकर सहायता के लिए पुकारने लगी। इन लोगों को तो हत्या करने की सूझ रही थी। झट अवसर पाकर वैसियेनस को मार डाला और रोती लैवीनिया को पकड़ कर ले गये। इस बेचारी ने तमोरा और इन दुष्टों से बहुत-बहुत प्रार्थना की कि चाहे प्राणदण्ड दे दिया जाय परन्तु उसके सतीत्व पर आक्रमण न किया जाय, लेकिन किसी ने उसकी विनती न सुनी। फिर एकान्त स्थान

में उन्होंने जाकर उसका धर्म भ्रष्ट किया; उसके दोनों हाथ और जीभ काट ली जिससे वह इस अत्याचार का हाल न तो कह सके और न लिख सके। इधर तो दुर्गति करके लैवीनिया को उन्होंने जङ्गल में छोड़ा उधर बैसियेनस की लाश को एक गहरे गड्ढे में डाल दिया और उस गड्ढे पर इस प्रकार घास बिछा दी कि कोई वहाँ पर आवे तो उसमें गिर पड़े।

एरन ने टीटस के पुत्रों—क्विण्टस और मार्शस—से कहा कि मैंने अमुक गड्ढे में एक तेंदुआ सोते हुए देखा है। चलो, उसे मार लावें। जब मार्शस उस स्थान पर पहुँचा तब झट गिर पड़ा और उसका भाई क्विण्टस उसको निकालने के लिए झुका तो वह भी उसी गड्ढे में गिर गया। वहाँ जाकर जब उन्होंने बैसियेनस की लाश देखी तब उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे घबराने लगे।

जिस समय क्विण्टस और मार्शस को एरन ने तेंदुए के शिकार के बहाने इधर भेजा था उसी समय उसने रुपयों की एक थैली एक वृक्ष के नीचे गाड़ दी और मार्शस के हाथ का लिखा एक जाली पत्र बनाया, जिसमें मार्शस की ओर से किसी शिकारी के लिए लिखा गया था कि 'हम बैसियेनस को मारकर ला रहे हैं सो तुम अमुक वृक्ष के तले एक गड्ढा खोद रक्खो जिससे, बिना किसी के जाने हुए, हम उसको दबा सकें। इसके पुरस्कार में हमने रुपयों की थैली तुम्हारे

लिए उसी स्थान पर गाड़ दो है।' यह पत्र एरन ने अपनी मनोरथसिद्धि के लिए राजा को दे दिया।

राजा ने यह समझा कि इन्होंने अवश्य मेरे भाई को मारने का इरादा किया है। इसलिए ज्योंही शिकार से लौटा, उसने क्विण्टस को गड्ढे में गिरते हुए देखा, और कहा—अरे तू कौन है, जो इसमें कूद रहा है!

मार्शस—श्रीमन्, मैं वृद्ध एण्ड्रोनीकस का अभागा पुत्र हूँ जो इस दुर्दशा से यहाँ गिर पड़ा हूँ। यहाँ आपका भाई मरा पड़ा है।

सैटरनीनस—(टीटस से) दुष्ट, देख तेरे लड़कों ने मेरे भाई को मार डाला!

अब राजा ने दोनों को पकड़वा लिया और जब पत्र के अनुसार वे सब लोग वृक्ष तले गये तब वहाँ देखा कि रुपये गड़े हुए हैं। अब तो सबको निश्चय हो गया कि बैसियेनस के घातक यही दोनों हैं। इसलिए राजा ने उनको प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी।

यद्यपि टीटस को इस कपट की कुछ खबर नहीं थी परन्तु उसे यह बात भले प्रकार विदित थी कि मेरे पुत्र अपने बहनोई को नहीं मार सकते। इसलिए वह बहुत ही शोकातुर हुआ और रो-रोकर मजिस्ट्रेटों से प्रार्थना करने लगा कि मैंने अब तक अपने देश की जो सेवा की है उनके बदले में मेरे पुत्रों को

क्षमा कर दिया जाय। परन्तु कौन उसकी सुनता था। क्योंकि तमोरा और एरन ने भली भाँति राजा के कान भर दिये थे।

टीटस जिस समय इस प्रकार अपने पुत्रों के लिए रो रहा था उसी समय लैवीनिया भी अपने चचा मार्कस के साथ अपने पिता के पास आई। उसके मुँह से ख़ून निकल रहा था और उसकी बाहों की जगह केवल दो ठूँठ से लगे हुए थे। वह मन ही मन अपनी दशा का विचार कर रही थी: क्योंकि इसके प्रकाशित करने के समस्त साधन उससे छीन लिये गये थे। मार्कस और टीटस दोनों बड़े आश्चर्य में थे कि किस हत्यारे ने इसके साथ यह दुष्टता की। टीटस को अपनी कन्या की दुर्गति पर अत्यन्त शोक हुआ और वह ढाढ़ें मार-मारकर रोने लगा। उसका लड़का लूशियस भी छाती पीटने लगा; क्योंकि उनकी समझ में नहीं आता था कि किस मनुष्य ने यह घोर हत्या की है।

परन्तु अभी एरन और तमोरा के छल की समाप्ति नहीं हुई थी। वे टीटस के इतने ही दुःख पर सन्तुष्ट न थे। इस-लिए एरन ने टीटस से आकर कहा—हमारे राजा ने सन्देसा भेजा है कि अगर अपने लड़कों को बचाना चाहते हो तो तुम या मार्कस या लूशियस, कोई एक अपनी भुजा काटकर राजा के पास भेज दो। इसी को काफ़ी दण्ड समझा जायगा और मार्टस और क्विण्टस को जीवित वापिस कर दिया जायगा।

टीटस—भले एरन, आपने अच्छी बात सुनाई। मैं अभी अपनी भुजा काटकर राजा के पास भेजता हूँ। कृपया इसके काटने में सहायता करो।

लूशियस—ठहरिए पिताजी! आपका पूज्य हाथ, जिसने अपने देश के लिए ऐसे-ऐसे काम किये हैं, कदापि नहीं भेजा जा सकता। मेरी भुजा इस समय काम दे जायगी।

मार्कस—तुम दोनों की भुजाएँ इस रोम के लिए बड़ी लाभ-दायक हैं। तुम दोनों ने शत्रुओं के दलों में खलबली मचा दी है। इसलिए अपने भतीजों की जान बचाने को मैं ही अपनी भुजा काटूँगा।

एरन—जल्दी करो, क्योंकि फाँसी देने का समय निकट है।

मार्कस—मेरा हाथ जायगा।

लूशियस—नहीं जा सकता।

टीटस—क्यों लड़ते हो। ये सूखी भुजाएँ कटने ही योग्य हैं।

मार्कस—नहीं, मैं ही अपनी भुजाएँ भेजूँगा।

टीटस ने, यह देखकर कि वे दोनों राज़ी नहीं होते, उनसे कहा कि अच्छा तुम्हीं अपनी भुजा भेज दो और तलवार ले आओ। जिस समय लूशियस और मार्कस तलवार लेने गये, टीटस ने जल्दी से एरन-द्वारा अपनी भुजा कटवाकर राजा के पास भेज दी। परन्तु वास्तव में राजा ने कोई सन्देसा नहीं

भेजा था। यह सब तो एरन की कुटिलता थी। इसलिए जब तक भुजा राजा तक पहुँची, टीटस के दोनों लड़कों के सिर काट दिये जा चुके थे, जिनको राजा ने—टीटस को दुःख देने के लिए—भुजा-सहित उसके पास भेज दिया।

अब तो एण्ड्रोनीकस वंश का दुःख क्रोध में बदल गया। उन्होंने दृढ़ विचार किया कि जिस प्रकार हो सके, सेटरनीनस से बदला लेना चाहिए। इस कामना की सिद्धि के लिए टीटस का बचा हुआ पुत्र लूशियस रोम को छोड़कर भाग गया और गाथ लोगों से मिल गया जिससे वह एक दिन बहुत बड़ी सेना लेकर रोम पर आक्रमण कर सके और सेटरनीनस को उसकी कृतघ्नता का स्वाद चखा सके।

अब टीटस, मार्कस, लैवीनिया और लूशियस का लड़का घर पर रह गये और रो-रोकर दिन काटने लगे। एक समय जब वे सब भोजन करने के लिए बैठे थे, टीटस ने कहा—केवल इतना खाओ जिससे हममें बदला लेने की शक्ति बनी रहे। मार्कस, मैं और तेरी भतीजी दोनों निहत्थे हैं। हमसे हाथ जोड़कर अपने शोक को प्रकट नहीं कर सकते। मेरा दाहिना हाथ रह गया है, जिससे मैं अपनी छाती पीट लेता हूँ। (लैवीनिया से) बेटी, तू तो इतना भी नहीं कर सकती। हे दुखियारी, अपने दाँतों में चाकू पकड़कर अपने हृदय में छेद कर ले, जिससे आँखों-द्वारा धीरे-धीरे निकलनेवाले आँसू शीघ्रता से निकल जायँ।

मार्कस—धिक् भाई, धिक्! भला तुम उसे अपने मरने का उपाय क्यों बतलाते हो !

टीटस—हाय ! भाई क्या कहते हो। भला इसे क्या सुख है जिससे जीवन प्रिय हो सके ?

लूशियस का पुत्र—(रोकर) दादाजी, आप बुआ को क्यों दुख दे रहे हैं ? कोई अच्छी बात कहिए।

मार्कस—बालक भी शोक के मारे रो रहा है।

टीटस—चुप, बालक चुप ! तू तो आंसुओं का बना हुआ है और ये निकलकर तेरे जीवन को समाप्त कर देंगे।

इस समय मार्कस ने थाली पर बैठी हुई मक्खी को चाकू से मार दिया। इस पर टीटस कहने लगा—भाई, तूने बड़ा पाप किया। निरपराधी का मारना टीटस के भाई को उचित नहीं।

मार्कस—मैंने केवल एक मक्खी मारी है।

टीटस—क्या इस मक्खी के मा-बाप विलाप न कर रहे होंगे ?

मार्कस—क्षमा कीजिए। इसकी शकल तमोरा के प्यारे हबशी की थी, इसलिए मैंने मार दिया।

"तब तो अच्छा किया" यह कहकर टीटस रोने लगा; क्योंकि वह बहुत दिनों से पागल हो गया था। शोक के मारे उसकी मति मारी गई थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब लूशियस का लड़का किताबें लिये पढ़ रहा था, लैवीनिया ने अपने हाथ के ठूंठों से* ओविड

---

* इटली का एक कवि।

को बनाई हुई मेटा मोरफोसिस नामी पुस्तक खोली और फ़िलोमिला की कहानी की ओर संकेत किया। टीटस और मार्कस ने फ़िलोमिला की कथा-द्वारा यह समझ लिया कि जो दशा इसकी हुई थी वही लैवीनिया की हुई होगी। क्योंकि जङ्गल में ले जाकर फ़िलोमिला का भी धर्म नष्ट किया गया था। परन्तु अब यह जानना था कि किसने ऐसा किया। मार्कस ने अपने दाँतों में क़लम पकड़कर काग़ज़ पर कुछ लिखकर बतलाया कि लैवीनिया भी बिना हाथों के उस हत्यारे का नाम लिख सकती है। तब लैवीनिया ने चीरन और डिमीट्रियस का नाम लिख दिया। इन नामों के देखते ही टीटस की आँखें लाल हो गईं, वह क्रोध के मारे काँपने लगा। परन्तु मार्कस ने कहा कि भाई, यद्यपि हमारे दुःख के कारण नगर भर में ग़दर मच सकता है, क्योंकि ब्रूटस ने इसी घोर पाप के कारण एक समय राजवंश को देश-बाहर कर दिया था किन्तु इस समय यदि हम कुछ कहेंगे तो तमोरा शीघ्र ही हमारा अन्त कर देगी। इसलिए इस समय चुप ही भली है। हम बदला लेने के दूसरे उपाय करेंगे।

थोड़े दिनों में डिमीट्रियस और चीरन की भी एरन से लड़ाई हो गई; क्योंकि दुष्ट आदमियों में कभी नहीं बन सकती। इस झगड़े का कारण यह था—

हम कह चुके हैं कि तमोरा का एरन से गुप्त प्रेम था। वह गर्भवती थी। जब उसके लड़का हुआ तब वह ऐसा ही

काला था जैसा हवशी। यह देखकर तमोरा डर गई, क्योंकि सेटरनीनस उसे मरवा डालता। इस कारण उसने लड़के को एरन के पास भेज दिया कि इसे मार डालो। एरन ने इसे अपना लड़का समझकर मारना पसन्द नहीं किया। परन्तु चीरन और डिमीट्रियस ने अपनी माता का अपमान समझकर यह लड़का लेना चाहा। इस पर उनसे एरन की लड़ाई हो गई और वह लड़के को लेकर वहाँ से भाग गया। इस समय उसने धाय को भी मार डाला जिससे कोई बालक पैदा होने की साक्षी देने को बाक़ी न रहे।

जिस समय एरन भागा जा रहा था उस समय लूशियस गाथवालों की बड़ी भारी सेना लिये रोम पर चढ़ाई करने आ रहा था। लूशियस ने एरन को क़ैद कर लिया और साथ-साथ रोम को ले आया।

टीटस ने जिस समय लैवीनिया के धर्म नष्ट करनेवालों का नाम सुना था, वह क्रोध में भर गया था। राजा को दण्ड देने के लिए उसने अपनी कमान से ऐसे तीर छोड़े कि वे राजा के लगे। राजा को बड़ा क्रोध आया। वह तीरों सहित सभा में आकर रोमन लोगों को टीटस के विरुद्ध भड़काने लगा। परन्तु उसी समय लूशियस की चढ़ाई की ख़बर मिली जिसके सुनते ही राजा के घर में अशान्ति फैल गई। उसने अपना अन्त निकट समझ लिया लेकिन तमोरा ने उसको

ढाढ़स दिया। क्योंकि उसे अभी तक अपनी चालाकियों से टीटस को फुसलाने की आशा बनी हुई थी।

इस काम के लिए तमोरा अपने पुत्रों सहित टीटस के घर गई और दरवाज़ा खटखटाया। टीटस उस समय शायद अपने लड़के के लिए पत्र लिख रहा था। इसलिए उसने उत्तर दिया—अरे कौन है जो मुझे इस प्रकार तंग कर रहा है? जो कुछ मुझे लिखना था सो मैं लिख चुका।

तमोरा—टीटस! मैं तुमसे बातचीत करने आई हूँ।

टीटस—नहीं नहीं। मैं कुछ बात नहीं कर सकता, क्योंकि उसके अनुकूल करने के लिए मेरे हाथ ही नहीं हैं।

तमोरा—अगर तुम मुझे पहचानते तो अवश्य बातचीत करते।

टीटस—मैं पागल नहीं हूँ। मैं तुझे पहचानता हूँ। महारानी तमोरा मेरा दूसरा हाथ भी लेने आई है।

तमोरा—अरे मैं तमोरा नहीं हूँ। वह तो तेरी शत्रु है और मैं मित्र। मैं बदला लेनेवाली देवी हूँ, जिसे पाताल लोक से इसलिए भेजा गया है कि तेरे वैरियों को दण्ड दिया जाय।

टीटस—ये दोनों कौन हैं?

तमोरा—एक का नाम हत्या और दूसरे का अपहता है।

टीटस—ये तो तमोरा के से पुत्र मालूम होते हैं। पर हमारी आँखें ठीक नहीं रहीं। जो तुम कहती हो शायद

वही सच हो। इन हत्या और भ्रष्टता को मार क्यों न डालो।

तमोरा—नहीं। हत्या हत्यारे को मारेगी और भ्रष्टता उसका नाश करेगी जिसने किसी का सतीत्व नष्ट किया हो।

टीटस—ठीक। अच्छा (चीरन से) तुम अपनी शकल के जिस मनुष्य को देखो उसे मार डालना।

चीरन—अच्छा।

टीटस—(डिमीट्रियस से) और तुम भी।

डिमीट्रियस—बहुत अच्छा।

अब तमोरा चलने लगी। परन्तु टीटस ने कहा कि इन दोनों साथियों को छोड़ जाओ, जिससे मुझे कुछ सहायता हो। मैं भी अपने पुत्र लूशियस को बुलाता हूँ और राजा को भी निमंत्रित करूँगा। यदि तुम इनको न छोड़ोगी तो मैं अपने बेटे को न बुलाऊँगा।

तमोरा ने यह समझा कि जब लूशियस और राजा सह-भोज के लिए आवेंगे तब उनमें मेल हो जायगा। इसलिए वह दोनों लड़कों को वहीं छोड़ गई। परन्तु टीटस ने इन दोनों को मारकर उनका मांस पकवा लिया।

जब राजा और तमोरा टीटस के घर खाना खाने आये तब उनसे कुछ पहले लूशियस भी वहाँ आ गया। उसने एरन की ओर संकेत करके अपने चचा से कहा—चचाजी,

आप इस हवशी को विना भोजन दिये क़ैद रखिए। मैं रानी के आने पर इसके पापों की पोथी खोलूँगा। यह बड़ा दुष्ट है।

थोड़ी देर बाद खाना परोसा गया और टीटस रसोइए के भेस में सब प्रबन्ध करने लगा।

सेटरनीनस—टीटस, यह भेस क्यों बदला है?

टीटस—इसलिए कि आपको कुछ कष्ट न हो और आपके भोजनों का यथोचित प्रबन्ध हो जाय।

तमोरा—हम आपके कृतज्ञ हैं।

टीटस—राजन्, क्या वर्जीनियस ने अपनी पुत्री को असतीत्व से बचाने के लिए मार डालने में कुछ बुरा किया?

सेटरनीनस—नहीं।

टीटस—क्यों?

सेटरनीनस—इसलिए कि उसका असती होकर जीना लज्जाप्रद था।

टीटस ने "ठीक" कहकर लैवीनिया को वहीं पर मार डाला।

सेटरनीनस—अरे दुष्ट! क्या किया!

टीटस—मार डाला। क्योंकि इसके दुःख में रोते-रोते मेरी

आँखें अन्धी हो गईं। मुझे भी वही दुःख है जो वर्जीनियस* को था। अब इसकी समाप्ति हो गई।

सेटरनीनस—इसका सतीत्व किसने नष्ट किया?

टीटस—आप भोजन कीजिए।

सेटरनीनस—अपनी बेटी को क्यों मारा?

टीटस—मैंने नहीं मारा। चीरन और डिमीट्रियस ने इसका सतीत्व नष्ट किया और जीभ और हाथ काट लिये।

सेटरनीनस—अच्छा। उनको बुलाओ।

टीटस ने मांस की ओर उँगली उठाकर कहा—देखिए, वे दोनों यहाँ उपस्थित हैं। इन्हीं का मांस तो आप खा रहे हैं। तमोरा, आप उसी मांस को खा रही हैं जो आपके उदर से निकला था।

---

* वर्जीनियस रोम का एक मनुष्य था जिसकी रूपवती युवती कन्या वर्जीनिया पर एक मजिस्ट्रेट एपियस मोहित था। जब वर्जीनिया उसके हाथ न लग सकी तब उसने एक दूसरे मनुष्य क्लॉडियस से अपनी कचहरी में एक अर्ज़ी दिलवाई कि वर्जीनिया मेरे ग़ुलाम की लड़की है और वर्जीनियस उसे झूठमूठ अपनी लड़की बनाता है। इस मुकद्दमे का फ़ैसला एपियस ने क्लॉडियस के अनुकूल किया। लड़की क्लॉडियस को मिल गई। जब अपनी कन्या के सतीत्व और जीवन दोनों के बचाने का कोई उपाय न रहा तब वर्जीनियस ने जीवन के बदले सतीत्व बचाना ही उचित समझा और उसको झट से कसाई की दूकान में खींचकर चाकू से मार डाला। मारते समय उसने कहा—प्यारी बेटी, मैं इस उपाय के सिवा किसी तरह तेरा धर्म नहीं बचा सकता।

अब टीटस ने तमोरा को भी मार डाला। तमोरा को मारते देखकर सेटरनीनस ने टीटस को समाप्त कर दिया। इस पर लूशियस ने सेटरनीनस को ठण्डा कर दिया।

अब रोमवालों ने सर्वसम्मति से लूशियस को राजा बनाया। इसने अपने पिता, बहन और राजा का आदरपूर्वक मृतक-संस्कार किया। तमोरा की लाश फेंक दी गई और उसका काला लड़का भी मार डाला गया। एरन भी दुर्गति करके मारा गया। इस प्रकार तमोरा और एरन को अपने किये की सज़ा मिली और एण्ड्रोनीकस वंश को देशसेवा के बदले राज्य मिला।

———

ट्रोइलस और क्रैसीडा

(Troilus and Cressida.)

एशिया कोचक के पश्चिमोत्तरी कोने में, पुराने समय में, ट्रोय (Troy) नामी एक प्रसिद्ध नगर था। वहाँ का राजा प्रियम था। उसके पाँच लड़के थे, जिनके नाम हैं—हैक्टर, ट्रोइलस, पेरिस, डैलाफोबस और हैलीनस। पेरिस एक बार स्पार्टा में जाकर वहाँ के राजा मैनीलस की स्त्री हैलिन को जहाज में बिठाकर हर लाया। इस पर यूनान की सब रियासतें बिगड़ गईं और बड़ा भारी तैयारी करके ट्रोय पर आक्रमण कर दिया। इस सेना में अगामैम्नन, अजाक्स, अकीलिस, उलीसिस, नैस्टर, डाइमोडीस, पैट्रोक्लस आदि बड़े-बड़े योद्धा थे। इन सबने ट्रोय को चारों ओर से घेर लिया*।

ट्रोय के एक पुजारी काल्कस की पुत्री क्रैसीडा बड़ी रूपवती थी और राजकुमार ट्रोइलस उसके रूप पर मोहित था। क्रैसीडा यद्यपि ट्रोइलस से प्रसन्न थी परन्तु वह अपने मन के हावभाव को कभी किसी पर प्रकट न करती थी, जैसा कि

---

* इस आक्रमण का पूर्ण वृत्तान्त यूनान के प्रसिद्ध महाकवि होमर ने अपने महाकाव्य इलियड (Illiad) में लिखा है।

स्त्रियों का क़ायदा है। ट्रोइलस क्रैसीडा के चचा पण्डारस के द्वारा अपनी प्रेयसी की प्राप्ति का उपाय किया करता था। परन्तु जब पण्डारस क्रैसीडा के पास जाकर ट्रोइलस के गुणों तथा वीरता का वर्णन करता तब वह सुनी अनसुनी करके उसका तिरस्कार किया करती थी।

एक दिन क्रैसीडा अपने नौकर के साथ नगर की एक गली में तमाशा देखने के लिए खड़ी हुई थी; क्योंकि उसी ओर होकर लड़ाई से पलटे हुए योद्धा गुज़रनेवाले थे। इतने में उसने दो स्त्रियों को निकलते देखा। क्रैसीडा ने पूछा—ये कौन हैं?

नौकर—महारानी हक्यूबा* और हैलिन।

क्रैसीडा—ये कहाँ जा रही हैं?

नौकर—पूर्वी महल को। वहाँ से ये लड़ाई की बहार देखेंगी। आज हैक्टर बड़े क्रोध में हैं।

क्रैसीडा—क्यों?

नौकर—कहते हैं कि यूनानियों की सेना में हैक्टर का भानजा है, जिसका नाम अजाक्स है।

क्रैसीडा—तो क्या?

नौकर—वह एक वीर पुरुष है। वह अपनी ही टाँगों खड़ा होता है!

---

* हक्यूबा प्रियम की स्त्री थी।

क्रैसीडा—यह कौन सी वीरता है ? सभी अपनी टाँगों खड़े होते हैं बशर्ते कि वे नशे में न हों, या रोगी न हों या लँगड़े न हों।

नौकर—देवि, इसने बहुत से पशुओं के गुण छीन लिये हैं। वह सिंह के समान वीर है और हाथी के समान मन्द।

क्रैसीडा—मुझे तो इन बातों से हँसी आती है। फिर हैक्टर क्यों नाराज़ हो गया ?

नौकर—कहा जाता है कि कल इसने रणक्षेत्र में हैक्टर को पछाड़ दिया, जिसकी लज्जा के कारण हैक्टर न तो सोया और न भोजन किया।

क्रैसीडा—हैक्टर बड़ा वीर है ?

नौकर—हाँ।

इस समय पण्डारस भी उसी स्थान पर आ गया और कहने लगा—क्रैसीडा, तुम क्या बातें कर रही हो ?

क्रैसीडा—यही कि हैक्टर नाराज़ है।

पण्डारस—हाँ, यह बात ठीक है। मुझे उनके नाराज होने का कारण भी मालुम है। आज वह उसे अवश्य पछाड़ेगा। आज ट्रॉइलस भी गया है। वह भी अपने बड़े भाई से पीछे न रहेगा।

क्रैसीडा—क्या वह भी नाराज है ?

पण्डारस—कौन ? ट्रोइलस ? ट्रोइलस इन दोनों में अधिक वीर है।

क्रैसीडा—मेरे भगवान्, यह तुलना नहीं हो सकती।

पण्डारस—क्या ट्रोइलस और हैक्टर में भी तुलना नहीं हो सकती ? क्या तुम किसी आदमी को देखकर पहचान सकती हो ?

क्रैसीडा—हाँ, अगर पहले देखा हो।

पण्डारस—हाँ, तभी तो मैं कहता हूँ कि ट्रोइलस ट्रोइलस ही है।

क्रैसीडा—यही तो मैं कहती हूँ कि वह हैक्टर नहीं है।

पण्डारस—हाँ, और हैक्टर ट्रोइलस नहीं है।

क्रैसीडा—यह सच है। एक दूसरा नहीं हो सकता।

पण्डारस—हैक्टर ट्रोइलस से अच्छा नहीं है।

क्रैसीडा—क्षमा करो।

पण्डारस—वह केवल बड़ा है।

क्रैसीडा—क्षमा करो। क्षमा करो।

पण्डारस—हैक्टर में उसके से गुण भी नहीं हैं।

क्रैसीडा—क्या हानि ?

पण्डारस—और न रूप है।

क्रैसीडा—यह बात नहीं है।

जिस समय ये बातें हो रही थीं हैक्टर, पेरिस, ट्रोइलस इत्यादि इसी गली के निकट होकर निकले। ये लोग रणभूमि

से आ रहे थे और अस्त्र, शस्त्र तथा कवच धारण किये हुए थे। पण्डारस ने ट्रोइलस की ओर संकेत करके उसकी बड़ी प्रशंसा की और क्रैसीडा का चित्त उसकी ओर आकर्षित किया।

पण्डारस के द्वारा ट्रोइलस और क्रैसीडा का सम्बन्ध निश्चित हो गया। हम ऊपर बता चुके हैं कि क्रैसीडा वास्तव में ट्रोइलस से प्रेम करती थी, परन्तु मान के कारण इसे प्रकट न करती थी। अपने चचा का संकेत पाकर उसने झट ट्रोइलस से विवाह करना स्वीकार कर लिया। जिस समय ये दोनों स्त्री-पुरुष रँगरलियों में लगे हुए थे, एक ऐसी दुर्घटना हुई जिसके कारण बड़ी कठिनाई से मिले हुए प्रेमियों का फिर वियोग हो गया। इसका हाल हम आगे लिखेंगे।

यूनानी सेना को ट्रॉय में पड़े हुए बहुत दिन हो गये थे। उन्होंने चारों ओर से इसे घेर लिया था और ट्रॉय-निवासियों का नाक में दम था। एक दिन ट्रॉय-नरेश प्रियम ने अपने सब पुत्रों को बुलाकर युद्ध के विषय में उनकी सम्मति माँगी। क्योंकि यूनानी जनरल नैस्टर का सँदेसा आया था कि "या तो हैलिन को वापस दे दो और जो कुछ हमारा नुक़सान हुआ है उसका प्रतीकार कर दो; नहीं तो हम तुम्हारे नगर को जलाकर राख में मिला देंगे।" इसके अतिरिक्त प्रियम की एक लड़की कैसैण्डरा, जो फलित ज्योतिष की विदुषी थी, यही कह रही थी कि राजन् युद्ध में तुम्हारी पराजय होगी।

पण्डारस—कौन ? ट्रोइलस ? ट्रोइलस इन दोनों मे अधिक वीर है।

क्रैसीडा—मेरे भगवान्, यह तुलना नहीं हो सकती।

पण्डारस—क्या ट्रोइलस और हैक्टर मे भी तुलना नहीं हो सकती ? क्या तुम किसी आदमी को देखकर पहचान सकती हो ?

क्रैसीडा—हाँ, अगर पहले देखा हो !

पण्डारस—हाँ, तभी तो मैं कहता हूँ कि ट्रोइलस ट्रोइलस ही है।

क्रैसीडा—यही तो मैं कहती हूँ कि वह हैक्टर नहीं है।

पण्डारस—हाँ, और हैक्टर ट्रोइलस नहीं है।

क्रैसीडा—यह सच है। एक दूसरा नहीं हो सकता।

पण्डारस—हैक्टर ट्रोइलस से अच्छा नहीं है।

क्रैसीडा—क्षमा करो।

पण्डारस—वह केवल बड़ा है।

क्रैसीडा—क्षमा करो। क्षमा करो।

पण्डारस—हैक्टर में इसके से गुण भी नहीं हैं।

क्रैसीडा—क्या हानि ?

पण्डारस—और न रूप है।

क्रैसीडा—यह बात नहीं है।

जिस समय ये बातें हो रही थीं हैक्टर, पेरिस, ट्रोइलस इत्यादि उसी गली के निकट होकर निकले। ये लोग रणभूमि

से आ रहे थे और अस्त्र, शस्त्र तथा कवच धारण किये हुए थे। पण्डारस ने ट्रोइलस की ओर संकेत करके उसकी बड़ी प्रशंसा की और क्रैसीडा का चित्त उसकी ओर आकर्षित किया।

पण्डारस के द्वारा ट्रोइलस और क्रैसीडा का सम्बन्ध निश्चित हो गया। हम ऊपर बता चुके हैं कि क्रैसीडा वास्तव में ट्रोइलस से प्रेम करती थी, परन्तु मान के कारण इसे प्रकट न करती थी। अपने चचा का संकेत पाकर उसने झट ट्रोइलस से विवाह करना स्वीकार कर लिया। जिस समय ये दोनों स्त्री-पुरुष रँगरलियों में लगे हुए थे, एक ऐसी दुर्घटना हुई जिसके कारण बड़ी कठिनाई से मिले हुए प्रेमियों का फिर वियोग हो गया। इसका हाल हम आगे लिखेंगे।

यूनानी सेना को ट्राय में पड़े हुए बहुत दिन हो गये थे। उन्होंने चारों ओर से इसे घेर लिया था और ट्राय-निवासियों का नाक में दम था। एक दिन ट्रोय-नरेश प्रियम ने अपने सब पुत्रों को बुलाकर युद्ध के विषय में उनकी सम्मति माँगी। क्योंकि यूनानी जनरल नैस्टर का संदेसा आया था कि "या तो हैलिन को वापस दे दो और जो कुछ हमारा नुक़सान हुआ है उसका प्रतीकार कर दो; नहीं तो हम तुम्हारे नगर को जलाकर राख में मिला देंगे।" इसके अतिरिक्त प्रियम की एक लड़की कैसेण्ड्रा, जो फलित ज्योतिष की विदुषी थी, यही कह रही थी कि राजन् युद्ध में तुम्हारी पराजय होगी।

इन सब कारणों से प्रेरित होकर राजा ने पहले हैक्टर से पूछा—तुम्हारी क्या राय है ?

हैक्टर—श्रीमन्, मुझे यूनानियों का कुछ भी भय नहीं है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि युद्ध का भविष्यत् सन्दिग्ध है। कौन जानता है कि कल क्या हो इसलिए हैलिन को जाने दो। वे सब आदमी, जो हैलिन के लिए रण में काम आये हैं, हैलिन से अधिक उपकारी थे। एक ऐसी चीज़ की रक्षा के लिए, जो न तो हमारी है और न रखने योग्य है, इतनी जानों का नाश कर देना उचित नहीं। इसलिए मेरे विचार में तो यही आता है कि आप हैलिन को वापस भेज दें।

ट्रोइलस—धिक्कार है भाई। तुम ऐसे ऐश्वर्य्यवान् राजा के गौरव को ऐसा तुच्छ समझते हो। क्या महाराज के अनन्त यश को आप कौड़ियों से नापते हैं। धिक्! धिक्!

हैक्टर—भाई वह इस योग्य नहीं है कि इसके लिए इतनी हानि उठाई जाय।

ट्रोइलस—इससे क्या होता है ? यदि आज मैं किसी स्त्री से विवाह करूँ तो उसे अपनी इच्छा के अनुसार पसन्द करूँगा। और यदि कल को मुझे वह अच्छी न लगे तो क्या लौटा दूँगा ? हम लोग एक बार

बज़ाज़ से रेशम लेकर फिर उसे लौटा नहीं देते। पहले यही उचित समझा गया था कि पेरिस यूनान में जाकर यूनानियों से उनके इस अपराध का बदला ले कि वे एक वृद्ध स्त्री को यहां से क़ैद कर ले गये थे। पेरिस आप सबकी सलाह से यूनान में गया और एक ऐसी सुन्दरी रूपवती रानी को भगा लाया जिस पर देवता भी मोहित होते हैं। अब आप ही कहते हैं कि क्या यह रखने योग्य है? हां अवश्यमेव। वह एक ऐसा मोती है जिसका मूल्य हज़ारों जहाज़ों से भी बढ़कर है। यदि आप कहते हैं कि पेरिस ने यूनान जाने में बड़ी बुद्धिमत्ता की (आपको यह कहना पड़ेगा क्योंकि आप सब कहते थे कि पेरिस जाओ, पेरिस जाओ।) और यदि आप कहते हैं कि पेरिस एक बहुमूल्य रत्न ले आया (यह भी आपको स्वीकार करना पड़ेगा क्योंकि हैलिन के आते समय आप सबने हर्ष प्रकाशित किया था) तो फिर आप किस मुँह से उसे लौटाना चाहते हैं?

जब ट्रोइलस यह कह रहा था, कैसेण्डरा वहां पर आगई और अपनी भविष्यद्वाणी कहने लगी—अब ट्रोय और ट्रोय-वासी कोई न बचेंगे क्योंकि हमारा भाई पेरिस सबका दाह किये देता है। अरे हैलिन को जाने दो, नहीं तो ट्रोय की ख़ैर नहीं?

हैकृर—वीर ट्रोइलस, क्या हमारी बहन की भविष्यद्वाणी यह नहीं कह रही कि हम देश की रक्षा करने मे सफल न होगे ?

ट्राइलस—भाई, बहन के उन्मत्त प्रलाप का विश्वास नहीं करना चाहिए। वह तो योंही कहा करती है। ऐसा करने से हमारी मानहानि होती है।

पेरिस—आप विचारिए तो ऐसा करने मे मेरी भी मानहानि होगी। ईश्वर जानता है कि आप सबकी सलाह से मैंने यह काम किया था। आप जानते हैं कि मेरी अकेली भुजाएँ क्या कर सकती हैं? परन्तु यदि मुझमे इच्छा के समान शक्ति भी होती तो मैं अपने किये को अनकिया करने को तैयार नहीं हूँ।

प्रियस—पेरिस, तुम तो अपने आनन्द के मारे कहते हो। तुम्हारी वीरता ऐसी प्रशसनीय नही है, क्योंकि तुम्हारा तो इसमे हित है।

पेरिस—श्रीमन्, मैं अपने स्वार्थ से नही कहता। हममे कौन ऐसा कायर है जो हैलिन की रक्षा के लिए रक्त बहाने को उद्यत न हो? अब यहाँ यश और अपयश का प्रश्न है।

उपर्युक्त वाद-विवाद के पश्चात् यही निश्चय हुआ कि लड़ाई जारी रखनी चाहिए। हैकृर ने सेनापति ईनियस को

दूत बनाकर यूनानियों के समीप भेजा कि तुम जाकर उनसे कह दो कि यदि कोई योद्धा यूनान में ऐसा हो जो अपने प्राणों को अपने यश से तुच्छ समझता हो तो मैं उससे धर्मयुद्ध करना चाहता हूँ।

हैक्टर के इस आह्वान को अजाक्स ने स्वीकार कर लिया, जिसके विषय में हम ऊपर कह चुके हैं कि वह प्रियम की बहन का लड़का था और यूनानियों से जा मिला था।

क्रैसीडा का पिता काल्कस कैसेण्डरा की भाँति एक ज्योतिषी था। उसने भी जान लिया था कि ट्राय का सर्वनाश होनेवाला है। इसलिए वह आरम्भ से ही ट्रोय से भाग-कर यूनानियों से जा मिला था और उनकी बहुत कुछ सेवा की थी जिसके बदले में अगामैम्नन ने, जो यूनानी सेना का अध्यक्ष था, उसे मुँह माँगा इनाम देने के लिए कहा था। अब काल्कस की यह इच्छा हुई कि किसी प्रकार अपनी पुत्री क्रैसीडा को भी बुला लेना चाहिए। उस समय भाग्यवश यूनानियों ने ट्रोय के एक वीर सेनापति एण्टीनर को क़ैद कर लिया। ट्रोयवालों को यदि एण्टीनर वापस मिल जाय तो वे सर्वस्व देने के लिए तैयार थे। क्योंकि वह बड़ा भारी योद्धा था। इसके अतिरिक्त यूनानियों ने ट्रोयवालों से कई बार क्रैसीडा को माँगा था, परन्तु वे उसे देना स्वीकार न करते थे। अब काल्कस ने अगामैम्नन से प्रार्थना की कि आप कृपा करके मेरी सेवा के बदले मुझे एक वर दीजिए, अर्थात् एण्टीनर के

बदले क्रैसीडा को माँग लीजिए। मुझे विश्वास है कि वे अवश्य क्रैसीडा को देकर एण्टीनर को लेना पसन्द करेंगे।

अगामैम्नन ने काल्कस की प्रार्थना स्वीकार कर ली और एक यूनानी जनरल डाइमीडीस से कहा कि तुम क्रैसीडा को ले आओ।

ट्रॉयवाले इस बात पर राज़ी हो गये और क्रैसीडा को देने की तैयारियाँ होने लगीं।

इस समय क्रैसीडा अपने प्यारे के साथ बैठी बातचीत का सुख प्राप्त कर रही थी कि उसका चचा पण्डारस हाय हाय करता वहाँ पहुँचा। क्रैसीडा घबराकर कहने लगी—प्यारे चचा, क्या बात है? आप क्यों इस प्रकार दुखी हैं?

पण्डारस—आज यदि मैं मर जाता तो अच्छा होता।

क्रैसीडा—क्यों क्यों!

पण्डारस—अच्छा होता अगर तू जन्मते ही मर जाती। हाय हाय! अब ट्रोइलस पर कैसी बीतेगी! दुष्ट एण्टीनर का सत्यानाश हो।

क्रैसीडा—क्यों क्यों?

पण्डारस—अब तुझे जाना होगा। अब तुझे जाना होगा! एण्टीनर के बदले तुझे दे दिया है। अब तू अपने बाप के पास जाती है। ट्रोइलस से अब तेरा मिलना न होगा।

क्रैसीडा—भगवन्, मैं नहीं जाने की।

पण्डारस—तुझे जाना पड़ेगा।

क्रैसीडा—मैं न जाऊँगी। मैं तो अपने पिता को भूल गई। अब ट्रोइलस के समान मेरा कोई हितू नहीं है। चाहे मेरे प्राण ही क्यों न जायँ, मैं ट्रोय से नहीं जाऊँगी।

वह ट्रोइलस से कहने लगी—क्या यह सच है कि मुझे ट्रोय से जाना होगा?

ट्रोइलस—(उदास होकर) हाँ।

क्रैसीडा—क्या ट्रोइलस से भी?

ट्रोइलस—ट्रोय और ट्रोइलस दोनों से!

अभी ये बातें हो ही रही थीं कि ईनियस और डाइमीडीस क्रैसीडा को लेने के लिए वहाँ पर आ गये। क्रैसीडा कहने लगी—क्या अब मैं यूनान को जाऊँगी?

ट्रोइलस—कुछ उपाय नहीं है।

क्रैसीडा—क्या अभागी क्रैसीडा प्रसन्नचित्त यूनानियों के घर जायगी! हाय! अब तुमसे कब भेंट होगी?

ट्रोइलस—प्यारी सच्ची रहना।

क्रैसीडा—मैं सच्ची! यह क्या?

ट्रोइलस—क्षमा करो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हृदय में कोई कपट नहीं है। परन्तु मैं चलते समय तुमसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि यदि तू सच्ची रहेगी तो मैं तुझसे अवश्य भेंट करूँगा।

क्रैसीडा—मैं तो सच्ची रहूँगी। परन्तु आपको आने में बड़ी आपत्ति का सामना करना होगा।

ट्रोइलस—मैं इस दस्ताने को देता हूँ। इसे अपने पास रक्खो। तुम्हारे मिलने के लिए मैं हर एक आपत्ति को तुच्छ समझता हूँ।

क्रैसीडा—आप भी इस दस्ताने को रखिए। अब तुम कब मिलोगे?

ट्रोइलस—मैं यूनानी द्वारपालों को फुसलाकर रात के समय तुम्हारे पास आया करूँगा। परन्तु सच्ची रहना।

क्रैसीडा—हाय हाय! फिर वही बात!

ट्रोइलस—मैं ये सब बातें इसलिए कहता हूँ कि यूनान के लोग बड़े योग्य, सुन्दर, शान्त-चित्त, नीरोग तथा प्रेम-शाली हैं। इसलिए मुझे डर लगता है कि कहीं तुम्हारा मन विचलित न हो जाय।

क्रैसीडा—शिव! शिव! तुम मुझसे प्रेम नहीं करते!

ट्रोइलस—यदि ऐसा हो तो ईश्वर मेरा बुरा करे। ऐस कहने से यह तात्पर्य्य नहीं कि मुझे तुम्हारे सतीत्व प सन्देह है, किन्तु अपनी योग्यता पर। मुझे यूनानिये जैसी बातें बनाना नहीं आता। इसलिए उनके छल में न फँस जाना।

क्रैसीडा—क्या तुम समझते हो कि मैं फँस जाऊँगी?

ट्रोइलस—नहीं नहीं। परन्तु मनुष्य कभी-कभी धोखा ख जाता है।

अब इन दोनों के बिछुड़ने का समय आया और कैसीडा डाइमीडीस के हवाले कर दी गई।

जिस समय कैसीडा यूनानी कैम्प में पहुँची, वे लोग बहुत ख़ुश हुए और उसका बड़ा आदर किया गया। काल्कस अपनी पुत्री को देखकर बड़ा आनन्दित हुआ और कैसीडा डाइमीडीस के संरक्षण में रहने लगी।

हम ऊपर कह चुके हैं कि अजाक्स और हैक्टर का मल्लयुद्ध होनेवाला था। अब उसका समय निकट आ गया और नियत स्थान पर अखाड़े में वे दोनों योद्धा कवच धारण किये हुए आ गये। इनके अतिरिक्त दोनों दलों के प्रसिद्ध वीर पुरुष तमाशा देखने के लिए वहाँ उपस्थित हुए। अखाड़े में आते ही दोनों की मुठभेड़ हुई और दोनों एक दूसरे पर झपट करने लगे। परन्तु युद्ध समान रहा। अन्त में दोनों एक दूसरे का आलिङ्गन करके अलग हुए।

इसके पश्चात हैक्टर ने यूनानी कैम्प में भोजन किया और सब लोगों से भेंट की। हैक्टर के साथ उसका छोटा भाई ट्रोइलस भी था, जिसने अपनी प्रियतमा कैसीडा से भेंट करने का प्रण कर रक्खा था। अन्य ट्रॉय-निवासियों के वहाँ से चले जाने पर ट्रोइलस रह गया। वह उलीसिस से कहने लगा—श्रीमन, कृपा करके मुझे बतलाइए कि काल्कस कहाँ रहता है।

उलीसिस—राजकुमार ट्रोइलस, काल्कस इस समय मैनीलस के डेरे में रहता है। डाइमीडीस भी आजकल वहीं

है जिसकी दृष्टि न आकाश की ओर उठती है और न भूमि पर पड़ती है, किन्तु निरन्तर रूपवती क्रैसीडा के ही मुख पर लगी रहती है।

ट्रोइलस—क्या श्रीमान् मेरे ऊपर इतनी दया करेंगे कि मुझे काल्कस के स्थान तक पहुँचा दें?

उलीसिस—मैं सब तरह आपका सेवक हूँ। परन्तु यह तो बताइए कि आपके ट्रोय में क्रैसीडा का कैसा सम्मान होता था? क्या वहाँ उसका कोई ऐसा प्यारा नहीं है जो उसकी अनुपस्थिति में आज शोक कर रहा हो?

ट्रोइलस—कृपा करके मुझे ले चलिए। उसके प्यारे थे जिनसे वह भी प्यार करती थी और वे अब भी हैं। वह अब भी उनको प्यार करती है। परन्तु बात यह है कि सुख वही भोगता है जिसका भाग्य हो।

अब वे दोनों काल्कस के स्थान को चल दिये। ट्रोइलस का हृदय धीरे-धीरे धड़क रहा था, जिस प्रकार किसी बड़े उत्सुक पुरुष की दशा होती है जब कि उसकी अभीष्ट वस्तु प्राप्त होनेवाली हो। ट्रोइलस को आशा थी कि जिस प्रियतमा का वह बहुत दिनों से चिन्तन कर रहा था उससे अब भेंट होगी। परन्तु मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ और है। दैवगति विचित्र है। भावी को किसी ने नहीं देखा।

जिस समय ट्रोइलस काल्कस के डेरे से थोड़ी दूर पर पहुँचा, उसने देखा कि क्रैसीडा और डाइमीडीस अगाध प्रेम

के साथ मुँह पर मुँह रक्खे हुए बातें कर रहे हैं। ट्रोइलस ने दूर से इतनी बात सुनी—

डाइमीडीस—कहो प्यारी क्रैसीडा !

क्रैसीडा—प्यारे संरक्षक ! एकान्त में एक बात सुनिए।

यह गुप्त वार्तालाप ट्रोइलस के कानों तक न पहुँच सका, परन्तु उसे मालूम हो गया कि जिस क्रैसीडा पर पहले उसे शङ्का होती थी और जिससे वियोग के समय उसने न भूलने और सच्चो रहने के लिए प्रतिज्ञा कराई थी वही क्रैसीडा उसके शत्रु से ऐसा व्यवहार करने लगी मानों ट्रोइलस उसके सामने कुछ भी न था अथवा ट्रोइलस को उसने कभी नहीं देखा था। उसके मन को बड़ी चोट लगी। फिर उसने सुना—

डाइमीडीस—याद रखना।

क्रैसीडा—याद ? अवश्य ! अवश्य !

डाइमीडीस—याद रखना और अब भी बात का पालन करना।

क्रैसीडा—प्यारे यूनानी, इससे अधिक मुझे न फुसला।

डाइमीडीस—तो नहीं—

क्रैसीडा—मेरी बात तो सुनो।

डाइमीडीस—तुम झूठी हुई जाती हो।

क्रैसीडा—कदापि नहीं; तुम मुझसे क्या चाहते हो ?

डाइमीडीस—तुमने मुझे क्या देने के लिए कहा था ?

क्रैसीडा—उस बात को जाने दो, और जो चाहो सो करूँ।

डाइमीडीस—अच्छा, प्रणाम !

क्रैसीडा—डाइमीडीस !

डाइमीडीस—नहीं नहीं ! अब मैं जाता हूँ। मैं तुम्हारी चालों मे न आऊँगा।

क्रैसीडा—कान मे एक बात सुन लो।

अब उसने कुछ कान में कहा। इस पर डाइमीडीस क्रुद्ध होकर चलने लगा। तब क्रैसीडा बोली—तुम .गुस्से से जाते हो। एक बात और सुनते जाओ।

डाइमीडीस—तो क्या तुम अपने वचन को पालोगी ?

क्रैसीडा—न पालूँ तो कभी विश्वास न करना।

डाइमीडीस—अच्छा कुछ चिह्न दो।

क्रैसीडा—(ट्रोइलस का दिया दस्ताना देकर) लो, इस दस्ताने को रक्खो।

अब क्रैसीडा को ट्रोइलस का ख़याल आ गया और दस्ताने को पीछे हटाकर कहने लगी—वह मुझे प्यार करता था। मैं अब इसको न दूँगी।

डाइमीडीस—यह किसका है ?

क्रैसीडा—इससे क्या प्रयोजन ? अब मेरे पास न आना। यहाँ से चले जाओ।

डाइमीडीस—मैं इसे लेकर जाऊँगा।

क्रैसीडा—क्या इसे ?

डाइमीडीस—हाँ इसे।

क्रैसीडा—(दस्ताने को चूमकर) तेरा स्वामी आज अकेला पलँग पर पड़ा हुआ मेरी और तेरी याद कर रहा होगा ! और मेरे दस्ताने को इसी प्रकार चूम रहा होगा जैसे मैं तुझे चूमती हूँ। (डाइमीडीस से) इसे मत लो। मैं तुमको और चीज दूँगी।

डाइमीडीस—मन तो दे चुकीं अब इसको भी देदो।

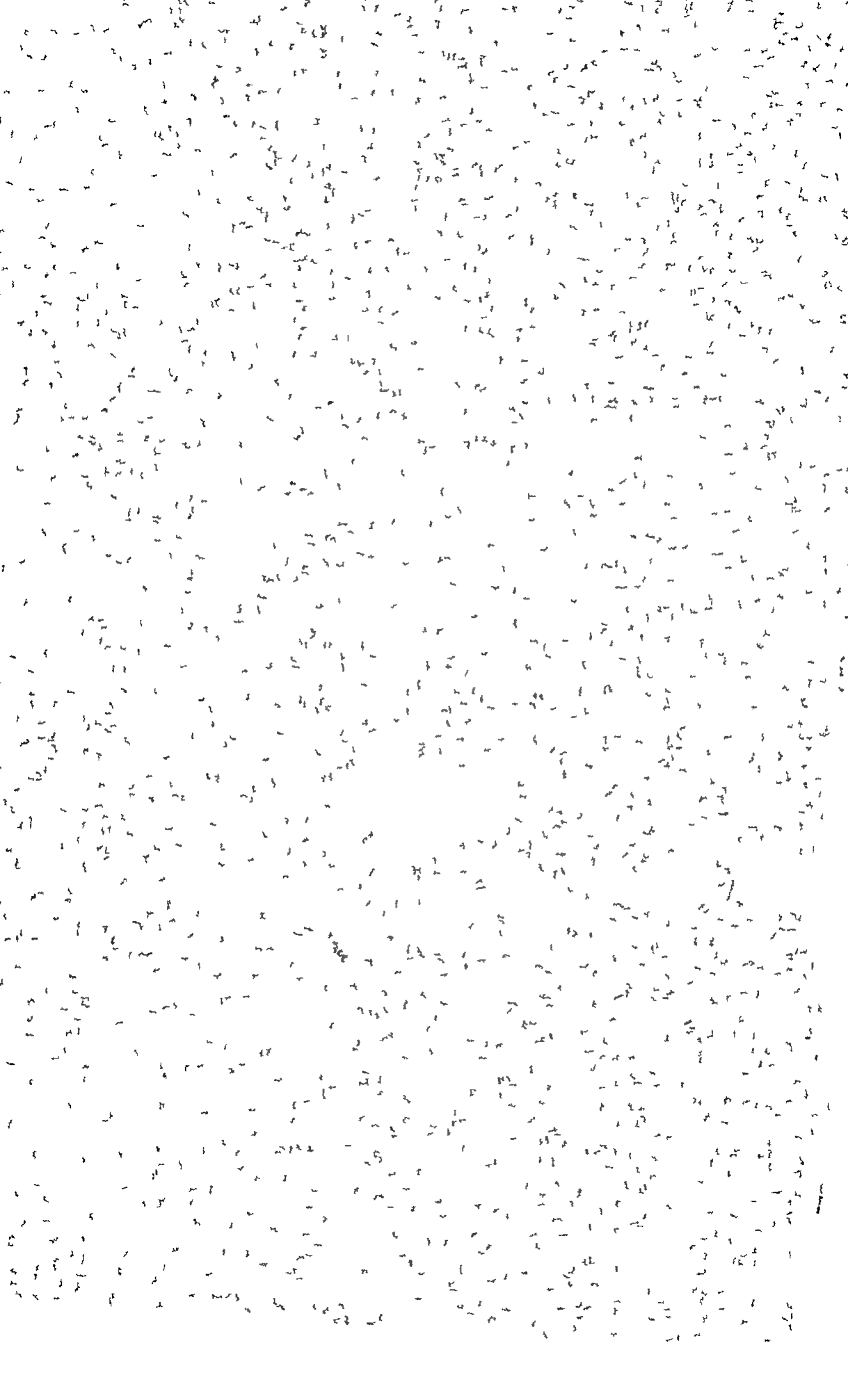
क्रैसीडा—नहीं दूँगी।

डाइमीडीस—मैं तो लूँगा। यह किसका है ?

क्रैसीडा—मैं नहीं कहूँगी।

इस झञ्झट के बाद क्रैसीडा ने दस्ताना दे दिया और ट्रोइलस का हृदय, जो इस दुःखदायी दृश्य को दूर से देख रहा था, टूक-टूक हो गया। प्रिया से भेंट किये बिना ही ट्रोइलस वहाँ से चल दिया। सच बात तो यह थी कि क्रैसीडा अब ट्रोइलस की प्रिया ही न थी, किन्तु उसका चित्त डाइमीडीस की ओर लग गया था।

वहाँ से ट्रोइलस के चले आने पर कुछ दिनों पीछे यूनानी और ट्रोय के दलों में बड़ा भारी युद्ध हुआ। हैक्टर मारा गया; ट्रोयवालों के बहुत-से आदमी काम आये और यूनानियों की विजय हुई। ट्रोय का नाश हो गया।



हिन्दी-शेक्सपियर

चतुर्थ भाग



गंगाप्रसाद, एम. ए.

हिन्दी-शेक्सपियर

चौथा भाग

लेखक

गंगाप्रसाद, एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९२५

[मूल्य ।।=)

Published by
K Mittra,
at The Indian Press, Ltd.,
Allahabad.

Printed by
Bishweshwar Prasad,
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch.

What needs my Shakespeare for his honoured bones
The labour of an age in piled stones?
Or that his hallowed reliques should be hid
Under a starry-pointing pyramid?
Dear son of memory, great heir of fame,
What need'st thou such weak witness of thy name?
Thou in our wonder and astonishment
Has built thyself a lifelong monument

—Milton

विषय-सूची

शेक्सपियर का "नाट्य"

काव्य के दो भेद हैं, (१) "श्रव्य" और (२) "दृश्य"। 'श्रव्य' वे हैं जो केवल कानों द्वारा सुने जाते हैं। 'दृश्य' वे हैं जिनको 'नाट्य' करके नाट्यशाला मे दिखाते हैं। महाकवि कालिदास का रघुवंश 'श्रव्य' है और 'शकुन्तला' तथा 'विक्रमोर्वशी' दृश्य हैं। शेक्सपियर के मुख्य-मुख्य काव्य केवल 'दृश्य' ही हैं और वे अपनी कोटि मे सर्वोपरि गिने जाते हैं। शेक्सपियर मे एक विलक्षण बात यह है कि वह न केवल कवि ही था, किन्तु नाटककार भी; अर्थात् अपनी कविता के साथ-साथ वह अभिनय भी करता था। इसी कारण उसके रचे नाटकों मे एक प्रकार की सरलता और सरसता पाई जाती है। जहाँ शेक्सपियर नाटक रचने के लिए प्रसिद्ध है वहाँ वह अपने जीवन-समय मे 'नाट्य' खेलने के लिए भी कुछ कम प्रसिद्ध न था, इसलिए यहाँ हम सूक्ष्मतया उसकी नाट्यप्रवीणता का वर्णन करना चाहते हैं*।

---

*अँगरेज़ी भाषा मे 'श्रव्य' नाटक भी पाये जाते हैं, जैसे मिल्टन का सैम्सन एगोनिस्टीज़ (Samson Agonistis)। ऐसे नाटक कभी नाट्यशाला में दिखाने के लिए नहीं लिखे गये, किन्तु वे अन्य काव्यों की भाँति काव्य-मात्र हैं। परन्तु नाट्यशास्त्र में दक्ष होने के कारण शेक्सपियर ने इस प्रकार के नाटक नहीं लिखे।

हम जीवन-चरित में पढ़ चुके हैं कि १५८६ ई० में जब शेक्सपियर घर से भागकर लन्दन आया तब उसका किसी विशेष मनुष्य से परिचय न था। उसने एक नाट्यशाला में घोड़े पकड़ने का कार्य कर लिया। परन्तु इसमे सन्देह नहीं कि बहुत जल्दी वह उच्च पद पर नियत हो गया।

शेक्सपियर सबसे पहले अभिनय करने की कला मे प्रसिद्ध हुआ; यद्यपि थोड़े दिनों पीछे नाट्य-रचना में उसका नाम इतना बढ़ गया कि नाट्य-खेलने की उसकी कीर्ति दब गई।

सन् १५७१ ई० में अँगरेज़ी राजसभा (पार्लीमेंट) ने एक नियम पास किया कि जो अभिनेता लोग किसी प्रसिद्ध पुरुष या राजा महाराजा की आज्ञा विना नाट्य किया करेंगे उनको साधारण जीविका-रहित नीच पुरुष समझा जायगा। इसलिए नाटक करनेवालों को बड़े-बड़े लार्डों से आज्ञा-पत्र प्राप्त करना पड़ता था और नाट्यसभाएँ प्राय: इन्हीं प्रसिद्ध जनों के नाम से पुकारी जाती थीं। १५८७ ई० मे इस प्रकार की आठ या नौ कम्पनियाँ अर्थात् सभाएँ लन्दन मे विद्यमान थीं और शेक्सपियर इनमें से किसी न किसी में नाट्य किया करता था। एक कम्पनी इनमें से महारानी-कम्पनी कहलाती थी; क्योंकि इनको आज्ञापत्र सीधा महारानी एलीज़बेथ से मिला था।

सबसे बड़ी नाट्यसभा लार्ड लीसेस्टर कम्पनी थी जो लार्ड लीसेस्टर की मृत्यु पर, १५८८ ई० मे, अर्ल आफ़ डर्बी

कम्पनी हो गई और १५९४ ई० मे यही कम्पनी लार्ड चैम्बर-लेन्स कम्पनी हो गई, क्योंकि लार्ड डर्बी की मृत्यु पर इनको लार्ड चैम्बरलेन से आज्ञापत्र लेना पड़ा। हमको इस सभा के बहीखातों से विदित होता है कि १५९४ ई० में शेक्सपियर इसका सभासद था और १६०३ ई० मे वह इसके अधिष्ठाताओं मे था। सबसे बड़े और प्रसिद्ध नाट्य-प्रवीण पुरुष रिचार्ड वर्बेज, जौन हैमिङ्ग, हनरी कौण्डल, और अगस्टाइन फ़िलिप्स, शेक्सपियर के परम मित्रो मे थे। शेक्सपियर के रचे हुए नाटक भी प्रायः पहले पहल इसी कम्पनी-द्वारा खेले गये थे।

उस समय लन्दन मे दो प्रसिद्ध रङ्ग-भूमियाँ अर्थात् नाट्य शालाएँ (Theatres) थीं। एक 'दी थियेटर,' दूसरी 'दी कर्टेन'। शेक्सपियर की कम्पनी ने १५९२ ई० में एक और नाट्यशाला खोली, जिसका नाम 'दी रोज़' रक्खा गया। 'दी रोज़' में ही शेक्सपियर अभिनय किया करता था। १५९४ ई० मे वह 'न्यू इंगटन वट्स,' नाम की नाट्यशाला मे अभिनय करने लगा और १५९५ से १५९९ ई० तक पुरानी नाट्य-शालाओं अर्थात् 'दी कर्टेन' और 'दी थियेटर' में उसनें अभिनय किये। १५९९ ई० में रिचार्ड वर्बेज ने 'दी थियेटर' की दीवारों को गिराकर 'दी ग्लोब' नामक एक नई नाट्यशाला बनाई। यह अठपहलू और लकड़ी की बनी हुई थी। शायद शेक्सपियर ने 'पञ्चम हनरी' नामक नाटक में इसी नाट्यशाला

हम जीवन-चरित मे पढ़ चुके हैं कि १५८६ ई० मे जब शेक्सपियर घर से भागकर लन्दन आया तब उसका किसी विशेष मनुष्य से परिचय न था। उसने एक नाट्यशाला मे घोड़े पकड़ने का कार्य कर लिया। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि बहुत जल्दी वह उच्च पद पर नियत हो गया।

शेक्सपियर सबसे पहले अभिनय करने की कला में प्रसिद्ध हुआ; यद्यपि थोड़े दिनों पीछे नाट्य-रचना मे उसका नाम इतना बढ़ गया कि नाट्य-खेलने की उसकी कीर्ति दब गई।

सन् १५७१ ई० में अँगरेज़ी राजसभा (पार्लमेंट) ने एक नियम पास किया कि जो अभिनेता लोग किसी प्रसिद्ध पुरुष या राजा महाराजा की आज्ञा विना नाट्य किया करेंगे उनको साधारण जीविका-रहित नीच पुरुष समझा जायगा। इसलिए नाटक करनेवालों को बड़े-बड़े लार्डों से आज्ञा-पत्र प्राप्त करना पड़ता था और नाट्यसभाएँ प्रायः उन्हीं प्रसिद्ध जनों के नाम से पुकारी जाती थीं। १५८७ ई० मे इस प्रकार की आठ या नौ कम्पनियाँ अर्थात् सभाएँ लन्दन मे विद्यमान थीं और शेक्सपियर इनमें से किसी न किसी में नाट्य किया करता था। एक कम्पनी इनमें से महारानी-कम्पनी कहलाती थी; क्योंकि इनको आज्ञापत्र सीधा महारानी एलीज़बेथ से मिला था।

सबसे बड़ी नाट्यसभा लार्ड लीसेस्टर कम्पनी थी जो लार्ड लीसेस्टर की मृत्यु पर, १५९२ ई० मे, अर्ल आफ़ डर्बी

कम्पनी हो गई और १५९४ ई० मे यही कम्पनी लार्ड चैम्बर-लेन्स कम्पनी हो गई, क्योंकि लार्ड डर्बी की मृत्यु पर इनको लार्ड चैम्बरलेन से आज्ञापत्र लेना पड़ा। हमको इस सभा के बहीखातों से विदित होता है कि १५९४ ई० मे शेक्सपियर इसका सभासद था और १६०३ ई० मे वह इसके अधि-ष्ठाताओ मे था। सबसे बड़े और प्रसिद्ध नाट्य-प्रवीण पुरुष रिचार्ड बर्बेज, जौन हैमिङ्ग, हनरी कौण्डल, और अगस्टाइन फ़िलिप्स, शेक्सपियर के परम मित्रो मे थे। शेक्सपियर के रचे हुए नाटक भी प्रायः पहले पहल इसी कम्पनी-द्वारा खेले गये थे।

उस समय लन्दन मे दो प्रसिद्ध रङ्ग-भूमियाँ अर्थात् नाट्य शालाएँ (Theatres) थीं। एक 'दी थियेटर,' दूसरी 'दी कर्टेन'। शेक्सपियर की कम्पनी ने १५९२ ई० में एक और नाट्यशाला खोली, जिसका नाम 'दी रोज़' रक्खा गया। 'दी रोज़' मे ही शेक्सपियर अभिनय किया करता था। १५९४ ई० मे वह 'न्यू इंगटन बट्स,' नाम की नाट्यशाला में अभि-नय करने लगा और १५९५ से १५९९ ई० तक पुरानी नाट्य-शालाओं अर्थात् 'दी कर्टेन' और 'दी थियेटर' मे उसनें अभि-नय किये। १५९९ ई० मे रिचार्ड बर्बेज ने 'दी थियेटर' की दीवारों को गिराकर 'दी ग्लोब' नामक एक नई नाट्यशाला बनाई। यह अठपहलू और लकड़ो की बनी हुई थी। शायद शेक्सपियर ने 'पञ्चम हनरी' नामक नाटक में इसी नाट्यशाला

को अँगरेज़ी अक्षर (o) के आकार का बताया है। १५९९ ई० से यह नाट्यशाला शेक्सपियर की कम्पनी के हाथ में रही और इसके लाभ मे उसको भाग मिलता रहा। अपने अन्तिम दिनों अर्थात् १६०९ या १६१० ई० मे शेक्सपियर 'दी ब्लैक फ़ायर्स थियेटर' नामक नाट्यशाला मे भी खेलने लगा। परन्तु यहाँ वह बहुत दिनों तक न रहा। इसी नाट्यशाला की जगह पर आजकल 'कोन विक्टोरिया स्ट्रीट' में 'दी टाइम्स' नामक समाचार-पत्र का कार्यालय है।

नाट्य-शास्त्र की प्रवीणता मे शेक्सपियर बहुत प्रसिद्ध है। १५९२ ई० मे चीटिल ने लिखा था कि शेक्सपियर अपने काम में बहुत दक्ष है। 'विलियम बीस्टन' नामक एक बड़े प्रसिद्ध नाटक खेलनेवाले ने बहुत दिनों पीछे लिखा था कि शेक्सपियर नाट्य-विद्यानिधान था। १५९४ ई० के बड़े दिन पर विलियम कैम्प और रिचार्ड बर्बेज़ के साथ इसने ग्रीनिच के महल में महारानी एलीज़बेथ की उपस्थिति में नाटक खेले थे। इन सबको बीस पौंड इनाम मिला था। बैन जौनसन के लिखे हुए "Every man in his Humour" नामक नाटक को पहले पहल खेलनेवालों मे शेक्सपियर भी था। उसी कवि के एक दूसरे नाटक सिजैनस (Sejanus) के खेलनेवालों मे भी शेक्सपियर का नाम मिलता है। रो का कथन है कि अपने 'हैम्लिट' नामक नाटक में वह 'भूत' बना करता था, और "As you like it" में 'आदम'।

१६२३ ईसवी मे उसके नाटकों की जो सूची तैयार की गई थी उसके मुख्य खेलनेवालों में स्वयं उसका नाम भी है। इन सब बातो से प्रतीत होता है कि शेक्सपियर को नाट्य करने का बड़ा शौक़ था और उसने इस कला मे बड़ा नाम पैदा किया था। बैन जौनसन ने इसी कारण निम्नलिखित प्रशंसा-युक्त पद्य लिखा है।—

"Sweet Swan of Avon ' what a sight it were
To see thee on our waters yet appear,
And make those flights upon the banks of Thames
That so did take Eliza and our James"

सुनिये विनती कलहंसकुलेन्द्र,
सुएवन-मानस केर विहारी।
उड़ते अबहूँ तट टेमस पै,
तुम वाहि उड़ान सदा सुखकारी॥
लखि कै जेहि एलिजबेथ कोन,
मुदै लहती मन मे हितकारी।
नृप जेम्स प्रभू मन ही मन मे,
जिमि होत प्रसन्न हते लखि प्यारी॥

शेक्सपियर-लिखित एक पद्य से बहुत से लोग यह समझते हैं कि उसे केवल रुपया कमाने के लिए रङ्गभूमि मे जाना पड़ा; नहीं तो उसे यह काम प्रिय न था। वह लिखता है—

Alas! 'tis true I have gone here and there,
And myself a motley to the view

अर्थात् "शोक है कि मुझे इधर-उधर जाना पड़ा और सबके सामने वेष धारण करने पड़े।" सम्भव है, किसी विशेष समय विशेष कारणों से शेक्सपियर को नाट्य से घृणा हो गई हो, परन्तु यह उसका स्वभाव नहीं था। जिस मनुष्य ने तीस वर्ष तक, अर्थात् १५८६ से १६०६ ई० तक, अपने जीवन का बहुमूल्य समय नाटक रचना करने और नाटक खेलने के अतिरिक्त और किसी बात में व्यय न किया हो उसके लिए यह कहना कि उसे नाट्य से घृणा थी, अनुचित ही नहीं, सर्वथा मिथ्या है। यदि हम शेक्सपियर के जीवन से नाट्य-प्रियता को निकाल लें तो उसका जीवन ही निर्जीव प्रतीत होने लगता है और शेक्सपियर और अफ्रीका के एक अज्ञ नीग्रो में कुछ भेद नहीं रह जाता; क्योंकि एक नाट्यप्रेमी मनुष्य ही ऐसे विचित्र ग्रन्थ लिख सकता है। जिन कहानियों को शेक्सपियर ने लिया है वे नई नहीं हैं और किसी न किसी अवस्था में वे पहले भी विद्यमान थीं। कोई-कोई तो नाटक-रूप से भी विद्यमान थीं। परन्तु यह केवल शेक्सपियर की नाट्य-कला की कुशलता ही थी जो उन कहानियों को ऐसे मनोहर और हृदय-रूप में दिखाता है। क्या किसी इतिहास-वेत्ता या इतिहासलेखक से यह आशा हो सकती थी कि जूलियस सीज़र, पञ्चम हनरी या तृतीय रिचार्ड के जीवन को ऐसे मनो-

रञ्जक रूप में प्रकट कर सकता। जो हो, इसमें सन्देह नहीं कि नाट्यविद्या का उसे पूरा-पूरा ज्ञान था और यही कारण है कि शेक्सपियर इतना नाम पा सका।

शेक्सपियर के नाटकों के सर्वप्रिय होने का मुख्य कारण यही है कि वह स्वयं नाट्य करता था। इसके चिह्न उसकी सब पुस्तकों में पाये जाते हैं। बहुत सी बाते तो ऐसी हैं कि वे केवल रङ्ग-भूमि मे ही सीखी जा सकती हैं या कम से कम उसी को सूझ सकती हैं जो नाट्य करता हो। 'अष्टम हनरी' नामक नाटक मे वह लिखता है—

'Tis ten to one this play can never please
All that are here ! some come to take their ease
And sleep an act or two, but those we fear
We have frighted with our trumpets

अर्थात् "अधिकतः यह कहा जा सकता है कि यह नाटक उन सबको प्रसन्न नहीं कर सकता जो यहाँ उपस्थित हैं। बहुत से इसी लिए आते हैं कि एक आध अङ्क मे सो जाते हैं और फिर हमारे बाजे की ध्वनि से जाग पड़ते हैं।"

इसी प्रकार 'पञ्चम हनरी' की प्रस्तावना में उसने श्रोताओं से क्षमा की प्रार्थना की है कि रङ्गभूमि 'अज़ीनकूर' रणक्षेत्र के समान नहीं है और इस पर सेनाएँ नहीं आ सकतीं। इसलिए आप अपने मन मे इस छोटी सी जगह को कल्पना-द्वारा बड़ा बना लीजिए।

ये सब बातें केवल एक नट को सूझ सकती हैं। अन्य चाहे कितना ही बुद्धिमान् क्यों न हो, उसे ये बातें सूझना दुस्तर हैं। 'हैम्लिट' में वह अन्य नवीन नाट्यसभाओं की बुराई करता है और कहता है कि "आजकल नये छोकरे चिल्ला-चिल्लाकर अभिनय करते हैं और अपने को नट कहने लगते हैं।"

इससे प्रतीत होता है कि हैम्लिट का लिखनेवाला स्वयं भी अभिनेता था और अपने सहयोगी सहव्यवसायियों की समालोचना भी करता था। एक स्थान पर वह लिखता है—

"All the world 's a stage and the men and women merely players."

अर्थात् "संसार एक रङ्गभूमि है और स्त्री-पुरुष केवल नट-नटी हैं।"

'कोरियोलेनस' में वह लिखता है—

"Like a dull actor now I have forgot my part and I am out even to a full disgrace."

अर्थात् "एक सुस्त नाट्य करनेवाले के समान मैं अपना पार्ट भूल गया और अब लज्जित हो रहा हूँ।"

इन सबसे यही विदित होता है कि अन्य कवियों की भाँति शेक्सपियर केवल कवि ही न था किन्तु नट भी था। इसी लिए वह बहुत से उत्तम नाटक लिख सका।

पाश्चात्य और पूर्वीय नाट्य-नियमों में भेद है। भारत-वर्ष नाटकों का शिरोमणि था। यहाँ प्राचीन समय में इतने

नाटक खेले जाते थे कि जिनकी गणना नहीं हो सकती। कालिदास और भवभूति हमारे देश के शिरोमणि हैं। शकुन्तला और उत्तर-रामचरित सर्वगुणसम्पन्न समझे जाते हैं। 'शकुन्तला' की प्रशंसा तो बड़े-बड़े जर्मन और अँगरेज़ विद्वानों ने की है और यदि आज 'संस्कृत' ऐसी ही सर्व-प्रिय और प्रचलित भाषा होती तो हमको पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत के अपूर्व नाटक भी जगद्विख्यात हो जाते। परन्तु इन नाटकों के लिखनेवाले अभिनय नहीं करते थे और यदि करते रहे हों तो इसका कुछ पता नहीं। दूसरा भेद पश्चिमी और पूर्वी नाटक-लेखकों में यह है कि भारतवर्ष के लोग प्राचीन नियमों में अधिक आबद्ध हो गये थे और कैसी ही आवश्यकता क्यों न हो उनका उल्लङ्घन नहीं करते थे। पश्चिम में यह बात न तो थी और न है। शेक्सपियर ने किन्हीं नियत नियमों का पालन नहीं किया, किन्तु जिस प्रकार एक योद्धा अखाड़े में जाकर नये-नये दाव-पेच खेलता है और देश-काल के अनुसार नई-नई बातें निकालता है, उसी प्रकार शेक्सपियर नये अवसर पर नये ढँग निकालता था।

भारतवर्षीय नाटकों का नियम है कि इनका परिणाम हर्षदायक ही होता है; परन्तु पाश्चात्य देशों का यह नियम नहीं। यूनानी लोग प्रायः उन्हीं नाटकों को उत्तम समझते थे जिनमें दुःखों की महत्ता प्रकट की जाती थी। भारतीय नाटकों में हत्या इत्यादि अमङ्गल अप्रदर्शनीय बातों को रङ्ग-भूमि

ये सब बातें केवल एक नट को सूझ सकती हैं। अन्य चाहे कितना ही बुद्धिमान् क्यों न हो, उसे ये बातें सूझना दुस्तर हैं। 'हैम्लिट' में वह अन्य नवीन नाट्यसभाओं की बुराई करता है और कहता है कि "आजकल नये छोकरे चिल्ला-चिल्लाकर अभिनय करते हैं और अपने को नट कहने लगते हैं।"

इससे प्रतीत होता है कि हैम्लिट का लिखनेवाला स्वयं भी अभिनेता था और अपने सहयोगी सहव्यवसायियों की समालोचना भी करता था। एक स्थान पर वह लिखता है—

"All the world 's a stage and the men and women merely players"

अर्थात् "संसार एक रङ्गभूमि है और स्त्री-पुरुष केवल नट-नटी हैं।"

'कोरियोलेनस' में वह लिखता है—

"Like a dull actor now I have forgot my part and I am out even to a full disgrace."

अर्थात् "एक सुस्त नाट्य करनेवाले के समान मैं अपना पार्ट भूल गया और अब लज्जित हो रहा हूँ।"

इन सबसे यही विदित होता है कि अन्य कवियों की भाँति शेक्सपियर केवल कवि ही न था किन्तु नट भी था। इसी लिए वह बहुत से उत्तम नाटक लिख सका।

पाश्चात्य और पूर्वीय नाट्य-नियमों में भेद है। भारतवर्ष नाटकों का शिरोमणि था। यहाँ प्राचीन समय में इतने

नाटक खेले जाते थे कि जिनकी गणना नहीं हो सकती। कालिदास और भवभूति हमारे देश के शिरोमणि हैं। शकुन्तला और उत्तर-रामचरित सर्वगुणसम्पन्न समझे जाते हैं। 'शकुन्तला' की प्रशंसा तो बड़े-बड़े जर्मन और अँगरेज़ विद्वानों ने की है और यदि आज 'संस्कृत' ऐसी ही सर्व-प्रिय और प्रचलित भाषा होती तो हमको पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत के अपूर्व नाटक भी जगद्विख्यात हो जाते। परन्तु इन नाटकों के लिखनेवाले अभिनय नहीं करते थे और यदि करते रहे हों तो इसका कुछ पता नहीं। दूसरा भेद पश्चिमी और पूर्वी नाटक-लेखकों मे यह है कि भारतवर्ष के लोग प्राचीन नियमों मे अधिक आबद्ध हो गये थे और कैसी ही आवश्यकता क्यों न हो उनका उल्लङ्घन नहीं करते थे। पश्चिम मे यह बात न तो थी और न है। शेक्सपियर ने किन्हीं नियत नियमों का पालन नहीं किया, किन्तु जिस प्रकार एक योद्धा अखाड़े मे जाकर नये-नये दाव-पेच खेलता है और देश-काल के अनुसार नई-नई बाते निकालता है, उसी प्रकार शेक्सपियर नये अवसर पर नये ढँग निकालता था।

भारतवर्षीय नाटकों का नियम है कि इनका परिणाम हर्षदायक ही होता है; परन्तु पाश्चात्य देशों का यह नियम नहीं। यूनानी लोग प्रायः उन्हीं नाटकों को उत्तम समझते थे जिनमे दुःखों की महत्ता प्रकट की जाती थी। भारतीय नाटकों मे हत्या इत्यादि अमङ्गल अदर्शनीय बातों को रङ्ग-भूमि

में नहीं दिखलाते। किन्तु इनके लिए उचित स्थान नेपथ्य है। बुरी बातों को लोग सभा के सम्मुख उच्चारण भी नहीं करते और यदि किसी की मृत्यु अथवा अन्य दुर्दशा का वर्णन करना हो तो कान में कह देते हैं। परन्तु पाश्चात्य नाटकों में ये सब काम रङ्ग-भूमि में किये जा सकते हैं और सभा में बैठे हुए श्रोता किसी को मरते देखकर घृणा नहीं करते। यह केवल रुचि-भेद है।

शेक्सपियर इन सब प्रकार के भावों से अभिज्ञ था और हमारा तो यह विचार है कि उसके नाटक भारत-वासियों को भी उतने ही प्रिय हो सकते हैं जितने अन्य देश के लोगों को।

लेखक



हिन्दी-शेक्सपियर

चौथा भाग

हैम्लिट

डैन्मार्क का राजकुमार

HAMLET, PRINCE OF DENMARK

डैन्मार्क के राजा हैम्लिट की आकस्मिक मृत्यु पर उसकी विधवा महारानी गर्ट्रूड ने दो महीने के भीतर ही भीतर राजा के भाई क्लौडियस से विवाह कर लिया। यह बात लोगो को बहुत बुरी मालूम हुई क्योंकि यह क्लौडियस न तो शारीरिक रूप मे उसके भूतपूर्व पति के समान था और न मानसिक गुणो मे ही, किन्तु वह ऐसा ही कुरूप था जैसा कि नीच और दुष्ट था। बहुत से लोगों को इस नये और असतीत्व-सूचक सम्बन्ध से अनेक प्रकार के सन्देह होने लगे। उनका विचार यह था कि क्लौडियस ने अपने योग्य भाई को गुप्त रीति से इसलिए मरवा डाला है कि उसकी विधवा से विवाह कर ले और उसके राज्य को लेकर

मृत राजा के छोटे लड़के हैम्लिट को, जो गद्दी का अधिकारी था, राज-बहिष्कृत कर दे।

परन्तु महारानी के इस अत्यन्त अनुचित कार्य ने और किसी मनुष्य के हृदय को इतना दुःख नहीं पहुँचाया जितना इस युवक राजकुमार को; क्योंकि उसे अपने मृत बाप से बहुत गहरा प्रेम था। उसका स्वभाव ऐसा कोमल था तथा उसको अपने आत्म-गौरव का इतना विचार था कि अपनी माता गर्ट्रूड के इस अनुचित व्यवहार से उसके हृदय पर बड़ी गहरी चोट लगी। कुछ तो अपने पिता की मृत्यु के शोक से और कुछ अपनी माता के विवाह की लज्जा से उसके आत्मा को शोकरूपी बादलों ने इस प्रकार आच्छादित किया कि उसका रूप तथा सुख सब नष्ट हो गया। अब वह पहले की भाँति न तो पुस्तकावलोकन में ही समय व्यतीत कर सकता था और न उस प्रकार के खेल-तमाशों से अपना जी बहला सकता था जो बहुधा उस अवस्था के युवकों को अच्छे लगते हैं। उसे संसार फीका लगने लगा। यह दुनिया उसको ऐसे बाग के समान मालूम होने लगी जिसमें घास-पात के आधिक्य के कारण उत्तम और उपयोगी पुष्प तथा गुल्मों की बढ़वार मारी गई हो और जहाँ व्यर्थ झाड़-झंकाड़ के सिवा और कुछ शेष नहीं हो! यद्यपि एक वीर और यशस्वी युवक के लिए अपने ही राज्य से पृथक् हो जाना भी एक ऐसा कारण था जिससे बहुत कुछ कष्ट पहुँच सकता था,

लेकिन हैम्लिट के दुःख का यह हेतु नहीं था। वह बात, जिससे उसको इतना रञ्ज हुआ और जिसके कारण उसका खाना-पीना, हँसना-खेलना सब बन्द हो गया, यह थी कि मेरी माता मेरे योग्य पिता को इतना भूल गई! वह पिता भी कैसा? जिसने आयु भर इसके साथ बड़े प्रेम और नम्रता का व्यवहार किया था और यह स्वयं भी इसके लिए बड़ा प्रेम तथा भक्ति प्रकट किया करती थी; नित्य-प्रति उसके साथ ही लगी रहती थी; मानो यह और इसका पति के लिए प्रेम, दोनों, सहोदर हैं। यही माता दो महीने के भीतर मेरे चचा से अर्थात् अपने मृत-पति के भाई से विवाही गई। प्रथम तो ऐसे निकटवर्ती रिश्तेदारों मे विवाह का सम्बन्ध ही धर्म-नियम* के विरुद्ध था। दूसरे यह विवाह इतनी जल्दी हुआ कि और भी भयानक मालूम होने लगा। तीसरे यह मनुष्य, जिसको उसकी माता ने अपने राज तथा जीवन का साथी बनाया, ऐसा अयोग्य था कि इन सब बातों ने मिलकर हैम्लिट को ऐसा शोकातुर किया कि दस राज्यो के चले जाने से भी उसको इतना रञ्ज होना असम्भव था।

उसकी माता गर्ट्रूड तथा इस नये राजा ने बहुत कुछ कोशिश की कि राजकुमार का चित्त बहल जाय। परन्तु वे

*ईसाइयो में मृत-पति के भाई से विवाह करना अनुचित समझा जाता है। भारतवर्ष में विधवा का देवर अर्थात् पति के भाई से विवाह करना अधर्म नहीं समझा जाता।

अपने परिश्रम में कृत-कार्य्य न हो सके। वह अब तक राज-सभा में काले कपड़े पहनकर आया करता था, मानो अभी वह अपने पिता की मृत्यु पर शोक मना रहा है। वे वस्त्र उसने कभी नहीं उतारे। यहाँ तक कि अपनी माता के विवाह के दिन भी वह काले ही कपड़े पहने रहा और सहभोज तथा विवाहोत्सव में भी सम्मिलित न हुआ; क्योंकि यह बात उसे अपमान-सूचक मालूम होती थी।

रानी ने अपने बेटे को दुःखी देखकर बहुत कुछ समझाया और कहा—

प्यारे बेटे, इस रात-रूपी वस्त्र को उतार दो और ख़ुशी से रहो। अपने योग्य पिता की मृत्यु पर हमेशा शोक करना ठीक नहीं। मृत्यु तो एक साधारण बात है। जो जन्म लेता है उसे अवश्य मरना है।

हैम्लिट—हाँ जी! यह तो एक साधारण बात है।

रानी—फिर तुम्हारे लिए यह असाधारण क्यों प्रतीत होती है?

हैम्लिट—प्रतीत नहीं होती किन्तु है ही! प्यारी माँ! काले वस्त्र, हाहाकार, आँसू इत्यादि ऊपरी बातें तो केवल नक़ली ही हो सकती हैं क्योंकि इनमें आदमी बनावट भी कर सकता है। परन्तु इन सब बाहरी चिह्नों से परे मेरे हृदय में वह शोक है जिसके सामने ये बातें कुछ भी नहीं हैं।

राजा क्लॉडियस—हैम्लिट! अपने पिता की मृत्यु पर शोक करना तो हर एक सुपुत्र का कर्त्तव्य है। तुम्हारे

ये बातें कुछ कम प्रशंसनीय नहीं हैं। परन्तु तुमको जानना चाहिए कि तुम्हारे पिता के पिता का भी देवलोक हुआ था और इन पितामह के पिता का भी देहान्त हुआ, प्रपितामह के पिता का भी! और मृत मनुष्य के पुत्रों का कर्तव्य हुआ कि किसी नियत समय तक शोक मनावें। परन्तु सदा शोक ही मनाते जाना अधर्म है। इससे पुरुषत्व की हानि होती है। इससे प्रकट होता है कि मनुष्य ईश्वर के कार्य्यों से सन्तुष्ट नहीं है। उसका हृदय निर्बल है, बुद्धि कम है। क्योंकि जब हम जानते हैं कि एक बात साधारण है तब उसका विरोध करना उचित नहीं है, ऐसा करना सृष्टिक्रम या परमात्मा के नियमों के विरुद्ध है। क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है कि एक न एक दिन सबके पिताओं की मृत्यु हो। अब हम यह चाहते हैं कि तुम इस शोक को त्याग दो और हमको पिता की जगह समझो। सब पर विदित हो कि तुम हमारे सबसे निकटवर्त्ती हो और इसलिए हमारी गद्दी के अधिकारी भी। मैं तुमको पैत्रिक स्नेह के साथ यह अधिकार देता हूँ। तुम मेरे युवराज हो। तुम्हारी इच्छा विटिम्बर्ग की पाठशाला में पढ़ने जाने की है। परन्तु हम इसको इसलिए अस्वीकार करते हैं कि तुम नित्य हमारी आँखों के सामने रहोगे।

रानी—हैम्लिट! अपनी माता का कहा माना और विटिम्बर्ग मत जाओ।

हैम्लिट—माताजी, मैं आपका आज्ञाकारी पुत्र हूँ।

यद्यपि हैम्लिट राजमहल में ही रहता था और विटिम्बर्ग-महाविद्यालय को जाने का विचार उसने छोड़ दिया परन्तु उसको शान्ति प्राप्त नहीं हुई।

सबसे बड़ा खेद हैम्लिट को यह था कि उसे ज्ञात न था कि उसके पिता की मृत्यु किस प्रकार हुई। क्लौडियस ने यह प्रसिद्ध कर रक्खा था कि उसकी मृत्यु सर्प के काटने से हुई। परन्तु राजकुमार को यह शङ्का थी कि यह सर्प यही क्लौडियस है या यों कहिए कि इसी क्लौडियस ने उसको मार डाला और अब स्वयं गद्दी पर बैठा हुआ है।

परन्तु उसको अभी यह निश्चय न था कि यह बात कहाँ तक ठीक है, या मेरी माता की भी सम्मति इसमें ली गई थी अथवा उसको इस हत्या का ज्ञान भी है। इसलिए इन सोच-विचारों में उसका मन बहुत विक्षिप्त हो गया।

हैम्लिट ने एक बार सुना कि उसके मृत पिता की आत्मा, जो रूप में उसके सदृश थी, दो-तीन रात बराबर क़िले के सामने चबूतरे पर टहलती हुई पहरेदारों को दिखाई पड़ी। इसके वस्त्र वही थे जो राजा अपनी जीवित दशा में पहना करता था। यह आत्मा ठीक बारह बजे रात को आया करती थी। इसका मुख पीला था जिससे क्रोध की अपेक्षा शोक

के चिह्न अधिक दिखाई देते थे। इसकी डाढ़ी तिलचावली थी; रङ्ग कुछ कुछ साँवला था जैसा कि जीवन के समय दिखाई पड़ता था। पहरेदारों ने यह भी कहा कि कई बार हमने उससे बातचीत की परन्तु उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। एक समय उसने कुछ मुँह उठाया और बोलना चाहा परन्तु इतने में सवेरा हो गया और मुर्गे ने बाँग दी; इसलिए झट वह आत्मा वहाँ से खिसक गई। क्योंकि यह एक प्रसिद्ध बात है कि मृत पुरुषों की आत्माएँ शवालयों से निकलकर केवल रात के समय ही घूम सकती हैं और ज्योंही सवेरा हुआ, वे बाहर नहीं ठहर सकतीं।

इस बात को सुनकर राजकुमार बड़ा चकित हुआ। परन्तु इस आत्मा का रूप उसके पिता के रूप के इतना सदृश था कि वह इस पर अविश्वास नहीं कर सका और समझ गया कि अवश्य मेरे पिता की ही आत्मा होगी।

फिर हैम्लिट ने विचार किया कि यदि मेरे पिता की आत्मा रात के समय इस प्रकार फिरती है तो उसका कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होगा। यद्यपि इसने किसी पहरेदार से बात नहीं की परन्तु सम्भव है कि मुझे अपना पुत्र समझकर मुझसे कुछ भेद कह दे। इसलिए उसने निश्चय कर लिया कि आज रात को पहरे पर चलकर उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

जब रात हुई तब राजकुमार अपने एक मित्र होरेशियो और एक पहरेदार मार्सीलस के साथ उसी चबूतरे पर टहलने

लगा जहाँ वह आत्मा दिखाई पड़ी थी। रात बड़ी ठण्डी थी। हवा बड़े वेग से चल रही थी। इसलिए वे लोग ऋतु के विषय में कुछ बातें करने लगे। उसी समय होरेशियो ने कहा कि देखो वह आत्मा आई।

अपने मृत पिता की आत्मा को देखकर राजकुमार चकित और भयभीत हो गया। पहले तो उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि रक्षा कीजिए; क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि यह कोई शुभात्मा है या दुरात्मा! यह भलाई करने आई है या बुराई करने। परन्तु थोड़ी देर में उसे साहस आ गया। उसके पिता की शकल ऐसी दयनीय और शोचनीय दिखाई दी और यह मालूम हुआ कि यह अवश्य कुछ बातें करना चाहती है कि झट राजकुमार कहने लगा—"महाराज! पिताजी! डेन्मार्क-नरेश! हम तो आपकी अस्थियों को शवालय में समाधिस्थ कर आये थे। अब क्या कारण है कि आपकी आत्मा अपने घर को छोड़कर रात में इस प्रकार डराती फिरती है। आपको क्या अशान्ति है कि आप वहाँ पर नहीं रह सकते और इस तरह घूमते हैं? बताइए, हम आपकी आत्मा की सद्गति के लिए क्या करें?"

आत्मा ने राजकुमार की ओर संकेत करके कहा कि चलो, ऐसी जगह पर चलें जहाँ एकान्त हो और हम गुप्त रीति से बातचीत कर सकें। होरेशियो और मारसीलस ने कहा कि राजकुमार तुम न जाओ; क्योंकि उनको भय था कि यह आत्मा

कोई दुरात्मा न हो जो किसी नदी, समुद्र या पर्वत के शिखर पर राजकुमार को ले जाकर डराना चाहती हो। परन्तु हैम्लिट ने उनकी बात न मानी और कहा कि मुझे अपने प्राण इतने प्यारे नहीं कि इनकी रक्षा की परवा हो; रही आत्मा, सो वह तो अमर ही है; अतएव आत्मा को आत्मा भय नहीं पहुँचा सकती। साथियों ने उसे रोकना चाहा परन्तु वह ज़ोर करके उनके हाथों से छूट गया और आत्मा के पीछे-पीछे हो लिया। जब वे दोनों एकान्त में पहुँचे तब आत्मा कहने लगी—

"मैं तुम्हारे पिता की आत्मा हूँ। मुझे यह दण्ड दिया गया है कि नियत समय तक रात में इधर-उधर फिरी करूँ और दिन के समय आग में जली करूँ जिससे भौतिक पाप मुझसे छूट जायँ। मुझे यह आज्ञा नहीं कि अपने वन्दीगृह का कुछ भी हाल बता सकूँ, नहीं तो मैं उस दशा का वर्णन करता जिसके एक-एक शब्द को सुनकर तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाते, तुम्हारा रक्त जम जाता और तुम्हारी आँखे पथरा जातीं।"

राजकुमार—हे ईश्वर!

आत्मा—अगर तुमको कभी अपने बाप से प्रेम रहा हो तो तुम उसकी हत्या का बदला लो।

राजकुमार—हत्या?

आत्मा—हाँ हत्या! घोर हत्या!!

राजकुमार—मुझे जल्दी से बताओ कि वह हत्यारा कौन है? मैं फ़ौरन् ही बदला लेने की कोशिश करूँगा।

आत्मा—तुम इसी योग्य हो। इसी लिए कहती हूँ। यह प्रसिद्ध कर दिया गया है कि मुझे एक साँप ने डस लिया था। परन्तु राजकुमार, सुनो—जिस साँप ने तुम्हारे बाप के प्राण लिये उसी के सिर पर आज राजमुकुट रक्खा हुआ है।

राजकुमार—क्या मेरा चचा?

आत्मा—हाँ, वही पशु, वही व्यभिचारी पशु जिसमे सतीत्व नष्ट करने के गुण हैं। इसी दुष्ट ने मेरी प्यारी और पति-भक्ता रानी को फुसला लिया। वह मुझ जैसे पति को छोड़कर, जो उसको प्राणों से भी अधिक प्यार करता था और विवाह के समय जिससे ईश्वर की साक्षी मे प्रतिज्ञाएँ की गई थीं, ऐसे दुष्ट के साथ व्यभिचारिणी हो गई, जो रूप या गुण किसी मे मेरे तुल्य नहीं। मेरा नित्य नियम यह था कि दोपहर के समय बगीचे में सोया करता था। एक दिन मुझे अकेला पाकर यह तुम्हारा दुष्ट चचा मेरे पास चला आया और मेरे कान मे ऐसी विषैली वनस्पति निचोड़ी कि जिसके पड़ते ही मेरा रक्त जम गया और समस्त शरीर पर एक प्रकार का श्वेत कोढ़ हो गया। इस प्रकार सोते समय इस भाई ने मेरे प्राण, मेरे राज्य

और मेरी रानी को ले लिया। इसलिए हे पुत्र! तू इस दुष्ट को दण्ड दे और डेन्मार्क की गद्दी पर ऐसे व्यभिचारी और हत्यारे को राज न करने दे। परन्तु अपनी माता पर कुछ भी क्रोध न करना। मैं उसको सर्वथा ईश्वर के आश्रय मे छोड़ती हूँ। जैसा उसने किया वैसा पावेगी।

राजकुमार ने प्रतिज्ञा की कि मैं अवश्य बदला लूँगा और आत्मा वहाँ से चली गई।

जब हैम्लिट अकेला रह गया तब उसने अपने मन मैं दृढ़ व्रत किया कि आज से जो कुछ पढ़ा-लिखा मेरे मस्तिष्क मे था उसे भूल जाऊँगा और केवल उन्ही बातों का स्मरण रहेगा जो इस आत्मा ने कही हैं। पहरे पर आकर उसने अपने मित्र होरेशियो को सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया परन्तु और लोगों को कुछ भी न बतलाया। मारसीलस तथा होरेशियो दोनों से शपथ ले ली कि चाहे जो हो, कभी किसी से आत्मा के देखने, तथा बातचीत करने का वृत्तान्त न कहेंगे।

हैम्लिट कुछ स्वभाव का निर्बल था। जब उसने मृत-आत्मा से बातचीत की तब उसके हृदय मे ऐसा भय बैठ गया कि उसके मस्तिष्क मे विकार हो गया और वह कुछ-कुछ चिन्तित सा मालूम होने लगा।

अपनी ऐसी अवस्था देखकर उसने विचारा कि कहीं कोई मनुष्य मुझे इस प्रकार देखकर सन्देह न करने लगे और

कहीं क्लौडियस इतना होशियार न हो जाय कि मुझे उसके मारने का अवसर न मिले। इसलिए उसने सचमुच पागल होने का निश्चय कर लिया क्योंकि ऐसी दशा में लोग उसे पागल समझकर उस पर शङ्का न करेंगे और क्लौडियस को यह पता न लगेगा कि उसे अपने पिता की मौत का इससे अधिक ज्ञान है जितना कि सर्वसाधारण मे प्रसिद्ध कर दिया गया है।

इस समय से हैम्लिट ने वस्त्र, बातचीत तथा आचार-व्यवहार में ऐसी उजड्डुता धारण की और अपने को ऐसा पागल बनाया कि राजा और रानी दोनों को धोखा हो गया। उन्होंने यह समझा ही नहीं कि अपने बाप की मृत्यु के शोक में वह उन्मत्त हो गया है। क्योंकि उनको आत्मा के दर्शन का कुछ भी ज्ञान नहीं था। परन्तु उन्होंने विचारा कि यह उन्मत्तपन किसी स्त्री के अति-प्रेम के कारण है।

इस उन्मत्तता के धारण करने से बहुत पहले हैम्लिट एक रूपवती लड़की आफ़ीलिया को चाहता था, जो राजमंत्री पोलोनियस की बेटी थी। उसने कई बार इस लड़की के पास पत्र, अँगूठियाँ तथा अन्य चीज़ें भेजी थीं जैसा कि युवकों का स्वभाव होता है। इस लड़की ने भी हैम्लिट के प्रेम का विश्वास करके उसको विवाह की आशा दे रक्खी थी। परन्तु जब से हैम्लिट शोकातुर रहने लगा उसने आफ़ीलिया का ध्यान छोड़ दिया और जब से वह पागल बन गया, आफ़ी-

लिया के साथ कुछ-कुछ उजड्डुता का व्यवहार करने लगा! परन्तु आफ़ीलिया ने यह ख़याल नहीं किया कि हैम्लिट का प्रेम कुछ कम हो गया है। वह अब भी यह समझती रही कि यह उजड्डुता केवल रोग से उपजी हुई है। वह अपने मन मे कहने लगी कि राजकुमार का मस्तिष्क एक बाजे के समान है जिससे पहले बड़ी सुरीली ध्वनि निकला करती थी; परन्तु अब शोक के मारे उसमे ऐसा विकार हो गया है कि बेसुरी और अप्रिय आवाज़ निकलने लगी है।

हैम्लिट ने अपने बाप की मृत्यु का बदला लेने का एक कठोर काम हाथ मे ले रक्खा था इसलिए अनुराग जैसे कोमल भाव का उसके मन मे उत्पन्न होना कठिन था, परन्तु कभी-कभी राजकुमार को अपनी प्यारी का स्मरण आ ही जाता था। एक बार उसने सोचा कि मेरा कुछ रोज़ से इस लड़की के साथ बड़ा अनुचित व्यवहार हो रहा है। इसलिए एक दिन उसने आफ़ीलिया को एक पत्र लिखा जिसमे अपने प्रेम का इस अत्युक्ति के साथ वर्णन किया था कि उसे विश्वास हो गया कि राजकुमार के आत्मा मे मेरा प्रेम विद्यमान है। आफ़ीलिया ने अपने कर्त्तव्य के अनुसार यह पत्र अपने बाप को दिखा दिया। उसने अपना धर्म समझकर इस बात की सूचना राजा और रानी के पास भेज दी। इस समय से तो राजा रानी को पूर्ण विश्वास हो गया कि हैम्लिट की उन्मत्तता का कारण आफ़ीलिया का प्रेम है। रानी ईश्वर से

प्रार्थना करने लगी कि किसी दिन श्राफ़ीलिया की मोहनी मूर्ति मेरे पुत्र के रोग को दूर कर देगी; क्योंकि वह जानती थी कि श्राफ़ीलिया बड़ी गुणवती लडकी है और इसका सम्बन्ध दोनों वंशों के लिए श्रेयस्कर होगा।

परन्तु हैम्लिट का रोग ऐसा नहीं था जिसकी इस प्रकार चिकित्सा हो सके। उसके मन में हर वक्त अपने पिता की आत्मा का ही ध्यान रहता था और बिना बदला लिये उसे कल नहीं पड़ती थी। ज्यों-ज्यो उसके इस कर्त्तव्य-पालन मे देर होती जाती थी, वह समझता था कि मैं पाप कर रहा हूँ। परन्तु राजा को मारना कोई सुलभ कार्य्य नहीं था; क्योंकि हमेशा उसके साथ पहरेदार रहा करते थे। जब कभी राजा पहरेदारों से अलग होता उसी समय रानी उसके पास होती थी। इसलिए ऐसे समय कमरे में घुस जाना असभ्यता थी। इस हत्यारे को अपनी ही माता का पति समझकर उसे बदला लेने मे कुछ कुछ संकोच हो जाया करता था। हैम्लिट स्वभाव का ऐसा मृदु और कोमल था कि एक साधारण मनुष्य के प्राण लेने के लिए भी तैयार न हो सकता था। फिर इन सब बातों के सिवा एक बात यह भी हो गई थी कि बहुत दिनों की चिन्ता तथा शोक ने उसकी इच्छा-शक्ति को कुछ निर्बल कर दिया था। इसलिए उसको अपने प्रयोजन की सिद्धि का साहस नहीं होता था। फिर कभी-कभी उसे यह सन्देह हो जाया करता था कि सम्भव

है, यह मेरे पिता की आत्मा न हो। क्योंकि उसने यह सुन रक्खा था कि दुष्ट आत्माएँ मनमाना वेष बदल सकती हैं और मनुष्यों को पाप करने के लिए बहकाया करती हैं। इसलिए वह समझता था कि कहीं किसी दुरात्मा ने मुझसे अपने चचा और राजा की हत्या कराने के लिए मेरे पिता का वेष न धारण कर लिया हो। इन सब बातों को सोचकर उसने अपने मन में कहा कि जब तक भली भाँति किसी बात का निश्चय न कर लिया जाय, उस काम को करने के लिए उद्यत न होना चाहिए।

जब वह इस सोच-विचार में था तब कुछ नाटक खेलने-वाले उस नगर में आये। इनके नाटकों को हैम्लिट पहले बहुत पसन्द किया करता था और विशेष कर एक नट के शोकप्रद व्याख्यान को तो बहुत ही सुना करता था जिसमें ट्रौय के राजा प्रियम की मृत्यु पर उसकी रानी हैक्यूबा के शोक करने का वर्णन था। हैम्लिट ने इन नाटकवालों को बुलाया और उसी नाटक के खेलने की प्रार्थना की। नाटक-वालों ने ऐसी उत्तमता से खेल किया और ट्रौय के जलाने, तथा वृद्ध राजा के मारने का ऐसा चित्ताकर्षक चित्र खींचा जिसमें दुखिया वृद्धा महारानी एक चिथरा ओढ़े चिल्लाती हुई इधर-उधर भाग रही थी कि सब दर्शकों की आँखों में आँसू आ गये और सबको यही ख़याल हुआ कि हम वास्त-विक दृश्य देख रहे हैं। न केवल दर्शक ही किन्तु नाटक-

वाले भी दुःख का अनुभव करने लगे और वक्ता की आँखों से आसुओं की धार बँध गई।

इस नाटक को देखकर हैम्लिट ने सोचा कि अगर नाटक-वाले एक बनावटी दुःख से इतने आकर्पित हो सकते हैं और उस रानी के शोक को, जिसे मरे हुए सहस्रों वर्ष हो चुके, इस प्रकार अनुभव कर सकते हैं तो मुझे, जिसका पिता वास्तव में एक दुष्ट मनुष्य द्वारा मारा गया हो, कितना शोक न करना चाहिए। कैसी लज्जा का स्थान है कि मैं इसकी मृत्यु का बदला लेने में ऐसा आलस्य करूँ।

फिर वह सोचने लगा कि नाटकों में चित्त आकर्पित करने की बहुत बड़ी शक्ति है। उसे स्मरण आया कि एक समय जब नाटक खेलनेवाले हत्या के दोषों पर वक्तृता कर रहे थे तब दर्शकों में से एक हत्यारे ने आकर्पित होकर अपने दोषों का इकरार कर लिया। इसलिए उसने विचारा कि इन नाटकवालों से एक ऐसा नाटक खिलवाना चाहिए जो मेरे पिता की दुर्घटना से मिलता-जुलता हो। अतएव उसने स्वयं एक नया नाटक रचवाया और उसमें आने के लिए राजा और रानी दोनों को निमंत्रण दिया।

नाटक की कथा यह थी कि वियना नगर के एक ड्यूक का नाम गोंजेगो था और उसकी स्त्री का नाम बेप्टिस्टा। ड्यूक के किसी सम्बन्धी लूसियेनस ने सोते समय उसको बाग़ में विष दे दिया और थोड़े दिनों पीछे उसकी स्त्री से विवाह कर लिया।

राजा, रानी तथा अन्य सभासद नाटक देखने आये और हैम्लिट ध्यान लगाकर राजा की ओर देखने लगा कि इस नाटक का राजा पर क्या प्रभाव पड़ता है। थोड़ा देर मे बाजे बजे और एक राजा और उसकी रानी एक-दूसरे के गले मे हाथ डाले हुए वहाँ (रङ्गभूमि मे) आये।

नाटकी राजा ने कहा—

"जिस दिन विवाह-द्वारा हम दोनों के हाथ मिलाये गये और जिस दिन प्रेम-द्वारा हम दोनों के हृदयों मे सम्बन्ध उत्पन्न हुआ उस दिन से आज तक सूर्य तीस बार सब नक्षत्रों मे घूम चुका है और तीस दर्जन चन्द्रमा, तीस दर्जन बार पृथ्वी को प्रकाशित कर चुके हैं।"

नाटकी रानी—ईश्वर करे कि हम दोनों के अन्त से पहले इतने ही बार और सूर्य और चन्द्र चक्कर लगावें। परन्तु प्यारे, आप थोड़े दिनों से रोग-ग्रसित हो रहे हैं और आपके मुख पर वे हर्ष-सूचक चिह्न नहीं पाये जाते। इसलिए मुझे आप पर विश्वास नहीं है। परन्तु इससे आपको मेरी प्रीति में सन्देह नहीं करना चाहिए; क्योकि स्त्रियों को प्रेम और सन्देह बराबर होते हैं। जितना उनका प्रेम होता है उतनी ही वे शङ्का किया करती हैं। जब प्रेम अधिक होता है तब थोड़ी सी बात पर शङ्का हो जाती है।

नाटकी राजा—अब मैं थोड़े दिनों मे तुमको छोड़नेवाला हूँ। प्यारी, मेरी शारीरिक शक्ति अब दिन प्रति दिन घटती जाती है और मेरा अन्त निकट आ पहुँचा है। तुम मेरे पीछे प्रेम और गौरव के साथ रहना। शायद तुमको मुझसे भी अधिक प्रिय पति की प्राप्ति हो जाय।

नाटकी रानी—ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो। नहीं तो यह प्रेम नहीं किन्तु पाप है। दूसरा पति करना उचित नहीं। वही दूसरा पति करती हैं जिन्होंने अपने पहले पति को मार डाला है।

इसको सुनकर हैम्लिट की माता और उसके पति, दोनों के मुख पर उदासी छा गई।

नाटकी रानी—जो स्त्रियाँ दूसरा विवाह करती हैं वे प्रेम के कारण नहीं करतीं। यदि मेरा दूसरा पति हो तो समझना चाहिए कि मैंने अपने पहले पति को मार डाला।

नाटकी राजा—मैं समझता हूँ कि तुम अपने वर्त्तमान विचारों के अनुकूल कह रही हो। परन्तु बहुधा इन विचारों के विरुद्ध हो जाता है। हमारी इच्छाएँ हमारी स्मृति के अधीन हैं। ये उस कच्चे फल के समान हैं जो आज वृक्ष पर लगा हुआ है परन्तु पकने पर गिर पड़ता है। इसी प्रकार स्मृति के न्यून होने पर हमारी इच्छाएँ भी बदल जाती हैं। हम उत्तेजित होकर

कभी कुछ निश्चय कर लेते हैं परन्तु पीछे उस निश्चय को बदलना पड़ता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि हमारी दशा के परिवर्त्तन पर हमारा प्रेम भी बदल जाय। अभी यह अनिश्चित बात है कि प्रेम दशा के अधीन है या दशा प्रेम के अधीन ! बड़े मनुष्य की अवनति पर उसके साथी उसको छोड़ जाते हैं। दरिद्र मनुष्य अगर धनी हो जाय तो उसके शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। हम व्रत करने में तो स्वतंत्र हैं परन्तु उनका पालन हमारे हाथ में नहीं है। इसलिए इस समय तो तुम कहती हो कि मैं दूसरा विवाह न करूँगी परन्तु अपने पहले पति की मृत्यु पर तुम्हारे ये विचार भी नष्ट हो जायँगे।

नाटकी रानी—अगर विधवा होकर मैं फिर विवाह करूँ तो पृथ्वी माता मुझे खाना न दे; सूर्य्यदेव मुझको प्रकाश न दें; शान्ति जाती रहे और मेरा सर्वनाश हो जाय!

नाटकी राजा—प्यारी, तुमने बड़ी कठिन प्रतिज्ञा की है। इस समय मुझे नींद आ रही है, सो जाने दो।

नाटकी राजा तो रङ्गभूमि में सो गया और हैम्लिट पूछने लगा,

"माताजी, आपको नाटक पसन्द है ?"

रानी—मेरी समझ मे तो रानी ने बड़ी कठिन प्रतिज्ञा की है।

हैम्लिट—हाँ, परन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा का पालन करेगी।

नाटकी राजा—अब मैं थोड़े दिनों मे तुमको छोड़नेवाला हूँ। प्यारी, मेरी शारीरिक शक्ति अब दिन प्रति दिन घटती जाती है और मेरा अन्त निकट आ पहुँचा है। तुम मेरे पीछे प्रेम और गौरव के साथ रहना। शायद तुमको मुझसे भी अधिक प्रिय पति की प्राप्ति हो जाय।

नाटकी रानी—ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो। नहीं तो यह प्रेम नहीं किन्तु पाप है। दूसरा पति करना उचित नहीं। वही दूसरा पति करती हैं जिन्होंने अपने पहले पति को मार डाला है।

इसको सुनकर हैम्लिट की माता और उसके पति, दोनों के मुख पर उदासी छा गई।

नाटकी रानी—जो स्त्रियाँ दूसरा विवाह करती हैं वे प्रेम के कारण नहीं करतीं। यदि मेरा दूसरा पति हो तो समझना चाहिए कि मैंने अपने पहले पति को मार डाला।

नाटकी राजा—मैं समझता हूँ कि तुम अपने वर्त्तमान विचारों के अनुकूल कह रही हो। परन्तु बहुधा इन विचारों के विरुद्ध हो जाता है। हमारी इच्छाएँ हमारी स्मृति के अधीन हैं। ये उस कच्चे फल के समान हैं जो आज वृक्ष पर लगा हुआ है परन्तु पकने पर गिर पड़ता है। इसी प्रकार स्मृति के न्यून होने पर हमारी इच्छाएँ भी बदल जाती हैं। हम उत्तेजित होकर

कभी कुछ निश्चय कर लेते हैं परन्तु पीछे उस निश्चय को बदलना पड़ता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि हमारी दशा के परिवर्त्तन पर हमारा प्रेम भी बदल जाय। अभी यह अनिश्चित बात है कि प्रेम दशा के अधीन है या दशा प्रेम के अधीन। बड़े मनुष्य की अवनति पर उसके साथी उसको छोड़ जाते हैं। दरिद्र मनुष्य अगर धनी हो जाय तो उसके शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। हम व्रत करने मे तो स्वतंत्र हैं परन्तु उनका पालन हमारे हाथ मे नही है। इसलिए इस समय तो तुम कहती हो कि मैं दूसरा विवाह न करूँगी परन्तु अपने पहले पति की मृत्यु पर तुम्हारे ये विचार भी नष्ट हो जायँगे।

नाटकी रानी—अगर विधवा होकर मैं फिर विवाह करूँ तो पृथ्वी माता मुझे खाना न दे; सूर्य्यदेव मुझको प्रकाश न दें, शान्ति जाती रहे और मेरा सर्वनाश हो जाय!

नाटकी राजा—प्यारी, तुमने बड़ी कठिन प्रतिज्ञा की है। इस समय मुझे नींद आ रही है, सो जाने दो।

नाटकी राजा तो रङ्गभूमि में सो गया और हैम्लिट पूछने लगा,

"माताजी, आपको नाटक पसन्द है?"

रानी—मेरी समझ मे तो रानी ने बड़ी कठिन प्रतिज्ञा की है।

हैम्लिट—हाँ, परन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा का पालन करेगी।

क्लौडियस—क्या तुमने नाटक सुन लिया है ? इसमें कुछ दोष तो नहीं है ?

हैम्लिट—नहीं नहीं, कुछ दोष नहीं।

राजा—इस नाटक का नाम क्या है ?

हैम्लिट—चूहे-दानी ! इस नाटक मे एक हत्या का वर्णन है जो वियना नगर में हुई थी परन्तु हम-आप जो धर्मात्मा लोग हैं, उनसे इसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

जब ये बातें हो रही थीं, रङ्ग-भूमि में एक मनुष्य लुसिऐनस आया और उसने सोते हुए नाटकी राजा के कान मे विष डाल दिया।

इस पर तो राजा क्लौडियस के पापमय आत्मा को इतना दुःख हुआ कि वह शेष नाटक को न देख सका और रोग का बहाना करके रानी के साथ वहाँ से उठ गया। राजा के चले जाने पर नाटक बन्द कर दिया गया। अब हैम्लिट को पूरा निश्चय हो गया कि उसके मृत पिता की आत्मा ने रात के समय जो कुछ कहा था वह सब ठीक था। परन्तु अभी वह यह निश्चय नहीं करने पाया था कि बदला किस प्रकार लेना चाहिए। उसी समय उसे सूचना मिली कि उसकी माता ने उसे अकेले में कुछ बातचीत करने के लिए बुलाया है।

राजा ने रानी को इसलिए भेजा था कि तुम अपने लड़के को समझा दो कि इस प्रकार की बातें न किया करे। क्योंकि इससे हम, तुम दोनों की बदनामी है। परन्तु राजा को रानी

पर पूरा विश्वास न था इसलिए यह समझकर कि कहीं यह अपने पुत्र के दोषों को न छिपा ले, उसने पोलोनियस को परदे की आड़ में छिपाकर खड़ा कर दिया कि जो कुछ बातें गर्ट्रूड और उसके लड़के में हों उनका सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रकाशित कर दे।

जब हैम्लिट अपनी माता के पास जा रहा था उस समय उसने क्लौडियस को ईश्वर की उपासना करते देखा। उसके मन में आई कि यहीं तलवार से इसको समाप्त कर दूँ। परन्तु सोचने लगा कि ईश्वर की उपासना के समय अगर मैं इसे मार डालूँगा तो यह स्वर्ग को चला जायगा। इसलिए यह तो पूरा बदला न होगा।

जब हैम्लिट अपनी माता के कमरे मे पहुँचा तब उसने पूछा—माताजी ! क्या बात है ?

रानी—हैम्लिट ! तूने अपने बाप को अप्रसन्न कर दिया है।

हैम्लिट—माताजी ! तुमने मेरे बाप को अप्रसन्न कर दिया है।

रानी—आ ! आ ! यह तो कोई उत्तर नहीं है।

हैम्लिट—जा ! जा ! यह तो कोई प्रश्न नहीं है।

रानी—क्यों ? क्यों ? हैम्लिट !

हैम्लिट—क्या बात है ?

रानी—क्या तुम मुझे भूल गये ?

हैम्लिट—नहीं ! नहीं ! तुम रानी हो। तुम अपने पति के भाई की स्त्री हो और मेरी माता हो।

रानी—अब मैं उनको भेजती हूँ जो तुमसे बात कर सकते हैं।

हैम्लिट—आओ! आओ! बैठो। मैं तुम्हे दर्पण में तुम्हारा मुख तो दिखा दूँ।

यह कहकर राजकुमार ने अपनी माता को पकड़ लिया। तब वह चिल्ला उठी। क्योंकि उसने समझा कि यह मुझे मार डालेगा। रानी की आवाज़ सुनकर पोलोनियस परदे की आड़ से कहने लगा—दौड़ो दौड़ो! रानी को बचाओ।

हैम्लिट ने तलवार उठाकर मारी। इससे वह मर गया। परन्तु जब उसने परदा हटाया तो देखा कि यह मृत पुरुष आफ़ीलिया का पिता पोलोनियस है। इससे उसे शोक हुआ। रानी ने कहा—हाय! कैसा हत्या का काम किया?

हैम्लिट—हत्या! क्या यह इससे भी बड़ी हत्या है कि राजा को मारकर उसके भाई से विवाह किया जाय?

रानी—राजा को मारकर!

हैम्लिट—हाँ, मैं यही कहता हूँ कि अब हाथ मलना छोड़ दो और बैठ जाओ। मैं तुमको तुम्हारे दोष बताऊँगा। देखूँ, तुम्हारे हृदय मे कुछ भी अनुभव-शक्ति है!

रानी—मैंने क्या किया है कि तू मुझ पर ऐसा गरजता है?

हैम्लिट—तुमने तो वह काम किया है जिस पर लज्जा भी लज्जित होती है और धर्म केवल धोखे की टट्टी ठहरता है। इससे तो विवाह की प्रतिज्ञाएँ ज्वारी की शपथ के समान हो गई और उनका कुछ भी मोल न रहा।

रानी—अरे वह कौन सा काम है?

अब हैम्लिट ने दो चित्र दिखाये। एक उसके मृत पिता का था और दूसरा क्लौडियस का। वह अपने पिता की ओर संकेत करके कहने लगा—देखो, इनका चेहरा कैसा प्रभावशाली है। बाल कैसे उत्तम हैं। नेत्र कैसे अच्छे हैं। बिलकुल देवता मालूम होते हैं। ये तुम्हारे पति थे। अब तुम अपने वर्त्तमान पति की ओर दृष्टि डालो। देखो, यह कैसा घुन के समान दिखाई देता है। इसने अपने भाई के प्राण ले लिये। क्या तुम्हारे आँखें हैं? तुम यह तो कह नहीं सकती कि मैंने प्रेमवश होकर ऐसा किया क्योंकि इस वृद्ध अवस्था मे प्रेम इतना उत्कट नही होता। फिर क्या बात थी जिसके कारण तुमने यह विवाह किया? बुद्धि तो तुम मे अवश्य है, नहीं तो चल-फिर भी न सकती, पर वह भ्रष्ट हो गई है।

रानी—हैम्लिट! अब मत कहो। मुझे अपने दोष दीखने लगे हैं। तुम्हारे शब्द तलवार के समान घाव कर रहे हैं।

उसी समय मृत-पिता की आत्मा राजकुमार को दिखाई दी जो यह कहने आई थी कि अपनी माता को कष्ट मत दो। रानी ने हैम्लिट को हवा से बाते करते देखकर ख़याल किया कि यह पागल हो गया है। ऐसा सोचते ही उसको ढाढ़स हो गया और कहने लगी—

"बेटा, तुम ये बातें अपने मस्तिष्क के विकार के कारण करते हो।"

हैम्लिट ने उत्तर दिया—नहीं नहीं, मैं ठीक कहता हूँ। देखो, मेरी नाड़ी उसी प्रकार चलती है जैसे अच्छे आदमी की ! माताजी, अपने पापों पर विचार करो और प्रायश्चित्त करो। अब मेरे चचा के पास मत जाना। ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुमको क्षमा करे।

जब वह इन बातों को समाप्त कर चुका और रानी चली गई तब पोलोनियस की लाश को देखकर वह रोने लगा क्योंकि उसे यह ख़याल हुआ कि आफ़ीलिया को अपने बाप की मृत्यु पर रञ्ज होगा।

थोड़ी देर पीछे जब वह राजा के समीप गया तब राजा ने पूछा—

"हैम्लिट ! पोलोनियस कहाँ है ?"

हैम्लिट—भोजनशाला में।

राजा—भोजनशाला में ! कहाँ ?

हैम्लिट—वहाँ नहीं जहाँ कि वह भोजन करता था किन्तु वहाँ जहाँ कि उसका भोजन किया जाता है। कीड़े-मकोड़े उसकी लाश पर सहभोज कर रहे हैं। कीड़े ही वास्तविक राजा हैं। क्योंकि क्या राजा क्या रङ्क सब अपने-अपने शरीरों को इन्हीं के लिए पालते हैं। सबका यही अन्त होनेवाला है।

राजा—हाय ! हाय ! पोलोनियस कहाँ है ?

हैम्लिट—स्वर्ग में ! किसी को भेज दो कि देख आवे। अगर वहाँ न मिले और नरक में हो तो तुम स्वयं चले जाओ।

राजा तो हैम्लिट से छुटकारा पाने का पहले ही से इरादा कर रहा था परन्तु पोलोनियस की मृत्यु पर उसे पूरा अवसर प्राप्त हो गया। उसने दो आदमियों के साथ राजकुमार को इँगलैण्ड भेज दिया। उस समय इँगलैण्ड डेन्मार्क के अधीन था। क्लौडियस ने यद्यपि गर्ट्रूड और अन्य पुरुषों से यह कह दिया कि विद्रोह को रोकने के लिए हम हैम्लिट को थोड़े दिनों के लिए अन्य देश में भेजे देते हैं, जब शान्ति हो जायगी, बुला लेंगे; परन्तु वास्तव में उसका विचार हैम्लिट के मारने का था। इसलिए इन दो मनुष्यों के हाथ इँगलैण्ड के राजा के पास एक पत्र भेजा जिसमे उसके लिए आदेश था कि राजकुमार को आते ही मार डालो।

दैवगति से जब हैम्लिट और उसके साथी जहाज़ में बैठे इँगलैण्ड को जा रहे थे तब राजकुमार ने सोते-समय दूतों की जेब से पत्र निकाल लिया और अपने नाम के स्थान मे चुपके से उन्हीं दूतों का नाम लिखकर फिर उसी स्थान पर पत्र रख दिया। थोड़ी देर मे डाकुओं के एक जहाज़ ने इनके जहाज़ पर आक्रमण किया। हैम्लिट ने युद्ध मे बड़ी वीरता दिखाई और शत्रु के जहाज़ पर चढ़ गया। इतने मे दूत तो भागकर इँगलैण्ड चले गये और हैम्लिट उसी जहाज़ पर रह गया। जहाज़वाले उसे डेन्मार्क की हद पर एक जगह छोड़ गये।

देश मे आकर हैम्लिट ने अपने चचा को पत्र लिखा कि अकस्मात् मैं फिर अपने देश मे आ गया हूँ और कल श्रीमान् के दर्शन करूँगा। जब दूसरे दिन वह घर आया तब एक भयानक दृश्य दिखाई दिया।

यह उसकी प्यारी और रूपवती आफ़ीलिया का मृतक-संस्कार था। पिता की मृत्यु के पश्चात् इस स्त्री के मस्तिष्क में भी विकार हो गया। यह सोचकर कि मेरे बाप को मेरे ही प्यारे ने इस कठोरता से मार डाला, उसके आत्मा को इतना दुःख हुआ कि उसे तन-मन का होश न रहा और वह इधर-उधर निरर्थक गीत गाया करती थी। थोड़ी दूर पर एक नदी के किनारे एक झाऊ का वृक्ष था जिसकी शाखाएँ नदी की धार के ऊपर झुकी हुई थीं। एक दिन आफ़ीलिया उस झाऊ पर झूलने लगी और शाखा के टूट जाने पर पानी में गिर पड़ी। थोड़ी देर तक तो वह पानी पर बहती रही परन्तु जब उसके कपड़े भीगकर भारी हो गये तब डूब गई और डूबते ही मर गई।

जिस समय हैम्लिट नगर मे घुसा उस समय आफ़ीलिया का मृतक-संस्कार हो रहा था और उसके शव के साथ उसका भाई लार्टीज़ तथा राजा-रानी और अन्य सभ्यगण उपस्थित थे। हैम्लिट को मालूम नहीं था कि यह क्या बात है। इसलिए वह एकान्त स्थान में खड़ा होकर देखने लगा।

मृत शरीर के लिए जो-जो सत्कार होने चाहिएँ वे सब एक-एक करके किये गये। उसके पश्चात् लार्टीज़ पुरोहित

से कहने लगा—अब क्या शेष है ? बताओ अब क्या करना चाहिए ?

पुरोहित—अब तो कुछ नहीं करना है। सत्कार के लिए जो कुछ मुझे करना था या जो कुछ मेरा अधिकार था वह सब कर दिया।

लार्टीज—तो अब कुछ नहीं करना है ?

पुरोहित—जहाँ तक हमको अधिकार था, हमने कर दिया। उसकी अकाल-मृत्यु हुई है। इसलिए यदि राजा का हुक्म न होता तो इसको क़ब्रस्तान में भी स्थान न मिल सकता। परन्तु आज्ञा-पालन करनी होती है। अब इसका उसी प्रकार सत्कार हुआ जैसा साधारण कुमारियों का हुआ करता है।

लार्टीज़—क्या ! कुछ नहीं करना है ?

पुरोहित—शान्ति-पाठ करके हम प्रार्थना को अपवित्र नहीं करना चाहते। जो कार्य्य उस देह के साथ होता है जिसके शान्तिपूर्वक प्राण निकले हों वही कार्य्य ऐसे शरीर के साथ नहीं हो सकते।

लार्टीज़—अच्छा अब इसके शव को समाधि मे रक्खो। इस निर्मल और पवित्र देह से स्वर्गीय पारिजात पुष्प उगेंगे। पुरोहित ! हमारी बहन स्वर्ग की देवी बनेगी और तू नरक मे पड़ा चिल्लाता रहेगा।

जैसा कि कुमारियों के शवों के साथ हुआ करता था उसी नियमानुसार रानी ने आफ़ीलिया की देह पर पुष्पवर्षा की और कहा—

"मधुर के लिए मधुर! जिस प्रकार तू कुसुम-कोमला थी इसी प्रकार मैं इन पुष्पों को रखती हूँ। आफ़ीलिया, मेरी तो यह आशा थी कि तू मेरे हैम्लिट की दुलहिन होती और मैं तेरी सुहाग-शय्या पर फूल बखेरती। पर हाय दैव! मुझे तुम्हारी लाश पर फूल बखेरने पड़े।

जिस समय आफ़ीलिया की लाश क़बर मे उतारी गई, लार्टीज़ अत्यन्त दुःखित होकर चिल्लाने लगा—

"जिसके कारण आज हमारी प्यारी बहिन की यह दशा हुई उसके सिर पर हज़ार आफ़तें आवे। अभी ठहरो, ठहरो! मैं एक बार और इस स्वर्णमय शरीर को देख लूँ। अरे एक बार और इसे गले लगा लूँ।"

इसके पश्चात् वह क़बर में कूद पड़ा और आफ़ीलिया को गोद में लेकर कहने लगा—

"अब मैं यहाँ से नहीं उठने का। मेरे ऊपर मिट्टी डाल दो।"

हैम्लिट अब तक अकेला खड़ा सुन रहा था और आफ़ीलिया की मृत्यु पर उसे शोक हो रहा था क्योंकि आफ़ीलिया उसे प्राणों से भी प्यारी थी। परन्तु जब उसने देखा कि एक भाई अपनी बहन के लिए इतना प्रेम प्रकट कर सकता है तब उससे न रहा गया। प्रेमभाव ने उसके हृदय में इतना जोर

मारा कि वह आड़ मे से निकलकर आफ़ीलिया की क़बर मे कूद पड़ा और कहा कि मुझे आफ़ीलिया से जितना प्रेम था उतना चालीस हज़ार भाइयों को भी नही हो सकता। लार्टीज़ तो उस समय शोक के मारे उन्मत्त हो ही रहा था। हैम्लिट को क़बर मे देखकर और यह समझकर कि इसी हैम्लिट के दुष्ट कर्म्मों से मेरी बहन की मृत्यु हुई है, क्रोध के मारे उसने हैम्लिट का गला पकड़ लिया और गुत्थम-गुत्था होने लगी। परन्तु साथियों ने कह-सुनकर उस समय उन दोनों को छुड़ा दिया।

जब संस्कार हो चुका तब हैम्लिट ने लार्टीज़ से क्षमा माँग ली और उस समय वे दोनों मित्र हो गये।

परन्तु क्लौडियस को हैम्लिट के बचकर देश मे आ जाने से बड़ा रञ्ज हुआ। क्योंकि उसने उसे इँगलैण्ड-नरेश-द्वारा मरवाने का उपाय किया था। अब वह इस प्रयोजन के लिए अन्य उपाय सोचने लगा।

लार्टीज़ कुछ दिनों तक फ़्रान्स में रहा था। उसने वहाँ तलवार के खेल मे बड़ा नाम पाया था। हैम्लिट को भी तलवार का बड़ा शौक़ था। इसलिए क्लौडियस ने इन दोनों को उत्साहित किया कि एक दिन समस्त सभा के सामने खेल दिखाना चाहिए। इस खेल मे प्रायः सच्ची तलवारे नहीं ली जाती हैं परन्तु राजा ने गुप्त रीति से लार्टीज़ के लिए सच्ची और तीक्ष्ण तलवार रख दी थी। इसके अतिरिक्त

उसने लार्टीज़ के कानों में ठूँस-ठूँसकर यह बात भर दी थी कि तुम्हारे बाप तथा बहन का घातक यही हैम्लिट है इसलिए अवश्य इससे बदला लेना चाहिए। क्लौडियस ने यह भी कह रक्खा था कि हैम्लिट राजविद्रोह की तैयारियाँ कर रहा है। इसलिए जल्दी से उसे मार डालना चाहिए। इन कारणों से लार्टीज हैम्लिट के मारने के लिए तैयार हो गया। इधर हैम्लिट को इस कपट की कुछ भी ख़बर न थी। क्लौडियस ने उससे कहा था कि देखो, तुम तलवार के खेलों के लिए बड़े प्रसिद्ध हो। परन्तु जिस दिन से लार्टीज़ फ़ान्स देश से आया है, अपने सामने किसी को नहीं गिनता। इसलिए एक दिन अखाड़े में तुम दोनों का खेल हो जाना चाहिए। मुझे तुम्हारी वीरता से यही आशा है कि तुम उसे अवश्य परास्त करोगे। तुम मेरे भतीजे और राजवंशी होने से इसी यश के योग्य हो।

इस प्रकार युद्ध आरम्भ हुआ और समस्त सभ्यगण अखाड़े के चारों ओर बैठ गये। हैम्लिट को छल-कपट का तो कुछ ज्ञान ही न था इसलिए उसने झूठी तलवार उठा ली लेकिन लार्टीज़ की तलवार को न देखा। अब लार्टीज़ हैम्लिट को खिलाने लगा। जब-जब हैम्लिट की जीत होती मालूम होती थी, यह दुष्ट राजा क्लौडियस बड़ी प्रशंसा करता और ख़ूब तालियाँ पीटता था। परन्तु थोड़ी देर पीछे युद्ध भयानक हो गया और लार्टीज़ ने कुपित होकर हैम्लिट के ऐसी तलवार मारी कि उसे घायल कर दिया।

हैम्लिट को इस पर बड़ा क्रोध आया और वह लार्टीज़ के ऊपर ऐसा झपटा कि उसकी तलवार छीनकर उसको भी घायल कर दिया। तलवार के सिरे को क्लौडियस ने विष में बुझवा दिया था। इसलिए अब इन दोनों युवकों के जीने की आशा नहीं रही।

उसी समय रानी गर्ट्रूड अपनी जगह से चिल्ला उठी—मुझे विष दे दिया। हाय! विष दे दिया।

वास्तव में बात यह थी कि क्लौडियस को यह शंका हुई कि अगर लार्टीज़ की तलवार से भी हैम्लिट न मरा तो फिर क्या होगा। इसलिए उसने विषैले शरबत का एक प्याला अपने पास रख छोड़ा था कि जब हैम्लिट गर्मी में पानी माँगेगा तब शरबत पिलाकर उसको ठण्ढा कर दिया जायगा। दैव-गति से धोखे में रानी इसी प्याले को उठाकर पी गई क्योंकि रानी को अपने पति की इस दुष्टता की ख़बर नहीं थी। पीते ही विष ने अपना काम करना आरम्भ कर दिया और वह मर गई।

रानी के मरते ही हैम्लिट को कुछ शङ्का हो गई कि अवश्य दाल में कुछ काला है। उसने नौकरों को आज्ञा देकर चारों ओर के फाटक बन्द करा दिये। लार्टीज़ को विषैली तल-वार की ख़बर थी ही। उसे अपना अन्त बहुत निकट मालूम होता था इसलिए उसने राजकुमार से कहा—अब आप सब हाल मुझसे ही पूछ लीजिए। यह तलवार विषैली है और

हम दोनों को इसका घाव लगा है। इसलिए तुम अब बहुत थोड़ी देर इस संसार में रहोगे। यह सब काम तुम्हारे चचा क्लौडियस का है। तुम्हारी माता को भी राजा ने ही विष दिया है।

अब तो हैम्लिट के शरीर में आग लग गई। उसका अन्त निकट था। यदि वह अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना चाहता था तो उसका अवसर यही था, अन्यथा सदा के लिए उसके नाम पर कलङ्क का टीका लग जाता। इस-लिए वह विषैली तलवार लेकर राजा पर झपटा और एक ही चोट से उसको समाप्त कर दिया।

अब मरते समय लार्टीज़ और हैम्लिट दोनों ने एक-दूसरे से अपने अपराधों की क्षमा माँगी क्योंकि इन दोनों के बीच असल में किसी प्रकार की शत्रुता न थी। यह शत्रुता केवल दुष्ट क्लौडियस के कारण हुई थी। इसलिए वे दोनों युवक एक-दूसरे को क्षमा करके मर गये।

होरेशियो, जो कि हैम्लिट का परम मित्र था, यह सब दृश्य देख रहा था। इन सबकी मृत्यु को देखकर उसे इतना कष्ट हुआ कि उसने आत्मघात करने की ठान ली। परन्तु प्राणान्त से पहले हैम्लिट ने उससे यह प्रार्थना की कि सिवा आपके और किसी मनुष्य को समस्त भेद ज्ञात नहीं है। इसलिए मेरा यह निवेदन है कि कृपा करके आप आत्मघात न करें और मेरी मृत्यु के पश्चात् क्रमशः सब हाल लोगों से कह

दें जिससे सबको मालूम हो जाय कि मैंने जो कुछ किया, अनुचित नहीं किया।

होरेशियो ने अपने मित्र की प्रार्थना स्वीकार कर ली। इस मर्मभेदी कथा के सुनने से सब लोगों को बड़ा कष्ट हुआ और उन सब ने हैम्लिट की आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। क्योंकि हैम्लिट बड़ा प्रिय और सभ्य राजकुमार था और उसके शुभ गुणों के कारण समस्त प्रजा उसको बहुत चाहती थी। यदि ईश्वर उसे जीवित रखता तो वह अवश्य डेन्मार्क का एक योग्य और प्रभावशाली राजा होता।

बारहवीं रात्रि

TWELFTH NIGHT

मिसेलिन नगर मे दो बहन-भाई थे जो साथ-साथ पैदा हुए थे और जो अपने जन्म-दिन से ही इतने समान थे कि सिवा वस्त्रों के भिन्न होने के और कोई पहचान उनमें नहीं हो सकती थी। बहन का नाम वायोला था और भाई का सिवाश्चियन। उन दोनों का एक ही घड़ी में जन्म हुआ था और एक ही घड़ी में उनका अन्त भी निकट आ पहुँचा। क्योंकि जब वे एक जहाज़ पर बैठे हुए कहीं जा रहे थे, तूफ़ान आया और उनका जहाज़ इलीरिया देश के निकट एक चट्टान से टकराकर टूट गया। जहाज़ का कप्तान थोड़े से मनुष्यों को साथ लेकर एक छोटी नाव में बैठकर भाग आया। बाक़ी लोग समुद्र में डूब गये। वायोला भी उसी नाव पर थी। परन्तु उसे अपने बचने की इतनी ख़ुशी नहीं हुई जितना अपने भाई के डूबने पर रञ्ज हुआ। उसने कप्तान से पूछा—भद्र! यह कौन सा देश है?

कप्तान—देवि! इलीरिया।

वायोला—हाय ! मैं इलीरिया मे रहकर क्या करूँ ! मेरा भाई तो स्वर्ग में पहुँचा । कप्तान, क्या तुम समझते हो कि वह डूबा न होगा ?

कप्तान—देवि, सुनो । घबराओ मत । जिस समय तुम और ये थोड़े से लोग नाव में बैठने लगे और जहाज़ टूटा, मैंने देखा कि तुम्हारे भाई ने अपने को एक मस्तूल से बाँध लिया और उसी के सहारे बहता-बहता कहीं जा पहुँचा ।

यह बात सुनकर वायोला को ढाढ़स बँधा और उसने पूछा—कप्तान, क्या तुम इस देश को जानते हो ?

कप्तान—हाँ, क्योंकि जिस स्थान पर मैं उत्पन्न हुआ था वह यहाँ से तीन घण्टे की दूरी पर होगा ।

वायोला—यहाँ का राजा कौन है ?

कप्तान—एक योग्य और गुणी पुरुष ।

वायोला—उसका नाम क्या है ?

कप्तान—आर्सीनो ।

वायोला—आहा ! मैंने तो अपने पिता के मुँह से आर्सीनो का नाम सुना था । उस समय उसका विवाह नहीं हुआ था ।

कप्तान—वह अभी तक कुवाँरा है । एक महीने की तो मैं कह सकता हूँ । जब मैं इलीरिया में था तब यह चर्चा

फैल रही थी कि राजा एक सुन्दरी पर, जिसका नाम ओलीविया है, मोहित हो रहा है।

वायोला—वह कौन है ?

कप्तान—एक गुणसम्पन्ना कन्या है। इसका पिता एक प्रतिष्ठित पुरुष था जो, बारह महीने हुए, मर गया और इसको अपने लड़के के अधिकार मे छोड़ गया। यह लड़का भी, सुनते हैं, मर गया है। और ओलीविया अपने भाई के शोक में इतनी दुखी हो रही है कि उसने अन्य मनुष्यों को देखना तक छोड दिया है।

वायोला—मैं चाहती हूँ कि मैं भी उसी लड़की की सेवा करती; क्योंकि उसकी और मेरी अवस्था एक सी है।

कप्तान—यह तो दुर्लभ बात है; क्योंकि वह किसी से नहीं मिलती। यहाँ तक कि राजा के दूतों से भी नहीं।

अब वायोला ने एक और विचार किया। वह यह कि पुरुष के वेप में राजा का सेवक बन जाय। एक युवती के लिए पुरुष के वेप में इधर-उधर घूमना एक अद्भुत बात थी। परन्तु वायोला को रूप आयु और परदेश का विचार करके यही ठीक मालूम हुआ।

कप्तान एक भला आदमी था। उसको इस लड़की की शोचनीय दशा पर दया आ गई और वह इनसे नम्रता का व्यवहार करने लगा। वायोला ने इसको अपना मित्र समझ कर अपने मन का भाव इस पर प्रकट कर दिया और कुछ

द्रव्य देकर कहा कि आप मुझे पुरुष के से वस्त्र बनवा दीजिए। मैं राजा के पास नौकरी करूँगी। कप्तान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और ठीक वैसे ही वस्त्र बनवा दिये जैसे कि उसका भाई सिवाश्चियन पहनता था। इस प्रकार जब वायोला नये कपड़े पहनकर तैयार हुई तब उसका रूप बिलकुल उसके भाई के समान दिखाई देता था। अब उसने वायोला के बजाय अपना नाम सिसारियो रक्खा।

इसी कप्तान-द्वारा सिसारियो राजा की सेवा में उपस्थित हुआ। राजा इस नौकर के रूप, गुण तथा सम्भाषण से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने इसे अपना निज का सेवक नियत कर लिया। राजा सिसारियो को इतना पसन्द करता था कि एक मिनट को भी अपने पास से अलग न करता और अपने आन्तरिक से आन्तरिक भावों को भी उस पर प्रकाशित कर देता था। आर्सीनो ने ओलीविया के प्रेम का हाल भी उससे कह दिया, क्योंकि बहुत दिनों से राजा सिवा प्रेमालाप के और कुछ भी नहीं करता था। बहुत दिनों से उसने ओलीविया से विवाह के लिए प्रार्थना की थी। परन्तु यह लड़की इस बात पर राज़ी नहीं होती थी, इसलिए राजा को बड़ा दुःख रहता था। वह न तो उन खेल-तमाशों से जी बहला सकता था जिनको वीर राजकुमार खेला करते हैं और न राजसभा में बैठकर राजकार्य्य ही करता था। वह नित्य प्रति शृङ्गाररस-सम्बन्धी कथा तथा गाने-बजाने में ही अपना

समय व्यतीत करता था। सिसारियो से और उससे इसी विषय पर घण्टों बातचीत हुआ करती थी और राजमन्त्री लोग यह समझते थे कि यह नौकर राजा के साथ रहने के योग्य नहीं है।

युवती कुमारियों के लिए युवक राजाओं के प्रेम की बात सुनना अच्छा नहीं होता। वायोला को इसका शीघ्र अनुभव होने लगा। क्योंकि ज्यों-ज्यों राजा ओलीविया के लिए अनुराग प्रकट करता था त्यों-त्यों वायोला के हृदय में राजा के लिए प्रेम होता जाता था। यहाँ तक कि वह राजा पर सर्वथा मोहित हो गई और उसे इस बात पर आश्चर्य होने लगा कि ऐसे गुणी, योग्य और रूपवान् पुरुष को पाकर भी ओलीविया क्यों इसका तिरस्कार करती है। उसने कई बार सकेतमात्र राजा से कहा कि यदि ओलीविया आपको नहीं चाहती तो जाने दीजिए, आप सन्तोष कीजिए। परन्तु राजा ने न माना।

वायोला ने कहा—

महाराज! कल्पना कीजिए कि एक स्त्री आपसे उतना ही स्नेह करती है जितना आप ओलीविया से (और सम्भव है कि ऐसी स्त्री हो) और आप उससे प्रेम न करते हों तो आप शायद यही कहेंगे कि मैं तुमको नहीं चाहता; तुम मेरा ध्यान छोड़ दो। क्या उसको इस पर सन्तोष नहीं करना चाहिए?

राजा—संसार में किसी स्त्री का हृदय ऐसा उदार नहीं है जिसमें उतना प्रेम समा सके जितना मैं ओलीविया से करता हूँ।

वायोला—परन्तु मैं जानता हूँ।

राजा—तू क्या जानता है ?

वायोला—मुझे भली भाँति ज्ञात है कि स्त्रियाँ पुरुषों से कितना प्रेम रखती हैं। उनके हृदय उतने ही उदार हैं जितने हमारे। मेरे पिता के एक लड़की थी जिसका एक मनुष्य पर अनुराग था (जैसा शायद मेरा आप पर अनुराग होता अगर मैं स्त्री होती)।

राजा—उसका क्या हुआ ?

वायोला—कुछ नहीं। महाराज ! उसने अपने प्रेम की कहानी किसी से न कही किन्तु गुप्त रक्खी और जिस प्रकार घुन भीतर ही भीतर किसी चीज़ को खा जाया करता है इसी प्रकार वह प्रेम के मारे घुल गई। क्या यह प्रेम नहीं था ? पुरुष अपने प्रेम का प्रकाश अधिक कर सकते हैं परन्तु प्रेम अधिक नहीं होता।

राजा—क्या वह प्रेम-रोग से मर गई ?

वायोला—अपने बाप के घर में मैं ही बहन और मैं ही भाई हूँ।

जब ये बातें हो रही थीं, राजा के पास एक मनुष्य आया जिसको उसने ओलीविया के पास भेजा था। उसने कहा—श्रीमन् ! मैं देवीजी के पास नहीं जा सका। उनकी नौकरनी ने कहा कि सात वर्ष तक पञ्चतत्त्वों को भी उनका मुख देखने को न मिलेगा। अपने भाई की मृत्यु के शोक में वे अपने मुख पर कपड़ा डालकर अपने ही कमरे मे रहेंगी।

राजा ने यह सुनकर कहा—जिस स्त्री का हृदय इतना कोमल हो कि वह अपने भाई के लिए इतना प्रेम प्रकट कर सके वह अपने पति के लिए न जाने कितना प्रेम प्रकट करेगी, बशर्ते कि कुसुमसदृश काम-बाण उसके हृदय को वेध दें।

फिर राजा ने वायोला से कहा—सिसारियो ! मैंने तुझसे अपने मन की सब बात कह दी है। इसलिए अब तू ओलीविया के समीप जा और उससे मेरे अनुराग का हाल कह। देख, ऐसा उपाय करना कि तेरा परिश्रम निष्फल न हो और तुझे बिना मिले न लौटना पड़े। उसके दरवाज़े पर बैठ जाना और कहना कि चाहे मेरे पैर वृक्ष की जड़ के समान पृथ्वी में जम जायँ परन्तु बिना देखे मैं यहाँ से नहीं जाने का।

वायोला—महाराज! अगर उसको इतना शोक है तो वह मुझे अपने पास तक न आने देगी।

राजा—ख़ूब कोलाहल करना और चिल्लाना जिससे कार्य निष्फल न हो।

वायोला—अच्छा, अगर बात करने का अवसर मिल जाय तो क्या कहूँ ?

राजा—मेरे प्रेम का हाल उस पर प्रकट करना और मेरी प्रतिज्ञाओं का इस प्रकार वर्णन करना कि उस पर असर हो जाय। तेरी आकृति मुझसे अच्छी है, तू मुझसे आयु में भी कम है। इसलिए मेरी गम्भीर

आकृति की अपेक्षा वह तेरी मनोहर आकृति का अधिक ख़याल करेगी।

राजा की आज्ञा पाकर वायोला ओलीविया के घर को चल दी। परन्तु यह काम उसकी इच्छा के विपरीत था; क्योंकि वह एक स्त्री को उस मनुष्य से विवाह करने के लिए राज़ी करने जा रही थी जिसको वह स्वयं भी अपना पति बनाना चाहती थी। परन्तु स्वामी की आज्ञा का पालना आवश्यक था और उसने इस कार्य को बड़ी सचाई के साथ किया। जब वह ओलीविया के घर पहुँची तब उसकी नौकरनियों ने सूचना दी—एक युवक आपसे बात करना चाहता है।

ओलीविया—कह दो, मैं नहीं मिल सकती।

नौकरनी—मैंने कह दिया था। परन्तु वह कहता है कि मैं मिलकर ही जाऊँगा। मैंने कहा कि आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। उसने उत्तर दिया कि मैं इस बात को जानता हूँ। इसी लिए आया हूँ। मैंने कहा कि आप शयनागार में सो रही हैं। उसने कहा, ठीक है। तभी तो मुझे आने की आवश्यकता हुई। वह कहता है कि जब तक आप उसे अपने पास तक आने की आज्ञा न देंगी, वह आपके दरवाज़े से न टलेगा।

ओलीविया—किस प्रकार का मनुष्य है?

नौकरनी—मनुष्य-जाति का।

ओलीविया—उसका स्वभाव कैसा है?

नौकरनी—बड़ा तीक्ष्ण ! आप मानें या न मानें, वह तो आपके पास होकर ही जायगा।

ओलीविया को ऐसे आग्रही मनुष्य के देखने की इच्छा हो गई और उसने अपने मुख पर घूँघट डालकर उसको भीतर आने की आज्ञा दी। वायोला बड़े साहस के साथ कमरे में चली गई और कहा—इस घर की स्वामिनी कौन सी हैं ?

ओलीविया—मुझसे बात कहो। मैं उसकी ओर से उत्तर दूँगी। क्या चाहते हो ?

वायोला—सुन्दरि ! मुझे यह बता दो कि इस घर की स्वामिनी कौन हैं ? क्योंकि मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। मैं अपनी वक्तृता को किसी और के सामने व्यर्थ कहना नहीं चाहता; क्योंकि इसको रचने के अतिरिक्त इसको याद करने में मुझे बड़ा समय लगा है। सुमुखि ! मेरा अनादर न करो क्योंकि मेरा हृदय कोमल है।

ओलीविया—तुमको किसने भेजा है ?

वायोला—यह उत्तर मेरी वक्तृता का भाग नहीं है। मैंने जो कुछ सीखा है उससे अधिक कुछ नहीं कह सकता। कृपा करके बताओ कि क्या तुम्हीं इस घर की स्वामिनी हो, जिससे मैं शीघ्र अपनी वक्तृता आरम्भ करूँ ?

ओलीविया—क्या तुम कौतुकी हो ?

वायोला—नहीं, नहीं ! परन्तु मैं वह नहीं हूँ जो तुम जानती हो ! क्या घर की स्वामिनी तुम्हीं हो ?

ओलीविया—हाँ, मैं ही हूँ ।

वायोला—अगर तुम्हीं हो तो तुमको वह वस्तु अपने ही पास न रखनी चाहिए जो ईश्वर ने तुम्हे दान करने के लिए प्रदान की है । पहले मैं अपनी वक्तृता का वह भाग कहूँगा जिसमें तुम्हारे रूप की प्रशंसा है, फिर सन्देसा ।

ओलीविया—आवश्यक सन्देसा कहो ; प्रशंसा को रहने दो ।

वायोला—नहीं, नहीं । इसके याद करने मे तो मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा है । यह बड़ी रसीली है ।

ओलीविया—तुम तो बड़े ढीठ हो । तुमने मेरे द्वार पर बड़ा आग्रह किया । मैंने तुमको सन्देसा सुनने नहीं बुलाया, किन्तु तुम्हारा मुख देखने को कि तुम कौन हो, जो इतने दुराग्रही हो । अगर तुम पागल हो तो यहाँ से चले जाओ । अगर तुम मे कुछ भी बुद्धि हो तो संक्षेप से कहो ।

वायोला—मैं तो दूतमात्र हूँ ।

ओलीविया—इस दूत का सन्देसा बड़ा भयङ्कर है । इसकी भूमिका ही ऐसी क्लिष्ट है । अच्छा, कहो ।

वायोला—न तो युद्ध का समाचार लाया हूँ न कोई अशान्ति फैलाने आया हूँ । मेरे शब्द ऐसे ही मधुर हैं जैसा मेरा आशय !

ओलीविया—परन्तु तुम आरम्भ बड़ी धृष्टता से करते हो! कौन हो और क्या चाहते हो?

वायोला—जो कुछ धृष्टता है वह सब आपके ही आतिथ्य-सत्कार से सीखी गई है। मैं कौन हूँ और क्या चाहता हूँ, यह सब आप के ही कानों को सुनना चाहिए।

ओलीविया ने नौकरों को कमरे से निकाल दिया और कहा—तुम्हारा प्रयोजन क्या है?

वायोला—परमसुन्दरि—

ओलीविया—तुम्हारी वक्तृता की रचना कहाँ हुई थी?

वायोला—आर्सीनो के मन में।

ओलीविया—मैंने पढ़ा है। इसमें कुछ नहीं; और क्या कहना है?

वायोला—सुमुखि! मुझे अपना मुख तो दिखाओ।

ओलीविया—क्या तुम मेरे मुख के लिए कुछ सन्देसा लाये हो? यह तो तुम्हारी वक्तृता का भाग नहीं है। अच्छा परदा उठाती हूँ। देखो, क्या तसवीर अच्छी है?

ओलीविया ने घूँघट खोल दिया और उसको इस बात का कुछ भी स्मरण न रहा कि मैंने सात वर्ष घूँघट निकालकर फिरने की प्रतिज्ञा की थी। इसका कारण यह था कि ओलीविया सिसारियो के रूप को देखकर उनके ऊपर आसक्त हो गई थी।

वायोला ने ओलीविया के अत्यन्त सुन्दर स्वरूप और लावण्य का अवलोकन करके कहा—भुवन-मोहिनी! क्या

सुन्दर स्वरूप है। कैसा विशाल ललाट है। कैसे अपूर्व बिम्बाधर हैं। कैसे तीक्ष्ण कटाक्ष हैं। यह तसवीर तो स्वयं परमात्मा ने अपने हाथ से बनाई है। यह लावण्य पृथ्वी के योग्य नहीं, स्वर्गीय है। परन्तु हे भामिनि! तुम बड़ी कठोर हो कि ऐसे स्वरूप को बिना किसी प्रतिमूर्त्ति के छोड़े हुए मृत्यु-समय तक नष्ट करना चाहती हो। रूप के साथ तुममें अभिमान भी बहुत है। मेरा स्वामी तुमको चाहता है। इस प्रेम का बदला तो अवश्य देना चाहिए।

ओलीविया—वह किस प्रकार मुझे चाहता है?

वायोला—वह नित्य आपका ही स्मरण रखता है। आपके लिए उसकी आँखो से अश्रुधारा बहती है।

ओलीविया—तुम्हारे स्वामी को मालूम है कि मैं उसे नहीं चाहती। मैं जानती हूँ कि वह एक योग्य और सदाचारी पुरुष है। परन्तु मैं उसे नहीं चाहती। यह उत्तर मैंने उसे, बहुत दिन हुए, दे दिया था।

वायोला—अगर मैं तुमको अपने स्वामी की भाँति चाहता होता तो तुम्हारे निषेध की कुछ भी परवा न करता।

ओलीविया—क्या करते?

वायोला—तुम्हारे द्वार पर झोपड़ी डालकर 'ओलीविया! ओलीविया!' किया करता और आधी रात के समय इतना चिल्लाता, इतना चिल्लाता कि तुमको नींद न आती। तब तो तुम अवश्य मुझ पर दया करतीं।

ओलीविया—तुम बहुत कुछ कर सकते हो। पर तुम्हारा वंश क्या है?

वायोला—मेरी दशा की अपेक्षा उच्च है। मैं एक भद्र पुरुष हूँ।

ओलीविया—अच्छा जाओ। अब अपने स्वामी का सन्देसा लेकर कभी मत आना। हाँ, यह और बात है कि तुम उसकी दशा बताने के लिए कभी-कभी चले आया करो।

ओलीविया ने अपनी इच्छा के विरुद्ध यह कहकर वायोला को भेज दिया। पर अब वह इसके प्रेम का अनुभव करने लगी। उसने अपने जी में कहा कि अगर यह नौकर ही राजा होता तो कैसी अच्छी बात थी। वह भूल गई कि इस नौकर की और मेरी कुलीनता मे कितना भेद है। मदनदेव उसके हृदय को अपने कोमल शरों से बाँधने लगे। वह कहने लगी "यह नौकर किसी उच्च वंश का प्रतीत होता है। इसकी बोली कैसी मधुर है। इसका मुख कैसा लावण्य-युक्त है। इसके आचार-व्यवहार कैसे उत्तम हैं।" फिर वह अपने इस निर्लज्जपन पर लजाने लगी कि देखो मैं थोड़ी सी देर मे इस नौकर के ऊपर इस प्रकार मोहित हो गई। परन्तु प्रेम की डोर का बँधा हुआ मनुष्य उससे मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए उसने अपने प्रेम का संकेत-द्वारा प्रकट करने के लिए सिसारियो (वायोला) के पास एक अँगूठी भेजी और कहला

भेजा कि यह अँगूठी तुम्हारे स्वामी ने भेजी थी जिसे तुम मेज पर रक्खी छोड़ गये थे। इसे लेते जाओ।

वायोला समझ गई कि वास्तविक बात क्या है। क्योंकि वह आर्सीनो के पास से कोई अँगूठी नहीं लाई थी। उसे निश्चय हो गया कि अवश्य ओलीविया मुझको चाहने लगी है। क्योंकि इस प्रेम का प्रकाश उसकी बातों तथा चेहरे से ही होता था। यह बात जानकर उसे खेद हुआ और अपने मन मे कहने लगी—शोक है कि ओलीविया शून्य से प्रेम कर रही है। तभी तो वेष बदलना बुरा है।

वायोला आर्सीनो के महल को लौट आई। उसने अपने परिश्रम की विफलता का हाल कह सुनाया। परन्तु आर्सीनो को अभी यही आशा बनी रही कि सिसारियो अवश्य एक दिन अपने कार्य को सिद्ध कर लेगा। इसलिए उसने फिर हुक्म दिया कि तुम नित्य ओलीविया के घर जाया करो।

इसके पश्चात् उसने अपना चित्त बहलाने के लिए एक गीत गवाया और कहा—सिसारियो ! जब मैंने रात को यह गीत सुना तब मुझे कुछ शान्ति मिली। यह कोई अच्छा गीत तो नहीं है पर मुझे पसन्द है। जब जुलाहे लोग धूप में बैठकर ताना-बाना तानते हैं तब इसको गाते हैं।

गीत सुनते ही वायोला के मुख पर उदासी छा गई; क्योंकि इसी अतृप्त प्रेम की सताई हुई वह भी थी। राजा ने उसके उदास मुख को देखकर पूछा—सिसारियो ! यद्यपि

तेरी आयु अभी थोड़ी है, परन्तु मालूम होता है कि तू किसी के प्रेम मे आसक्त है।

वायोला—हाँ श्रीमन्!

आर्सीनो—वह कौन स्त्री है और उसकी क्या अवस्था है?

वायोला—आपके से रँग की और आपके समान आयुवाली!

आर्सीनो को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि सिसारियो अपने से बड़ी स्त्री को चाहता है। परन्तु वायोला का कहना ठीक था, क्योंकि वायोला का चित्त राजा के अनुराग से परिपूर्ण हो रहा था। इसी ओर उसने गुप्त रीति से संकेत किया था।

जब वायोला दुबारा ओलीविया के पास गई तब भीतर जाने में पहली बार की भाँति कष्ट न हुआ। यदि कोई युवती किसी युवक से बातचीत करना चाहती है तो उसके चाकर भी झट से ताड़ जाते हैं। इसलिए ज्योंही वायोला दरवाज़े पर पहुँची, बड़े आदर के साथ नौकर उसे ओलीविया के कमरे में ले गये। वायोला ने कहा कि मैं फिर अपने स्वामी का सन्देसा लेकर आया हूँ।

ओलीविया ने उत्तर दिया—मुझसे कभी राजा के विषय में कुछ मत कहना। हाँ, यदि कुछ और कहना चाहो या किसी और का प्रेम-सन्देसा लाये हो तो कह सकते हो।

यही नहीं, किन्तु ओलीविया ने साफ़-साफ़ कह दिया कि मैं तुमको चाहती हूँ और तुमसे विवाह करने को उद्यत हूँ।

वायोला, जिसको ओलीविया ने पुरुष समझा था, वास्तव में स्त्री थी। इसलिए जब उसे इस प्रेम को सुनकर अप्रसन्नता हुई तब ओलीविया कहने लगी—देखो! इसका क्रोध भी कैसा प्यारा मालूम होता है। सिसारियो, वसन्त के फूलों की सौगन्ध! मुझे तुमसे प्रेम है। और मैं नहीं समझती कि किस प्रकार इस भाव को गोपन करूँ।

पर ओलीविया का सब परिश्रम व्यर्थ हुआ। वायोला क्रुद्ध होकर यह कहती हुई वहाँ से चली गई कि "मैं कभी किसी स्त्री से प्रेम न करूँगा।"

ज्योंही वायोला ओलीविया के पास से गई, मार्ग में एक मनुष्य ने लाठी से उस पर आक्रमण किया। यह वह पुरुष था जिसको ओलीविया ने तिरस्कृत कर दिया था। इसने सुना था कि ओलीविया वायोला से प्रेम करती है, इसलिए डाह की आग से जलकर उसने वायोला के मार डालने का इरादा कर लिया। अब वायोला बेचारी क्या कर सकती थी। वह तो स्त्री-मात्र थी। उसने कभी अपने हाथ से शस्त्र न छुआ था। यद्यपि वेष पुरुषों का सा था, परन्तु हृदय स्त्रियों के समान कोमल था। इसलिए जब शत्रु को अपनी ओर आते देखा तब उसका हृदय काँप उठा और उसने चाहा कि मैं अपने स्त्री होने के भेद को प्रकट कर दूँ। परन्तु परमात्मा की कृपा से एक आशातीत सहायता मिल गई। वहाँ होकर एक पथिक निकला जिसने सिसारियो को देखकर और

यह समझकर कि मैं इसे पहचानता हूँ, उस शत्रु से कहा—यदि इस युवक ने कुछ अपराध किया है तो मैं इसको अपने ऊपर लेता हूँ। तुमको अगर युद्ध करना है तो मुझसे करो।

अभी वायोला ने इस अजनबी पुरुष को धन्यवाद भी नहीं दिया था कि राजा के अनुचर वहाँ पर आ गये और उन्होंने इस पुरुष को किसी अपराध मे पकड़ लिया। इस प्रकार पकड़े जाने पर इस आदमी ने वायोला से कहा—"यह सब तुम्हारा साथ देने का फल है।" फिर वह वायोला से अपनी रुपयों की थैली माँगने लगा। वायोला इस मनुष्य को बिल्कुल नहीं पहचानती थी, इसलिए थैली का नाम सुनकर हक्का-बक्का रह गई। आदमी ने फिर कहा—आश्चर्य क्यों करते हो? इस समय मुझे रुपयों की आवश्यकता है। मैं अब तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ। मेरी थैली दे दो।

वायोला की समझ मे एक बात भी न आई। वह थोड़ा सा रुपया अपने पास से देने लगी; क्योंकि आज इसी मनुष्य ने उसकी जान बचाई थी। परन्तु वह कहने लगी कि "मैं तुमको नहीं जानता।" यह सुनकर तो यह आदमी झल्ला उठा और कहने लगा—देखो लोगो! जिस पुरुष को तुम यहाँ पर देखते हो, यह बड़ा कृतघ्न है। मैंने इसे मौत के मुँह से बचाया है! इसी के लिए मैं इलीरिया मे आया था और इसी के लिए ये दुःख सहे।

पुलिसवालों ने क़ैदी की कुछ बात न सुनी और यह कहते हुए चल दिये—हमको इससे क्या ?

जब क़ैदी पुलिस के साथ जा रहा था, वह वायोला को सिवाश्चियन नाम से पुकार-पुकारकर कोसता जाता था कि इस कृतघ्न दुष्ट ने अवसर पड़े पर मुझे छोड़ दिया। वायोला ने सिवाश्चियन का नाम सुनकर समझा कि कहीं इसने मुझे मेरे भाई के धोखे में सिवाश्चियन न समझा हो। परन्तु पुलिसवाले क़ैदी को इतनी जल्दी पकड़ ले गये कि उसे बात-चीत करने का समय न मिला। हाँ, अब वायोला को यह आशा हो गई कि मेरा भाई जीता है।

इस क़ैदी की कहानी इस प्रकार से है—वायोला का भाई सिवाश्चियन जब मस्तूल से बँधा हुआ समुद्र में बहा जा रहा था तब इतना थक गया कि तैरने की शक्ति नहीं रही। इतने में ईश्वर ने करुणा की और वहाँ पर एक जहाज़ आ गया। इस जहाज़वाले ने, जिसका नाम एण्टोनियो था, सिवाश्चियन को समुद्र से निकाल लिया। अब एण्टोनियो और सिवाश्चियन की बड़ी मित्रता हो गई और दोनों एक साथ रहने लगे। सिवाश्चियन ने इलीरिया की सैर करने का इरादा किया, इसलिए एण्टोनियो भी अपने मित्र से पृथक् न रह सका, यद्यपि वह जानता था कि इलीरिया पहुँचते ही मैं पकड़ा जाऊँगा। क्योंकि एक बार जल-युद्ध में इस एण्टोनियो ने इलीरिया के राजा आर्सीनो के भतीजे को मार डाला

था। इसी अपराध में पुलिस के लोगों ने एण्टोनियो को पकड़ लिया और एण्टोनियो ने वायोला को धोखे से सिवाश्चियन समझ लिया क्योंकि वायोला के वस्त्र भी उसके भाई के वस्त्रों के ही समान थे। एण्टोनियो ने सिवाश्चियन को थोड़ी देर पहले एक थैली दी थी और कह दिया था कि जब तक मैं सराय मे ठहरा हूँ, तुम जाकर नगर की सैर कर आओ। जब सिवाश्चियन को बहुत देर हो गई और वह नियत समय पर न पहुँचा तब एण्टोनियो को चिन्ता हुई और वह हथेली पर सिर रखकर उसे ढूँढ़ने चल दिया। इस प्रकार जब वायोला की सहायता के लिए उसने कोशिश की तब वह सिवाश्चियन के धोखे मे था।

एण्टोनियो के पुलिस के साथ जाने के पश्चात् वायोला भयभीत होकर शीघ्र ही राजमहल को चली गई। परन्तु इसके शत्रु को मालूम हुआ कि सिसारियो फिर आ रहा है। वास्तव में यह वायोला नहीं थी किन्तु इसका भाई सिवाश्चियन था जो नगर की सैर करते-करते वहाँ पर आ पहुँचा था। शत्रु ने इसे सिसारियो समझकर फिर आक्रमण किया और एक लाठी मारी। परन्तु सिवाश्चियन तो वायोला के समान कोमल न था, उसने लाठी का जवाब लाठी से दिया और ऐसे ज़ोर से चोट मारी कि शत्रु घायल होकर भाग गया।

इतने में एक रमणी इस लड़ाई को बन्द करने वहाँ पर आ गई। यह ओलीविया थी जो अपने नौकरों से अपने

प्यारे सिसारियो की विपत्ति का हाल सुनकर दौड़ी आई थी। उसने सिसारियो के धोखे मे सिवाश्चियन को बुलाया और इस आक्रमण पर शोक प्रकट करने लगी। सिवाश्चियन को इस रमणी के आतिथ्य-सत्कार पर इतना ही आश्चर्य हुआ जितना कि उस शत्रु के आक्रमण पर हुआ था। परन्तु उसने इस आफत के वक्त ओलीविया के घर जाना ही ठीक समझा।

ओलीविया को भी यह देखकर बड़ा हर्ष हुआ कि आज सिसारियो पहले की अपेक्षा अधिक प्रसन्न मालूम होता है क्योंकि वायोला ने ओलीविया के प्रेम पर हमेशा असन्तोष प्रकट किया था।

जब ओलीविया ने अपने विवाह का प्रस्ताव सिवांश्चियन के सम्मुख पेश किया तब उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी समझ मे यह बात न आई कि एक रमणी, बिना जाने-पहचाने, किस प्रकार एक अजनबी आदमी से विवाह करने को तैयार हो सकती है। ओलीविया ने सिवाश्चियन को एक मोती भी भेंट मे दिया और कहा कि विवाह अभी हो जाना चाहिए। क्योंकि वह डरती थी, कि एक दिन पीछे कहीं सिवाश्चियन की (जिसको कि वह सिसारियो समझती थी) राय न बदल जाय। सिवाश्चियन इस स्त्री के रूप को देखकर विवाह करने पर राज़ी हो गया; क्योंकि एक धनाढ्य विदुषी और रूपवती स्त्री से कौन विवाह करना नहीं चाहता

था। इसी अपराध में पुलिस के लोगों ने एण्टोनियो को पकड़ लिया और एण्टोनियो ने वायोला को धोखे से सिवाश्चियन समझ लिया क्योंकि वायोला के वस्त्र भी उसके भाई के वस्त्रों के ही समान थे। एण्टोनियो ने सिवाश्चियन को थोड़ी देर पहले एक थैली दी थी और कह दिया था कि जब तक मैं सराय मे ठहरा हूँ, तुम जाकर नगर की सैर कर आओ। जब सिवाश्चियन को बहुत देर हो गई और वह नियत समय पर न पहुँचा तब एण्टोनियो को चिन्ता हुई और वह हथेली पर सिर रखकर उसे ढूँढ़ने चल दिया। इस प्रकार जब वायोला की सहायता के लिए उसने कोशिश की तब वह सिवाश्चियन के धोखे मे था।

एण्टोनियो के पुलिस के साथ जाने के पश्चात् वायोला भयभीत होकर शीघ्र ही राजमहल को चली गई। परन्तु इसके शत्रु को मालूम हुआ कि सिसारियो फिर आ रहा है। वास्तव में यह वायोला नहीं थी किन्तु इसका भाई सिवाश्चियन था जो नगर की सैर करते-करते वहाँ पर आ पहुँचा था। शत्रु ने इसे सिसारियो समझकर फिर आक्रमण किया और एक लाठी मारी। परन्तु सिवाश्चियन तो वायोला के समान कोमल न था, उसने लाठी का जवाब लाठी से दिया और ऐसे जोर से चोट मारी कि शत्रु घायल होकर भाग गया।

इतने मे एक रमणी इस लड़ाई को बन्द करने वहाँ पर आ गई। यह ओलीविया थी जो अपने नौकरों से अपने

प्यारे सिसारियो की विपत्ति का हाल सुनकर दौड़ी आई थी। उसने सिसारियो के धोखे में सिवाश्चियन को बुलाया और इस आक्रमण पर शोक प्रकट करने लगी। सिवाश्चियन को इस रमणी के आतिथ्य-सत्कार पर इतना ही आश्चर्य हुआ जितना कि उस शत्रु के आक्रमण पर हुआ था। परन्तु उसने इस आफत के वक्त ओलीविया के घर जाना ही ठीक समझा।

ओलीविया को भी यह देखकर बड़ा हर्ष हुआ कि आज सिसारियो पहले की अपेक्षा अधिक प्रसन्न मालूम होता है क्योंकि वायोला ने ओलीविया के प्रेम पर हमेशा असन्तोष प्रकट किया था।

जब ओलीविया ने अपने विवाह का प्रस्ताव सिवाश्चियन के सम्मुख पेश किया तब उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी समझ में यह बात न आई कि एक रमणी, बिना जाने-पहचाने, किस प्रकार एक अजनबी आदमी से विवाह करने को तैयार हो सकती है। ओलीविया ने सिवाश्चियन को एक मोती भी भेंट मे दिया और कहा कि विवाह अभी हो जाना चाहिए। क्योंकि वह डरती थी, कि एक दिन पीछे कहीं सिवाश्चियन की (जिसको कि वह सिसारियो समझती थी) राय न बदल जाय। सिवाश्चियन इस स्त्री के रूप को देखकर विवाह करने पर राज़ी हो गया; क्योंकि एक धनाढ्य विदुषी और रूपवती स्त्री से कौन विवाह करना नहीं चाहता

और वह भी ऐसी जिसका मिलना इस प्रकार सुगम हो। ओलीविया सिवाश्चियन को अपने बाग़ में छोड़कर झट पुरोहित को बुलाने चली गई जिससे तुरन्त ही विवाह हो जाय। जब सिवाश्चियन अकेला रह गया तब मन में कहने लगा—हवा चल रही है; प्रकाशमान सूर्य चमक रहा है। यह मोती, जो इसने दिया है, मेरे पास है। इन सब चीज़ों का मुझे अनुभव होता है। मैं भली भाँति इनको देख सकता हूँ। इसलिए यह नहीं कह सकता कि मैं पागल हूँ। परन्तु मुझे इस बात पर बड़ा आश्चर्य होता है। मेरी बुद्धि काम नहीं करती और इन्द्रियाँ उस मन का साथ नहीं देतीं। क्या करूँ, मेरा मित्र एण्टोनियो भी सराय में नहीं मिला। यदि होता तो उसी से सलाह लेता; क्योंकि वह यहाँ के व्यवहार को जानता है। कभी मुझे यह ख़याल होता है कि यह स्त्री ही पागल है। परन्तु यह भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यदि वह पागल होती तो ऐसी बुद्धिमानी से अपने घर का लेन-देन और अन्य व्यवहार न करती। फिर क्या यह केवल मुझसे प्रेम करने मात्र में ही पागल हो गई? जान पड़ता है कि अवश्य कुछ न कुछ ग़लती हुई है।

इतने में ओलीविया पुरोहित को लेकर वहाँ पर आ गई और सिवाश्चियन को सोच-विचार करता देखकर कहने लगी—देखो प्रियतम! कोई चिन्ता की बात नहीं है। मुझे केवल इसलिए जल्दी है कि मुझे शान्ति हो जायगी। यदि

आप चाहें तो किसी नियत समय तक विवाह को प्रकाशित न किया जायगा। परन्तु विवाह अभी हो जाना चाहिए।

जब ये सब बातें हो चुकीं तब सिवाश्चियन निकट के धर्ममन्दिर मे पुरोहित और ओलीविया के साथ चला गया और उन दोनों के हाथ आयुभर के लिए संयुक्त हो गये। विवाह के पश्चात् सिवाश्चियन ओलीविया के घर से निकलकर एण्टोनियो की तलाश मे चल दिया।

इस समय एक और विलक्षण घटना हुई। राजा आर्सीनो ने जब वायोला से सुना कि ओलीविया किसी प्रकार उससे विवाह करने को राज़ी नहीं होती तब वह स्वयं ओलीविया के घर को चल दिया। वायोला भी सिसारियो के वेष मे उसके साथ थी। जिस समय वे दोनों ओलीविया के दरवाज़े पर पहुँचे उसी समय एण्टोनियो को पकड़े हुए पुलिस भी वहाँ पर आ पहुँची और राजा के सामने उसको पेश किया। एण्टोनियो वायोला को राजा के साथ देखकर गिड़गिड़ा कर कहने लगा—महाराज! इस लड़के को मैंने, तीन महीने हुए, समुद्र मे डूबने से बचाया था; क्योकि यह एक तख़्ते से बँधा हुआ बहा जा रहा था। तीन महीने से यह मेरे साथ है। मैं ही इसे खाना-पानी देता हूँ। पर यह मनुष्य ऐसा कृतघ्न है कि मेरी रुपयों की थैली लेकर भाग आया है और मेरी विपत्ति के समय कहता है कि मैं तुमको नहीं जानता।

अभी राजा ने एण्टोनियो की प्रार्थना आद्योपान्त सुनी नहीं थी कि इतने में ओलीविया अपने घर से निकल आई और राजा का चित्त उधर को आकर्पित हो गया। एण्टोनियो को यह कहकर उसने टाल दिया—मालूम होता है, इस मनुष्य की बुद्धि में कुछ विकार है; क्योंकि जिस सिसारियो को यह अपना साथी बता रहा है वह तो तीन महीने से मेरे पास है। फिर ओलीविया की ओर देखकर कहने लगा—देखो! पृथ्वी स्वर्ग हो गई जिसे ऐसी अप्सरा अपने चरणों से पवित्र कर रही है।

वायोला बेचारी अभी एण्टोनियो के लगाये हुए कृतघ्नता के दोष से मुक्त नहीं हुई थी कि इतने में राजा ने भी उसे कृतघ्न कहना आरम्भ कर दिया; क्योंकि ओलीविया सिसारियो से उसी प्रकार प्रेम की बातें करने लगी जैसे स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ किया करती हैं। राजा को ये बातें सुनकर विश्वास हो गया कि सिसारियो ने विश्वासघात किया और मेरी प्राणों से प्यारी के प्रेम को अपनी ओर आकर्पित कर लिया। वह सिसारियो पर बड़ा क्रुद्ध हुआ, मानो अभी प्राण-दण्ड देना चाहता है। उसने कहा—अच्छा नौकर, मेरे साथ चल! मेरी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही है जिसमें शीघ्र ही तू भस्म होनेवाला है।

वायोला उस विपत्ति के समय बिलकुल न घबराई, क्योंकि वह मन से उसको प्यार करती थी। वह कहने लगी—महाराज, जो चाहें सो करें। मैं उसी में सन्तुष्ट हूँ।

जब ओलीविया ने देखा कि वायोला राजा के पीछे-पीछे जा रही है तब उसने ज़ोर से पुकारकर कहा—स्वामिन्! कहाँ जाते हो ?

वायोला ने उत्तर दिया—मैं उसी के पीछे जाता हूँ जो मुझे अपने प्राणों से भी प्रिय है।

ओलीविया सिसारियो को घर ले जाने के लिए आग्रह कर रही थी; क्योंकि विवाह के नियम के अनुसार उसको अधिकार था। परन्तु वायोला उसके साथ जाने को तैयार न थी और कहती थी कि मेरा विवाह हुआ ही नहीं।

इस उलझन के सुलझाने के लिए पुरोहित भी बुलाया गया जिसने ओलीविया का विवाह-संस्कार किया था। परन्तु उसने भी वायोला के विरुद्ध साची दी और कहा कि मैंने आज ही इस मनुष्य का विवाह कराया है।

अब राजा ने सोचा कि जो होना था सो हो गया। अब उसे ओलीविया की प्राप्ति की कुछ भी आशा नहीं रही। इसलिए वह ओलीविया और वायोला दोनों को छोड़कर बड़े क्रोध से चला गया और कह गया कि सिसेरियो, अब कभी हमारे सामने न आवे; क्योंकि यह एक मक्कार और धोखे-बाज़ आदमी है।

राजा नें अभी पीठ ही फेरी थी कि वहाँ पर एक दूसरा सिसारियो आ गया जो ओलीविया को स्त्री कहकर पुकारने लगा। इन दोनों सिसारियों की आकृति एक सी थी। आयु

एक थी। वस्त्र एक से पहने थे और सबसे अधिक आश्चर्य यह है कि उनकी बोली में भी कुछ भेद न था। इस वैचित्र्य को देखकर सब दर्शक चकित हो गये और उनकी समझ में एक बात भी न आई। ओलीविया खड़ी-खड़ी सोचने लगी कि उन दोनों में मेरा कौन सा पति है।

परन्तु वायोला एक ऐसी थी कि जिसे कुछ आश्चर्य नहीं हुआ था। उसे एण्टोनियो के मुख से सिवाश्चियन का नाम सुनकर ही यह आशा हो गई थी कि मेरे भाई का पता लगनेवाला है। इसलिए ज्योंही वायोला ने अपने सदृश दूसरे आदमी को देखा, वह पहचान गई। सिवाश्चियन को कुछ आश्चर्य ज़रूर हुआ; क्योंकि उसे अपनी बहन को इस वेष में देखने का ख़याल तक न था। जब सिवाश्चियन ने वायोला से उसका नाम तथा वंश पूछा तब उसने कह दिया—मैं तुम्हारी प्यारी बहन वायोला हूँ।

अब तो भाई-बहन मिलकर बहुत ही प्रसन्न हुए। और ओलीविया को इस बात पर बड़ी हँसी हुई कि वह एक स्त्री से विवाह करने को राजी हो गई। अब सिमारियो को इस बात का भी भेद खुल गया कि मैं कभी किसी स्त्री से प्रीति न करूँगा।

परन्तु ओलीविया इस बात से अप्रसन्न नहीं हुई कि बहन के स्थान में भाई उसका पति हो गया।

ओलीविया के विवाहिता होने की ख़बर सुनते ही राजा उससे प्रेम करना छोड़ चुका था परन्तु जब उसे मालूम हुआ

कि सिसारियो, जिसको वह एक रूपवान लड़का जानता था, एक सुन्दर स्त्री है तब वह उसको बड़े ध्यान से देखने लगा। उसने कहा—अब मैं समझा कि तू क्यों कहता था कि मैं आप जैसी स्त्री को चाहता हूँ।

राजा का वायोला पर अनुराग देखकर ओलीविया ने उन दोनों को अपने घर निमन्त्रित किया जहाँ उसी दिन राजा और वायोला का भी विवाह हो गया और वायोला इलीरिया की रानी हुई।

इस आनन्द के समय में एण्टोनियो के भी उच्च के ग्रह आ गये। उसका अपराध क्षमा कर दिया गया।



जैसे को तैसा

MEASURE FOR MEASURE

बहुत दिन हुए कि वियना नगर में एक ऐसा नम्र और दयालु राजा शासन करता था जिसकी प्रजा राजनियमों का उल्लङ्घन करके भी दण्ड नहीं पाती थी। इसलिए लोग प्रायः राजनियमों को भूल ही गये थे। इनमें से एक नियम यह था कि यदि कोई मनुष्य अपनी विवाहिता स्त्री के सिवा किसी अन्य स्त्री से अनुचित प्रेम करे तो उसको प्राणदण्ड दिया जाय। परन्तु उस कोमल-हृदय राजा ने इस नियम के अनुसार अपनी आयु में कभी किसी को दण्ड नहीं दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग विवाह की पवित्र संस्था को बिलकुल भूल गये और स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध बहुत ही असन्तोषजनक हो गया। नित्य-प्रति युवती स्त्रियों के माता-पिता की यह शिकायत आने लगी कि इस नियम के भूल जाने से लोगों के आचार-व्यवहार बहुत ही दूषित होने लगे हैं।

राजा को यह देखकर बड़ा कष्ट हुआ कि हमारी प्रजा में रोज़-बरोज़ पाप की उन्नति और धर्म की अवनति होती

जाती है। परन्तु उसने विचार किया कि यदि मैं शीघ्र ही अपने इस नम्र भाव को बदलकर कठोरता से नियमपालन मे संलग्न हूँगा तो समस्त प्रजा, जिसको बहुत दिनों से कोमल व्यवहार की आदत हो रही है और जो मुझसे बहुत प्यार करती है, झट मेरे विरुद्ध हो जायगी और मुझे क्रूर समझने लगेगी। इस कठिनाई का उसने यह उपाय सोचा कि थोड़े दिनो के लिए किसी अन्य देश मे भ्रमण के लिए चला जाऊँ और अपने स्थान मे उस समय के लिए किसी अन्य मन्त्री आदि को शासक बना के उसे हुक्म दे जाऊँ कि तुम व्यभिचार-सम्बन्धी नियम का बड़ी सख़्ती से पालन करो जिससे ये लोग अपनी दुष्टता से बच सकें और लोग मुझसे भी अप्रसन्न न हों।

राजा ने अपनी अनुपस्थिति मे राजप्रबन्ध करने के लिए ऐञ्जीलो नामक मनुष्य को नियत किया। यह ऐञ्जीलो वियना भर में शुभ कर्म और धार्मिक जीवन के लिए प्रसिद्ध था और सब लोग उसे सन्त समझते थे। जब राजा ने अपने मन्त्री एस्कैलस से अपना विचार प्रकट किया तब उसने कहा— महाराज! वियना भर मे अगर कोई आदमी है जो इस असाधारण कार्य अथवा मान के योग्य हो तो यह ऐञ्जीलो है।

इस प्रकार राज्यप्रबन्ध ऐञ्जीलो को सुपुर्द करके राजा पोलैण्ड की सैर करने के लिए वियना से चल दिया। परन्तु यह परदेश-यात्रा केवल कहने के लिए थी। वास्तव में राजा

वहुत जल्दी अपने देश को लौट आया और साधु के वेष मे रहकर गुप्त रीति से ऐञ्जीलो के प्रवन्ध का निरीक्षण करने लगा।

जिस समय ऐञ्जीलो को यह प्रवन्ध दिया गया था उसके थोड़े ही दिनों वाद क्लौडियो नामी एक प्रतिष्ठित पुरुष पर यह अभियोग चलाया गया कि वह एक स्त्री को उसके मा-बाप के घर से फुसला लाया है। इस नये शासक ने पहले तो क्लौडियो को क़ैद कर लिया फिर उस प्राचीन नियम के अनुसार, जिसको लोग प्रायः भूल गये थे, उसको प्राण-दण्ड देने का हुक्म दिया। अब तो नगर में शोर पड़ गया और सारी प्रजा भयभीत हो गई। क्योंकि उन्होंने कभी अपनी याद में इस प्रकार का दण्ड नहीं सुना था। वहुत से लोग क्लौडियो की सिफ़ारिश करने आये जिनमे एक मनुष्य राजमन्त्री एस्कैलस भी था।

ऐञ्जीलो ने उत्तर दिया—राजनियम कोई विभीषिका तो है ही नहीं जिससे पक्षी डर तो जायँ परन्तु उससे उनको कुछ हानि न पहुँच सके। नियमों मे परिवर्त्तन होना ठीक नहीं है। लोगों को विलकुल इनके अनुकूल आचरण करना चाहिए।

एस्कैलस—यह तो सत्य है। मैं नहीं कहता कि विल्कुल छोड़ दीजिए; परन्तु प्राणदण्ड देना ठीक नहीं है। इस क्लौडियो का पिता एक सज्जन पुरुष था। उसी के लिए आप इसको क्षमा कर दीजिए। मनुष्य से भूल

हो ही जाती है। केवल देशकाल का भेद है। आपसे भी कभी न कभी ऐसी भूल हो ही गई होगी।

ऐञ्जीलो—एस्केलस! देखो, किसी पाप-कर्म्म की इच्छा करना और बात है और उस काम को कर डालना और बात! सम्भव है कि उस पञ्चायत मे भी, जो किसी चोर को दण्ड देने के लिए बैठा है, एक-दो चोर हों। परन्तु जो मनुष्य स्पष्टतया नियमों का उल्लङ्घन करता है, उसको पूरा दण्ड देना ही न्याय्य है। देखो, यदि कोई रत्न पड़ा हो और हमको ज्ञात न हो तो हम बिना देखे उसको पैरों से कुचलते चले जाते हैं। पर यदि हमे मालूम हो जाय कि यह रत्न है तो अवश्य ही उसको उठाने के लिए खड़े हो जायँगे। "तुमसे भी ऐसी ही भूल हो गई। इसलिए इस मनुष्य को छोड़ दो," यह कहना तुमको उचित नहीं। हाँ, यों कह सकते हो कि 'यदि तुमसे यही भूल हो तो तुमको भी प्राणदण्ड भोगना पड़ेगा'। इसलिए एस्केलस! मैं इसको क्षमा नहीं कर सकता। अब क्लौडियो का बचना असम्भव है।

क्लौडियो का मित्र लूसियो उसे कारागृह मे देखने आया तो क्लौडियो ने कहा—लूसियो! मित्र लूसियो! एक कृपा कीजिए। आप मेरी बहन इज़ाबिला के पास जाइए। वह आज सेण्ट क्लेयर के मन्दिर मे महन्तिन होना चाहती है।

उससे जाकर मेरा हाल कह दीजिए और यह भी जता दीजिए कि मुझे अवश्य प्राणदण्ड मिलेगा। इसलिए यदि वह इस नये शासक के पास जाकर विनती करे तो सम्भव है, मेरी जान बच जाय। क्योंकि युवतियों के दुःख पर सभी लोग तरस खाते हैं। दूसरे यह कि मेरी बहन में वाक्पटुता इस प्रकार की है कि लोग उसके कहने को प्रायः टाल नहीं सकते।

इज़ाबिला उसी दिन मठ में दाख़िल हुई थी और अभी नियमानुसार महन्तिन नहीं बनी थी। लूसियो ने जब मठ का द्वार खटखटाया तब वहाँ की पुजारिन ने इज़ाबिला से कहा—यह किसी पुरुष की बोली मालूम होती है। इज़ाबिला! द्वार खोल दो और इस मनुष्य से पूछ लो कि क्या कहना चाहता है। तुम अभी महन्तिन नहीं हुई हो। इसलिए तुम पुरुषों से बातचीत कर सकती हो। मठ के नियमानुसार मैं ऐसा नहीं कर सकती। पर बात करते समय घूँघट डाल लेना।

लूसियो ने इज़ाबिला को देखकर कहा—कुमारी! आप मुझे, अभागे क्लौडियो की बहन इज़ाबिला से मिला सकती हो?

इज़ाबिला—क्यों? क्लौडियो क्यों अभागा है? मैं ही इज़ाबिला हूँ।

लूसियो—तुम्हारा भाई क़ैद में है। उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।

इज़ाबिला—क्यों?

लूसियो ने कहा कि उस पर एक स्त्री को फुसलाने का दोष लगाया गया है। इज़ाविला समझ गई कि यह बहन जूलियट होगी। जूलियट और इज़ाविला बहनें नहीं थीं किन्तु वे एक ही शाला में पढ़ी थीं इसलिए एक दूसरी को बहन कहकर पुकारा करती थीं। इज़ाविला को यह भी मालूम था कि जूलियट क्लौडियो से बहुत प्रेम किया करती थी। उसने समझा कि यही दोष मेरे भाई पर लगाया है।

जब लूसियो ने इज़ाविला से कहा कि आप जाकर ऐन्जीलो से अपने भाई की सिफ़ारिश कीजिए तब वह कहने लगी—हाय! मुझ में क्या शक्ति है कि उसको कुछ लाभ पहुँचा सकूँ!

लूसियो—अपने भरसक यत्न करो।

इज़ाविला—मुझे अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं।

लूसियो—अविश्वास ही विष है। अविश्वासी लोग बहुधा उन कर्म्मों के करने से भी रह जाते हैं जिनको वे भली भाँति कर सकते हैं। लार्ड ऐन्जीलो की सेवा में जाओ, क्योंकि कुमारियों के वचनों को लोग टाल नहीं सकते। जब कुमारियाँ रोती-चिल्लाती हैं तब उनकी प्रार्थना स्वीकृत ही हो जाती है।

इज़ाविला—अच्छा, देखूँ मैं क्या कर सकती हूँ।

लूसियो—जल्दी करो।

इज़ाविला—मैं अभी जाती हूँ। केवल माताजी (मठ की स्वामिनी) को सूचना दे दूँ। आपने मेरे ऊपर बड़ा

अनुग्रह किया। अब जाइए और मेरे भाई को तसल्ली दे दीजिए। मैं इसी रात को अपने साफल्य का हाल भेजूँगी।

इज़ाबिला ने उसी समय राजमहल को प्रस्थान किया और थोड़ी देर पीछे एक नौकर ने लार्ड ऐञ्जीलो से इत्तला की—महाराज! जिस मनुष्य को फाँसी का दण्ड दिया गया है उसकी बहन आपसे प्रार्थना करना चाहती है।

ऐञ्जीलो—क्या उसके कोई बहन भी है?

आदमी—हाँ श्रीमहाराज! उसकी बहन बड़ी सुशीला है।

ऐञ्जीलो—अच्छा, बुला लाओ।

थोड़ी देर में लूसियो और इज़ाबिला दोनों राजमहल में दाखिल हुए और इज़ाबिला ने कहा—धर्म्मावतार! यह दीन अबला आप से कुछ निवेदन किया चाहती है। यदि अनुमति हो तो कहूँ?

ऐञ्जीलो—क्या कहना चाहती हो, कहो।

इज़ाबिला—व्यभिचार एक ऐसा पाप है जिससे मुझे अत्यन्त घृणा है। मैं चाहती हूँ कि इसका अवश्य ही दण्ड दिया जाय। परन्तु अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं सिफ़ारिश करने पर मजबूर हूँ।

ऐञ्जीलो—अच्छा, क्या है?

इज़ाबिला—मेरे भाई को फाँसी का हुक्म हुआ है। मेरी प्रार्थना है कि उसके दोष को दण्ड दिया जाय न कि उसको।

ऐन्जीलो—क्या बिना पापी को सज़ा दिये पाप को सज़ा मिल सकती है? पाप तो होने से पहले ही निन्दनीय है। अगर पाप करनेवाले को छोड़ दिया जाय तो मेरा फिर क्या काम?

इज़ाबिला—हाय! बड़े कठोर नियम हैं। मेरे एक ही भाई था—ईश्वर आपको सत्य पर दृढ़ रक्खे!

अब इज़ाबिला चलने लगी परन्तु लूसियो ने फिर कहा—इज़ाबिला, अभी निराश मत हो। फिर रोओ-चिल्लाओ। इसके पीछे पड़ जाओ। तुमको तो कुछ भी प्रेम नहीं है?

इज़ाबिला ने साहस करके कहा—क्या इसको फाँसी ही मिलेगी?

ऐन्जीलो—कुमारि! अब कुछ नहीं हो सकता।

इज़ाबिला—मैं तो यह समझती हूँ कि यदि आप क्षमा कर देंगे तो न ईश्वर आपसे अप्रसन्न होगा और न आदमी।

ऐन्जीलो—मैं क्षमा न करूँगा—

इज़ाबिला—लेकिन आप चाहें तो क्या क्षमा कर सकते हैं?

ऐन्जीलो—जिस बात को मैं चाहता नहीं उसको कर भी नहीं सकता।

इज़ाबिला—लेकिन अगर आपको भी ऐसा ही दर्द होता जैसा मुझको है तो आप भी उसे क्षमा कर सकते थे। इससे देश का कुछ अहित न होता।

ऐन्जीलो—अब तो बहुत देर हो गई। हुक्म हो चुका।

इज़ाविला—बहुत देर ? नहीं नहीं। मैं जो शब्द कह रही हूँ वह लौट सकता है। आपको स्मरण रहे कि राजमुकुट या अन्य वाहरी चिह्न राजा के लिए इतने आवश्यक नहीं हैं, जितनी दया। अगर आपने उसका सा अपराध किया होता और आप भागते और वह न्यायाधीश होता तो मैं समझती हूँ कि वह आपसे ऐसा कठोरता का व्यवहार न करता।

ऐञ्जीलो—चली जाओ।

इज़ाविला—अगर ईश्वर मुझे ऐञ्जीलो कर देता और आप इज़ाविला होते तो क्या यह दशा होती ? तब मैं आपको बता देती कि क़ैदी क्या होता है और न्यायाधीश क्या।

ऐञ्जीलो—तुम्हारे भाई को सज़ा मिल चुकी। तुम व्यर्थ समय खोती हो।

इज़ाविला—हाय ! संसार में जितने जीवात्मा हैं वे सब दण्डनीय हैं। परन्तु परमात्मा दया करता है। क्या आप चाहते हैं कि ईश्वर आपके साथ ऐसा ही दयारहित न्याय करे जैसा आप औरों के साथ करते हैं ? इस पर विचार कीजिए, तब आप दया का लाभ समझेंगे।

ऐञ्जीलो—युवति ! सन्तोष करो। मैंने उसे दण्ड नहीं दिया किन्तु राजनियमों ने दिया है। अगर वह मेरा लड़का या भाई होता तो उसके साथ भी यही व्यवहार होता। कल सवेरे उसको फाँसी दी जायगी।

इज़ाबिला—कल ! कल ! यह तो बहुत जल्दी है। देखो, उसे क्षमा करो ! क्षमा करो ! वह अभी मरने के लिए तैयार नहीं है। भला इस अपराध मे कितने मनुष्यों को फाँसी लगी है ? क्योंकि किया तो बहुतों ने है।

ऐञ्जीलो—यह नियम नियमावली से निकला तो था ही नहीं, केवल शिथिल हो गया था। इतने लोग कभी अप-राध न करते अगर पहले आदमी को दण्ड दे दिया जाता। अब नियम फिर जाग उठा है और हर एक बात की ख़बर रखता है। उसे मालूम है कि अगर अपराधियों को दण्ड न दिया जायगा तो अपराध बढ़ते जायँगे।

इज़ाबिला—कुछ तो दया कीजिए।

ऐञ्जीलो—न्याय करना ही दया है। ऐसा करने मे मैं उन अज्ञात लोगों पर दया करता हूँ जिनको अपराधी के छोड देने पर कष्ट होगा। मैं अपराधी पर भी दया करता हूँ; क्योंकि अब वह अपराध करके अपनी आत्मा को ख़राब न करेगा। सन्तोष करो, तुम्हारे भाई को कल फाँसी लगेगी।

इज़ाबिला—तो सबसे पहले इस आज्ञा के देनेवाले आप ही हैं और सबसे पहला दण्ड पानेवाला भी यही है ! राक्षस के समान बलिष्ठ होना तो उत्तम बात है पर उस बल को राक्षस के समान व्यवहार में लाना ठीक

नहीं। हे ईश्वर ! तू अपनी बिजली को बड़े-बड़े वृक्षों पर गिराता है। छोटे मेंहदी के पौधों पर उसका असर नहीं होता लेकिन अभिमानी मनुष्य थोड़ा सा भी अधिकार पाकर अपने आपको भूल जाता है और एक बन्दर के समान ईश्वर की साक्षी में वह ऐसे खेल खेलता है कि स्वर्ग के देवगण भी उस पर रुदन करते हैं।

ऐन्जीलो—तुम मुझसे ये बातें क्यों कहती हो ?

इज़ाबिला—इसलिए कि अधिकारी पुरुप चाहे स्वयं पाप करें परन्तु दूसरों को दण्ड देने मे बाल की खाल निकालते हैं। ज़रा अपने मन से पूछिए। अगर वह कहे कि इस प्रकार का अपराध, जैसा कि मेरे भाई ने किया है, स्वाभाविक हो तो आप मेरे भाई को दण्ड देने का विचार तक न कीजिए।

इज़ाबिला के आख़िरी शब्दों का ऐन्जीलो के ऊपर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा; क्योंकि इज़ाबिला के सौन्दर्य ने ऐन्जीलो के मन मे पाप के भाव उत्पन्न कर दिये थे, और वह क्लौडियो के अपराध के समान स्वयं भी अपराध करने के विपय में सोच रहा था। इस सोच-विचार में वह वहाँ से उठ खड़ा हुआ और इज़ाबिला के पास से चल दिया परन्तु इज़ाबिला ने फिर पुकारा और कहा—महाराज ! लौटिए। अभी सुनिए।

ऐञ्जीलो—अच्छा, मैं ख़याल करूँगा। कल आओ।

इज़ाबिला—दीनदयालु! लौटिए, देखिए। मैं आपको भेंट दूँगी।

ऐञ्जीलो—(ग़ुस्सा होकर) अरे क्या रिशवत देगी?

इज़ाबिला—ऐसी भेंट जिसमें ईश्वर भी प्रसन्न हो। मैं रुपया-पैसा नहीं दूँगी और न रत्न और मणि आदि दे सकती हूँ। मैं आपको दुआएँ दूँगी जिनसे ईश्वर भी ख़ुश हो जाय।

ऐञ्जीलो—अच्छा, जाओ कल आना।

इज़ाबिला—ईश्वर आपको धर्मपथ पर दृढ़ रक्खे।

इज़ाबिला तो चली गई परन्तु ऐञ्जीलो के मन में पाप की तरङ्गें उठने लगीं। वह अपने दुष्ट विचारों की ओर ध्यान करके कहने लगा—ओहो! यह क्या है? यह क्या है? क्या मेरा मन इस पर मोहित हो गया है जो मैं इसे देखना चाहता हूँ? अरे! इस रमणी से बातचीत करने को मेरा क्यों जी चाहता है! क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ! अरे क्या विषय-वासना मुझ पर आक्रमण करने लगी? किसी स्वैरिणी स्त्री ने अब तक मेरे धर्म को नहीं डिगाया परन्तु आज इस साध्वी ने मुझे आकर्षित कर लिया। क्या कामदेव साधुओं को जीतने के लिए साध्वी स्त्रियों द्वारा आक्रमण करता है?

इस प्रकार रातभर ऐञ्जीलो अपने पापों का अनुभव करके पश्चात्ताप करता रहा और उसकी रात क़ैदियों से भी अधिक

शोक मे कटी। कभी तो उसकी यह इच्छा होती कि इज़ाविला को सत्य मार्ग से हटाकर फुसला लो। कभी यह कहता कि देखो, मैं कितना दुष्ट हूँ जो एक साध्वी रमणी को इस प्रकार वहकाना चाहता हूँ। सारांश यह कि रात भर यही सोच-विचार करते-करते अन्त में ऐञ्जोलो अपने व्रत से डिग गया। उसने इरादा कर लिया कि सवेरा होते ही मैं इज़ाविला को उसके भाई की जान वचाने की प्रतिज्ञा करके फुसला लूँगा।

हम ऊपर कह चुके हैं कि वियना-नरेश वास्तव में देशाटन करने नहीं गया था किन्तु एक साधु के वेष में अपने देश में फिरता था। वह उसी रात, जिसका कि हम यहाँ वर्णन कर रहे हैं, जेलख़ाने में गया और जेलर से कहने लगा कि मैं अपराधी मनुष्यों को स्वर्ग का मार्ग दिखलाने के लिए यत्न करता फिरता हूँ। इसलिए तुम मुझे क़ैदियों के पास ले चलो जिससे मैं उनको प्रायश्चित्त करने की विधि सिखला सकूँ।

जेलर राजा को क्लौडियो के पास ले गया और राजा उसे समझाने लगा। जब क्लौडियो ने अपने अपराध का सारा हाल कहा तब राजा ने पूछा—अच्छा, क्या तुमको आशा है कि लार्ड ऐञ्जोलो चमा कर देगा?

क्लौडियो—अभागे मनुष्य को आशा के अतिरिक्त सहारा ही क्या है! मुझे जीने की आशा है, पर मैं मरने के लिए उद्यत हूँ।

राजा—मृत्यु के लिए तैयार रहो। इससे मौत और जीवन दोनों ही अच्छे मालूम होंगे। जीवन के लिए इस प्रकार ख़याल करो कि अगर जीवन जाता रहा तो एक ऐसी चीज़ जाती रही जिसके लिए प्रयत्न करना केवल मूर्खों का काम है। ज़िन्दगी एक साँस है जिसे मौत आकर नष्ट कर देती है। हमारा जीवन क्षणिक है। इसके लिए क्या कोशिश करनी चाहिए।

क्लौडियो—साधुजी, आप ठीक कहते हैं। मैं अब मौत से नहीं डरता।

क्लौडियो इस प्रकार धर्मोपदेश सुनता रहा। दूसरे दिन प्रातःकाल इज़ाबिला ऐञ्जोलो के महल में गई। ऐञ्जोलो ने उसे अकेले में बुला लिया और कहा—तुम्हारा भाई नहीं बच सकता।

इज़ाबिला इस उत्तर को सुनकर चलने लगी परन्तु ऐञ्जोलो ने कहा—लेकिन थोड़ी देर बच सकता है। शायद इतनी देर जितनी मैं या तुम रह सकती हो। पर उसे मरना पड़ेगा।

इज़ाबिला—क्या आपके हुक्म से ?

ऐञ्जोलो—हाँ।

इज़ाबिला—कब ?

ऐञ्जोलो—नियमानुसार तो तुम्हारे भाई की जान जाती है। पर यदि तुम भी उसी काम के करने को राज़ी हो

जिसके लिए तुम्हारा भाई फाँसा गया है तो उसकी जान बच सकती है।

ज़ाबिला—मैं अपने सतीत्व को भ्रष्ट न करूँगी।

ओलो—मैं सतीत्व के विषय में नहीं कहता। जो पाप मजबूरी से किये जाते हैं वे चन्तव्य हैं।

ज़ाबिला—आप ऐसी बातें कैसे कर रहे हैं?

ओलो—मैं भी ऐसी बातों के विरुद्ध कह सकता हूँ। पर देखो, तुम्हारे भाई की जान बचाने के लिए यह पाप करना क्या धर्म नहीं है?

ज़ाबिला—अगर अपने भाई के प्राणों की रचा के लिए प्रार्थना करना पाप है तो ईश्वर मुझे दण्ड दे। यदि आपका उसको चमा कर देना पाप है तो मैं इस पाप को दूर करने के लिए रात-दिन दुआ करूँगी। और कुछ नहीं हो सकता।

ओलो—अरे सुनो! या तो तुम बेसमझ हो या मक्कारी से बेसमझ बनती हो। यह बात ठीक नहीं। मैं साफ़-साफ़ कहता हूँ कि तुम्हारे भाई को फाँसी लगेगी।

ज़ाबिला—अच्छा।

ओलो—उसने फाँसी के योग्य ही काम किया है।

ज़ाबिला—सच है।

ओलो—हाँ तो उसके बचने का एक ही उपाय है अर्थात तुम अपना सतीत्व खोओ।

इज़ाबिला—मैं अपने भाई के लिए उतना ही कर सकती हूँ जितना अपने लिए। आज यदि मुझे प्राणदण्ड दिया जाता तो मैं कोड़ों की चोट को आभूषणों से अधिक उत्तम समझती परन्तु किसी अनुचित व्यवहार के लिए तैयार न होती।

ऐंजीलो—तो तुम्हारे भाई को अवश्य फाँसी लगेगी।

इज़ाबिला—यह तो सच्ची बात है। एक भाई का एक बार मर जाना अच्छा है पर उसकी बहन का हमेशा के लिए मरना अच्छा नहीं।

ऐंजीलो—तो क्या तुम इतनी ही कठोर नहीं हो जितना वह नियम है जिसे तुम कल से बुरा कह रही हो?

इज़ाबिला—दया से क्षमा कर देना और बात है और दुराचार करके छुड़ाना और बात।

ऐंजीलो—हम सब निर्बल आत्मा के हैं और विषयों का मुक़ाबिला नहीं कर सकते।

इज़ाबिला—इसी लिए तो मेरे भाई को क्षमा करना चाहिए।

ऐंजीलो—स्त्रियाँ भी ऐसी ही हैं।

इज़ाबिला—हाँ। ये तो दर्पण के समान हैं जो जल्दी से टूट जाता है। पुरुष अपने लाभ के लिए स्त्रियों को बिगाड़ते हैं।

ऐंजीलो—साफ़ बात यह है कि मुझे तुमसे प्रेम है।

इज़ाबिला—और मेरे भाई को जूलियट से प्रेम था परन्तु आप कहते हैं कि उसको फाँसी लगेगी।

ऐंजीलो—अगर तुम मुझसे प्रेम करो तो उसको फाँसी न लगे।

इज़ाबिला—दुष्ट ऐंजीलो! जल्दी से मेरे भाई को क्षमा कर दे; नहीं तो संसार में प्रसिद्ध कर दूँगी कि तू कैसा पुरुष है।

ऐंजीलो—तेरी कौन सुनेगा? सब मेरे पवित्र जीवन से अभिज्ञ हैं। मैं इस समय ऐसे पद पर नियत हूँ कि कोई तेरा कहना नहीं मान सकता। देख, या तो मेरी बात मान, नहीं तो तेरे भाई को फाँसी लगेगी और बड़ी बुरी तरह फाँसी लगेगी।

बेचारी इज़ाबिला वहाँ से चली आई और कहने लगी, "अब मैं किससे कहूँ। कौन मेरा विश्वास करेगा!" जब वह जेलखाने की ओर आई तब राजा साधु के वेष में उसके भाई को धर्मोपदेश कर रहा था। उसने जूलियट को भी बहुत समझाया था। वह लज्जा के मारे अपने अपराध पर पश्चात्ताप कर रही थी और कहती थी कि क्लौडियो का इतना अपराध नहीं जितना मेरा है।

इज़ाबिला ने जेलखाने में जाकर कहा—मैं क्लौडियो से कुछ कहना चाहती हूँ।

जेलर—हाँ, आ जाओ।

क्लौडियो—बहन, क्या कुछ आशा है ?

इज़ाबिला—बहुत आशा। लार्ड ऐंजोलो को स्वर्ग में कुछ काम है सो वह तुमको अपना दूत बनाना चाहता है। वहाँ तुम हमेशा रहोगे। इसलिए तैयारी कर लो। कल तुमको जाना होगा।

क्लौडियो—क्या कोई उपाय नहीं ?

इज़ाबिला—बस ऐसा उपाय है जिससे शरीर तो बच जाय पर आत्मा की मृत्यु हो जाय।

क्लौडियो—कोई है भी ?

इज़ाबिला—हाँ भाई! ऐंजोलो पिशाच है। वह तुमको मौत से बचा सकता है, पर आयु भर क़ैद रक्खेगा।

क्लौडियो—आयु भर ?

इज़ाबिला—भाई! मुझे तुमसे डर लगता है। सम्भव है, तुम छः-सात साल अधिक जीने को अपने धर्म से अधिक प्रिय समझो। मृत्यु का भय बड़ा भारी होता है परन्तु एक कीड़ा जो हमारे पैरों तले कुचल जाता है उसे इतना ही कष्ट होता है जितना हमको।

क्लौडियो—मुझसे क्यों डरती है ? अगर मरना ही है तो मैं .खुशी से मरूँगा।

इज़ाबिला—मेरे बाप की आत्मा अपने पुत्र के इस वीरता-युक्त उत्तर को सुनकर .खुश होगी। तुम अब मरने

के लिए तैयार रहो। यह शासक, जो आज साधु बना फिरता है, एक पिशाच है।

क्लौडियो—कौन! लार्ड ऐञ्जीलो?

इज़ाबिला—हाँ वही पापिष्ठ! भाई, क्या तुम समझते हो कि अगर मैं उसके साथ अपना सतीत्व नष्ट कर दूँ तो तुम बच जाओगे?

क्लौडियो—नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

इज़ाबिला—हाँ, वह यही कहता है। आज की रात उसने सोचने को दी है। नहीं तो कल तुमको फाँसी लगेगी।

क्लौडियो—तुम ऐसा मत करो।

इज़ाबिला—अगर मेरे प्राण जाते होते तो मैं कुछ परवा न करती और तुमको बचा लेती। कल मरने के लिए तैयार रहो।

क्लौडियो—मौत से डर लगता है।

इज़ाबिला—पापिष्ठ जीवन भी घृणा के योग्य है।

अब क्लौडियो की आत्मा मृत्यु के भय से आच्छादित हो गई; क्योंकि पापी मनुष्यों को मौत बड़ी भयानक प्रतीत होती है। अब उसकी सब वीरता जाती रही। वह कहने लगा—प्यारी बहन! मुझे जीने दो। जो पाप तुम करती हो वह भाई के प्राण बचाने के लिए है। इसलिए ईश्वर तुमको क्षमा करेगा!

इज़ाबिला—हे पशु, हे कायर, हे निर्लज्ज! क्या तुम अपनी बहन का सतीत्व नष्ट करके जीवित रहना चाहते हो? तुमको धिक्कार है। मैं समझती थी कि मेरा भाई दस बार भी ख़ुशी से मर जाता और अपनी बहन का धर्म रखता।

अब इज़ाबिला वहाँ से चल दी और साधु ने क्लौडियो से कहा—क्लौडियो, ऐञ्जोलो ऐसा नहीं है। उसने तो केवल तुम्हारी बहन की परीक्षा करने के लिए ऐसा कहा था। तुम्हारे बचने की कोई आशा नहीं है। इसलिए मृत्यु के लिए तैयार रहो।

तब तो क्लौडियो की आँखें खुलीं। वह अपने कायरपन पर पछताने लगा। उसने कहा—मैं अपनी बहन से क्षमा का प्रार्थी हूँगा। मुझे अब जीना अच्छा नहीं लगता।

जब क्लौडियो जेल के भीतर चला गया तब साधु और इज़ाबिला अकेले रह गये। साधु ने कहा—जिस हाथ ने तुमको रूप दिया है उसने तुम्हें सतीत्व भी दिया है।

इज़ाबिला—हाय! राजा को ऐञ्जोलो पर कितना धोखा हुआ है। अगर वह देशाटन से लौट आवे और मुझे कहने का अवसर मिले तो मैं सब हाल कह दूँगी।

साधु—यह तो ठीक है। पर ऐञ्जोलो इसको नहीं मानेगा। इसलिए जो मैं कहूँ सो करो। जो तुम एक अबला दीन स्त्री की सहायता करो, अपने भाई की जान

बचा लो और अपना भी सतीत्व रख लो तो मुझे आशा है कि अगर राजा लौट आया तो तुमसे बहुत खुश होगा।

इज़ाबिला—मैं सब कुछ कर सकती हूँ, अगर अधर्म न हो।

साधु—क्या तुमने मैरीना का नाम सुना है जो फ़्रेडरिक नामी सिपाही की बहन है ?

इज़ाबिला—हाँ सुना है। वे बड़ी साध्वी हैं।

साधु—यह ऐंजोलो की स्त्री है। इसका जहेज उसी जहाज़ में था जिसके डूब जाने से दूसरे भाई की मृत्यु हो गई। इस धन के न मिलने से दुष्ट ऐंजोलो ने अपनी स्त्री को भी छोड़ दिया और यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह कुटिला है। वास्तव मे यह सब रुपये के लिए ढोंग था। मैरीना अपने पति पर अब तक वैसा ही प्रेम करती है। इसलिए आज तुम ऐंजोलो के पास जाकर आधी रात के समय आने की प्रतिज्ञा कर आओ और अपने भाई के लिए क्षमापत्र लिखवा लाओ। रात के समय अपने वेष में मैरीना को उसके पास भेज देना; क्योंकि वह उसकी विवाहिता स्त्री है। उसका वहाँ जाना पाप नहीं।

इज़ाबिला राज़ी हो गई और मैरीना से सब बातों का निश्चय कर लिया।

जब इज़ाबिला ऐन्जीलो के पास से लौटकर मैरीना के घर आई तब साधु भी वहाँ था। उसने पूछा—कहो, क्या कर आईं ?

इज़ाबिला ने सब हाल कह सुनाया और वह स्थान भी बतलाया जहाँ रात को मिलने की उसने प्रतिज्ञा की थी। उसने मैरीना से कहा—ऐञ्जीलो का एक बाग़ है जिसके चारों ओर दीवार है। पश्चिमी ओर अंगूर के खेत हैं जिनका एक दरवाज़ा है। पहले इस कुञ्जी से पहले फाटक को खोलना फिर दूसरी से एक छोटे से गुप्त दरवाज़े को खोल सकती हो। ऐन्जीलो ने दो बार मुझे रास्ता बता दिया और मेरे भाई के लिए क्षमापत्र लिखने का वादा भी कर दिया है।

साधु ने पूछा—क्या और कोई बात नहीं है ?

इज़ाबिला—नहीं। मैंने कह दिया है कि मैं थोड़ी देर को आऊँगी और साथ में एक नौकर भी होगा। वह मेरे साथ इसलिए आवेगा कि लोग जानें कि मैं अपने भाई की सिफ़ारिश करने आई हूँ।

फिर इज़ाबिला ने मैरीना से कहा—ऐञ्जीलो से मिलते समय कुछ कहना मत। लेकिन मेरे भाई का ख़याल रखना।

इज़ाबिला ख़ुशी-ख़ुशी उस रात को मैरीना को उसी स्थान पर ले गई जिसे ऐञ्जीलो ने नियत कर दिया था। उसे अब विश्वास था कि मेरा भाई बच गया। परन्तु वियना-नरेश को, जो साधु के वेष में सब बातों का निरीक्षण कर

रहा था, क्लौडियो के बचने की आशा न थी। वह उसी रात को जेलखाने पहुँचा। वहाँ जाकर देखा कि ऐञ्जोलो ने क्लौडियो को फाँसी देने के लिए एक सख्त हुक्म जेलर के पास भेज दिया है। उस काग़ज़ में यह भी लिखा था कि पाँच बजे सवेरे तक क्लौडियो का सिर काटकर मेरे पास भेज दो।

राजा ने जेलर से कहा कि तुम क्लौडियो को फाँसी मत दो और ऐञ्जोलो की शान्ति के लिए एक मुर्दे का सिर काट-कर भेज दो। साधु की यह बात मानने के लिए जेलर तैयार नहीं था परन्तु राजा ने अपने हाथ की मुहर करके एक पत्र उसे दिया जो राजा की ओर से था। इससे जेलर ने समझा कि यह साधु राजा के पास से आया है। इस प्रकार क्लौडियो की मौत टल गई और जेलर ने एक मुर्दे का सिर काटकर ऐञ्जोलो के पास भेज दिया।

उसी समय राजा ने एक अन्य मनुष्य के हाथ ऐञ्जोलो को अपनी ओर से एक पत्र लिखा कि कई कारणों से मैं अब देशाटन करने नहीं जा सकता। प्रातःकाल तक वियना में वापिस आ जाऊँगा। इसलिए तुम नगर के बाहर हमको मिलो और सब प्रजा में यह ढिंढोरा कर दो कि जिस किसी को किसी बात की शिकायत करनी हो वह मुझसे करे और उसी समय फाटक के ऊपर अपने प्रार्थना-पत्र पेश करे।

दूसरे दिन प्रातःकाल इज़ाबिला जेलखाने में आई और राजा से, जो साधु के वेष में वहाँ था, कहा कि क्लौडियो मारा गया।

जब इज़ाबिला अपने भाई की मृत्यु पर शोक करने लगी और ऐंजीलो को उसकी दुष्टता पर कोसने लगी तब साधु ने उसे ढाढ़स बँधाया और कहा कि कल राजा आनेवाला है। उससे इस प्रकार प्रार्थना करना और अगर कोई बात तुम्हारे विरुद्ध भी हो तो भी मत डरना। इज़ाबिला को समझाकर साधु मैरीना के पास पहुँचा और उसे भी आवश्यक उपदेश कर दिया।

अब राजा ने साधु का वेष उतार दिया। वह राजसी ठाट-बाट से नगर के फाटक पर पहुँचा जहाँ बहुत से नागरिक ऐंजालो सहित उसका स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए थे। उसी स्थान पर इज़ाबिला और मैरीना भी अपनी-अपनी प्रार्थना करने के लिए वहाँ आई हुई थीं। राजा ने कहा—मित्रो, मुझे आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई है।

ऐंजीलो और एस्केलस }—हम आपका स्वागत करते हैं।

राजा—मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ। मैंने सुना है कि आपने बड़े न्याय से राजप्रबन्ध किया है।

इज़ाबिला—महाराज, न्याय कीजिए! महाराज, न्याय कीजिए! एक दुखिया का दुःख दूर कीजिए। महाराज, मैं एक कुमारी थी परन्तु मेरे साथ अन्याय किया गया है। श्रीमन्, रक्षा कीजिए।

राजा—कहो, जल्दी कहो और संक्षेप से कहो। लार्ड ऐंजीलो तुम्हारे साथ न्याय करेगा। उससे अपना दुःख कहो।

इज़ाबिला—महाराज, आप तो एक पिशाच से न्याय की आशा रखते हैं। आप ही सुनिए; क्योंकि जो कुछ मैं कहूँगी उसका अगर आपको विश्वास होगा तो न्याय करेंगे, नहीं तो मुझको दण्ड देंगे।

ऐन्जीलो—महाराज, यह पागल हो गई है। इसके भाई को राजनियम के अनुसार फाँसी लगी थी।

इज़ाबिला—नियम के अनुसार!

ऐन्जीलो—और यह बड़ी आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय बातें कहती है।

इज़ाबिला—आश्चर्यजनक परन्तु सच्ची! क्या मेरा यह कहना आश्चर्यजनक नहीं है कि ऐन्जीलो झूठा है; ऐन्जीलो घातक है; ऐन्जीलो व्यभिचारी है; ऐन्जीलो मक्कार है?

राजा—दसगुना आश्चर्यजनक!

इज़ाबिला—यह सब इतना ही सत्य है जितना यह कहना कि यह ऐन्जीलो है। यह दसगुना सत्य है, क्योंकि सत्य तो सत्य ही है।

राजा—इसे यहाँ से ले जाओ। यह पागल मालूम होती है।

इज़ाबिला—राजन्, मुझे निराश मत करो! मैं पागल नहीं हूँ। जो मैं कहती हूँ वह असम्भव तो नहीं, आश्चर्यजनक ज़रूर है। बहुत सम्भव है कि एक मनुष्य वास्तव में पिशाच हो परन्तु देखने में साधु प्रतीत होता हो, भीतर-भीतर व्यभिचार करे और बाहर से ब्रह्मचारी

बने; भीतर-भीतर पाप करें और बाहर न्यायाधीश बने। यही दशा ऐञ्जीलो की है। यह बड़ा दुष्ट है।

राजा—यह मालूम तो पागल होती है परन्तु बातें समझ की करती है। मैंने ऐसे पागल नहीं देखे।

इज़ाबिला—महाराज, न्याय कीजिए, और दूध का दूध और पानी का पानी कर दीजिए।

राजा—तुम क्या कहती हो?

इज़ाबिला—मैं क्लौडियो की बहन हूँ जिसे व्यभिचार के दोष में फाँसी मिली है। मैं लूसियो के साथ क्षमा माँगने के लिए ऐञ्जीलो के पास भेजी गई थी।

लूसियो—जी हाँ, मैं इसके साथ गया था।

इज़ाबिला—हाँ। यही लूसियो है।

राजा—तुमसे किसने पूछा?

लूसियो—मुझसे चुप नहीं रहा गया।

इज़ाबिला—मैं इस दुष्ट के पास गई।

राजा—यह पागलपन है।

इज़ाबिला—क्षमा कीजिए, यही विशेषण उपयुक्त है।

राजा—सँभलकर कहो।

इज़ाबिला—सारांश यह है कि ऐञ्जीलो ने मुझे फुसलाया और सतीत्व नष्ट करने पर मेरे भाई को छोड़ने का वादा किया। बहुत सोच-विचार के बाद अपने भाई के प्राण बचाने के लिए मैं अपने सन्मार्ग से डिग गई।

परन्तु जब इस दुष्ट का काम निकल गया तब इसने मेरे भाई को फाँसी दिला दी।

राजा—सम्भव है।

इज़ाबिला—सम्भव ही नहीं किन्तु सत्य है।

राजा—लड़की, तू नहीं समझती कि तू क्या कह रही है। प्रथम तो ऐञ्जीलो अपनी साधुता के लिए प्रसिद्ध है। दूसरे यह कि अगर उससे यह अपराध हो भी गया होता तो वह अवश्य तेरे भाई को क्षमा कर देता। मालूम होता है, किसी ने तुझे बहका दिया है।

इज़ाबिला—हाय, क्या यही होना था! हे ईश्वर, मेरी रक्षा करो।

राजा—कोई आदमी इसे जेल को ले जावे। हम नहीं चाहते कि हमारे प्रतिष्ठित पुरुषों पर दोष लगाये जायँ। क्या कोई इसका साक्षी है?

इज़ाबिला—*लोडोविक नामी साधु।

राजा—लोडोविक नामी साधु को कोई जानता भी है?

लूसियो—मैं जानता हूँ। वह एक झगड़ालू साधु था। अगर वह साधु न होता तो मैं उसे ख़ूब मारता। क्योंकि मुझे उसकी बातें पसन्द नहीं थीं। वह आपके भी विरुद्ध कहता था।

---

* राजा ने अपना यह नाम रख लिया था जब वह साधु के वेष में था।

राजा—मेरे विरुद्ध! उसी ने इस स्त्री को बहकाया होगा। कोई जाकर उस साधु को बुला लाओ।

लूसियो—रात को मैंने इज़ाबिला और साधु को जेल के पास देखा था।

इस समय लोग इज़ाबिला को पकड़कर जेलख़ाने ले गये। अब मैरीना ने बढ़कर अपनी शिकायत शुरू की।

"महाराज! बिना अपने पति की अनुमति के मैं अपना मुँह भी नहीं दिखला सकती।"

राजा—क्या तुम विवाहिता हो?

मैरीना—नहीं।

राजा—क्या कुमारी हो?

मैरीना—नहीं।

राजा—तो विधवा हो?

मैरीना—नहीं।

राजा—क्या कुछ नहीं! न कुमारी, न सधवा, न विधवा?

मैरीना—महाराज, मेरा विवाह नहीं हुआ। पर मैं कुमारी भी नहीं हूँ; क्योंकि मैंने अपने पति का मुख देखा है। परन्तु मेरा पति नहीं जानता कि उसने मेरा मुँह देखा है।

राजा—अच्छा!

मैरीना—महाराज, जो स्त्री ऐञ्जीलो पर व्यभिचार का दोष लगाती है वह मेरे पति पर दोष लगाती है। यह

दोष मिथ्या है; क्योंकि जो समय बताया जाता है उस समय मेरा पति मेरे पास था।

ऐञ्जीलो—क्या इज़ाबिला ने मेरे अतिरिक्त किसी और पर भी दोष लगाया है?

मैरीना—मुझे नहीं मालूम।

राजा—नहीं, तुम अपने पति को भी तो बताती हो।

मैरीना—यह मेरा पति ऐञ्जीलो है। यह नहीं जानता कि इसने मेरे शरीर को स्पर्श किया। यह समझता है कि इसने इज़ाबिला का अङ्ग स्पर्श किया।

ऐञ्जीलो—यह तो बड़ा आश्चर्यजनक दोष है। देखूँ तेरा मुँह!

मैरीना—अपने पति की अनुमति से मैं अपना घूँघट हटाती हूँ। (मुँह उघाड़कर) यही मुँह है जिसको देखकर कठोर ऐञ्जीलो एक दिन ख़ुश होता था। यही हाथ है जिसको पकड़कर इसने एक दिन प्रेम करने की प्रतिज्ञा की थी। यही शरीर है जो इज़ा-बिला के धोखे से आधी रात के समय इसके बाग़ में गया था।

राजा—क्या तुम इस स्त्री को जानते हो?

ऐञ्जीलो—राजन्, मुझे याद पड़ता है कि मैं इसे जानता हूँ। पाँच वर्ष हुए, इसके और मेरे बीच में कुछ विवाह की बातचीत हुई थी। परन्तु यह विवाह हो नहीं

सका। कुछ तो इस वजह से कि इसका जहेज़ नियत धन से कम था। परन्तु विशेष कर इस कारण कि इसके आचार-व्यवहार मे लोग शङ्का करने लगे। पर पाँच वर्ष से मैंने न तो कभी इसे देखा, न वातचीत की और न कभी पत्र-व्यवहार ही किया।

मैरीना—महाराज, जिस प्रकार आकाश से प्रकाश होता है और मुँह से शब्द निकलते हैं उसी प्रकार यह मनुष्य मेरा पति है, और मंगल की रात को मैं इसके पास बाग़ मे गई थी।

ऐन्जीलो—महाराज, अब तक तो मैं हँसता था। परन्तु अब आज्ञा चाहता हूँ कि न्याय के अनुसार इनको दण्ड दिया जाय। मुझे प्रतीत होता है कि साधारण स्त्रियों-द्वारा किसी बड़े मनुष्य ने मुझे मिथ्या दोष लगाने की ठान ली है।

राजा—हाँ हाँ, जितना चाहिए उतना दण्ड दीजिए। आपको अधिकार है। एस्केलस, आप भी ऐन्जीलो को सहायता दीजिए। मैंने उस साधु को भी बुलाया है, जिसने इनको भड़का दिया है। आप मुक़द्दमा कीजिए। मैं थोड़ी देर के लिए जाता हूँ।

अब राजा वहाँ से चला गया और ऐन्जीलो को बड़ी ख़ुशी हुई कि अपने मुक़द्दमे मे आप ही न्यायाधीश बना था परन्तु राजा थोड़ी देर मे साधु के वेष मे आ गया। एस्के-

लस ने, जिसका ख़याल यह था कि ऐञ्जोलो पर झूठा दोष लगाया गया है, साधु से पूछा—"क्या आपने इन स्त्रियों को भड़का दिया है ?" साधु ने उत्तर दिया,—राजा कहाँ है? हम उसी को उत्तर दे सकते हैं।

एस्केलस—इस समय हमीं राजा हैं, ठीक-ठीक कहो। हमीं सुनेंगे।

साधु—हे अनाथो ! क्या तुम लोमड़ियों से यह आशा रखते हो कि मैमने को बचा देंगी ? राजा चला गया तो न्याय भी चला गया ! राजा बड़ा अन्यायी है कि अपनी प्रजा को ऐसे लोगों के हाथ मे छोड़ जाता है। जिस पर दोष लगाया जाय उसी को न्यायाधीश कर देना अन्याय नहीं तो क्या है !

एस्केलस—अरे क्या पागल हुआ है जो ऐसे श्रेष्ठ पुरुष पर दोष लगाता है और फिर राजा को अन्यायी बतलाता है ! इसे यहाँ से पकड़ ले जाओ। बचा, ख़ूब सज़ा पाओगे।

साधु—गर्म न हूजिए। राजा मेरी उँगली भी नहीं दुखा सकता। मैं उसकी प्रजा नहीं हूँ। मैं एक काम से यहाँ आया था। उस समय मैंने वियना के राज-प्रबन्ध की गड़बड़ ख़ूब देखी है।

एस्केलस—इसे जेल को ले जाओ। यह राजा को दोष लगाता है।

जेलर ने साधु को पकड़ना चाहा, परन्तु राजा ने झट साधु के कपड़े उतार डाले और राजा बन गया। उसको देखते ही सबके छक्के छूट गये। राजा ने पहले इज़ाबिला से कहा—वह साधु तुम्हारा राजा ही था। यद्यपि उसने अपना वेष बदल दिया परन्तु उसका मन वैसा ही है। कहो, तुम्हारी क्या सेवा की जाय ?

इज़ाबिला—क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए। मैंने आपको बहुत कष्ट दिया।

राजा—मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ कि मैंने जानते हुए आपके भाई को नहीं बचाया।

अब तो ऐञ्जोलो समझ गया कि राजा ने गुप्त रीति से सब बातें जान ली हैं। उसने कहा—महाराज, मेरा सबसे बड़ा अपराध यह है कि मैं समझता था कि मुझे कोई नहीं देखता। मैं नहीं जानता था कि ईश्वर की तरह आप भी सर्वज्ञ हैं। इसलिए महाराज, मैं बड़ा लज्जित हूँ। मुझे यथार्थ दण्ड दीजिए। और, वह दण्ड यही हो सकता है कि आप मुझे इस घृणित और पापिष्ठ शरीर से मुक्त कीजिए।

राजा—ऐञ्जोलो, तुम्हारा दोष तो स्पष्ट ही है। इसलिए तुमको उसी स्थान पर सूली दी जायगी जहाँ क्लौडियो मारा गया था। (मैरीना से) मैरीना, इसकी सम्पत्ति तुमको दी जाती है कि विधवा होकर तुम इससे उत्तम पति को ग्रहण करो।

मैरीना ने कहा—"महाराज, मैं इसी पति को चाहती हूँ, इससे उत्तम पति मुझे न चाहिए"। फिर उसने हाथ जोड़ और पैरों पड़कर राजा की उसी प्रकार विनती की जैसे इज़ाबिला ने अपने भाई के बचाने के लिए ऐन्जीलो से की थी। उसने इज़ाबिला से कहा—प्यारी इज़ाबिला, मेरे पति की रक्षा के लिए आप भी कोशिश कीजिए। मैं जन्मभर आपका उपकार मानूँगी।

राजा—तुम व्यर्थ उससे प्रार्थना करती हो। अगर वह प्रार्थना करने लगे तो उसके भाई का आत्मा भी क़बर से निकलकर आ जायगा और उसको ले जायगा।

मैरीना—इज़ाबिला, प्यारी इज़ाबिला, मेरे साथ हाथ जोड़ो—कुछ कहो—चुपचाप हाथ जोड़े खड़ी रहो। मैं सब कुछ कह लूँगी। लोग कहा करते हैं कि अपराधी मनुष्य भी पीछे अच्छे हो जाते हैं। शायद मेरा पति भी ऐसा ही हो जाय। इज़ाबिला, क्या तुम इसकी रक्षा के लिए प्रार्थना न करोगी?

राजा—नहीं, इसको तो क्लौडियस के बदले में फाँसी लगेगी। क्लौडियस के बदले में ऐन्जीलो! मौत के बदले मौत! जैसे को तैसा!

इज़ाबिला—(पैरों पड़कर) अन्नदाता, इस अपराधी पर दया कीजिए। मैं समझती हूँ कि इसने केवल न्याय के लिए ही मेरे भाई को प्राण-दण्ड दिया। जब तक

इसने मुझे नहीं देखा, इसके अन्तःकरण में कोई बुरा भाव नहीं उठा था। श्रीमन्, कृपा कीजिए। मैं समझूँगी कि यही मेरा भाई है। मेरे भाई के साथ न्याय किया गया; क्योंकि उसने अपने अपराध की ही सज़ा पाई। ऐञ्जीलो अपने पाप करने में सफल न हो सका। इसलिए जो हुआ सो हुआ। अब जाने दीजिए।

राजा—सब परिश्रम व्यर्थ है। मैं एक बात भी नहीं मानने का। ऐञ्जीलो ने एक और अपराध किया है। यह क्या कारण है कि ऐसे असाधारण समय पर क्लौडियस को फाँसी लगाई गई ?

जेलर—मुझे तो हुक्म मिला था।

राजा—क्या वारण्ट था ?

जेलर—नहीं, एक गुप्त चिट्ठी थी।

राजा—अच्छा, हम तुमको पदच्युत (बरख़ास्त) करते हैं। जेल की कुञ्जियाँ दे दो।

जेलर—क्षमा कीजिए। मैंने जाना नहीं था। पर अब पछताता हूँ। मैंने एक अन्य मनुष्य की जान बचा ली है जिसको मारने की भी गुप्त आज्ञा थी।

राजा—वह कौन है ?

जेलर—बरनार्डायन।

राजा—अच्छा लाओ।

एस्केलस—ऐन्जीलो, मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे बुद्धिमान् और धर्मात्मा पुरुष ने ऐसी मूर्खता और अन्याय से काम लिया।

ऐन्जीलो—मुझे अपने किये पर बड़ा पश्चात्ताप है। मैं ऐसा शोकातुर हो रहा हूँ कि क्षमा की अपेक्षा प्राणदण्ड मुझे भला मालुम होता है। मैं इसी योग्य हूँ।

जिस समय जेलर क़ैदी को पकड़कर लाया उस समय सबने देखा कि यह बरनार्डायन नहीं किन्तु इज़ाबिला का भाई क्लौडियो है। इस पर सबको बड़ी ख़ुशी हुई और राजा ने कहा—प्यारी इज़ाबिला, तुम्हारे लिए मैं तुम्हारे भाई को क्षमा करता हूँ। यदि तुम कृपापूर्वक इस हाथ को स्वीकार करो तो मेरी समस्त सम्पत्ति तुम्हारी हो जाय।

ऐञ्जीलो ने राजा की आँखें देखकर समझ लिया कि अब मेरे प्राण बच गये। राजा ने उससे कहा—देखो, मैं तुमको क्षमा करता हूँ। पर अब सदा अपनी प्यारी स्त्री से प्रेम रखना। मुझे मालूम है कि यह एक सती स्त्री है।

क्लौडियो का विवाह भी जूलियट के साथ हो गया और कई बार प्रार्थना करने पर इज़ाबिला ने राजा की रानी होना भी स्वीकार कर लिया; क्योंकि वह अभी महन्तिन नहीं बनी थी। इज़ाबिला के धार्मिक जीवन ने नगर के लोगों पर ऐसा प्रभाव डाला कि फिर कभी क्लौडियो की भाँति किसी ने अपराध नहीं किया और नगर में बिना दण्ड के ही शान्ति

तथा धर्म का राज हो गया। ऐञ्जीलो को अब मालूम हुआ कि थोड़ा सा अधिकार पाकर उसका हृदय कितना कठोर हो गया था। उसे यह भी ज्ञात हो गया कि दण्ड की अपेक्षा क्षमा करने मे कितनी शक्ति है।

चतुर्थ हनरी

प्रथम भाग

(HENRY IV. PART I.)

चतुर्थ हनरी सन् १३९९ मे इँगलैण्ड की गद्दी पर बैठा परन्तु अभी राज के दो और अधिकारी जीवित थे जिनके पक्ष मे इधर-उधर बहुत से लोगों ने विद्रोह मचाया। हम "द्वितीय रिचार्ड" मे बता चुके हैं कि किस प्रकार उनमे से एक अर्थात् द्वितीय रिचार्ड हनरी के इच्छानुसार मार डाला गया और जिस समय तक लोगों ने उसके मृतक शरीर को देख नहीं लिया, वे लड़ाई-झगड़ा मचाते ही रहे। बहुतों को तो उसका शव देख लेने पर भी विश्वास न हुआ कि रिचार्ड मर गया है।

दूसरा राज्याधिकारी, और इसलिए हनरी का शत्रु, मार्टीमर था जो जौन ऑफ़ गाण्ट के बड़े भाई लायनल आफ़ क्लैरेंस के वंश से था। मार्टीमर के जीवन मे हनरी का राज्य का कुछ भी अधिकार नहीं था। क्योंकि हनरी का पिता गाण्ट, मार्टीमर के पितामह लायनल से छोटा था। परन्तु पार्लिया-मेण्ट रिचार्ड के जीवन से यह शिक्षा ग्रहण कर चुकी थी

कि जहाँ तक हो सके एक वालक को राजा बनाना ठीक नहीं है क्योंकि वालक के राज-समय में बहुत से लोग प्रवन्ध करने के वहाने अत्याचार करने लगते हैं। इसलिए मार्टीमर के वालक होने के कारण हनरी को ही गद्दी मिली। और मिलती क्यों न, हनरी का तो ज़ोर ही था। लोकोक्ति है कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस।"

राज्य मिलने पर भी शत्रुओं के जीते जी हनरी को शान्ति मिलनी दुर्लभ थी। इसलिए उसने मार्टीमर को वेल्स के एक वीर ग्लैण्डोवर के विरुद्ध भेजा। वहाँ वह हार गया और क़ैद हो गया। हनरी ने निस्तार-मूल्य (Ransom) देकर उसको छुड़ाना स्वीकार न किया।

दैवगति से मार्टीमर के सम्वन्धी वड़े वीर पुरुष थे। उसकी शादी ग्लैण्डोवर की पुत्री से हो गई और उसकी बहिन का विवाह नार्थम्बरलैण्ड के पुत्र पर्सी हॅाटस्पर* के साथ हुआ था।

नार्थम्बरलैण्ड का हाल तो आप रिचार्ड के इतिहास में पढ़ ही चुके हैं। यह नार्थम्बरलैण्ड ही था जिसने ख़ास कर हनरी को गद्दी दिलवाई और जिससे चलते समय रिचार्ड ने कह दिया था कि एक दिन हनरी तुमको भी शत्रु से अधिक

---

* अंगरेजी भाषा में 'स्पर' घोड़े की एड़ को कहते हैं और 'हॉट' का अर्थ 'गर्म' है। पर्सी को हॉटस्पर इसलिए कहते थे कि वह युद्ध-कार्य्य में बड़ा तीव्र था।

न मानेगा। ऐसा ही हुआ, क्योंकि रिचार्ड की हत्या और मार्टीमर की क़ैद से ये लोग हनरी के विरुद्ध हो गये।

एक कारण इस विरोध का यह भी हुआ कि नार्थम्बरलैण्ड का देश स्काटलैण्ड और इँगलैण्ड की सीमा पर है। इसलिए अधिकतर नार्थम्बरलैण्ड के रईस ही इँगलैण्ड को स्काच लोगों के आक्रमण से बचाया करते थे। हनरी के राजा बनने के थोड़े ही दिन पीछे स्काटलैण्ड के एक रईस डौगलस ने इँगलैण्ड पर चढ़ाई की परन्तु पर्सी हौटस्पर ने उसे हराकर बहुत से प्रतिष्ठित पुरुषों को क़ैद कर लिया। चतुर्थ हनरी की इच्छा यह थी कि इन सब क़ैदियों को लण्डन में भेज दिया जाय और पर्सी हौटस्पर चाहता था कि इन क़ैदियों के निस्तार-मूल्य से स्वयं लाभ उठाकर इनको छोड़ दे।

एक दिन इस लड़ाई से पहले हनरी ने सोचा कि अब अपने देश के लोगों का आपस में रक्त बहाना उचित नहीं। इसलिए चलकर पवित्र* भूमि को नास्तिकों से मुक्त कराने का यत्न करना चाहिए। ऐसा करने से उसका एक प्रयोजन और भी था। वह समझता था कि अगर देशवासियों का

---

* पवित्र भूमि (पैलिस्टायन), जिसमें ईसा की क़बर है और जो महायुद्ध से पहले मुसलमानों के हाथ में थी। ये लोग ईसाई यात्रियों को कष्ट दिया करते थे। इसलिए यूरोप के राजाओं ने बहुत दिनों तक इसको लेने के लिए युद्ध किया परन्तु ये कृत-कार्य न हुए। ऐसे युद्धों को क्रूसेड कहते हैं।

ध्यान विदेशी युद्धों की ओर बँट जायगा तो वे अपने देश में विद्रोह मचाकर उसे गद्दी से उतारने का यत्न न करेंगे। उसी समय हनरी ने पर्सी हौटस्पर के विजय के समाचार सुने। चतुर्थ हनरी का बड़ा लड़का राजकुमार हनरी इस समय खेल-कूद और नाच-रङ्ग में अपना समय व्यतीत करता था। राजकार्य में उसे कुछ भी रुचि नहीं थी। कुटिल आदमियों को साथ लेकर वह रात-दिन शराब पिया करता था। चलते हुए पथिकों को लूटकर उनका धन छीन लेता था। वह महीनों राजदरबार में ग़ैरहाज़िर रहता था और जिस प्रकार के कामों में राजकुमार हिस्सा लिया करते हैं उनसे उसे घृणा थी। इस अनुचित व्यवहार पर उसका पिता चतुर्थ हनरी बहुत कुढ़ा करता था। भला कौन सा बाप है जो अपने कूपूत को देखकर दुःखित नहीं होता और ऐसा कौन सा पिता है जो अपने लड़कों के पराक्रमों पर फूला नहीं समाता।

जब हनरी ने हौटस्पर की विजय का हाल सुना, वह अपनी तुलना हौटस्पर के पिता नार्थम्बरलैण्ड से करने लगा और वेस्टमोरलैण्ड से, जो इस ख़बर को लाया था, कहने लगा—आपके इस कथन से मुझे रञ्ज होता है। हौटस्पर के पराक्रमों को देखकर मेरे मन में डाह हो रहा है कि लार्ड नार्थम्बरलैण्ड की सन्तान ऐसी पराक्रमी है जिसका यश चारों ओर फैल रहा है। मेरे हनरी का समय अत्याचार और

अनुचित व्यवहारों मे ही कटता है। चारों ओर उसका अप-यश हो रहा है। आज अगर यह सिद्ध हो जाय कि जन्म के समय किसी देवी-देवता ने चुराकर हनरी को पर्सी की जगह और पर्सी को हनरी की जगह रख दिया तो मुझे बड़ी ख़ुशी हो और मैं हनरी को नार्थम्बरलैण्ड को देकर उसके बदले अपना पर्सी ले लूँ।

परन्तु जब हनरी ने सुना कि पर्सी को अपनी विजय पर बड़ा घमण्ड है और वह अपने क़ैदियों को राज-दर्बार में भेजना नहीं चाहता तब उसकी प्रशंसा क्रोध में बदल गई और उसने पवित्र-भूमि के आक्रमण का ध्यान छोड़कर नार्थम्बरलैण्ड और पर्सी को उत्तर देने के लिए लन्दन मे बुलाया।

हनरी के आज्ञानुसार नार्थम्बरलैण्ड, उसका बेटा हॉटस्पर और उसका भाई वोर्सेस्टर राज-दर्बार में उपस्थित हुए। उन्हें देखकर राजा ने कहा—मैं अब तक शान्ति का व्यवहार करता था परन्तु मृदुता से काम नहीं चलता। अब मैं कठोर बनना सीखूँगा। तुम लोग मेरे नम्रभाव से लाभ उठाते हो। परन्तु ध्यान रक्खो कि अब मैं अपनी शक्ति प्रकाशित करूँगा। अब तक मैं तेल के समान स्निग्ध और रुई के समान कोमल था। इसी लिए तुम लोग अपना सिर उठाने लगे।

वोर्सेस्टर—श्रीमहाराज, हमारे वंश ने तो कोई ऐसा अपराध नहीं किया कि आपकी शक्ति इस प्रकार हम पर दिखाई

जाय! और विशेष कर वह शक्ति, जिसने हमारे ही हाथों की सहायता से यह उन्नति पाई है।

नार्थम्बर०—श्रीमहाराज,

राजा—वोर्सेस्टर, यहाँ से निकल जा। हम ऐसे प्रतिकूल मनुष्य की उजड्डता को सहन नहीं कर सकते।

वोर्सेस्टर तो दरबार से निकल गया। अब नार्थम्बरलैण्ड ने कहा—महाराज, होमडन की लड़ाई में पकड़े हुए क़ैदियों को देने से पर्सी ने इस प्रकार निषेध नहीं किया जिस प्रकार आपसे कहा गया है। इसमें मेरे पुत्र का दोष नहीं। किसी ने वैर भाव या ईर्ष्या से आपसे बातें बना दी हैं।

हॉटस्पर—राजन्, मैंने क़ैदी देने से इनकार नहीं किया। हाँ, मुझे इतनी याद है कि जब लड़ाई हो चुकी और क्रोध और मेहनत के मारे मेरा गला सूख रहा था, मैं अपनी तलवार के सहारे झुका हुआ खड़ा था। इतने में एक लार्ड आया जो बना-ठना दूल्हा मालूम होता था। वह हँस-हँसकर बातें करने लगा और जो आदमी लाशों को लिये जा रहे थे उनको बुरा-भला कहने लगा। उसी समय उसने यह भी कहा कि महाराज क़ैदियों को माँगते हैं। मेरे घाव सूखते जाते थे और उनमें बड़ी पीड़ा हो रही थी। इसलिए क्रोध में मैंने न जाने क्या कह दिया। याद नहीं है। परन्तु मुझे युद्ध के समय चिकनी-चुपड़ी बातें सुनकर

बहुत क्रोध आ गया। इससे आपको यह नहीं समझना चाहिए कि हमारी राजभक्ति मे कुछ न्यूनता हो गई है।

राजा—अरे यह तो अभी तक क़ैदियों के देने से इनकार करता है और कहता है कि मार्टीमर* को हम निस्तार-मूल्य देकर वेल्स से छुड़ा लें। यह वही मार्टीमर है जिसने हमे धोखा दिया और ग्लैण्डोवर की कन्या से विवाह कर लिया। क्या हमारा रुपया ऐसे दुष्टों को छुड़ाने के लिए है? अच्छा हो कि वह वेल्स की पहाड़ियों मे ही सड़-सड़कर मर जाय। जो मार्टीमर के लिए एक पैसा भी मुझसे माँगेगा वह मेरा शत्रु है।

हाटस्पर—महाराज, मार्टीमर ने आपको धोखा नहीं दिया। युद्ध के परिणाम को कौन जानता है? वह अकस्मात् हार गया। उसके बहुत से घाव लगे। क्या यह धोखा है?

राजा—पर्सी, तू झूठ बोलता है। उसने ग्लैण्डोवर से कभी युद्ध नहीं किया। अब देख, तू जल्दी से सब क़ैदियों को भेज दे, नहीं तो हम वह बात करेंगे जिससे तुम सब नाराज़ हो जाओगे।

---

* मार्टीमर को हनरी ने ग्लैण्डोवर के विरुद्ध भेजा था। वहाँ पर वह हार गया और वेल्स में क़ैद हो गया। इसी क़ैद मे उसका विवाह ग्लैण्डोवर की पुत्री से हो गया और वे दोनों परस्पर मिल गये।

ये लोग नाराज़ तो इसी समय हो गये थे। इसलिए शीघ्र ही एक बहुत भयानक राज-द्रोह करने की उन्होंने ठान ली। उपर्युक्त भेंट के पश्चात् जब पर्सी, वोर्सेस्टर, और नार्थम्बरलैण्ड आपस मे मिले तब हौटस्पर क्रुद्ध होकर कहने लगा—क्या मैं क़ैदी दे सकता हूँ? कदापि नहीं। मार्टीमर की सिफ़ारिश! अगर राजा को मार्टीमर का नाम ऐसा बुरा लगता है तो देखो किस प्रकार मैं उसके कान मे मार्टीमर, मार्टीमर पुकारूँगा। मैं तो एक तोते को "मार्टीमर" कहना सिखाऊँगा और उसे राजा की भेंट करूँगा। चाहे प्राण रहे चाहे जायँ। मार्टीमर को बचाना अत्यावश्यक है। इस कृतघ्न बोलिङ्ग-ब्रोक* को अवश्य दण्ड दिया जायगा। यह वही हनरी बोलिङ्ग-ब्रोक है जिसको राज देने के लिए हमने इतनी बदनामी सही। बेचारा निर्दोष रिचार्ड इसी दुष्ट के लिए मारा गया। कोई हमको हत्यारा कहता है; कोई अन्य अपशब्दों से याद करता है। मैंने तो इस बोलिङ्ग-ब्रोक को बर्कले दुर्ग मे देखा था, तब कैसी ख़ुशामदें करता था। "प्यारे पर्सी!" "भाई पर्सी," यही शब्द थे। हाय! आज यह दुष्ट उन सब बातों को भूल गया।

वोर्सेस्टर—मैं एक अच्छी सलाह बताता हूँ।

हौटस्पर—कहिए।

---

* बोलिङ्ग-ब्रोक चतुर्थ हनरी का नाम था।

बहुत क्रोध आ गया। इससे आपको यह नहीं समझना चाहिए कि हमारी राजभक्ति मे कुछ न्यूनता हो गई है।

राजा—अरे यह तो अभी तक क़ैदियों के देने से इनकार करता है और कहता है कि मार्टीमर* को हम निस्तार-मूल्य देकर वेल्स से छुड़ा लें। यह वही मार्टीमर है जिसने हमे धोखा दिया और ग्लैण्डोवर की कन्या से विवाह कर लिया। क्या हमारा रुपया ऐसे दुष्टों को छुड़ाने के लिए है? अच्छा हो कि वह वेल्स की पहाड़ियों में ही सड़-सड़कर मर जाय। जो मार्टीमर के लिए एक पैसा भी मुझसे माँगेगा वह मेरा शत्रु है।

हॉटस्पर—महाराज, मार्टीमर ने आपको धोखा नहीं दिया। युद्ध के परिणाम को कौन जानता है? वह अकस्मात् हार गया। उसके बहुत से घाव लगे। क्या यह धोखा है?

राजा—पर्सी, तू झूठ बोलता है। उसने ग्लैण्डोवर से कभी युद्ध नहीं किया। अब देख, तू जल्दी से सब क़ैदियों को भेज दे; नहीं तो हम वह बात करेंगे जिससे तुम सब नाराज़ हो जाओगे।

---

* मार्टीमर को हनरी ने ग्लैण्डोवर के विरुद्ध भेजा था। वहाँ पर वह हार गया और वेल्स में क़ैद हो गया। इसी क़ैद मे उसका विवाह ग्लैण्डोवर की पुत्री से हो गया और वे दोनों परस्पर मिल गये।

ये लोग नाराज़ तो इसी समय हो गये थे। इसलिए शीघ्र ही एक बहुत भयानक राज-द्रोह करने की उन्होंने ठान ली। उपर्युक्त भेंट के पश्चात् जब पर्सी, वोर्सेस्टर, और नार्थम्बरलैण्ड आपस मे मिले तब हौटस्पर क्रुद्ध होकर कहने लगा—क्या मैं क़ैदी दे सकता हूँ? कदापि नहीं। मार्टीमर की सिफ़ारिश! अगर राजा को मार्टीमर का नाम ऐसा बुरा लगता है तो देखो किस प्रकार मैं उसके कान मे मार्टीमर, मार्टीमर पुकारूँगा। मैं तो एक तोते को "मार्टीमर" कहना सिखाऊँगा और उसे राजा की भेंट करूँगा। चाहे प्राण रहें चाहे जायँ। मार्टीमर को बचाना अत्यावश्यक है। इस कृतघ्न बोलिङ्ग-ब्रोक* को अवश्य दण्ड दिया जायगा। यह वही हनरी बोलिङ्ग-ब्रोक है जिसको राज देने के लिए हमने इतनी बदनामी सही। बेचारा निर्दोष रिचार्ड इसी दुष्ट के लिए मारा गया। कोई हमको हत्यारा कहता है; कोई अन्य अपशब्दों से याद करता है। मैंने तो इस बोलिङ्ग-ब्रोक को बर्कले दुर्ग में देखा था, तब कैसी ख़ुशामदें करता था। "प्यारे पर्सी!" "भाई पर्सी," यही शब्द थे। हाय! आज यह दुष्ट उन सब बातों को भूल गया।

वोर्सेस्टर—मैं एक अच्छी सलाह बताता हूँ।

हौटस्पर—कहिए।

---

* बोलिङ्ग-ब्रोक चतुर्थ हनरी का नाम था।

वोर्सेस्टर—इन क़ैदियों को डौग्लस के सुपुर्द कर दो और उससे सन्धि कर लो। फिर वह भी हमारा साथ देगा।

हौटस्पर—ठीक ठीक! ख़ूब बताई। अब ऐसा ही होगा। यार्क का बिशप भी हमारा साथ अवश्य देगा। जब से उसके भाई स्क्रूप को बोलिङ्ब्रोक ने मरवाया है, वह बदला लेने के लिए ही सोच रहा है। मार्टीमर, ग्लैण्डोवर, डौग्लस और हम सब मिलकर ऐसा युद्ध करें, ऐसा युद्ध करें, कि हनरी को भी मालूम हो जाय।

वोर्सेस्टर—हमको ऐसा ही करना चाहिए।

हौटस्पर—उपाय तो बहुत ही अच्छा है।

वोर्सेस्टर—हाँ, अगर हमको अपने सिर बचाने हैं तो बिना सिर उठाये नहीं बचा सकते। हम कितना ही क्यों न दबना चाहे, राजा हमेशा यही समझता रहेगा कि वह हमारा ऋणी है और हम उससे असन्तुष्ट हैं! इस ऋण को चुकाने का वह अवसर ढूँढ़ रहा है और जब उसे समय मिलेगा, हम सबको सीधा स्वर्ग पहुँचा देगा।

हौटस्पर—अवश्य पहुँचावेगा। हम ज़रूर बदला लेंगे।

अब वे सब एक-दूसरे से अलग हुए और थोड़े दिनों तक लड़ाई की तैयारी करते रहे। जब सब कुछ निश्चय हो चुका

तब एक दिन वेङ्गर में सब साथी मिले और आपस मे बाँट होने लगा। हॉटस्पर, वोर्सेस्टर, मार्टीमर और ग्लैण्डोवर ये चारों आदमी बातचीत करने लगे।

मार्टीमर—सबने दृढ़ प्रतिज्ञा की है। साथी विश्वासपात्र हैं और हमको अपने काम मे सफलता की आशा है।

हॉटस्पर—लार्ड मार्टीमर, लार्ड ग्लैण्डोवर! आप लोग बैठ जाइए। चचा वोर्सेस्टर, मैं नक़शा (देश का) तो भूल ही आया। बाँट कैसे करेंगे?

ग्लैण्डोवर—प्यारे पर्सी, बैठ जाओ। नक़शा मेरे पास मौजूद है। प्यारे हॉटस्पर, बैठ जाओ। क्योंकि तुम्हारे इस नामको जब-जब हनरी सुनता है, उसका मुँह पीला पड़ जाता है और आह भरकर वह यही चाहता है कि आप स्वर्ग मे होते।

हॉटस्पर—और जब-जब वह ग्लैण्डोवर का नाम सुनता है, आपको नरक मे चाहता है।

ग्लैण्डोवर—यह उसका दोष नहीं। मेरे जन्म के समय आकाश रुधिरवत् लाल हो गया था और पृथ्वी कायर पुरुष के समान कापने लगी थी।

हॉटस्पर—वाह वाह! उस समय यदि आपकी मा की बिल्ली भी बच्चा देती तो भी आकाश और पृथ्वी की यही दशा होती।

ग्लैण्डोवर—अजी मेरे जन्म के समय भूकम्प आया था।

ग्लैण्डोवर—मैं इससे भी जल्द आपके पास आ जाऊँगा और आपकी महिलाएँ भी मेरे साथ आवेंगी। इस समय आप उनसे बिना भेंट किये जा रहे हैं।

हॉटस्पर—मैं समझता हूँ कि बर्टन के उत्तर में मेरा भाग आपके भाग से न्यून है। (नक़शे में दिखाकर) देखो, यह नदी मेरे देश को अर्धचन्द्र की तरह काट रही है। मैं यहाँ ट्रेण्ट को बन्द कर दूँगा और उसका बहाव इस तरफ़ को झुक जायगा जिससे कुछ उपजाऊ ज़मीन मुझे मिल जाय।

ग्लैण्डोवर ने हॉटस्पर के इस प्रस्ताव का पहले तो विरोध किया परन्तु जब पर्सी आग्रह करने लगा तब ग्लैण्डोवर मान गया और मार्टीमर तथा पर्सी के उसी रात चल देने का विचार हुआ। इतने में ग्लैण्डोवर की लड़की, जो मार्टीमर की स्त्री थी, अपनी ननद लेडी पर्सी के साथ वहाँ पर आ गई। विलक्षण बात यह थी कि मार्टीमर वेल्स भाषा बोलना नहीं जानता था और उसकी स्त्री अँगरेज़ी नहीं जानती थी। इस प्रकार वे दोनों स्त्री-पुरुष परस्पर सम्भाषण नहीं कर सकते थे। इसलिए ग्लैण्डोवर के द्वारा बातचीत हुई। लेडी मार्टीमर ने मार्टीमर के अकेले जाने का बड़ा विरोध किया और अपने पति के साथ रणक्षेत्र में जाने पर आग्रह करती रही। परन्तु अन्त में सब मान गये और पर्सी, मार्टीमर और वोर्सेस्टर ने श्रूसबरी की ओर प्रस्थान कर दिया जहाँ चतुर्थ हनरी की सेना

से युद्ध होना निश्चित हो चुका था। अब थोड़ा सा हाल हनरी का सुनिए।

हम ऊपर कह चुके हैं कि राजकुमार हनरी बहुत दिनों से कुसङ्गति मे पड़ गया था और राज-दरबार को छोड़कर उन सरायों मे अपना समय व्यतीत करता था जहाँ बुरे-बुरे मनुष्य एकत्रित होकर मद्यपान किया करते थे। उसके परम मित्र फाल्स्टाफ़ और बार्डोल्फ थे जो नित्य-प्रति द्वन्द्व मचाया करते थे। कही पथिकों को पकड़कर उनका माल छीन लेते, कहीं दूसरे मनुष्यों के साथ अत्याचार किया करते। एक दिन फाल्स्टाफ़ और बार्डोल्फ दोनों ने मिलकर, किसी मनुष्य का माल लूट लिया। कोतवाल ने इनका पीछा किया। फाल्स्टाफ़ दौडकर सराय मे राजकुमार के पास आया। हनरी ने उसे कहीं छिपा दिया। जब कोतवाल ने हनरी से प्रार्थना की तो उसने यह कहकर टाल दिया कि जिस मनुष्य की तलाश मे तुम फिर रहे हो उसको हमने कहीं भेजा है। जब आवेगा, भेज दिया जायगा। बेचारा कोतवाल राजकुमार से क्या कह सकता था। अपना सा मुँह लेकर चला गया। इस प्रकार की बाते रोज़ ही हुआ करती थीं और इनकी शिकायत राजा के पास पहुँचा करती थी। राजा अपने लड़के की यह दशा देखकर मन ही मन कुढ़ा करता था। एक दिन उसने राजकुमार को बुलाया और कहा—

"न जाने मैंने ईश्वर का क्या बिगाड़ा है कि वह मेरे वंश

को इस प्रकार बिगाड़कर मुझे दण्ड दिया चाहता है। राजकुमार, तेरे जीवन से तो यही प्रतीत होता है कि ईश्वर ने तुझे मेरे दुष्कर्म्मों का दण्ड देने के लिए बनाया है। बता तो सही, यह विषयासक्ति, यह उन्माद, यह कुसंगति, यह अत्याचार, जिनसे तेरा समय व्यतीत होता है, क्या तेरे वंश के योग्य हैं ?"

राजकुमार—श्रीपिताजी, बहुत सी बातें जो मेरे विरुद्ध आपसे कही गई हैं, केवल आपको भडकाने के लिए मेरे शत्रुओं ने कह दी हैं जिनका कुछ भी आधार नहीं है। हाँ, जो कुछ त्रुटियाँ मुझसे मेरी इस अवस्था के कारण हो गई हैं उनके लिए मैं महाराज से चमा का प्रार्थी हूँ।

राजा—ईश्वर तुझे चमा करे। मुझे आश्चर्य है कि तुझमें अपने पूर्वजों के समान गुण क्यों नहीं हैं। कौंसिल (राजसभा) में तुझे अपनी मूर्खता से अपना स्थान छोड़ना पड़ा जिसे तेरे छोटे भाई ने पूर्ण किया है। तू अपने समस्त वंशजों से पृथक् है। सब यही कहते हैं कि तू अवश्य नष्ट हो जायगा। अगर मेरी यह दशा होती, यदि मुझे लोग इस प्रकार बुरा समझते, तो आज विदेश से बुलाकर कोई मुझे राजगद्दी पर बैठने न देता। मैं जहाँ कहीं निकल जाता था, लोग चकित होकर मेरी ओर संकेत किया करते और कहा करते कि देखो यह बोलिङ्ग-ब्रोक है। और मैं इस प्रकार

उनके साथ व्यवहार करता था कि चाहे शत्रु से शत्रु हो, वह भी मेरा मित्र हो जाता था। यहाँ तक कि राजा की उपस्थिति मे भी लोग मेरा नाम ले जयकार बोलते थे। उसी वंश का तू है, जिसने कुसंगति मे बैठ-बैठकर अपने को बदनाम कर रक्खा है। जो देखता है, तुझसे घृणा करता है।

राजकुमार—श्रीमहाराज, अब से मैं अनुचित व्यवहार न करूँगा।

राजा—इस समय तेरी वही हालत है जो रिचार्ड की थी जब मैंने फ्रान्स से आकर रेवेन्सवर्ग में अपना पग अड़ाया था। उस समय मेरी जो दशा थी वही इस समय पर्सी की है। सत्य बात तो यह है कि यद्यपि युवराज तू ही है परन्तु पर्सी तुझसे अधिक राज्य के योग्य है। पर्सी की आयु तुझसे अधिक नहीं है परन्तु वह रण-क्षेत्र मे कैसे-कैसे पराक्रम दिखलाता है। डौग्लस का पराजय करने से जो यश उसे प्राप्त हुआ है, वह एक प्रकार से अमर ही है। डौग्लस के सामने से बड़े-बड़े वीर भाग जाते हैं। परन्तु वीर पर्सी ने उसे तीन बार भगा दिया। अब उससे मित्रता करली है और हमारे राज में विघ्न करना चाहता है। पर्सी, नार्थम्बरलैण्ड, आर्क बिशप यार्क,* डौग्लस, मार्टीमर,

१ सबसे ऊँचा पुरोहित।

सब हमारे विरुद्ध हैं। इसमे तेरी क्या सम्मति है? हाय! हाय! मैं तुझे ये सब बातें क्यों सुना रहा हूँ। इससे क्या लाभ होगा! तुझसे क्या आशा हो सकती है? हाँ, यह तो सम्भव है कि तू हमारे शत्रुओं से मिल जाय और हमारा विरोध करे।

राजकुमार—आप ऐसा ख़याल न करें। कभी ऐसा न होगा। ईश्वर उन लोगों को क्षमा करे जिन्होंने आपसे मनमानी बातें मिला दीं। मैं पर्सी का सिर काट करके इस बात को सिद्ध करूँगा। युद्ध के दिन आपको ज्ञात हो जायगा कि मैं आपका ही पुत्र हूँ। युद्ध से आते हुए जब आप मेरे वस्त्रों को रक्त-मय देखेंगे तब इन सब दोषों से उत्पन्न हुई लज्जा धुल जायगी। यह यशस्वी पर्सी और यह आपका हनरी दोनों जिस समय रणक्षेत्र में मिलेंगे तब संसार जान जायगा कि बोलिङ्ग्ब्रोक का पुत्र यह काम कर सकता है। यही पर्सी मेरे यश का कारण होगा।

इस प्रकार चतुर्थ हनरी ने अपने पुत्र को उत्साहित करके लड़ाई के लिए तैयार किया और लार्ड ब्लण्ट, लार्ड वेस्टमारलैण्ड, युवराज हनरी और छोटा राजकुमार जौन, ये सब मिल कर विद्रोहियो से लड़ने के लिए श्रूसबरी को चल दिये।

जिस समय हॉटस्पर, डौगलस, और वोर्सेस्टर श्रूसबरी में पड़े हुए अपने अन्य साथियों की प्रतीक्षा कर रहे थे, उस

समय एक दूत ने आकर हौटस्पर से कहा—यह आपके पिता का पत्र है।

हौटस्पर—क्या पत्र ही है? वे स्वयं नहीं आये?

दूत—भगवन्, वे बीमार हैं, अतएव आने मे अशक्त हैं।

हौटस्पर—ऐसे समय मे उन्हें बीमार होने का कैसे अवकाश मिला? उनकी सेना कहाँ है और किसके आधिपत्य मे है?

दूत—मैं नहीं जानता। पत्र मे लिखा है।

वोर्सेस्टर—क्या वे रोगशय्या पर पड़े हुए हैं?

दूत—मेरे आने के चार दिन पहले से वे बीमार थे और मेरे आने के समय तो वैद्यों ने उन्हें बहुत डरा दिया था।

वोर्सेस्टर—पहले देश की हालत अच्छी हो जाती तब वे बीमार पड़ते। उनके स्वास्थ्य की ऐसी आवश्यकता पहले कभी नहीं थी।

हौटस्पर—बीमार! रोगी! इस रोग ने हमारे सब काम बिगाड़ दिये। वे लिखते हैं कि रोग भयङ्कर है और उनके साथी किसी अन्य मनुष्य के प्रबन्ध से एकत्रित नहीं हो सकते। परन्तु उनकी सम्मति यह है कि जिस प्रकार हो सके, हमको अपना कार्य्य करना चाहिए। कार्य्य अवश्य करना होगा। अब विद्रोह से रुकना व्यर्थ है; क्योंकि राजा को सब बातें मालूम ही हो चुकीं।

वोर्सेस्टर—आपके पिता की बीमारी ने हमें लुञ्जा कर दिया!

हौटस्पर—नहीं, नहीं, ऐसा घाव लगा जिसका कुछ उपाय ही नहीं है। परन्तु कुछ चिन्ता नहीं है। सम्पूर्ण धन को एक साथ ही दाव पर रख देना बुद्धिमत्ता नहीं है।

डौग्लस—हाँ, यह बात ठीक है। ऐसे समय मे यही बात ठीक है।

वोर्सेस्टर—फिर भी मेरी तो यही इच्छा है कि तुम्हारे पिता यहाँ होते। क्योंकि हमारे बहुत से मूर्ख साथी यह समझते हैं कि नार्थम्बरलैण्ड हमारे साथ सहमत नहीं हैं और वे राज-भक्ति के कारण नहीं आये।

हौटस्पर—आप तो अन्त की कहते हैं। लोगों को यह क्यों न समझना चाहिए कि जब हम थोड़े से आदमी इतने बड़े राजा का सामना कर सकते हैं तब यदि पिताजी होते तो शायद हम समस्त राज को उलट-पलट सकते थे। जाने दीजिए, इस समय तो काम करना ही है।

उसी समय हौटस्पर का एक और साथी वर्नन अपनी सेना लेकर आ पहुँचा। उसने सूचना दी कि वेस्टमोर्लेण्ड और राजकुमार जौन सात हज़ार सेना के साथ राजा की ओर से लड़ने आ रहे हैं।

हौटस्पर—कुछ चिन्ता नहीं। और क्या समाचार है?

वर्नन—मैंने यह भी सुना है कि राजा स्वयं बहुत बडी सेना के साथ बड़ी शीघ्रता से आ रहा है।

हौटस्पर—यह भी अच्छी बात है। भला राजकुमार हनरी कहाँ है जो किसी घटना से आकर्षित नहीं होता ?

वर्नन—वह भी अस्त्र-शस्त्र धारण किये बड़ी वीरता से आप लोगों का सामना करने आ रहा है। मैंने उसे घोड़े पर सवार देखा था। वह एक बड़ा योद्धा मालूम होता था।

हौटस्पर—बहुत प्रशंसा न कीजिए। आने दीजिए। हम एक-एक का बलिदान करेंगे। जाने ग्लैण्डोवर कब आयेगा ?

वर्नन—मैंने सुना है कि वह १४ दिन तक नहीं आ सकता।

डौगलस—यह तो बहुत बुरी बात है।

वोर्सेस्टर—मैं तो इससे घबरा गया।

हौटस्पर—राजा की सेना कितनी होगी ?

वर्नन—तीस हज़ार।

हौटस्पर—तीस नहीं, चालीस सही। पिताजी नहीं, ग्लैण्डोवर नहीं। इसलिए हमारी अकेली सेना ही इस भीषण युद्ध को लड़ेगी। प्रलय निकट है। हमको हर्षपूर्वक मरना चाहिए।

डौगलस—मरने का नाम न लीजिए। मुझे मृत्यु का कुछ भी भय नहीं है।

हौटस्पर—हम आज रात को ही लड़ेंगे।

वोर्सेस्टर—ऐसा मत करो।

डौग्लस—इससे तो हनरी का ही लाभ होगा।

वर्नन—नहीं।

हौटस्पर—आप ऐसा क्यों कहते हैं? इस समय हनरी सहायता के लिए प्रतीक्षा कर रहा है।

वर्नन—हम भी तो कर रहे हैं।

हौटस्पर—उसकी सहायता निश्चित है, हमारी अनिश्चित।

वोर्सेस्टर—हमारी बात मान जाओ। आज मत लड़ो।

वर्नन—हाँ, मत लड़ो।

डौग्लस—तुम तो व्यर्थ डरते हो।

वर्नन—डौग्लस! गालियाँ न दो, मुझे किसी का डर नहीं है। मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे बुद्धिमान् और विद्वान् अपनी निर्बलता को नहीं जानते। अभी हमारे भाई के सवार नहीं आये। वोर्सेस्टर के आज ही आये हैं और थक गये हैं।

हौटस्पर—शत्रु की सेना भी तो आज ही आई है और थकी हुई है।

वोर्सेस्टर—राजा की सेना हमारी सेना से अधिक है।

जब विद्रोहियों की सेना में यह विचार हो रहा था, लार्ड ब्लण्ट राजा की ओर से हौटस्पर से बातचीत करने आया। हौटस्पर ने कहा—सर वाल्टर ब्लण्ट, हमको आपके शुभागमन की ख़ुशी है। ईश्वर करे, आप भी हमसे सहमत हो जायँ। हमारे साथी आपसे बहुत स्नेह रखते हैं।

बहुतों को आपके गुणों पर असूया है कि आप जैसा गुणी मनुष्य हमारे विरुद्ध है।

ब्लुण्ट—ईश्वर रक्षा करे। जब तक आप अपने राजा के विरुद्ध हैं, मैं भी आपका शत्रु हूँ। राजा ने पूछा है कि आपको किन कारणों से इस प्रकार शान्ति भङ्ग करनी पड़ी, और आप क्यों अपने स्वामी के विरुद्ध हो गये ? यदि राजा ने आपकी पिछली सेवा को विस्मृत कर दिया है तो बताइए। महाराज अवश्य आपको क्षमा कर देंगे और जो कुछ आप चाहेंगे वह आपको देंगे।

हौटस्पर—राजा बड़ा दयालु है। हम जानते हैं कि उसे यह बात भले प्रकार ज्ञात है कि प्रतिज्ञाएँ कब करनी चाहिएँ और उन्हें पूरा कब करना चाहिए। महाराज जो मुकुट आज पहने हुए हैं मेरे, मेरे पिता के और मेरे चचा के द्वारा ही प्राप्त हुआ है। जिस समय वह मारा-मारा विदेश में फिर रहा था उस समय मेरे पिताजी ने उसकी बाँह पकड़ी। और जब उसने शपथ खाई कि मैं केवल अपने पिता गाण्ट की सम्पत्ति चाहता हूँ तब मेरे पिता ने सहायता की प्रतिज्ञा की और उसका पालन किया। जब देशवालों ने देखा कि नार्थम्बरलैण्ड सहायता दे रहा है तब वे भी झुक पड़े और गाँव के गाँव तथा नगर

के नगर हनरी बोलिङ्ग-ब्रोक की ओर हो गये। जब राजा रेबेन्सवर्ग मे आया तब बडी-बडी प्रतिज्ञाएँ की। लोगों का कर कम कर देने का वादा किया और बहुत सी त्रुटियों को दूर करने का भी। उस समय यही तुम्हारा राजा देश की दुर्दशा को देख-कर रोता था मानों यह बड़ा देशहितकारी है।

ब्लण्ट—हुश! मैं यह सुनने नही आया।

हौटस्पर—अच्छा लो, इसने रिचार्ड को गद्दी से उतार दिया। फिर शीघ्र ही उसे मरवा डाला और मार्टीमर मार्च को वेल्स मे क़ैद रहने दिया! मैंने विजय प्राप्त की, उसमें मुझे बदनाम किया! मेरे चचा को दरबार से निकाल दिया! मेरे पिताजी से अपशब्द कहे। शपथ-भङ्ग किया। प्रतिज्ञाएँ तोड़ीं। अत्याचार किये।

ब्लण्ट—क्या मैं राजा से यही कह दूँ?

हौटस्पर—नहीं, यह न कहिए। राजा के पास जाइए और यह निश्चय करा दीजिए कि हम वहाँ से कुशलपूर्वक लौट आयेंगे तो कल प्रातःकाल हमारे चचा राजा की सेवा में उपस्थित होंगे।

दूसरे दिन प्रातःकाल वर्नन और वोर्सेस्टर हनरी की सेवा मे उपस्थित हुए। राजा ने उन्हें देखकर कहा—लार्ड वोर्सेस्टर, यह उचित नहीं है कि हमारा और तुम्हारा इस प्रकार मिलाप हो जैसा आज हो रहा है। आपने विश्वासघात

किया और हमारी शान्ति में वाधा डाल दी। हमे आज इस वृद्धावस्था में शस्त्र धारण करने पड़े। यह अच्छा नहीं मालूम होता। आप क्या कहते हैं? क्या आप इस युद्ध-रूपी ग्रन्थि को छुड़ा देंगे और हमारा स्वत्व फिर स्वीकार करेंगे?

वोर्सेस्टर—श्रीमहाराज, अपने लिए तो मैं कहता हूँ कि इस अन्तिम अवस्था में मुझे शान्ति ही प्रिय है। मैं इस अशान्ति का कारण नहीं हूँ।

राजा—यदि आप कारण नहीं हैं तो यह अशान्ति हुई कैसे?

फ़ाल्स्टाफ़—अशान्ति इनको रास्ते मे पड़ी मिल गई और इन्होंने उठा ली।

राजकुमार हनरी—(फ़ाल्स्टाफ़ से) चुप! दुष्ट! चुप!

वोर्सेस्टर—श्रीमहाराज ने मुझसे और मेरे वंश से दयादृष्टि उठा ली। हमी आपके पहले और दृढ़ मित्र थे। रिचार्ड के समय मे आपके ही हित के लिए मैंने अपना पद त्यागकर आपकी सेवा की। जब आप मेरे समान शक्तिशाली नहीं थे तब मैंने आपका स्वत्व स्वीकार किया! वह मैं, मेरा भाई और उसका लड़का ही था जिन्होंने समस्त आपत्तियों का सामना करके आपको विदेश से बुलाया। आपने डाङ्कास्टर में शपथ खाई थी कि आप राजा के विरुद्ध कुछ न करेंगे और केवल अपने पिता की सम्पत्ति लेना चाहते हैं, परन्तु थोड़े दिनों में आपका ऐसा भाग्य उदय हुआ

कि आप डाङ्कास्टर की शपथ को भूल गये। कुछ हमारी सहायता, कुछ रिचार्ड की अनुपस्थिति, कुछ आइरिश समुद्र का प्रतिकूल वायु! कुछ लोगों का रिचार्ड की मृत्यु की झूठी खबर उड़ा देना! सारांश यह कि इन सब बातों ने आपको उस पद पर पहुँचा दिया जिस पर आप आज विराजमान हैं। परन्तु अब आपने हमारे साथ वह व्यवहार किया जो कोयल कौओं के बच्चों के साथ किया करती है। अब आप हमारा मुँह देखना भी पसन्द नहीं करते। अब आपको हमसे घृणा है। यही कारण है कि हम इस प्रकार यहाँ आये हैं। इस अशान्ति का कारण आप हैं न कि हम। क्योंकि शपथ-भङ्ग आपने किया है न कि हमने।

राजा—यह सत्य है कि तुम लोग इसी तरह की विद्रोह-उत्पादक बातें बाज़ारों में, गिरजों में और सर्वसाधारण मनुष्यों के बीच फैलाते रहते हो जिससे मूर्ख आदमी सच समझकर तुम्हारा साथ दें और देश की शान्ति में बाधा डालें।

राजकुमार हनरी—वोर्सेस्टर, मेरी ओर से अपने भतीजे से कह दो कि मैं उसकी बहुत प्रशंसा करता हूँ। आज के समय में ऐसा वीर पुरुष कोई दूसरा नहीं है। वह समझता है कि मैं अभी खेल-कूद में ही रहा हूँ।

परन्तु मैं कहता हूँ कि यदि युद्ध होगा तो मैं उससे अकेला लड़ने के लिए तैयार हूँ।

राजा—हाँ, चाहे कुछ भी हो। हम राजकुमार को अकेले युद्ध करने की आज्ञा दे देंगे। परन्तु नहीं, नहीं, वोर्सेस्टर! हमको अपनी प्रजा से प्रेम है। जिन लोगों ने अशान्ति फैलाई है वे भी हमारी प्रजा हैं। और राजा को प्रजा से हित करना चाहिए। इसलिए उनसे भी हमको स्नेह है। यदि वे फिर ठीक तौर से रहें और उत्पात करना छोड़ दें तो वे फिर हमारे प्रेम-पात्र हो सकते हैं। अगर नहीं तो फिर दण्ड बना बनाया है।

राजा को यह आशा नहीं थी कि हाटस्पर सन्धि करने के लिए तैयार होगा क्योंकि उसको अपने बल का बड़ा अभिमान था। इसलिए हनरी ने युद्ध की तैयारियाँ कीं और सेनाध्यक्षों को आदेश दे दिया कि सिपाही लोग तैयार हो जायँ। वोर्सेस्टर और वर्नन राजा के पास से लौटकर अपने कैंप में चले आये और हाटस्पर को राजा की सन्धि करने का समाचार नहीं सुनाया; क्योंकि वोर्सेस्टर ने कहा कि अगर हाटस्पर को राजा की मित्रता पर विश्वास हो गया तो अवश्य ही सर्वनाश हो जायगा। चाहे कैसी ही सन्धि क्यों न हो जाय, राजा अब हमसे प्रेम नहीं कर सकता। एक न एक दिन वह फिर अवसर पाकर हमको दुःख देगा। अब

उसे हम पर शङ्का हो गई है। इसलिए वह हमारी ओर से निश्चिन्त नहीं हो सकता।

हौटस्पर ने डौग्लस के द्वारा हनरी को युद्ध का सन्देसा भेज दिया और दोनों ओर से आकर दलों मे मुठभेड़ शुरू हुई। बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। लाशों पर लाशें लग गईं। लोहू की नदियाँ बहने लगी। रणक्षेत्र में एक स्थान पर डौग्लस और ब्लण्ट की गुत्थमगुत्था हो गई। ब्लण्ट का कवच राजा के कवच के सदृश था इसलिए डौग्लस ने समझा कि यही हनरी है और उसका नाम पूछा। ब्लण्ट ने उत्तर दिया—अरे तेरा क्या नाम है? तू कौन है जो इस प्रकार मुझसे भिडता है?

डौग्लस—मेरा नाम डौग्लस है। लोग कहते हैं कि राजा तू ही है। इसलिए तेरे पीछे पड़ रहा हूँ।

ब्लण्ट—यह सच है।

डौग्लस—मैंने स्टेफर्ड को यही समझकर मार डाला कि यह हनरी है। अब तुझ पर मेरी चोट है। या तो क़ैद होना स्वीकार कर या प्राण दे।

ब्लण्ट ने यह कहकर कि "मैंने क़ैद होने के लिए जन्म नहीं लिया," लड़ाई शुरू की और थोड़ी देर में डौग्लस की तलवार से खेत रहा। डौग्लस की यह वीरता देखकर हौट-स्पर वहाँ पर आ गया और कहने लगा—डौग्लस! अगर

आप होमडन के युद्ध में ऐसी वीरता से लड़ते तो मुझे कभी स्काटलेण्डवालों पर विजय प्राप्त न होती !

डौग्लस—अब सब कुछ जीत लिया। लड़ाई हो चुकी। देखो, राजा मरा पड़ा है।

हौटस्पर—कहाँ ?

डौग्लस—यह रहा।

हौटस्पर—यह ? नहीं नहीं ! यह राजा नहीं है। मैं इसे पहचानता हूँ। यह भी बड़ा वीर पुरुष था। इसे ब्लण्ट कहते हैं।

डौग्लस—मूर्ख ! मूर्ख ! नरक मे पड़। अरे तूने क्यों कह दिया कि 'मैं राजा हूँ !'

हौटस्पर तो यहाँ से दूसरी ओर बढ़ गया और थोड़ी देर मे डौग्लस और हनरी की मुठभेड़ हो गई। डौग्लस ने राजा हनरी के ऊपर ऐसी चोटें कीं कि वह घबरा गया और निकट था कि उसकी मृत्यु हो जाती। परन्तु उसी समय राजकुमार हनरी लड़ता-लड़ता वहां पर आ पहुँचा और अपने पिता को विपत्ति में देखकर डौग्लस के ऊपर ऐसा झपटा कि डौग्लस को वहां से भागना पड़ा। राजा अपने उसी युवराज की ऐसी वीरता देखकर, जिसकी समस्त आयु सराय और मद्यपान में कटी थी, बड़ा ख़ुश हुआ और कहने लगा कि 'आज तूने अपने सब कुकर्मों का प्रायश्चित्त कर लिया !' अभी राजा हनरी उधर से हटा ही था कि राजकुमार हनरी और

हाॅटस्पर की भेंट हो गई। हाॅटस्पर बोला—अगर मैं भूल नहीं करता तो तू राजकुमार हनरी है।

राजकुमार हनरी—तू तो ऐसा पूछता है माना मैं अपना नाम न बताऊँगा।

हाॅटस्पर—मेरा नाम पर्सी हाॅटस्पर है।

राजकुमार—मैं युवराज हूँ पर्सी, मुझसे जीतने की आशा न रख। एक नक्षत्र मे दो ग्रह नहीं रह सकते और न एक इँगलैण्ड में पर्सी और हनरी दो योद्धा रह सकते हैं।

हाॅटस्पर—और न रहेंगे। हममें से एक का अन्त आ गया है।

अब हनरी और हाॅटस्पर मे लड़ाई होने लगी और अन्त मे हाॅटस्पर यह कहता हुआ मारा गया—हनरी! मुझे अपनी मृत्यु का दुःख नहीं; परन्तु खेद तो इस बात का है कि तूने मेरे उस नाम को छीन लिया जिसे मैंने बड़े कष्ट से प्राप्त किया था।

हाॅटस्पर के मरते ही विद्रोहियों की सेना मे खलबली पड़ गई। डौग्लस तो भाग ही चुका था। सेनाध्यक्ष के मरते सिपाही कब ठहर सकते थे? जिसका जिधर को मुँह उठा उसने उसी ओर का रास्ता लिया। वर्नन और वोर्सेस्टर क़ैद कर लिये गये। डौग्लस रण से भागकर एक पहाड़ी पर से कूद रहा था कि उसके चोट लग गई और उठ न सका। राजा की सेना ने उसे देख लिया और क़ैद कर लिया।

राजकुमार हनरी अपनी वीरता दिखा चुका था, डौग्लस के हाथ से अपने पिता के प्राण बचाने के अतिरिक्त सबसे वीर शत्रु हॉटस्पर को मार चुका था। अब वीरता के साथ ही साथ उसने उदारता भी दिखाई और अपने पिता की आज्ञा लेकर बिना किसी निस्तार-मूल्य के डौग्लस को छोड़ दिया।

इस प्रकार इस बड़े भारी विद्रोह-दमन से चतुर्थ हनरी का राज भली भाँति स्थापित हो गया।

चतुर्थ हनरी

द्वितीय भाग

(HENRY IV—PART II.)

श्रूसबरी के रणक्षेत्र मे राजकुमार हनरी ने हौटस्पर को मारकर उसके साथियों को भगा दिया। इस कारण विद्रोहियों के दल में खलबली मच गई। जिसके जिधर सींग समाये, भाग निकला। परन्तु श्रूसबरी के निकटस्थ ग्रामों मे एक निर्मूल जन-प्रवाद फैल गया कि हौटस्पर जीत गया, राजकुमार हनरी मारा गया, डौग्लस ने चतुर्थ हनरी को घायल कर दिया इत्यादि। यही झूठी ख़बरें नार्थम्बरलैण्ड में पहुँचने लगीं और हौटस्पर का पिता इस युद्ध के यथार्थ परिणाम को न जान सका।

जब नार्थम्बरलैण्ड का एक साथी लार्ड बार्डोल्फ उसके पास गया तब नार्थम्बरलैण्ड ने पूछा—कहो लार्ड बार्डोल्फ, क्या समाचार हैं? इस कुसमय में पल-पल पर नये-नये समाचार मेरे पास आ रहे हैं।

बार्डोल्फ—श्रीमन्, मैं श्रूसबरी के शुभ समाचार लाया हूँ।

नार्थम्बरलैण्ड—शुभ समाचार! यदि ईश्वर की इच्छा हो!

लार्ड बार्डो०—ऐसे शुभ जैसे तुम चाहो! राजा तो बिल्कुल घायल पड़ा है। आपके सुपुत्र ने राजकुमार हनरी को मार डाला! राजकुमार जौन, वेस्टमोर्लेण्ड और स्टैफ़र्ड भाग गये। राजकुमार हनरी का साथी फ़ाल्स्टाफ़ क़ैद हो गया। ऐसी जीत सीज़र की विजय के पश्चात् आज तक नहीं हुई थी।

नार्थम्बर०—तुमको यह समाचार कैसे मिले? क्या तुम श्रूसबरी गये थे? क्या तुम रणक्षेत्र से आ रहे हो?

लार्ड बार्डो०—मुझसे एक आदमी कहता था, जो श्रूसबरी से आया था। वह एक योग्य पुरुष प्रतीत होता था।

नार्थम्बर०—मैंने अपने एक सेवक ट्रेवर्स को भेजा था। वह कुछ समाचार लाता होगा।

लार्ड बार्डो०—मैं उससे जल्दी आ गया हूँ। उसे कोई निश्चित बात नहीं मालूम हुई। मैंने ही तो उससे भी कहा था!

इतने में ट्रेवर्स वहाँ पर आ गया और कहने लगा—महाराज! लार्ड बार्डोल्फ मुझे शुभसमाचार सुनाकर बीच से ही लौटा लाये। परन्तु मुझे एक और आदमी मिला जो चेस्टर को जा रहा था। उसने थोड़ी देर घोड़े को थामकर मुझसे कहा—'हॉटस्पर (गर्म एड़वाला) की एड़ ठण्डी पड़ गई।' यह कहकर वह अपने घोड़े को भगा ले गया और मेरे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

नार्थम्बर०—क्या ! क्या ! क्या वह कहता था कि पर्सी की एड़ ठण्डी पड़ गई ? क्या हौटस्पर कोल्डस्पर (ठण्डी एड़वाला) हो गया ? क्या विद्रोह सफल नहीं हुआ ?

लार्ड बार्डो०—श्रीमन्, मैं कहता हूँ, अगर आपके लड़के की विजय न हुई हो तो मैं अपना समस्त राज दे डालूँ। आप विफलता का नाम भी न लीजिए।

नार्थम्बर०—फिर उस घुड़सवार ने यह विपरीत बात क्यों कही ?

लार्ड बार्डो०—अरे ! वह कोई घुड़चोर होगा जो जल्दी से घोड़ा भगाकर ले गया।

इतने में एक और मनुष्य, जिसका नाम मार्टन था, वहाँ पर आ गया। नार्थम्बरलैण्ड ने उसका चेहरा देखकर ही कहा—इस आदमी के चेहरे से ही जान पड़ता है कि कोई भयानक ख़बर है। जब बड़ी भारी रौ आकर नदी के तटस्थ देशों को विनष्ट कर जाती है तब उस समय तट की दशा ऐसी ही दिखाई पड़ती है। कहो मार्टन, क्या तुम श्रूसबरी से आ रहे हो ?

मार्टन—महाराज, मैं श्रूसबरी से आ रहा हूँ, जहाँ गर्हित मृत्यु का रूप हमारे साथियों के लिए बड़ा भयङ्कर हो गया।

नार्थम्बर०—अरे तू काँपता क्यों है ? बता, मेरे भाई और लड़के का क्या हाल है ? तेरी कातर दृष्टि उस बात को बता रही है जिसको तेरी वाणी कहना नहीं चाहती। ऐसे ही दुःखित और कातर मनुष्य ने

आधी रात के समय प्रियम* का द्वार खोलकर उसे सूचना दी होगी कि तुम्हारा आधा ट्रोय जल गया और प्रियम ने उसकी वाणी द्वारा सुनने से पूर्व ही आग को देख लिया होगा। तेरे कहने से पहले ही मैं समझ गया कि मेरा पर्सी मारा गया। अरे तू यही कहना चाहता है कि मेरे लड़के ने यह किया वह किया! मेरे भाई ने यों मारा! डौग्लस ने यह वीरता दिखाई! परन्तु अन्त में तू ठण्ढी साँस भरकर यही कहेगा कि सबके सब मारे गये।

मार्टन—आपके भाई जीवित हैं और डौग्लस भी। लेकिन आपके पुत्र—

नार्थम्बर०—हा हाँ—मर गया! जो मनुष्य ऐसी बात के सुनने से डरता है जिसको वह नहीं चाहता उसे दूसरों की आँखें देखकर मालुम हो जाता है, कि जिस बात से वह डरता था वह ठीक हुई। क्या मैं झूठ कहता हूँ?

मार्टन—नहीं महाराज! आप सच कहते हैं।

नार्थम्बर०—तो स्पष्ट क्यों नहीं कहता कि पर्सी मर गया! सच बात के कहने में क्या दोष है? दोष तो उसी का है जो झूठ बोलता है।

* प्रियम ट्रोय का राजा था जिसका वर्णन महाकवि होमर ने इलियट और ओडीसी नामक पुस्तकों में किया है। प्रियम का इस युद्ध मे सर्वनाश हो गया।

लार्ड वार्डा०—श्रीमहाराज, मैं नहीं कह सकता कि आपका पुत्र मारा गया।

मार्टन—मुझे शोक है कि मैं अब आपको उस बात का निश्चय दिलाना चाहता हूँ कि जिसे मैं कभी देखना नहीं चाहता था। मेरी इन आँखों ने उसे घायल और मरा हुआ देखा है। राजकुमार हनरी की तलवार से ऐसा हुआ! जिसकी आत्मा एक समय कायर से कायर आदमी मे भी जान डाल देती थी वही पर्सी निर्जीव हो गया। उसी की अग्नि उसके साथियों को उत्तेजित कर रही थी। उसके ठंडे पड़ते ही सब ठंडे पड़ गये। और जिस प्रकार भारी वस्तु धक्का देने से और तेजी से भागती है उसी प्रकार हॉटस्पर की मृत्यु के शोक से भारी होकर हमारी सेना भाग निकली। तीर उनके पीछे इतने वेग से नहीं भागते थे जितने वेग से हमारे सिपाही रण से भाग रहे थे। फिर वोर्सेस्टर क़ैद हो गया और वीर डौग्लस भी, जिससे कभी यह आशा नहीं हो सकती थी, रण से भाग निकला; यहाँ तक कि वह पकड़ा गया! सारांश यह है कि राजा की जीत हुई। अब उसने राजकुमार जौन और वेस्टमोर्लेण्ड को आपके दमन के लिए भेजा है। यही ख़बर है।

नार्थम्बर०—शोक मनाने के लिए मुझे बहुत समय मिलेगा।

विष की विष ही औषधि है। मैं बीमार था पर अब इस शोकसमाचार को सुनकर चङ्गा हो गया हूँ। जिस प्रकार ज्वर से पीड़ित दुर्बल मनुष्य को ज्वर चढ़ता है तो उसमे दुगुनी शक्ति आ जाती है उसी प्रकार मुझे इस समय जोश आ रहा है। अब इस निर्बल शरीर में फिर कवच धारण करूँगा। शान्ति, अब तू यहाँ से भाग। अशान्ति, तेरा राज हो! संसार युद्ध से पूरित हो! अब मैं लड़ूँगा। अब मैं लड़ूँगा।

ट्रेवर्स—महाराज, इस आकस्मिक उत्तेजना से आपके स्वास्थ्य को हानि पहुँचेगी।

मार्टन—आपके साथियों का आश्रय ही आपके स्वास्थ्य पर है। यदि आप इस प्रकार उत्तेजित होंगे तो स्वास्थ्य अवश्य बिगड़ेगा। लोगों को पहले ही यह शङ्का थी कि आपका पुत्र खेत रहेगा, इसलिए वही हुआ जो होना था।

लार्ड वार्डो०—हम तो युद्ध से पूर्व ही जानते थे कि बीस बिस्वे में १९ बिस्वे हमारी हार है। एक बिस्वे जीत भले हो! अब हम घिर गये हैं इसलिए यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिए।

मार्टन—महाराज, मैंने निश्चय करके सुना है कि यार्क का आर्क बिशप (लाट पादरी) बहुत सी सेना लेकर

हमारा साथ देने की तैयारियाँ कर रहा है। वह एक ऐसा पुरुष है जिसके साथी दो कारणों से पक्के हैं। पर्सी हॉटस्पर के साथी जी तोड़कर नहीं लड़ सकते थे; क्योंकि विद्रोह का शब्द ही कुछ अपमान-सूचक है। विद्रोही अपने मन में समझता है कि मैं पाप कर रहा हूँ। अतएव उसका मन इतना उत्साहित नहीं होता। लाट पादरी के साथी धर्म के लिए लड़ रहे हैं। उसने लोगों को निश्चय करा दिया है कि हनरी का राज धर्म-विरुद्ध है। इसलिए इनका उत्साह निस्सन्देह बहुत ही बढ़ा हुआ होना चाहिए। उसने कह दिया है कि मनुष्यों को रिचार्ड की हत्या का बदला लेना चाहिए। मुझे पूर्ण आशा है कि यार्क का लाट पादरी अवश्य ही अपने परिश्रम में सफलता प्राप्त करेगा।

नार्थम्बर०—मुझे यह बात पहले भी ज्ञात थी। अब हम यथाशक्ति कोशिश करेंगे।

लार्ड बार्डाल्फ़ नार्थम्बरलेण्ड से चलकर यार्क पहुँचा और वहाँ लाट पादरी के साथ विचार होने लगा। हम ऊपर कह चुके हैं कि लाट पादरी बहुत दिनों पहले से हनरी को गद्दी से उतारने की कोशिश कर रहा था। इस समय लार्ड बार्डाल्फ़, लार्ड मौबरे, और लार्ड हेस्टिंग्ज लाट पादरी के घर पर एकत्रित थे। लाट पादरी ने कहा—अब आप

लोग सुन चुके कि हम क्यों लड़ना चाहते हैं और हमारे पास युद्ध की कितनी सामग्री है। योग्य मित्रगण, मेरी आपसे प्रार्थना है कि कृपा करके स्पष्टता के साथ अपनी-अपनी सम्मति दीजिए।

ला० मौवरे—मैं युद्ध के होने में तो सहमत हूँ परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि हमारे पास सेना कितनी है; क्योंकि राजा की सेना से हमारी सेना बहुत ज़्यादा होनी चाहिए।

हेस्टिंग्ज़—हमारे पास इस समय २५ हज़ार चुने हुए आदमी मौजूद हैं और हमको पुरी आशा है कि नार्थम्बरलेण्ड से बहुत बड़ी सहायता मिलेगी, क्योंकि अपने पुत्र की मृत्यु सुनकर वृद्ध नार्थम्बरलेण्ड क्रोधानल में सन्तप्त हो रहा है।

लार्ड बार्डो०—फिर प्रश्न यह उठता है कि क्या केवल २५ सहस्र पुरुष युद्ध के लिए काफ़ी होंगे? क्योंकि नार्थम्बरलेण्ड पर भरोसा करना व्यर्थ है। न जाने उसने सेना भेजी या न भेजी।

हेस्टिंग्ज—नार्थम्बरलेण्ड के साथ मिलकर तो हम जीत सकते हैं।

लार्ड बार्डो०—प्रश्न तो यह है कि क्या बिना उसके भी तुम जीत सकते हो? अगर उसके बिना हम निर्बल हैं

तो आगे बढ़ना ही व्यर्थ है जब तक कि सहायता आ न जाय। क्योंकि ऐसे कठिन अवसर पर केवल आशा पर कमर बाँधनी उचित नहीं।

लाट पादरी—लार्ड वार्डाल्फ़, तुम सच कहते हो; क्योंकि श्रूसबरी मे हौटस्पर का यही हाल हुआ।

लार्ड बार्डा०—हाँ महाराज, वह केवल आशा पर काम करता रहा और उसके पास बहुत ही कम सेना थी। उसने देखते हुए जानजोखों मे डाल दी।

हेस्टिंग्ज़—परन्तु आशा करना व्यर्थ तो नहीं होता ?

लार्ड बार्डा०—होता है। ऐसी आपत्ति के समय में केवल आशा पर काम करना ऐसा ही है जैसे वसन्त ऋतु में एक कली को देखकर उससे फल की आशा करना। क्योंकि उस समय फल की इतनी आशा नहीं होती जितना पाला गिरने का भय होता है। जब कोई मकान बनाना होता है तब पहले हम स्थान देखते हैं फिर एक चित्र खींचते हैं। जब मकान का रूप हमारी आँखों के सामने आ जाता है तब फिर ख़र्च का हिसाब लगाते हैं। अगर ख़र्च हमारे पास काफ़ी नहीं होता तो दूसरा चित्र खींचते हैं जो कम ख़र्च मे बन सके या बनाना ही बन्द कर देते हैं। यह तो एक साधारण मकान का हाल है। परन्तु हम एक राज बनाना चाहते हैं। इसमें इन सब

बातों का और भी अधिक विचार कर लेना चाहिए। हमको अपनी निश्चित सामग्री पर भरोसा करना चाहिए, नहीं तो कागज़ पर केवल नाम लिखने से काम नहीं चलता। लड़ने के लिए आदमी चाहिएँ। उनके नाम तो लड़ नहीं सकेंगे। जो मनुष्य मकान का चित्र नहीं बना सकता वह मकान नहीं बना सकता।

हेस्टिंग्ज़—अच्छा, यदि यह भी मान लिया जाय कि जिस सहायता की हम आशा कर रहे हैं वह फलीभूत न होगी तो भी हमारे पास राजा की सेना से लड़ने के लिए काफ़ी आदमी हैं।

लार्ड बार्डो०—क्या राजा के पास केवल २५ हज़ार ही आदमी हैं?

हेस्टिंग्ज़—हमारे लिए तो इतने ही हैं या इससे भी कम। क्योंकि उसकी सेना के तीन भाग हो रहे हैं। एक फ़्रांसवालों से लड़ रहा है। दूसरा ग्लेण्डोवर से लड़ने गया है। केवल तीसरा भाग हमारे विरुद्ध आ सकता है। इस प्रकार एक राजा के तीन हिस्से हो रहे हैं और उसका कोश बिलकुल ख़ाली है।

लाट पादरी—तो क्या इस बात का भी डर नहीं है कि वह तीनों भागों को संयुक्त करके लड़ने आवे?

हेस्टिग्ज़—इसका तो कुछ भी डर नहीं; क्योंकि यदि वह ऐसा करेगा तो उसकी पीठ कमज़ोर हो जायगी। फ़ांस और वेल्स दोनों उसके पीछे आ रहे हैं।

लार्ड बार्डो०—राजकीय सेना का अध्यक्ष कौन है?

हेस्टिंग्ज़—जौन आफ़ लङ्कास्टर और वेस्टमोर्लेण्ड। वेल्स के विरुद्ध वह राजकुमार हनरी को लेकर स्वयं गया है। मुझे यह पता नहीं कि फ़्रांस से लड़ने कौन गया है।

लाट पादरी—अच्छा चलने दो। अब हमको अपने शस्त्र धारण करने के कारण प्रकट कर देने चाहिएँ। सर्व-साधारण अपने चुनाव पर असन्तुष्ट हैं। उन्होंने भूल की कि बोलिङ्ग-ब्रोक को राजा चुन लिया। जो मनुष्य सर्वसाधारण की इच्छा के अनुसार कार्य करता है वह सुख नहीं पाता; क्योंकि इनमें बहुत से लोग मूर्ख होते हैं। इनका भरोसा ही क्या? वे लोग जो रिचार्ड के जीवन में उसको मरा चाहते थे, अब उसकी क़ब्र पर रो रहे हैं। जिन लोगों ने एक दिन रिचार्ड के सिर पर धूल डाली थी और जो बोलिङ्ग-ब्रोक की प्रशंसा करते थे वे आज कह रहे हैं कि हे पृथ्वी! तू आज रिचार्ड को अपने में से निकालकर जीवित कर दे और इसको ले ले। हाय! मनुष्य भूतकाल को अच्छा समझता है और वर्त्तमान से घृणा करता है।

अब लोग एक दूसरे से पृथक् होकर अपने-अपने काम में लगे। परन्तु जो कुछ लार्ड बार्डोल्फ़ ने कहा था वही सच हुआ क्योंकि लार्ड नार्थम्बरलेण्ड, जिसकी सहायता के भरोसे ये सब लोग युद्ध की तैयारियाँ कर रहे थे, उनका साथ न दे सका। हम ऊपर कह चुके हैं कि लार्ड नार्थम्बरलेण्ड वृद्ध पुरुष था। वृद्धावस्था के कारण उसका शरीर इतना बलिष्ठ नहीं रहा था जितना युवकों का हुआ करता है। फिर शरीर की निर्बलता के अतिरिक्त मानसिक शोक ने भी उसे निरुत्साहित कर रक्खा था। उसका इकलौता पुत्र हौटस्पर, जिसकी वीरता की धूम देश भर में फैली हुई थी और जिसका नाम ही वीरों को कायर बनाने के लिए काफ़ी था, श्रूसबरी के युद्ध मे हत हो चुका था। पुत्र का शोक पिता को किसी काम का नहीं छोड़ता। इसलिए नार्थम्बरलेण्ड ने यद्यपि बहुत ही कोशिश की कि लाट पादरी तथा अन्य विद्रोहियों का साथ दे परन्तु अन्त में उसे यह विचार छोड़ देना पड़ा। उसकी स्त्री लेडी नार्थम्बरलेण्ड तथा उसकी पतोहू लेडी पर्सी दोनों ने इसी बात पर आग्रह किया कि आप लड़ाई पर न जाइए। नार्थम्बरलेण्ड ने अपनी स्त्री से कहा—जब मैंने प्रतिज्ञा की है तब मेरा धर्म है कि रणक्षेत्र में जाऊँ। धर्म का पालन करना उचित ही है, नहीं तो यश में बट्टा लग जायगा। तब लेडी पर्सी कहने लगी—पिताजी, ईश्वर के लिए आप युद्ध में न जाइए। एक समय था जब आपकी बहुत

बड़ी आवश्यकता थी, जिस समय आपका पर्सी, मेरा प्यारा पर्सी, उत्तर की ओर टकटकी लगाये आपकी सेना की प्रतीक्षा करता रहा परन्तु उस समय आप न जा सके। तब आपसे किसने कहा था कि घर मे पड़े रहें? उसी समय आप और आपके पुत्र दोनों का यश नष्ट हो गया। सम्भव है, आपका यश फिर बढ़ जाय परन्तु पर्सी का यश तो हमेशा के लिए ही संसार से उठ गया। वह एक ऐसा मनुष्य था जिसको देखकर लोग वीरता की शिक्षा लेते थे। योद्धाओं के लिए तो वह एक दर्पण मात्र था जिसको देखकर वे यह जान सकते थे कि हममे कितनी वीरता है। ऐसे मनुष्य को आपने युद्ध में अकेला छोड़ दिया, जहाँ सिवा अपने नाम के और कोई उसकी सहायता करने के लिए नहीं था। ईश्वर के लिए आप दूसरों के साथ उससे अधिक कर्त्तव्य न पालिए जितना अपने पुत्र के साथ पाला है। लाट पादरी और मौवरे दोनों बड़े बलवान् हैं। अगर मेरे स्वामी के पास इनकी फ़ौज से आधी भी होती तो आज मैं अपने प्यारे पति से हँस-हँसकर राजकुमार हनरी की मृत्यु की बातें कर रही होती।

नार्थम्बर०—प्यारी बेटी, तुम मुझे मेरी पुरानी त्रुटियाँ बताकर क्यों दुःख देती हो? आज यदि मैं युद्ध में न जाऊँगा तो कल मुझे ऐसे समय युद्ध में जाना पड़ेगा जब मुझ मे इतनी भी शक्ति न होगी।

लेडी नार्थम्बर०—मेरी राय मे यह अच्छा है कि तुम स्काटलेण्ड को भाग जाओ और देखो कि लाट पादरी और उनके साथी क्या करते हैं।

लेडी पर्सी—यह ठीक है। अगर इन लोगों ने राजा पर विजय पा ली तो आप भी उनमे मिल जाइए। लेकिन हमारे सबके कल्याण के लिए पहले इन लोगों को देख लीजिए। मेरा पति बिना विचारे चला गया और आज मैं विधवा बैठी हुई हूँ। अब मैं उम्र भर बड़े बोल न बोल सकूँगी।

अपनी स्त्री तथा पतोहू के बहुत समझाने पर नार्थम्बरलेण्ड का मन विचलित हो गया और वह स्काटलेण्ड को भाग गया।

चतुर्थ हनरी इस समय बीमार पड़ गया परन्तु विद्रोह-दमन के लिए उसने बहुत कुछ प्रबन्ध कर दिया था। राजकुमार हनरी ने यद्यपि श्रूसबरी के युद्ध में बड़े पराक्रम दिखाये थे परन्तु वहाँ से आते ही वह फिर अपनी पुरानी कुसंगति में पड़ गया था। रात-दिन नाच-रंग और मद्यपान में ही कटते थे। परन्तु उसके जीवन में एक विचित्रता थी। कुसङ्गति उसके आन्तरिक भावों पर बहुत बुरा प्रभाव नहीं डाल सकती थी। विषयासक्ति के भीतर-भीतर उसका उत्तम स्वभाव भी विद्यमान था और जिस प्रकार बाहरी वायु समुद्र के ऊपरी भाग को ही विचलित कर सकती है, उसकी

तह मे कुछ भी हलचल उत्पन्न नहीं कर सकती, इसी प्रकार दुष्ट साथियों का सङ्ग हनरी के ऊपरी व्यवहार पर ही असर डाल सकता था। अभी उसने अपने पुराने साथियों को छोड़ा न था, परन्तु श्रूसबरी के युद्ध के पश्चात् उसके जीवन मे बहुत बड़ा परिवर्त्तन होने लगा था। वीरता की वह चिनगारी, जिसके ऊपर कुसङ्ग रूपी राख आ गई थी, अब फिर भीतर ही भीतर सुलगने लगी। इसका पता हमको नीचे लिखे वार्तालाप से मिलेगा जो उसमे और उसके एक साथी पैाइन्स मे हुआ था—

हनरी—ईश्वर की शपथ, मैं बहुत थक गया हूँ।

पैाइन्स—क्या ऐसा भी होता है? मैं तो समझता था कि उच्च कुल के लोगों को थकावट नहीं होती!

हनरी—मुझे तो होती है। इससे मेरा सब उच्चत्व फीका पड़ गया है। क्या यह मेरा नीचपन नहीं है कि मुझे कुछ बियर (शराब) की इच्छा है।

पैाइन्स—एक राजकुमार को ऐसी नीच वस्तु की सहायता नहीं लेनी चाहिए।

हनरी—मेरी इच्छाएँ तो इतनी उच्च नहीं हैं जितना मेरा कुल है। मुझे लज्जा आती है।

पैाइन्स—कितने राजकुमार ऐसे हैं जो अपने पिता की बीमारी में ऐसी बातें करेंगे जैसी कि तुम करते हो?

हनरी—पैाइन्स, क्या मैं एक बात कह दूँ?

पैइन्स—हाँ, कोई अच्छी बात।

हनरी—तुझ जैसे लोगों के लिए अच्छी है।

पैइन्स—जाओ भी। मैं समझ गया।

हनरी—देख, कहता हूँ। मेरे पिताजी बीमार हैं इसलिए मुझे दुःखी होना उचित नहीं। परन्तु उचित हो या अनुचित, मुझे तो बहुत बड़ा दुःख है।

पैइन्स—क्या इसी कारण से?

हनरी—अरे क्या तू यह समझता है कि मैं ऐसा ही अत्याचारी हूँ जैसा तू या फ़ालस्टाफ़* है? हर एक मनुष्य के अन्त को देखकर उसके सदाचार का पता लगाना चाहिए। मैं सच कहता हूँ कि पिताजी की बीमारी से मुझे बहुत बड़ा दुःख है। परन्तु तुझ जैसे नीचों की संगति के कारण मैं इस योग्य नहीं रहा कि शोक-प्रकाश करूँ।

पैइन्स—कारण?

हनरी—अगर मैं रोऊँ तो तू क्या समझेगा?

पैइन्स—मैं समझूँगा कि तुम अन्य राजकुमारों की भाँति कपट करते हो और तुम्हारा शोक केवल दिखलाने का है।

हनरी—सब यही समझेंगे और तू भी यही समझता है। हर मनुष्य मुझे कपटी ही कहेगा। परन्तु क्यों?

* हनरी का एक साथी।

पैाइन्स—इसलिए कि आप ऐसी कुसंगति मे रहे।

राजकुमार हनरी यद्यपि अपनी कुरीतियों पर बहुत पछताता था और उनको छोड़ने का प्रयत्न करता था परन्तु राजा हनरी को उसकी दशा से कुछ सन्तोष नहीं था। वह रोग तथा विद्रोह की वृद्धि के कारण क्षीण होता चला जाता था। उसे रातें जागते-जागते कट जाती थी। एक पल को भी आँख लगाना कठिन था। राज की चिन्ताएँ बड़ी होती हैं। इनके समान भयानक और दुखदायी संसार मे और कोई चिन्ता नही होती। चतुर्थ हनरी इन्हीं चिन्ताओं मे घुला जाता था। एक दिन, रात के समय, अकेला बैठा हुआ वह अपने मन मे कह रहा था—

"मेरी हज़ारों प्रजा इस समय सो रही है। परन्तु हे नींद! हे मीठी नींद! तू मुझसे इतना क्यों डरती है कि इन पलकों को बन्द नहीं करती और आकर मेरी इन्द्रियों को अचेत नहीं करती? तू टूटी खटियों, धुएँ के घरों और बुरे वस्त्रों मे तो ऐसी उत्तमता से जाती है परन्तु सुगन्धियुक्त कमरों, बड़े आदमियों के बहुमूल्य बिस्तरों और सुरीले राग के मध्य में क्यों नहीं आती? दरिद्र आदमियों के मैले-कुचैले वस्त्रों में तो तुझे इतना अच्छा लगता है परन्तु राजाओं के महल तुझे प्यारे नहीं हैं। हे नींद! तूफान के समय समुद्र के बीच में तू मल्लाह के लड़के की आँखों मे मस्तूल के सिरे पर बैठे हुए भी शीघ्र आ जाती है। हे नींद! तू ऐसी आपत्ति

के समय दरिद्रों को झट आनन्ददायक हो जाती है परन्तु एक राजा को अच्छे महल मे आकर भी नहीं सुला सकती। शान्त, दरिद्र लोग चैन से सोते हैं और मुकुटमय सिर बिना नींद के बेचैन है।"

इस अशान्ति के समय मे वारिक और सरे दो भद्र पुरुष वहाँ पर आये और प्रणाम किया। राजा ने पूछा—क्या समय है ?

वारिक—एक बज चुका।

राजा—क्या आपने हमारे पत्र पढ़े ?

वारिक—हाँ, पढ़ लिये।

राजा—तो तुमने देखा, हमारे राज का शरीर कैसा पीड़ित है! कैसे कैसे रोग इसे लग रहे हैं और कैसे भयानक रोग हैं ?

वारिक—इस शरीर मे रोग अभी उत्पन्न हो गया है और यदि औषधि दी जाय तो इसकी चिकित्सा हो सकती है, लार्ड नार्थम्बरलैण्ड तो ठंडा हो जायगा!

राजा—हे ईश्वर, अगर हम अपने कर्मों की पुस्तक को पढ़ सकते और समय का परिवर्त्तन देख सकते—। एक समय ऊँचे से ऊँचे और कठोर से कठोर पर्वत भी पिघलकर समुद्र में मिल जाते हैं। दूसरे समय इसके विपरीत होता है। हाय! यह समय एक सा नहीं रहता। अगर हम जवानी में जान सकते कि हमको

किस प्रकार क्या-क्या सफलताएँ होंगी और फिर क्या-क्या दुःख भोगने पड़ेंगे, क्या-क्या आपत्तियाँ पड़ेंगी तो हम अपने जीवन-रूपी ग्रन्थ को उसी समय बन्द कर देते और समाप्त हो जाते। अभी दस वर्ष की बात है कि रिचार्ड और नार्थम्बरलेण्ड में बड़ी मित्रता थी और सहभोज मे सम्मिलित होते थे। दो वर्ष पीछे उन दोनों मे लड़ाई हो गई। आठ वर्ष हुए कि पर्सी हाटस्पर मुझे बड़ा प्यारा था। उसने भाई के समान मेरी सेवा की और अपना धन-धान्य मेरे पगों पर रख दिया। केवल मेरे ही हित के लिए रिचार्ड का सामना किया। वारिक, उस समय तुममें से कौन निकट था जब नार्थम्बरलैण्ड की गालियों पर आँसू भरकर रिचार्ड ने भविष्यद्वाणी की थी जो आज सच हो गई कि "नार्थम्बरलंण्ड, तू सिडी है जिसके द्वारा वोलिङ्ग-ब्रोक मेरी गद्दी तक पहुँचा है। परन्तु समय आवेगा जब पाप बढ़ता-बढ़ता फूट निकलेगा।" उसने जो कुछ कहा था वह आज सब ठीक निकला।

वारिक—महाराज, यह तो हुआ ही करता है। लोग अपने चारों ओर की दशा को देखकर कह बैठते हैं। यही रिचार्ड ने भी कहा! वह जानता था कि जब नार्थम्बरलेण्ड ने मुझसे कपट किया है तब दूसरों के साथ भी करेगा।

राजा—क्या यह ऐसे ही हुआ करता है ? अच्छा तो हमको इसका सामना करना चाहिए। सुना जाता है कि लाट पादरी और नार्थम्बरलैण्ड की सेना मिलकर पचास हज़ार है।

वारिक—ऐसा नहीं हो सकता। लोग झूठमूठ उड़ा देते हैं। मुझे तो विश्वास है कि जो सेना आपने भेजी है वह विजय पायेगी। आपको एक सन्तोषजनक बात सुनाता हूँ कि ग्लेण्डोवर की मृत्यु हो गई। अब आप से हम आज्ञा चाहते हैं। आपको १४ दिन बीमार हुए हो गये और इस समय बड़ा कष्ट हुआ होगा।

राजा—अगर एक बार ये झगड़े देश से मिट गये होते तो हम पवित्र भूमि (फलस्तीन) को चले गये होते।

राजा तो रोग में अपने दिन काटता रहा परन्तु उसकी सेना जौन आफ़ लङ्कास्टर और लार्ड वेस्टमोर्लेण्ड के आधिपत्य में विद्रोहियों को दण्ड देने के लिए यार्क की ओर बढ़ी। यहाँ लाट पादरी, मौबरे और हेस्टिंग्ज़ अपनी-अपनी सेना को लेकर आये हुए थे और लार्ड नार्थम्बरलेण्ड की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनको मालूम नहीं था कि नार्थम्बरलेण्ड स्काटलेण्ड को भाग जायगा। यदि नार्थम्बरलेण्ड आ जाता तो शायद विद्रोहीगण अपने प्रयोजन की सिद्धि में सफल हो जाते; क्योंकि नार्थम्बरलेण्ड एक वीर पुरुष था। परन्तु जब उन्होंने सुना कि उनका वीर साथी अपने दुःखों से दुखित होकर

स्काटलेण्ड भाग गया है तब उनकी बाँह टूट गई और वे निराश हो गये। परन्तु रणक्षेत्र में आकर लड़े विना हो ही क्या सकता था। यह बात सम्भव न थी कि भाग जाने से बच सकते। न यह हो सकता था कि राजा से सन्धि कर सकें। इसलिए मजबूर होकर फिर लड़ाई पर कमर बाँधी।

थोड़ी देर पीछे लार्ड वेस्टमोर्लेण्ड बातचीत करने के लिए लाट पादरी के पास आया और कहा—भगवन्, मुझे राजकुमार जौन ने आपके समीप भेजा है।

लाट पादरी—कहिए, आप क्या चाहते हैं?

वेस्टमो०—भगवन्, सारांश यह है कि यदि मूर्ख होकर ही अपनी दुष्टता तथा अविद्या के कारण इस विद्रोह के उत्पादक होते तो आप जैसे महात्मा और लार्ड हेस्टिंग्ज़ जैसे योग्य पुरुष इस प्रकार सेना-युक्त होकर शान्ति-भङ्ग में सम्मिलित न होते। लाट पादरीजी महाराज, आपके प्रान्त में सब प्रकार कुशल है। आप शान्तिपूर्वक इस वृद्धावस्था को पहुँच गये हैं। आपके श्वेत वस्त्रों से पूर्ण शान्ति का प्रकाश होता है। आपकी विद्या और बुद्धि शान्ति को द्योतित करती हैं। फिर समझ में नहीं आता कि आप जैसे सज्जन महात्मा ने अपने शान्ति-सूचक चिह्नों को अशान्ति-द्योतक वस्तुओं में क्यों बदल दिया है। धर्मग्रन्थों की जगह कवच, स्याही की जगह रक्त, लेखनी की जगह

कृपाण, और धर्मोपदेश के स्थान मे युद्ध की तुरही लेने से आपका न जाने क्या प्रयोजन है।

लाट पादरी—मैंने ऐसा क्यों किया ? इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि हम सब रोगग्रसित हैं और एक बड़े भयङ्कर ज्वर में सन्तप्त हो रहे हैं इसलिए आवश्यकता यह है कि हमारा रक्त-मोचन (फ़स्द) किया जाय। इसी रोग से पीड़ित होकर हमारा योग्य राजा रिचार्ड मर गया। हमने भले प्रकार विचार लिया है कि हमारे शस्त्र क्या कर सकते हैं अथवा हमको क्या हानि पहुँच सकती है। जब हम अपने दोषों और अपने दुःखों की तुलना करते हैं तब हमको दोषों की अपेक्षा दुःख अधिक प्रतीत होते हैं। हम देख रहे हैं कि कालचक्र किस प्रकार फिर रहा है। हम शस्त्र धारण करने के लिए मजबूर हो गये हैं। क्या करें ? हम शिकायत करते हैं तो सुनी नहीं जाती। हमको सताया जाता है और फिर हमारी वाणी बन्द की जाती है। हम यहाँ शान्ति-भङ्ग के लिए नहीं आये किन्तु शान्ति-स्थापन के लिए आये हैं। क्योंकि हम देखते हैं कि चारों ओर शान्ति-भङ्ग हो रहा है।

वेस्टमो०—महाराज ने आपकी अपील कब नहीं सुनी जो आज आपने विद्रोह मचाया ?

लाट पादरी—सर्वसाधारण को कष्ट पहुँच रहा है।

वेस्टमो०—इससे आपका क्या सम्बन्ध है ?

मौबरे—क्यों नहीं ? यह हमारा कर्त्तव्य है।

वेस्टमो०—लार्ड मौबरे, यदि आप विचार करेंगे तो मालूम होगा कि इन कष्टों का कारण समय है न कि राजा। रहे आप, सो आप को तो किसी तरह विद्रोह करने का अवसर नहीं है। क्योंकि राज की ओर से आपको नार्फ़ोक * की सब जागीर मिल चुकी है जो आप के पिता के अधिकार मे थी।

मौबरे—मेरे पिता ने कौन सी चीज़ नष्ट कर दी थी जो मुझे मिल गई ? राजा रिचार्ड मेरे पिता को बड़ा प्यार करता था। वह तो समय की बात थी कि उसे देश से निकलना पड़ा। अगर रिचार्ड उनको लड़ने से न रोक देता तो बोलिङ्ग-ब्रोक और मेरे पिता के युद्ध में सब बात निश्चित हो चुकी थी।

वेस्टमो०—लार्ड मौबरे, आप बेसमझे-बूझे कह रहे हैं। बोलिङ्ग-ब्रोक को उस समय भी सब लोग स्नेह की दृष्टि से देखते थे। परन्तु मैं क्या कहने आया था और क्या कह रहा हूँ ! राजकुमार जौन ने मुझे यहाँ इसलिए भेजा है कि आपको क्या-क्या शिका-

---

* मौबरे उस लार्ड नार्फ़ोक का लड़का था जिसे द्वितीय रिचार्ड ने बोलिङ्ग-ब्रोक के साथ देश से निकाल दिया था।

यतें हैं। यदि वे उचित हुईं तो अवश्य सुनी जायँगी और उनके दूर करने का उपाय किया जायगा।

मौवरे—परन्तु यह राजकुमार की नीतिकुशलता है। इससे प्रेम प्रतीत नहीं होता।

वेस्टमो०—यह बात नहीं है। राजकुमार ने यह बात भय से नहीं कही किन्तु दयाभाव ने उसे प्रेरित किया है। हमारी सेना आपकी सेना से अधिक बलवती है। हमारे सैन्यगण आपके सिपाहियों से अधिक सुशिक्षित हैं। इन सबके अतिरिक्त हमारा उद्देश बडा उत्तम है।

मौवरे—चाहे जो हो, हम सन्धि करने के लिए उद्यत नहीं हैं।

वेस्टमो०—इसी से तो आपका दोष मालूम होता है।

हेस्टिंग्ज़—क्या राजकुमार को उसके पिता ने पूर्ण अधिकार दे दिया है कि जो कुछ वह निश्चय करेंगे वही स्वीकृत होगा?

वेस्टमो०—यह तो स्पष्ट ही है। न जाने आप ऐसे तुच्छ प्रश्न क्यों करते हैं?

लाट पादरी—अच्छा लार्ड वेस्टमोर्लेण्ड, आप यह नियमावली ले जाइए। यदि राजकुमार इन नियमों को अङ्गीकार कर ले तो हम शान्त हो जायँगे।

लार्ड वेस्टमोर्लेण्ड तो नियमावली को लेकर चला गया। अब मौवरे कहने लगा—मेरा अन्तःकरण कह रहा है कि सन्धि नहीं हो सकती।

हेस्टिंग्ज़—अगर इन नियमों को मान लिया गया तो हमारी सन्धि अटूट है।

मौवरे—नहीं नहीं, अगर इस समय मेल भी हो गया तो क्या? राजा छोटी-छोटी बातों पर फिर छेड़छाड़ करेगा और हमारे स्नेह से भी शत्रुता समझी जायगी।

लाट पादरी—यह बात नहीं है। राजा अब तंग आ गया है। अगर वह एक शत्रु को मारता है तो उसके स्थान मे दो खड़े हो जाते हैं, मित्र और शत्रु। कुछ इस प्रकार मिले-जुले हैं कि यदि एक शत्रु को दण्ड दिया जाता है तो मित्र भी शत्रु हो जाते हैं।

हेस्टिंग्ज़—इसके अतिरिक्त एक यह भी बात है कि पुराने विद्रोहियों को दण्ड देते-देते उसमें शक्ति इतनी नहीं रही है।

लाट पादरी—इसलिए मुझे आशा है कि हमारे नियम मान लिये जायँगे।

जिस समय ये बातें हो रही थीं, लार्ड वैस्टमोलैंण्ड और राजकुमार जौन बातचीत करने के लिए वहाँ पर आ गये। आपस में प्रणाम आदि शिष्टाचार होने के पश्चात् जौन ने कहा—लाट पादरीजी, आप तो उस समय अच्छे मालूम होते थे, जब घण्टा बजते ही लोग चारों ओर से गिरजे में इकट्ठे होते थे और आप उनको ईश्वरीय ग्रन्थों से धर्मोपदेश करते थे। आपको शास्त्र के स्थान मे शस्त्र और जीवन के स्थान में मृत्यु को

धारण करना शोभा नहीं देता। कौन नहीं जानता कि आप धर्मशास्त्रों में बड़े निपुण थे? आप हमारे पापों और परमात्मा के सम्बन्ध का एक द्वार थे। आपसे ही हम लोग धर्मोपदेश ग्रहण करते थे। आप उसी शक्ति का अब अनुचित व्यवहार कर रहे हैं और अपने धार्मिक नाम पर बट्टा लगा रहे हैं। आप ईश्वर के सांसारिक प्रतिनिधि अर्थात् मेरे पिता की प्रजा को झूठमूठ ईश्वर के नाम पर भड़का रहे हैं और उनकी शान्ति को भङ्ग कर रहे हैं।

लाट पादरी—लार्ड लङ्कास्टर, मैं यहाँ आपके पिता की शान्ति-भङ्ग करने नहीं आया हूँ परन्तु समय मजबूर करता है कि हम अपनी रक्षा के लिए यत्न करें। मैंने वेस्टमोर्लैण्ड के हाथ आपके पास अपनी शिकायतें भेजी थीं जिनके कारण यह झगड़ा मचा हुआ है। आप हमारी शिकायतें दूर कीजिए और हम मानते हैं।

मौबरे—नहीं तो फिर युद्ध ही निश्चय करेगा।

हेस्टिंग्ज़—और चाहे हमारे प्राण ही क्यों न जायँ, हम कोशिश करेंगे। अगर हम मर गये तो हमारे साथी लड़ेंगे। अगर वे भी मर गये तो उनके साथी लड़ेंगे और इस प्रकार वैफल्य द्वारा सफलता प्राप्त होगी। जब तक इस देश में वंश स्थित रहेंगे, यह झगड़ा चला जायगा।

जौन०—हेस्टिंग्ज़, तुम तो बड़े उथले हो। फिर भविष्यत् की गम्भीर बातें कैसे जान सकते हो?

वेस्टमो०—महाराज, नियमों को निश्चित कीजिए। क्या आपको स्वीकृत हैं ?

जौन०—ये सब मुझको स्वीकृत हैं। ये सब अच्छे हैं। मैं इनको मानता हूँ। मैं बलपूर्वक कहता हूँ कि पिताजी का आशय समझने में भूल हुई है। जो शिकायतें आपने प्रजा की ओर से की हैं वे सब दूर की जायँगी। मैं धर्मपूर्वक कहता हूँ। मैं सत्य कहता हूँ। मैं ईश्वर को साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हूँ।

राजकुमार की यह प्रतिज्ञा सुनकर सब राज़ी हो गये। लाट पादरी, मौबरे, हेस्टिंग्ज़ आदि ने राजकुमार का हस्तचुम्बन किया और सब लोग मित्र की भाँति बातचीत करने लगे। लाट पादरी की आज्ञा पाकर हेस्टिंग्ज़ ने अपनी सेना को अपने-अपने घर भेज दिया और यह निश्चय हुआ कि उस रात राज-कुमार के साथ मिलकर सब लोग सहभोज करेंगे। परन्तु राजकुमार की आत्मा में कपट की छुरी चल रही थी। वह इन लोगों को फाँसना चाहता था। ज्योंही उसने देखा कि मौबरे आदि की सेना रणक्षेत्र में नहीं है, वेस्टमोलैण्ड से कह-कर उसने लाट पादरी, लार्ड मौबरे और लार्ड हेस्टिंग्ज़ तीनों को क़ैद कर लिया। क़ैद होते ही इन लोगों की आँखें खुलीं। उस समय उनको मालूम हुआ कि मौबरे ने जिस बात की ओर ऊपर संकेत किया था वह ठीक निकली और मेल करने में धोखा हो गया।

मौबरे—क्या यह धार्मिक व्यवहार है ?

वेस्टमो०—क्या तुम्हारा धार्मिक समुदाय है ?

लाट पादरी—तुम अपनी प्रतिज्ञा का भङ्ग करते हो ?

राजकुमार—जो प्रतिज्ञाएँ मैंने की हैं उनका अवश्य पालन होगा। मैंने तुमसे कोई प्रतिज्ञा नहीं की। मैंने प्रजा के दुःख दूर करने की प्रतिज्ञा की है सो वे दूर किये जायँगे। परन्तु तुम राजविद्रोह के अपराध में पकड़े गये हो। उसका दण्ड तुम्हें अवश्य भोगना पड़ेगा।

अब कहने से क्या होता था। लोकोक्ति है 'अब पछ-तायें होत का जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत'! जो-जो मुखिया विद्रोही थे वे सबके सब पकड़कर लन्दन भेज दिये गये और उनमें से एक भी न बचा।

इधर यार्क के लाट पादरी का तो यह हाल हुआ उधर लार्ड नार्थम्बरलैण्ड और लार्ड बार्डल्फ़ की भी राजकीय सेना से मुठभेड़ हो ही गई। वहाँ ये अकेले पराजय के सिवा और कुछ प्राप्त न कर सके। लार्ड नार्थम्बरलैण्ड मारा गया।

इस तरफ़ राजकुमार विद्रोह-दमन में लगे हुए थे उस तरफ़ राजा हनरी का रोग बढ़ रहा था। परन्तु उसके मन में पवित्र भूमि के जीतने की अभिलाषा विद्यमान थी। वह एक दिन वेस्टमिनिस्टर के महल में बैठा हुआ कई भद्रपुरुषों के

साथ इसी विषय पर वार्तालाप कर रहा था कि ज्योंही विद्रोह मिट जाय वह फ़लस्तीन जाने की तैयारियाँ कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने जहाज़ बनवा लिये थे। सेना भी एकत्रित हो रही थी। उसी समय युवराज हनरी के विषय में भी राजा कुछ विचार प्रकट कर रहा था। जब उसे मालूम हुआ कि हनरी अपने दुष्ट साथियों के संग लन्दन की सैर कर रहा है तब उसे बहुत खेद हुआ। वह कहने लगा—"देखो, मेरा पुत्र इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत कर रहा है, और राजवंशी कार्यों को छोड़ कुचालों में फँस रहा है।" उसी समय वेस्टमोर्लेण्ड ने आकर निवेदन किया कि मौबरे, हेस्टिंग्ज और यार्क का लाट पादरी सबके सब क़ैद कर लिये गये।

यह सुनकर राजा को बड़ी ख़ुशी हुई परन्तु पूर्ण रीति से अभी इसका प्रकाश भी न होने पाया था कि हार्कोर्ट ने आकर सूचना दी—महाराज, नार्थम्बरलेण्ड भी मारा गया!

अब क्या था? चतुर्थ हनरी के लिए चारों ओर हर्ष ही हर्ष था। आँख उठाकर देखने से उसे देश भर में अपना शत्रु दिखाई नहीं पड़ता था। अब उसके लिए संसार आनन्द से पूर्ण देख पड़ने लगा। परन्तु राजा का स्वास्थ्य इस योग्य न था कि उतने आनन्द के भार को सहन कर सके। वह ऐसी हर्षसूचक ख़बरों को सुनते ही मूर्छा खाकर गिर पड़ा। अन्य राजकुमार, जो उस समय वहाँ पर उपस्थित थे, घबरा गये। इतने में युवराज हनरी आ गया और राजा को इस

दशा में देखकर उसके पास बैठ गया। दूसरे लोगों ने समझा कि शायद राजा को नींद आ गई है। इसलिए वे युवराज को राजा के पास छोड़कर चले गये।

युवराज हनरी ने अपने पिता के राजमुकुट को उसके बिस्तर के पास रक्खा हुआ देखकर उठा लिया और उसको सम्बोधित करके मन में कहने लगा—मुकुट, तू यहाँ क्यों रक्खा है? तू एक रोगी मनुष्य का बड़ा दुःखदायी साथी है। हे स्वर्णरूपचिन्ता, तेरे ही कारण लोग रातों जागते हैं। तेरे साथी को दरिद्र पुरुष के बराबर भी मीठी नींद नहीं आती।

फिर उसने राजा को पुकारा—पिताजी! पिताजी!

जब राजा ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया तब उसने समझा कि राजा मर गया और राजमुकुट को अपने सिर पर रखकर वहाँ से चल दिया।

युवराज के कमरा छोड़ते ही राजा की आँख खुल गई। वह कुछ होश में आ गया और अपने राजमुकुट को पास न देखकर बड़ा दुखी हुआ। उसने लोगों को बुलाया और इसका हाल पूछा। उन्होंने उत्तर दिया—महाराज, हम युवराज को यहाँ छोड़ गये थे।

यह सुनकर राजा कहने लगा—वही ले गया है, वही ले गया है। देखो देखो, उसे लाओ। क्या उसे इतनी जल्दी है कि उसने नींद को मृत्यु समझ लिया। हाय! यह दुःख रोग के साथ मिलकर मुझे शीघ्र ही समाप्त कर देगा। देखो

लड़को, तुम क्या हो! तुम्हारी आँख कितनी जल्दी बदल जाती है। स्वर्ण को देखकर तुम कैसे ललचाते हो! इसी स्वर्ण के लिए मूर्ख पिता इतनी चिन्ता किया करते हैं और इसके उपार्जन में इतना परिश्रम करते हैं। इसीलिए वे अपने पुत्रों को विद्या पढ़ाते और शिक्षा देते हैं। हम शहद की मक्खियों की तरह परिश्रम करते हैं और उन्हीं की तरह मारे जाते हैं।

उस समय एक मनुष्य ने आकर कहा—महाराज, राजकुमार दूसरे कमरे में रो रहा है।

राजा—तो वह मुकुट क्यों उठा ले गया था?

इतने में युवराज आ गया। राजा ने सबको अपने पास से हटा दिया और जब बाप-बेटे इकट्ठे हुए तब राजकुमार ने कहा—महाराज, मैं समझता था कि आप अब कभी न बोल सकेंगे।

राजा—तुम्हारी अभिलाषा तो यही थी। बेटा, मैं बहुत जिया, बहुत जिया! मैंने तुझे थका दिया! क्या तू मेरी कुर्सी पर बैठने का ऐसा इच्छुक है कि अपना समय आने से पहले ही बैठना चाहता है? मूर्ख युवक, तू अभी से उस भार को लेना चाहता है जिसका सहन करना तेरे लिए कठिन होगा। थोड़ी देर ठहर, क्योंकि मेरे दिन पूरे हो चुके। तूने ऐसी चीज़ चुरा ली जो थोड़ी देर पीछे तेरी ही थी। तेरे जीवन में प्रकट होता था कि तू मुझसे स्नेह नहीं करता।

अब क्या तू अन्त-समय इसका अधिक निश्चय कराना चाहता है ? न जाने तेरे हृदय में कितनी तलवारें छिपी हुई थीं जिनको मारकर तूने आध घण्टे के लिए मेरा प्राणान्त कर दिया। ऐसा ही है तो जा और मेरी क़ब्र तैयार करा। अपने राजा होने की ख़बर मेरे मरने से पहले ही मशहूर कर दे। जिस शरीर ने तुझे जीवन दिया था उसे राख में मिला दे। मेरे नौकरों को हटा दे। मेरे नियमों को तोड़ दे; क्योंकि अब पञ्चम हनरी राजा हो गया।

युवराज ने पैरों पड़कर रोते हुए कहा—पिताजी, क्षमा कीजिए। क्षमा कीजिए। शोक के मारे मेरी वाणी रुक गई है। मैं कह नहीं सकता, नहीं तो आपको इतना कुपित न होने देता। आपका मुकुट यह है। वह सर्वशक्तिमान्, जो सदा के लिए राजमुकुट पहनता है, इस मुकुट को बहुत दिनों तक आपके सिर पर रक्खे। यदि मैं इसको आपसे अधिक चाहता हूँ तो ईश्वर मुझे नष्ट करे। श्रीमन्, जब मैं यहाँ आया और आपको मृत देखा तब इस मुकुट को देखकर मैं यह कहने लगा, 'तेरी चिन्ता ही पिताजी के देहान्त का कारण हुई। इसलिए उत्तम धातु का होते हुए भी तू निकृष्ट है। ऐसा उत्तम, ऐसा प्रसिद्ध, ऐसा शुभ होते हुए भी तू अपने पहननेवाले को खा जाता है।' पिताजी, इस प्रकार कहते हुए मैंने इसे अपने सिर पर रख लिया। मैंने इस

समय इसे अपना शत्रु और पिता का घातक समझा। अगर मुझे इसको पहनते हुए नाममात्र भी हर्ष हुआ हो तो ईश्वर मुझे कभी राज न दे।

इस विनय-सूचक निवेदन को सुनकर पिता का हृदय पिघल गया और जो कोप अब तक उसके चेहरे से प्रकाशित होता था, जाता रहा।

राजा—बेटे, शायद ईश्वर ने मुकुट धारण करने की प्रेरणा तेरे हृदय में इसी लिए की हो कि तेरी ओर से मेरे हृदय में अधिक प्रेम उत्पन्न हो गया। अब मेरे पास आ और मुझसे एक शिक्षा ग्रहण कर। ईश्वर जानता है कि किस-किस छल-कपट से मैंने राजमुकुट को प्राप्त किया और मैं ही जानता हूँ कि इसकी रक्षा में मुझे क्या-क्या कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। तुझे इतनी मुश्किलें न होंगी, क्योंकि मेरा दोष मेरे साथ जाता है। तू युवराज है इसलिए तुझे तो यह प्राप्त ही है। तेरा बाप राजा था इसलिए तू उसका उत्तराधिकारी है। मेरा बाप राजा नहीं था इसलिए मेरा अधिकार राज के ऊपर कुछ भी नहीं था। परन्तु यद्यपि तू राज का अधिकारी है लेकिन अभी तक हमारे राज की जड़ मज़बूत नहीं हुई है। मेरे वे सब मित्र, जो तेरे भी मित्र हैं, अभी निर्बल नहीं हुए हैं और उनसे हमको बहुत डर है। मैंने चाहा था कि पवित्रभूमि का

युद्ध छेड़कर उनका चित्त उधर को आकर्षित कर दूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यदि ये लोग ख़ाली रहेंगे तो अवश्य हमारे उतारने की कोशिश करेंगे। इसलिए हनरी, तुझे उचित है कि इन चिन्तामय मनों को विदेश के युद्ध की ओर लगा दे। क्योंकि जब ये लोग अन्यदेशीय विजय-पराजय में लगे रहेंगे तब प्राचीन राजद्वेष को भूल जायँगे। इसके अतिरिक्त मैं और भी बहुत कुछ कहना चाहता हूँ, परन्तु अब मेरी शक्ति क्षीण हो रही है।

यह कहते-कहते उसकी ज़ुबान बन्द हो गई और कुछ काल पीछे उसका देहान्त हो गया।

चतुर्थ हनरी की मृत्यु पर उसका लड़का पञ्चम हनरी गद्दी पर बैठा। उसने राजमुकुट धारण करते ही अपने जीवन में बहुत बड़ा परिवर्त्तन कर दिया। जितने उसके दुष्ट और अत्याचारी साथी थे उनका साथ उसने छोड़ दिया और उनको इतना धन दे दिया जिससे वे साधारण रीति से अपना निर्वाह कर सकें और लूट-मार न करें।

पञ्चम हनरी अपने समय का बड़ा शक्तिशाली और न्यायकारी राजा हुआ है। उसके बचपन की अवस्था से कोई यह नहीं जानता था कि वह इस उत्तमता से राज करेगा। उसके पिता को मरण-पर्य्यन्त अपने पुत्र की ओर से चिन्ता ही रही। उसके साथियों की दुष्टता से देश भर को घृणा

थी। परन्तु उसके महत्त्व का सूर्य खेल-कूद के बादलों में छिपा हुआ था और कभी-कभी उसकी झलक दिखाई पड़ जाती थी जैसा कि श्रूसबरी के युद्ध से विदित होता है। किन्तु जब उसको राजगद्दी मिली तब उसके साथ ही उसमें गम्भीरता भी आ गई और इस सूर्य की किरणें बड़ी तेज़ी के साथ चमकने लगीं।

इस महत्त्व का एक दृष्टान्त यहाँ दिया जाता है। अपने पिता के जीवन-समय में हनरी ने एक जज को किसी तुच्छ बात पर एक थप्पड़ मारा। जज ने बिना युवराज के पद पर विचार किये हुए नियमानुसार उसे क़ैद कर दिया। चतुर्थ हनरी इस बात से बड़ा प्रसन्न हुआ। और कहा—मैं धन्य हूँ, कि मेरा एक नौकर अपने नियम का इस उत्तमता से पालन करता है।

जब पञ्चम हनरी गद्दी पर बैठा तब उस जज को बहुत भय मालूम होने लगा कि कहीं राजा मेरे इस व्यवहार पर मुझे दण्ड न दे। तब राजा ने पूछा—मैं समझता हूँ, तुमको इस बात का निश्चय हो गया है कि मैं तुमको नहीं चाहता।

जज—जहाँ तक मैं जानता हूँ, कोई ऐसा उचित कारण नहीं है कि आप मुझसे घृणा करें।

राजा—हाँ, क्या मुझे अपने उस अपमान का ख़याल नहीं है? क्या एक राजकुमार उस प्रकार के अनुचित व्यवहार को भूल सकता है?

जज—उस समय मैंने वही किया था जो मेरा कर्त्तव्य था। मैं आपके पिताजी का स्थानापन्न था। इसलिए आपने मेरा अपमान करने मे अपने पिता का अपमान किया; इसलिए मैंने दण्ड दिया। इसमे कोई अनुचित बात नही है। आज आप राजा हैं। यदि आपका पुत्र ऐसा ही अनुचित व्यवहार करे तो आप मुझे क्या करने की आज्ञा देंगे ?

इस उत्तर से राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसको अच्छे पद पर नियत किया। शेक्सपियर ने पञ्चम हनरी नामक नाटक में उसकी वीरता का हाल लिखा है जिसका वर्णन दूसरी कहानी में किया जायगा।

पञ्चम हनरी

(HENRY V.)

पञ्चम हनरी अपने पिता चतुर्थ हनरी की मृत्यु के उपरान्त १४१३ ई० में इँगलैण्ड का राजा हुआ। चौथे हनरी का वर्णन करते हुए हम लिख चुके हैं कि बचपन में यह किस प्रकार अनुचित व्यवहार में अपना जीवन व्यतीत करता था और अपने पिता के मरते ही उसने किस प्रकार अपना ढङ्ग बदल दिया। परन्तु उसके शत्रुओं को यह विदित नहीं था कि हनरी इतनी जल्दी सुधर जायगा। समस्त इँगलैण्ड-निवासियों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था कि राजा ने अपने जीवन में आशातीत उन्नति कर ली। उसकी वीरता से उसके शत्रु दंग रह गये। उसके गौरव से उसके मित्रों को आश्चर्य होने लगा। सारांश यह कि जो काम उसने किया, विचित्र ही किया।

हनरी के गद्दी पर बैठने के थोड़े ही दिनों पश्चात् पार्लियामेण्ट का ऐसा विचार हुआ कि धर्ममन्दिरों से सारी जायदाद ले लेनी चाहिए। इस पर एली के लाट पादरी और कैण्टरबरी के लाट पादरी में परस्पर विचार हुआ कि किस

प्रकार राजा को ऐसा करने से रोकना चाहिए। कैण्टरबरी ने कहा—श्रीमन्, अब फिर वही नियम राजसभा मे प्रविष्ट हुआ है जो पिछले महाराज के राज्य के ग्यारहवे वर्ष मे हमारे विरुद्ध पास हुआ था; परन्तु लड़ाई-झगड़े के कारण उसका पालन न हो सका था।

ऐली०—परन्तु अब क्या करना चाहिए?

कैण्टरबरी—इसका कुछ उपाय सोचना चाहिए। अगर यह नियम पास हो गया तो हमारी आधी से अधिक जायदाद हाथ से निकल जायगी। क्योंकि जो-जो जायदाद लोगों ने धर्म से प्रेरित होकर दान कर दी है वह सब हम से ले ली जायगी। राजा के हाथ इस नियम के अनुसार इतना रुपया लग जायगा जो ५ जागीरदारों तथा १५०० सरदारों के रखने के लिए काफ़ी होगा। इसके अतिरिक्त १५००० रुपया साल राजा को और मिलेगा।

ऐली०—इससे तो हम सबका सर्वनाश ही हो जायगा। परन्तु अब क्या करना चाहिए?

कैण्टर०—राजा बड़ा योग्य और दयालु है।

ऐली० —और धर्म का श्रद्धालु भी।

कैण्टर०—उसके बालकपन से तो यह नहीं मालूम होता था। ज्योंही उसके पिता के प्राण शरीर से बाहर हुए त्योंही

उसका उजड्डपन नष्ट हो गया। उसी समय समस्त दोष जाते रहे और उसका शरीर-दोष-निर्मुक्त आत्मा के लिए स्वर्गधाम हो गया।

ऐली०—यह परिवर्तन तो बहुत ही अच्छा हुआ।

कैण्टर०—जब वह धर्म की बातें करता है तब मालुम होता है कि कोई पादरी है। जब राजनीति पर विचार करता है तब जान पड़ता है कि यह आयु भर यही करता रहा है। युद्ध की बातें करने से विदित होता है कि यह एक बड़ा वीर पुरुष है। जो कोई कठिन से कठिन बात कहिए वह झट उसे सरल कर देता है।

ऐली०—बहुधा ऐसा देखने में आता है कि बेर काँटों में उत्पन्न होते हैं और अनेक उत्तम फल बुरे फलों के साथ-साथ उगते हैं। इसी प्रकार राजा की विचारशक्ति अब तक उजड्डता के नीचे छिपी हुई थी जो ग्रीष्म ऋतु की घास के समान छिपे-छिपे रात के समय अधिक बढ़ रही थी।

कैण्टर०—हाँ, ऐसा ही होगा।

ऐली०—पर, भगवन्! इस नियम के रोकने का क्या उपाय करना चाहिए? क्या महाराज इसकी ओर झुके हुए हैं?

कैण्टर०—नहीं, वे तो हमारे पक्ष में मालूम होते हैं; क्योंकि हमने धर्म* संस्था (Church) की ओर से बहुत बड़ा धन फ़्रान्स-विजय के लिए भेंट करना चाहा था।

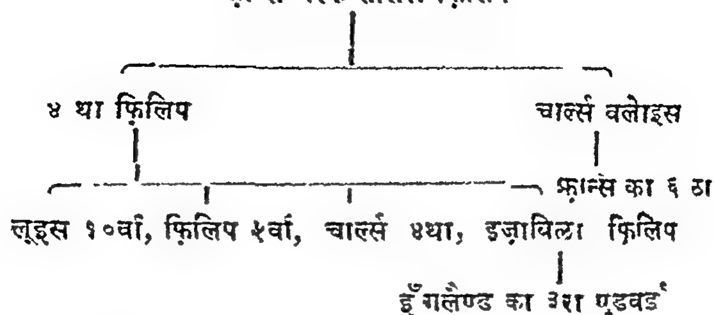
ऐली०—क्या राजा ने यह भेंट स्वीकार कर ली?

कैण्टर०—स्वीकार करने की तो उनकी इच्छा थी। परन्तु उस समय फ़्रांस देश के एलची आ गये और अधिक बातें करने का अवसर नहीं मिला।

फ़्रान्स के दूतों की ओर जो संकेत लार्ड कैण्टरबरी के कथन में किया गया है, उसकी कथा इस प्रकार है कि चौथे हनरी के पितामह तीसरे एडवर्ड ने छठे फ़िलिप के समय में फ़्रान्स देश के राज्य का दावा किया था। क्योंकि तीसरे एडवर्ड की माता इज़ाबिला फ़्रान्स-नरेश तीसरे फ़िलिप की पोती थी और इज़ाबिला का पिता चौथा फ़िलिप, छठे फ़िलिप के पिता चार्ल्स का बडा भाई था। इसलिए इँगलैण्ड के राजनियमानुसार बड़े भाई की सन्तान के जीते जी छोटे भाई की सन्तान राज्य नहीं कर सकती। यह बात नीचे की वंशावली से मालूम होगी—

---

*इँगलैण्ड में धर्म-सस्था अर्थात् ईसाई चर्च राजसभा से बिलकुल अलग है। उसमें उसी प्रकार कार्य्यकर्ता नियत होते हैं जिस प्रकार अन्य राज-पुरुष, जैसे कमिश्नर, कलक्टर आदि। धर्म-संस्था की जायदाद भी अलग होती है।



फ़ान्सवाले एडवर्ड के इस अधिकार को स्वीकार नहीं करते थे। क्योंकि सैलिक नियम के अनुसार उनके यहाँ राज्य लड़की या उसके लड़कों को नहीं मिल सकता। तीसरा एडवर्ड यह तो मान गया था कि फ़ान्स की राजगद्दी लड़की को प्राप्त नहीं हो सकती परन्तु वह यह नहीं मानता था कि लड़की की सन्तान भी उस अधिकार से वञ्चित है। इसलिए एक बड़ा भारी युद्ध फ़ान्स और इँगलैण्ड में हुआ जो शतवर्षीय युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। तीसरे एडवर्ड के मरने के पीछे यह युद्ध बन्द हो गया था क्योंकि दूसरे रिचार्ड और चौथे हनरी के समय में घरेलू झगड़े ही क्या कम थे जो विदेश जाने का अवकाश मिलता?

जब पञ्चम हनरी राजा हुआ तब अपने पिता की शिक्षा के अनुसार उसने अपने देश के वीरों का चित्त अपने घर के युद्ध से हटाकर विदेशदमन की ओर आकर्षित किया और अपने प्रपितामह के अधिकार को पुनर्जीवित करने के लिए

फ़ान्स-नरेश छठे चार्ल्स से कहला भेजा कि तुम फ़ान्स का राज हमको दे दो नहीं तो युद्ध करना होगा। यही कारण था कि फ़ान्स के एलची इँगलैण्ड मे आये हुए थे।

उपर्युक्त वार्तालाप के थोड़े समय पीछे महाराज ने कैण्टरबरी और ऐली के लाट पादरी को इसी विषय पर विचार करने के लिए बुलाया और कैण्टरबरी को सम्बोधित करके कहा—भगवन्! आप विद्वान् और धर्मज्ञ हैं। इसलिए स्पष्टतया बतलाइए, कि फ़ान्स के सैलिक धर्मशास्त्र के अनुसार मुझे वहाँ का राज्य मिल सकता है या नहीं। ईश्वर को साक्षी करके किसी नियम का अनर्थ न कीजिए और न मेरे प्रसन्न करने के लिए किसी शब्द की खींचतान कीजिए। क्योंकि ईश्वर जानता है कि कितने पुरुषों का रक्त-पात केवल आपके ही विचार पर निर्भर है। सब सोच-समझकर आप बतलाइए। हम उसी पर विश्वास करेंगे।

कैण्टरबरी—महाराज और सभ्यगण, सुनिए। कोई कारण ऐसा नहीं है जो श्रीमान् के फ़ान्स-अधिकार मे बाधा दे सके। फ़ान्सवाले जो सैलिक धर्मशास्त्र का प्रमाण देते हैं, यह उनकी खींचतान है। क्योंकि उन्हीं के ग्रन्थों मे स्पष्ट लिखा हुआ है कि सैलिक-भूमि जर्मनी मे सला और एल्ब नदी के मध्य मे है, जहाँ बड़े चार्ल्स ने सेक्सन लोगों को पराजित किया था। वहाँ पर कुछ फ़ान्सीसी लोग बस गये। उनको जर्मन

स्त्रियों से बड़ी घृणा थी। इसलिए उन्होंने एक नियम बना दिया था कि कोई स्त्री अपने पिता की जायदाद की अधिकारिणी नहीं है। इससे सैलिक-भूमि को आजकल मीसिन कहते हैं। उसी भूमि के लिए सैलिक धर्मशास्त्र बनाया गया था। फ़ान्स देश में उसका पालन नहीं हो सकता। इस नियम का संस्थापक फरमण्ड बतलाया जाता है। परन्तु फ़्रांसीसियों ने सैलिक-भूमि को फरमण्ड की मृत्यु के ४२१ वर्ष पीछे लिया था। फरमण्ड ४२६ ई० में मरा और बड़े चार्ल्स ने ८०५ में सैक्सन लोगों पर विजय प्राप्त की। फिर इन्हीं फ़ान्स देश के ग्रन्थ-कारों से यह भी मालूम होता है कि पेपिन बादशाह ने चिल्डरिक को इसलिए गद्दी से उतार दिया था कि पेपिन की माता ब्लिथिल्ड, फ़ान्स-नरेश क्लोथर की पुत्री थी और इसलिए पेपिन उसका उत्तराधिकारी था। और लीजिए, बड़े चार्ल्स के लड़के लूइस की पोती लिगर का पुत्र होने के कारण हफकपिट ने फ़ान्स की राजगद्दी पर स्वत्व प्राप्त कर लिया था। दसवें लूइस की दादी इज़ाबिला, चार्ल्स की लड़की अरमिङ्गर की सन्तान थी। इन सब दृष्टान्तों से ज्ञात होता है कि फ़ान्स के राज्य पर लड़कियों की सन्तान राज करती रही है। चाहे आज फ़ांसवाले आपके

लिए सैलिक-नियम की मन-गढ़न्त बातें भले ही बनावें।

राजा—क्या धर्म के अनुसार मैं इस राज्य का अधिकारी हो सकता हूँ ?

कैण्टरबरी—अवश्यमेव। यदि इसमे कुछ पाप हो तो मेरे सिर। गिनती की पुस्तक में लिखा है कि अगर आदमी मर जाय तो उसकी जायदाद पुत्री को मिले। महाराज! अपने स्वत्व पर दृढ़ रहिए। अपने झण्डे खोल दीजिए और अपने पूर्वजों के पराक्रमों का स्मरण कीजिए। देखिए, आपके प्रपितामह तीसरे एडवर्ड के समय में आपके दादा ब्लैक प्रिन्स ने किस प्रकार फ़ान्स-दल मे हलचल मचा दी थी, जब उनका पिता पहाडी पर चढ़ा हुआ फ्रांस के घायल सिपाहियों को देख-देखकर ख़ुश हो रहा था। आपके सेनाध्यक्षो और अँगरेज़-वीरो में अभी अपने पूर्वजों का रुधिर मौजूद है और उनमे से केवल आधे ही इस योग्य हैं कि फ़ान्स के वीरों की वीरता को मिट्टी में मिला दें और दूसरे आधे खड़े-खड़े तमाशा देखते रहे।

हनरी को इस प्रकार समझा दिया गया कि फ़ान्स-राज्य पर दावा करने मे उसने कोई अनुचित अथवा धर्म-विरुद्ध काम नहीं किया। युद्ध के लिए उत्तेजित होकर उसने फ़ान्स के एलचियों को राजदर्बार मे बुलाया। एक एलची ने आकर

कहा—श्रीमन्! हमको आज्ञा दीजिए कि जो कुछ कहना है उसे साफ़-साफ़ आपकी सेवा मे निवेदन कर दें; नहीं तो हमारा ठीक-ठीक आशय आप पर विदित न होगा।

हनरी—देखो, हम ईसाई राजा हैं। हमारा क्रोध हमारे इतने ही वश मे है जितने वे क़ैदी जो हमारे वन्दी-गृहों में पड़े हुए हैं। इसलिए विना किसी भय या सङ्कोच के जो कुछ कहना है उसे साफ़-साफ़ कह दो। बताओ डौफ़िन* का क्या आदेश है।

एलची—महाराज, आपके एलची फ़ान्स गये हुए थे। आपने अपने पितामह तीसरे एडवर्ड के अधिकारानुसार कुछ देश फ़ान्स का माँगा है। इसके उत्तर में हमारे स्वामी ने कहला भेजा है कि अभी आप लड़के हैं। फ़ान्स में इस समय कोई ऐसा नहीं है जिसे छोकरे जीत सकें! आप वहाँ का राज्य नहीं ले सकते। इसलिए डौफ़िन ने आपके खेलने के लिए यह गेंदों का सन्दूक़ भेजा है। इनसे आपका जी बहला रहेगा। भला आप राज्य को लेकर क्या करेंगे?

राजा—हमें ख़ुशी है कि डौफ़िन हमारे ऊपर इतने प्रसन्न हैं। हम उनकी भेंट और आप लोगों के परिश्रम पर धन्य-वाद कहते हैं। जब हम अपने बल्लों से इन फ़रांसीसी

---

*डौफ़िन फ़ान्स के युवराज को कहते थे जैसे इँगलैण्ड के युवराज का नाम प्रिन्स आफ़् वेल्स है।

गेदो को मारेंगे तब ऐसा विचित्र खेल होगा कि डौफ़िन के पिता का राजमुकुट मारा-मारा फिरेगा। उनसे कह दो कि उन्होंने ऐसे आदमी के साथ बखेड़ा उठाया है जिससे भिड़कर फ़्रान्स के समस्त वीरों को पछ-ताना पड़ेगा। हम समझते हैं कि गेंदें भेजकर उन्होंने हमारे बालकपन की ओर संकेत किया है। परन्तु हमने इँगलैण्ड के राज्य की कभी परवा नहीं की; इसलिए इधर-उधर भ्रमण किया परन्तु फ़्रांस के राज्य पर हम अवश्य स्वत्व प्राप्त करेंगे। उसी समय हमारा महत्त्व मालूम होगा। मैं फ़्रान्स मे ऐसे तेज के साथ प्रकाशित होऊँगा कि डौफ़िन की आँखें चौंधिया जायँगी और वह मेरी ओर न देख सकेंगे। युवराज से कह दो कि यही गेदें उनके लिए तोप के गोलों से कम न होंगी। उनकी यह हँसी उन्हीं के लिए हानिकारक होगी। इसी हँसी के द्वारा सैकड़ों स्त्रियाँ अपने पतियों से रहित होकर विधवा हो जायँगी, माताओं के लाल उनकी गोद से उठा लिये जायँगे और सैकड़ों दुर्ग रसातल में मिल जायँगे। बहुत से बालक, जो अभी पैदा नहीं हुए, बड़े होकर डौफ़िन की जान को कोसेंगे कि उनको परतन्त्र बना दिया; परन्तु यह सब ईश्वर, परमात्मा के अधीन है, जिसकी सेवा में मैं प्रार्थना कर रहा हूँ। ईश्वर मेरी प्रार्थना स्वीकार

करे। तुम यहाँ से कुशलपूर्वक चले जाओ और डौफ़िन से कह दो कि उसने गेंदे भेजकर जो मेरे साथ हँसी की है उसका मज़ा चखाने के लिए मैं अभी उपस्थित होता हूँ। इतने आदमियों को इस उपहास पर हँसी न आई होगी जितने इसी के कारण रोवेंगे।

एलची तो इँगलैण्ड से चले गये और हनरी युद्ध की तैयारियाँ करने लगा। उस समय अँगरेज़ लोग युद्ध को बहुत पसन्द करते थे और फ़ान्स का युद्ध छिड़ते ही समस्त देश में ऐसा जोश फैल गया कि सब छोटे-बड़े फ़ान्स जाने के लिए तैयार हो गये। कहा जाता है कि उन बुड्ढों अथवा बच्चों के सिवा, जिनके लड़ने के दिन या तो बीत गये या अभी नहीं आये, सभी ने शस्त्र धारण कर लिये थे और इँगलैण्ड भर में कोई मूछोंवाला युवक ऐसा नहीं था जिसने अपना नाम सेना मे न लिखाया हो। प्रसिद्ध है कि जिन मनुष्यों के पास घोड़ा नहीं था उन्होंने अपनी जायदाद बेच-बेचकर घोड़ा ख़रीदा और थोड़े ही दिनों मे हनरी की सेना इँग्लिश चेनल के समुद्र मे जहाज़ों पर चल पड़ी।

परन्तु फ़ान्स को प्रस्थान करने से पूर्व हनरी के भाग्य-वश एक और दुर्घटना का भी नाश हो गया, अर्थात् कुछ लोगो ने गुप्त रीति से लार्ड कैम्ब्रिज, लार्ड स्क्रूप और लार्ड ग्रे की सहायता से छिपे-छिपे महाराज को मार डालने का उपजाप किया। यह भी कहा जाता है कि कुछ लोगों ने इस

विषय मे फ़्रान्सवालों से कुछ धन भी ले लिया था। अगर थोड़े दिनों इनका पता न लगता तो हनरी को अपने उद्देश में कभी सफलता प्राप्त न होती और वह अवश्य मारा जाता। परन्तु राजा के चचा ड्यूक आफ़ ऐक्सीटर ने इसका पता लगा लिया और बादशाह ने बड़े चातुर्य से इन लोगों को गिरफ़्तार कर लिया।

जब फ़्रान्स जाने के लिए राजा तैयारियाँ कर रहा था तब लार्ड कैम्ब्रिज, ग्रे और स्क्रूप राजसभा मे बैठे हुए थे। राजा ने कहा—लार्ड कैम्ब्रिज, क्या आप समझते हैं कि फ़्रांस मे हमारी विजय होगी?

स्क्रूप—हाँ भगवन्! अगर प्रत्येक मनुष्य ने अपना कर्त्तव्य पालन किया।

राजा—इसमे तो संशय नहीं कि इस समय हमारे राज्य मे कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जो हमारे साथ सहानुभूति न रखता हो और जिसका हृदय राज-भक्तिपूर्ण न हो। सब यही चाहते हैं कि हमारी जय हो।

कैम्ब्रिज—श्रीमहाराज! किसी राजा की प्रजा अपने स्वामी से इतनी भक्ति नहीं करती जितनी आपकी प्रजा आपसे।

राजा—(अपने चचा ऐक्सीटर से) चचा, उस मनुष्य को बताइए जिसने कल हमको बुरा-भला कहा था। हम समझते हैं कि उसने जानबूझ कर ऐसा नहीं

किया। शायद वह उस समय शराब के नशे में हो। इसलिए हम उसको क्षमा कर देंगे।

स्क्रूप—दया तो यही चाहती है। परन्तु महाराज, उचित बात यही है कि उसको यथार्थ दण्ड दिया जाय, नहीं तो उसकी देखा-देखी और लोग भी ऐसा ही करेंगे।

हनरी—दया ही करनी उचित है।

कैम्ब्रिज—महाराज, दया के साथ दण्ड भी चाहिए।

ग्रे—भगवन्, यदि दण्ड देकर आप उसका दोष दूर करदें तो यही बहुत बड़ी दया है।

हनरी—शोक है कि मेरी भक्ति और प्रेम के वश होकर आप लोग इस बेचारे पर ऐसी कठोरता करते हैं। अगर तुच्छ बातों पर हम क्षमा न करेंगे और इतना दण्ड देंगे तो बड़े-बड़े विद्रोही जनों को क्या दण्ड देना पड़ेगा ?

यह कहकर राजा ने गुप्त चिट्ठियाँ—जो पकड़ी गई थीं—कैम्ब्रिज, स्क्रूप और ग्रे को दिखाईं। इनके पढ़ते ही उनका मुँह सूख गया और अपने अपराध को स्वीकार करके वे राजा से क्षमा माँगने लगे। परन्तु राजा ने उत्तर दिया—"जो दया हमारे हृदय में अभी मौजूद थी वह आप लोगों के उपदेश से जाती रही। अब आप लोगों को क्षमा माँगने में क्यों लज्जा नहीं आती ? मैं तो तुम्हारे ही उपदेश का

पालन करूँगा। इसी प्रकार तुम्हारे सिद्धान्त ने तुम्हीं को मार डाला। लार्ड कैम्ब्रिज, तू जानता है कि हमे तेरे साथ कितना प्रेम था और जो कुछ पदवियाँ अथवा उपाधियाँ तुझे मिल सकती थीं, सभी हमने प्रदान कीं। और तूने थोड़े से रुपये के लोभ मे आकर हमको हैम्पटन मे मार डालने का विचार किया! लार्ड स्क्रूप! तुझसे तो मैं कहूँ ही क्या! हे कृतघ्नी और विश्वासघाती, तू मेरे सब विचारों से अभिज्ञ था। मैं अपने हृदय की बात तुझसे कह दिया करता था! हाय, विदेशीजन क्या कहेंगे और किस प्रकार अँगरेज़ों का विश्वास करेंगे? क्या लोग यह नहीं कहते होंगे कि अँगरेज़ों को लोभ दिलाना कौन सी मुश्किल बात है? अब भक्त और विश्वासपात्रों की क्या पहचान है? क्योंकि तू विश्वासपात्र मालूम होता था। अगर कहा जाय कि विद्यानिधान ही विश्वासपात्र हो सकता है तो तू भी विद्वान् था। अगर कहा जाय कि उच्चवंशीय लोगों पर विश्वास करना चाहिए तो तू भी कुलीन था। अगर विश्वासपात्र लोग धार्मिक मालूम होते हों तो धार्मिक तू भी मालूम होता था। आज तेरे विश्वास-घात ने धर्मात्मा से धर्मात्मा मनुष्य को सन्दिग्ध अवस्था डाल दिया।

इस बड़े प्रभावशाली व्याख्यान के पश्चात्, जिस से सभा के सब सभ्यगण काँप उठे, इन तीनों [illegible] पकड़ लिया गया और [illegible] लोगों ने बहुत

मचाया और ये क्षमा के प्रार्थी हुए परन्तु सबको राजनियमानुसार फाँसी का दण्ड दिया गया।

इस प्रकार अपने घर के काँटो को दूर करता हुआ भाग्यवान् हनरी फ्रान्स को चल दिया।

फ्रान्स-नरेश ने अपने एलचियों से हनरी के आगमन के समाचार सुन ही लिये थे। वह अपने युवराज डौफ़िन और मुख्य सेनाध्यक्ष कांस्टेबिल तथा बैरी, ब्रीटेन, ब्रबण्ट, और ओर्लियन्स ड्यूकों के साथ बैठा हुआ युद्ध के प्रवन्ध पर बातचीत कर रहा था। उसने डौफ़िन को आज्ञा दी कि जाकर जल्दी से अपने सब दुर्गों को मजबूत कर लो और सेना को इकट्ठा करो; क्योंकि पहले हमने अँगरेज़ो की परवा न करके बहुत बड़ा धोखा खाया है और उनकी विजय के चिह्न अभी तक शेष हैं।

परन्तु डौफ़िन अभी अँगरेज़ो को तुच्छ ही समझता था। उसका पेरिस की गेंदो को हनरी के पास भेजना ही प्रकट करता है कि वह इनको कितना समझता था। इसलिए बड़े साहस के साथ वह कहने लगा—पिताजी, यह तो अच्छी बात है कि हम शत्रु से लड़ने के लिए तैयार हो जायँ। लड़ाई के अभाव और शान्ति के समय मे भी देश मे कुछ न कुछ सेना अवश्य रहती है। फिर लड़ाई के समय में क्यों न रहेगी। परन्तु भय की आवश्यकता नहीं है। यद्यपि हम फ्रान्स के कमज़ोर स्थानों को मज़बूत करने के लिए अवश्य

करेंगे पर यह समझकर नहीं कि कोई बड़ा भारी युद्ध लड़ना है किन्तु ये तैयारियाँ तो उस समय भी की जातीं जब अँगरेज़ लोग युद्ध के बजाय नाच-रङ्ग मे संलग्न होते। इँगलैण्ड का राज इस समय एक ऐसे छोकरे के हाथ में है जो खेल-कूद के सिवा और कुछ नहीं जानता। इसलिए ऐसे मनुष्य से डरना कायरता है।

कांस्टेबिल—डौफ़िन, आप इस राजा से धोखा खा रहे हैं। क्या आपने अपने एलचियों से भी पूछा था कि इस राजा ने, जिसे आप छोकरा बताते हैं, किस गौरव के साथ उनसे बातचीत की और किस गम्भीरता से उनको आपके प्रश्नों का उत्तर दिया। मालूम होता है कि हनरी की योग्यता पहले उसी प्रकार छिपी हुई थी जिस प्रकार माली होनहार और मुलायम जड़ को मिट्टी से छिपा देता है।

डौफ़िन—नहीं, यह बात नहीं है। परन्तु ऐसा विचार कर लेने से भी कुछ हानि नहीं है; क्योंकि शत्रु चून का भी बुरा होता है। हमेशा शत्रु को अधिक समझकर तैयारियाँ करनी चाहिएँ जिससे अवसर पड़ने पर किसी प्रकार की कमी न पड़े।

फ़ान्स-नरेश—हमारा तो यह विचार है कि हनरी बड़ा बल-वान् है। इसलिए आप सब लोगों को बहुत बड़ी

तैयारियाँ करनी चाहिएँ। इसके दादे-परदादे हमारे देश का रास्ता देख गये हैं। *क्रेसी का युद्ध अभी लोगों के हृदयों से गया नहीं है। ब्लैक प्रिन्स और उसके साथियों ने उसी समय यहाँ के उन सब स्थानों तथा स्मारकों को विनष्ट कर दिया था जिनको ईश्वर तथा फ्रान्स के योग्य पुरुषों ने बीसियों वर्षों में बनाया था। यह हनरी भी उसी वृक्ष की शाखा है और उससे डरना चाहिए।

उसी समय अँगरेज़ी एलचीं फ्रान्स के राजदरबार में उपस्थित हुए और राजा की आज्ञा से भीतर बुलाये गये। राजा ने पूछा—क्या हमारे भाई इँगलैण्ड-नरेश के पास से आये हो?

एलची—जी हाँ। हमारे स्वामी का यह सँदेसा है कि आप ईश्वर के नाम पर फ्रान्स के राज्य को उनके लिए छोड़ दीजिए। क्योंकि इस पर उनका और उनकी सन्तान का अधिकार है और आप बलात्कार से इस पर राज्य कर रहे हैं। इस काग़ज़ पर वंशावली लिखी हुई है, जिसके पढ़ने से विदित होगा कि हमारे स्वामी की इच्छा अनुचित नहीं है।

फ्रान्स-नरेश—अगर हम ऐसा न करें तो?

---

* क्रेसी में तृतीय एडवर्ड और फरासीसियों में लड़ाई

एलची—घोर संग्राम होगा। क्योंकि अगर आप अपने राज-मुकुट को अपने पेट में छिपा ले तो भी हमारे राजा इसको निकाल लेगे। इसलिए बड़े उद्वेग के साथ वे चले आ रहे हैं। अगर आपको उन बेचारों पर दया हो जिनके निगलने के लिए युद्ध अपना मुँह फैलाये हुए है तो आप राज्य से अलग हो जाइए, नही तो विधवाओं का हाहाकार, अनाथों की पुकार, मृत पुरुषों का रक्त और देश के अन्य दुःख सब आपके सिर पर होंगे। मुझे कुछ डौफ़िन से भी कहना है।

डौफ़िन—डौफ़िन से ? अच्छा कहो। डौफ़िन यह रहा, उसके लिए क्या है ?

एलची—अनादर और घृणा। मेरे स्वामी ने कहला भेजा है कि अगर आपके पिताजी उन सब बातों को स्वीकार करके, जो मैं कहता हूँ, मुझे प्रसन्न न करेंगे तो मैं उस असभ्य उपहास के बदले—जो आपने मेरे साथ किया है—समस्त फ़्रान्स को विनष्ट कर दूँगा।

डौफ़िन—यदि मेरे पिताजी स्वीकार कर ले तो यह बात मेरे बिलकुल विरुद्ध होगी। मैं तो यही चाहता हूँ कि अँगरेज़ों से लड़ाई हो।

हम ऊपर कह चुके हैं कि फ़ान्सनरेश अँगरेज़ों से डरता था। उसने डौफ़िन के समान उजड्डता का उत्तर नहीं दिया

किन्तु सन्धि करनी चाही। एलची-द्वारा उसने कहला भेजा कि हम अपनी बेटी कैथराइन का विवाह हनरी के साथ कर देंगे और उसके यौतुक में फ़ान्स के कुछ प्रान्त भी भेंट करेंगे, यदि हनरी सन्धि करके इँगलैण्ड को लौट जाय। परन्तु इँगलैण्ड-नरेश इस थोड़े से राज को लेने पर राज़ी नहीं हुआ और अँगरेज़ों और फ़रासीसियों मे युद्ध आरम्भ हो गया।

पहले हनरी ने हार्फ्लर के दुर्ग पर चढ़ाई की और उसे चारों ओर से घेर लिया। क़िलेवालों ने बड़ी वीरता से शत्रु का सामना किया और कई दिन तक लड़ते रहे। परन्तु हनरी ने सुरङ्ग लगाकर दीवारों को उड़ाना आरम्भ किया और डौफ़िन की सहायता न पहुँचने के कारण हार्फ्लर का गवर्नर घबरा गया। उसने जब डौफ़िन के पास सेना के लिए आदमी भेजा तब डौफ़िन ने अपनी असमर्थता प्रकट की। यह देखकर अन्त मे हार्फ्लरवालों के छक्के छूट गये। वे क़िले की दीवारों पर इसलिए चढ़ आये कि हनरी से कुछ निवेदन करें। हनरी ने उत्तर दिया—

"गवर्नर, तुम्हारी क्या राय है? इसके पश्चात् हम फिर तुम्हारी बात न सुनेंगे। या तो सर्वथा हमारे आश्रित हो जाओ या लड़कर मरो। मैं एक योद्धा हूँ। अगर फिर मैंने तोपें छोड़ दीं तो तुम्हारे नगर को बिना राख में मिलाये न रहूँगा। फिर दया का दरवाज़ा बन्द हो जायगा और हमारे कोप-भरे सिपाही तुम्हारे साथ अनेक प्रकार के अत्याचार

करेंगे, छोटे बच्चों के सिर पत्थरों पर पटक दिये जायँगे और तुम्हारे पूज्य वृद्ध पुरुषों की डाढ़ियाँ नोच ली जायँगी। फिर मेरे सिपाहियों को कौन रोक सकता है, जब वे राक्षस क्रोध के वशीभूत होकर तुम्हारी लूट-मार करेंगे, तुम्हारी स्त्रियों को नष्ट करेंगे? इसलिए उचित यही है कि जब तक मुझे रोष नहीं आता, तुम लोग मेरे अधीन हो जाओ।"

गवर्नर ने लाचार होकर नगर की कुञ्जियाँ फेंक दीं। फाटक खोल दिये गये और हनरी का स्वत्व हार्फ्लर पर हो गया। एक रात वहाँ रहकर हनरी ने हार्फ्लर को तो अपने चाचा ऐक्सीटर के आधिपत्य में छोड़ा और स्वयं कैले को चला गया; क्योंकि जाड़ा बहुत पड़ने लगा था और उसकी सेना रोग-ग्रसित होती जाती थी।

थोड़े दिनों पीछे हनरी आकर आगे बढ़ा। जब उसने सौम नदी को पार कर लिया तब फ़ान्स के राजदर्बार में खलबली मच गई। रूएँ के महल में फ़ान्सनरेश, डौफ़िन, कांस्टेबिल और ड्यूक आफ़ बार्बन सब बैठकर विचार करने लगे। फ़ान्स-नरेश ने कहा—यह तो निश्चय है कि राजा ने सौम नदी को पार कर लिया।

कांस्टेबिल—अगर अब उसको रोका न गया तो हमको अवश्य देश छोड़ना पड़ेगा और हमारे बाग़ों में विदेशी जन विहार करेंगे।

डौफ़िन—हे परमात्मा! क्या हमारे प्राचीन पूर्वजों की एक छोटी सी* शाखा इतनी बढ़ गई है कि अपने असली वृक्ष का भी नाश करना चाहती है।

बार्बन—जारज† नार्मन जारज†! कैसी शर्म की बात है कि ये लोग बिना रोक-टोक के चले आवे।

कांस्टेबिल—अरे इन लोगों में यह शक्ति कहाँ से आ गई? इनके देश का तो जलवायु भी इतना उत्तम नहीं है। वहाँ कुहरा हमेशा छाया रहता है और हमारे देश के समान फल-फूल भी नहीं उग सकते। हमको इनके परास्त करने का अवश्य साहस करना चाहिए।

डौफ़िन—हमारी स्त्रियाँ हमको घृणा से देख रही हैं और कहती हैं कि हम केवल भागने के ही वीर हैं।

फ़्रान्स-नरेश—एलची को हनरी के पास भेज दो। लड़ाई का निमन्त्रण दे दो! और ओर्लियन्स, बार्बन, बैरी, अलेङ्कन, ब्रावण्ट, बार, बरगण्डी, चैटीलन, एमबर्स

---

* विजयी विलियम (William the Conqueror), जो हनरी और वर्त्तमान इँगलैण्ड-नरेशों का पूर्वज था, पहले फ़्रान्स के नार्मण्डी नामक प्रान्त से आया था और फ्रान्स तथा इँगलैण्ड दोनों देशों के राजा वास्तव में एक ही वंश से हैं।

†विजयी विलियम को जारज विलियम (William the Bastard) भी कहते हैं; क्योंकि यह अपने माता-पिता के धार्मिक सम्बन्ध से उत्पन्न नहीं हुआ था। यहाँ बार्बन का (bastard) "जारज" शब्द घृणा-सूचक है।

बैाडमण्ट, बोमण्ट, ग्राण्डप्री, रोसी, फ़ाकन्बर्ग, फोइक्स, लेस्टरेल, बोसीकाल्ट, केरोलैाइस, अन्य योद्धाओं-सहित अपनी-अपनी सेना लेकर जावे और हनरी को पकड़कर मेरे सामने लावें।

कांस्टेबिल—श्रीमहाराज को ऐसा कहना ही शोभा देता है। मुझे शोक है कि हनरी की सेना इतनी कम है और वह भी रोग-ग्रसित और थकी है कि ज्योंही वह हमारी सेना को देखेगा, डर जायगा और निस्तार-धन देने को राज़ी हो जायगा।

फ़ान्स-नरेश—अच्छा कांस्टेबिल, एलची-द्वारा पूछो कि वह क्या निस्तार-मूल्य देना स्वीकार करता है?

हनरी की सेना उस समय पीकार्डी मे पड़ी हुई थी। अपने स्वामी के आज्ञानुसार फ़रासीसी एलची उसके पास पहुँचा और कहने लगा—"मेरे स्वामी ने आपकी सेवा में कहला भेजा है कि यद्यपि हम इस समय तक मृत मालूम होते थे परन्तु वास्तव मे हम सो रहे थे। योद्धा वीरों के लिए उजड्डुता इतनी अच्छी नहीं है जितनी नीतिज्ञता। सम्भव था कि हार्फ्लर मे ही हम तुमको हरा देते परन्तु यह हमारी इच्छा के विरुद्ध था; क्योंकि तुच्छ बातों मे हाथ डालना ठीक नहीं है। अब हम सत्य कहते हैं कि इँगलैण्ड को तुम्हारी मूर्खता पर पछताना पड़ेगा। अब तुम अपने निस्तार-मूल्य का प्रबन्ध कर रक्खो, क्योंकि जितना तुमने

हमको नुक़सान पहुँचाया है उसी हिसाब से निस्तार-मूल्य भी लिया जायगा। तुमको यह जानना चाहिए कि इँगलैण्ड के कोष मे इतना रुपया भी नहीं है जो हमारे नुक़सान का प्रतिफल दिया जा सके। तुमने जो हमारा अनादर किया है उसके बदले मे अगर तुम हमारे पैरों पड़ो और हाथ जोड़ो, तो भी पर्य्याप्त नहीं है।"

हनरी ने उत्तर दिया—इस समय हम लड़ना नहीं चाहते और कैले जाने का इरादा कर रहे हैं। यद्यपि शत्रु को अपना हाल बतलाना ठीक नहीं है परन्तु हम बताये देते हैं कि हमारी सेना में रोग फैल रहा है। अगर ऐसा न होता तो मेरा एक-एक आदमी तीन-तीन फ़रासीसियों को मारने के लिए काफ़ी था। ईश्वर कृपा करें और मेरी इस आत्मश्लाघा को क्षमा करें। मेरा निस्तार-धन मेरा शरीर है। अपने स्वामी से कह दो कि मैं आऊँगा और फिर आऊँगा; चाहे एक नहीं दो फ़ान्स मुझे रोकने के लिए क्यों न उद्यत हों। अगर हमको किसी ने रोका तो हमारे रक्त से पृथ्वी लाल हो जायगी।

हनरी के इस उत्तर को सुनकर दोनों ओर से तैयारियाँ हो गईं। और अजीन-कूर के रणक्षेत्र में दोनों दल एकत्रित हुए। अँगरेजों की सेना बहुत कम थी और जो कुछ थी वह भी बीमार। इसलिए हनरी मन में घबराया हुआ था और साधारण आदमी के लिबास में अपनी सेना में फिर

रहा था और अपने उत्साह-जनक शब्दों से सेना को उत्तेजित कर रहा था। पहले उसने अपने दो साथियों--ग्लौस्टर और बैडफर्ड--से कहा--यह सच है कि हम बड़े संकट मे हैं, परन्तु बड़े संकट के लिए साहस भी बड़ा ही चाहिए। हे परमात्मन्! बुराई में भी कुछ भलाई अवश्य है, अगर आदमी उसको जान सके। अगर हमारे पड़ोसी दुष्ट हैं तो हम अवश्य जल्दी उठेंगे और जल्दी उठने से हमारे स्वास्थ्य तथा अन्य कामों को लाभ पहुँचेगा।

इतने मे एक वृद्ध सरदार अर्पिङ्घम वहाँ पर आ गया जिसको देखकर राजा कहने लगा--सर टामस अर्पिङ्घम! इस पूज्य श्वेत सिर के लिए तो नर्म तकिया चाहिए था न कि फ्रान्स की कठोर भूमि!

अर्पिङ्घम--नहीं स्वामिन्, नहीं! मुझे तो यही भूमि अच्छी लगती है। क्योंकि मैं ऐसी दशा में कह सकता हूँ कि मैं राजा के समान सो रहा हूँ।

राजा--यह अच्छी बात है। इससे लोगों के मन को दुःख के समय भी कुछ तसल्ली हो जाती है। जहाँ मन में उत्साह हुआ वहाँ दुर्बल से दुर्बल शरीर भी उत्तेजनापूर्ण हो जाता है।

अब राजा वहाँ से चला गया और अन्य सिपाहियों के साथ बातचीत करने लगा। कुछ देर पीछे उसे तीन सिपाही आपस मे बातें करते हुए मिले जिन्होंने राजा को नहीं पहचाना।

एक सिपाही बोला—भाई! अब तो पौ फट रही है।

दूसरा सिपाही—हाँ, मैं भी देखता हूँ। परन्तु दिन निकल आना हमारे लिए कोई अच्छी बात नहीं है।

तीसरा सिपाही—सूर्य्योदय तो हमको दिखाई दे रहा है। परन्तु सूर्य्यास्त के कभी दर्शन न होंगे! देखो, यह कौन आ रहा है?

राजा—एक मित्र।

तीसरा सिपाही—तुम किस सरदार के मातहत हो?

राजा—सर टामस अर्पिङ्घम के।

तीसरा सिपाही—वह तो बड़े योग्य योद्धा हैं। भला बताओ, हमारी वर्तमान दशा के विषय में उनका क्या विचार है?

राजा—जैसा उस आदमी का जो समुद्र के किनारे बालू के ढेर पर बैठा हो और डर रहा हो कि कहीं वह न जाय।

दूसरा सिपाही—क्या यह विचार राजा पर भी प्रकट कर दिया गया है?

राजा—नहीं। ऐसा करना उचित नहीं है। क्योंकि राजा आदमी ही तो है। सूँघने में फूल जैसा मुझे मालूम होता है वैसा ही राजा को। उसकी इन्द्रियाँ उसी प्रकार काम करती हैं जैसी अन्य मनुष्यों की। राज-चिह्नों को अलग कर दो तो राजा एक साधारण मनुष्य ही मालूम पड़ेगा। इसलिए अगर वह भय

का कारण मालूम करेगा तो हमारी भाँति अवश्य भय खायगा और उसके भयभीत होने से समस्त सेना भयभीत हो जायगी।

दूसरा सि०—चाहे वह कितना ही साहस क्यों न दिखलावे, मुझे तो विश्वास है कि वह इस समय टेम्स नदी के तीर होना चाहता है, न कि फ़ान्स मे। और मेरी भी यही इच्छा है कि मैं उसके साथ होऊँ।

राजा—मैं समझता हूँ कि वह जहाँ है वहीं होना चाहता है।

दूसरा सि०—तो मैं चाहता हूँ कि वह यहाँ अकेला रहे, क्योकि उसको तो निस्तार-धन देकर छुड़ा लिया जायगा और दूसरे सैकड़ों की जानें बच जायँ!

राजा—तो तुम राजा से प्रेम नहीं करते। मैं तो राजा के साथ मरने से ख़ुश हूँ; क्योंकि राजा धर्म के लिए लड़ रहा है।

तीसरा सि०—यह तो हम नहीं जान सकते।

दूसरा सि०—अगर उसका लड़ना अनुचित हो तो भी राजा की प्रजा होने से हमारा कर्तव्य है कि उसकी आज्ञा पालन करे और जो कुछ पाप होगा वह हमारे सिर नहीं है।

तीसरा सि०—अगर लड़ना धर्म-विरुद्ध हुआ तो राजा का सिर पापों के भार से नीचा हो जायगा। क्योंकि

जब लोगों का अङ्ग-भङ्ग होगा, सिर कटेंगे; जब हम मारे जायँगे और कोई रोते हुए, कोई कोसते हुए, कोई अपने बालबच्चों की याद करते हुए प्राण देंगे तब इन सबका शाप राजा के ही ऊपर होगा। मैं समझता हूँ कि जो लड़ाई मे मारे जाते हैं उनका अन्त अच्छा नहीं होता। और अगर इनका अन्त अच्छा नहीं होता तो इसमे उसी का दोष है जो इनको युद्ध की प्रेरणा करता है।

राजा—तो तुम्हारे सिद्धान्त के अनुकूल अगर कोई पिता अपने पुत्र को व्यापार करने भेजे और वह पुत्र कोई पाप करने लगे तो उस पाप का दोष उसके बाप पर होगा जो उसको भेजता है। और अगर कोई स्वामी अपने भृत्य को रुपया लेकर कहीं भेजे और वह भृत्य रास्ते मे लूट लिया जाय तो क्या उसका दोष भेजनेवाले पर होगा? ऐसा तो नहीं होता। राजा कभी सिपाहियों के अन्त का उत्तरदाता नहीं है और न ऊपर के उदाहरणों मे पिता और स्वामी ही उत्तरदाता है। दूसरी बात यह है कि चाहे कितना ही धार्मिक राजा क्यों न हो, उसकी सेना के सब सिपाही निर्दोषी और पापरहित नहीं हो सकते। कोई ऐसे हैं जिन्होंने किसी की हत्या की है या किसी को मारना चाहा है। कोई व्यभिचार के दोषी हैं। कोई अन्य पापों

के भागी हैं। अब अगर ये पापीजन राजदण्ड से बच गये तो ईश्वर के दण्ड से कदापि नहीं बच सकते। यह दण्ड उनको युद्ध मे मिलता है। अगर ये यहाँ मारे जावें तो उनकी मृत्यु का कारण राजा नही है किन्तु वे पाप हैं जो उन्होंने इस समय के पूर्व किये हैं। प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य राजा का कर्तव्य है। परन्तु उसकी आत्मा राजा की आत्मा नही है। इसलिए अगर हर एक सिपाही उसी प्रकार मरने की तैयारी करे जैसे वह रोग के समय करता है अर्थात् अनुताप करे और अपने पापों के लिए ईश्वर से क्षमा माँगे तो वह अच्छी मौत मरेगा। और अगर बच भी जायगा तो समझना चाहिए कि जिस समय ऐसे उत्तम विचार रहे वह समय अच्छी तरह कट गया।

तीसरा सिपाही—यह तो ठीक है कि अगर कोई बुरी मौत मरता है तो इसका कारण राजा नही है किन्तु स्वयं वही है। राजा इसका उत्तरदाता नहीं हो सकता।

राजा—मैंने राजा को यह कहते सुना था कि मैं निस्तार-धन देकर न छूटूँगा।

तीसरा सिपाही—यह तो वह इसलिए कहता है कि हम लोग उत्साह के साथ लड़े। जब हमारे गले कट चुकेंगे तब उसको निस्तार-धन देकर छुड़ा लिया जायगा और मूर्ख हमी ठहरेंगे।

राजा—अगर मैंने उसे ऐसा करते देखा तो मैं कभी उसका विश्वास न करूँगा।

तीसरा सिपाही—भला साधारण सिपाही राजा का क्या कर सकता है? यह कहना तो ऐसा ही है जैसे पंखे से सूर्य्य को ठण्डा करना।

यह कहकर सिपाही तो चले गये और राजा अकेला रह गया। वह अपने मन में इस वार्तालाप के विषय में सोचने लगा—क्या इन सब के जीवन, नकी आत्मा, इनके ऋण, इनकी स्त्रियाँ, इनके बच्चे और इनके पाप, सब के सब राजा के सिर हैं? क्या मैं इन सबका भार उठा सकता हूँ? हाय महत्त्व के साथ ऐसी ही चिन्ताएँ लगी रहती हैं। जिस आनन्द को साधारण लोग भोगते हैं वह राजाओं के भाग्य में नहीं होता। साधारण लोगों के पास कौन सी ऐसी चीज़ नहीं है जो राजाओं के पास है? सिवा नाम के! और नाम क्या है और इससे क्या लाभ है? अगर बड़ा आदमी बीमार हो तो क्या वह नाम के कारण चंगा हो सकता है? क्या पदवियों और उपाधियों से ज्वर दूर हो जायगा? नाम तो स्वप्न मात्र है। मैं राजा हूँ। मैं जानता हूँ कि तलवार, राजमुकुट, राजकोष, सेना, राजगद्दी और अन्य राजचिह्न राजा को वह मीठी नींद नहीं दे सकते जो एक ग़रीब आदमी रूखी-सूखी खाकर प्राप्त करता है। इस आदमी को सिवा नाम के और सब आनन्द हैं परन्तु राजा को एक भी नहीं।

फिर वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि हे सर्वशक्तिमन्! हे परमात्मन्! आज मेरे सिपाहियों के हृदय पाषाणवत् बना दो जिससे वे भयभीत न हो सकें। हे ईश्वर! हे दयानिधे! ऐसी प्रेरणा करो कि वे अपने शत्रु की संख्या से न डरें। हे प्रभो! आज मुझे दण्ड न दो। आज मुझे दण्ड न दो। जगदीश! आज बचा लो। हे जगन्नाथ! आज उन पापों पर विचार न करो जिनके द्वारा मेरे पिता ने राज्य-प्राप्ति की थी। प्रभो! मैंने रिचार्ड की लाश को फिर से सम्मान के साथ समाधिस्थ कर दिया है। और उसकी मृत्यु पर इतने आँसू बहा चुका हूँ जितनी लोहू की बूँदें भी उसके शरीर से नहीं निकली थी। पाँच सौ दरिद्र और दीन आदमियों को नित्य खाना देता हूँ कि वे रिचार्ड की आत्मा के लिए रात-दिन ईश्वर से प्रार्थना करते रहें। मैंने दो धर्ममन्दिर-बना दिये हैं जहाँ पुरोहित रिचार्ड की शान्ति के लिए भजन गाते रहते हैं। इतना मैंने किया है। और और भी करूँगा परन्तु जो कुछ मैं करता हूँ वह उस हत्या के सम्मुख कुछ भी नहीं है। हे परम प्रभो! मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। क्षमा चाहता हूँ।

इधर इँगलैण्ड-नरेश की सारी रात सेना मे घूमने और ईश्वर से प्रार्थना करने मे कटी, उधर डौफ़िन, कांस्टेबिल, लार्ड रेम्बर्स और ड्यूक आफ़ ओर्लियन्स आत्मश्लाघा और डींगें मारने मे लगे रहे। कोई अपने घोड़ों की प्रशंसा करता, कोई कवच को अच्छा बताता, कोई शस्त्र सँभालता, कोई हँसता



कोई गाता। सारांश यह कि यद्यपि दोनों दलों की रात प्रातःकाल की बाट देखते-देखते कटी परन्तु दोनों के भाव एक दूसरे से भिन्न थे। एक डर-डरकर ईश्वर से सहायता चाहता था और अपने पापों पर अनुताप कर रहा था। दूसरा अपनी संख्या तथा बल पर अभिमान करके अपने शत्रु को गाजर-मूली समझ रहा था। क़ैदियों को पकड़ने के लिए शर्तें बदी जा रही थीं। हँसी-ठट्ठे और नाच-रंग हो रहे थे। ओर्लियन्स ने कहा—डौफ़िन को प्रातःकाल की तलाश है।

रेम्बर्स—इसलिए कि अँगरेज़ों को खा जाय।

कांस्टेबिल—जितने मारेगा उतने खा जायगा !*

ओर्लियन्स—डौफ़िन बड़ा चालाक है।

कांस्टेबिल—जो चले सो चालाक ! डौफ़िन चलेगा तो अवश्य ही।

ओर्लियन्स—उसने कभी किसी को हानि नहीं पहुँचाई।

कांस्टेबिल—और न कल पहुँचावेगा।

ओर्लियन्स—यह इँगलैण्ड-नरेश कैसा मूर्ख है कि बिना जाने-बूझे चला आ रहा है।

कांस्टेबिल—अँगरेज़ों को ज्ञान होता तो अवश्य भाग जाते।

ओर्लियन्स—ज्ञान तो उनमें है ही नहीं, उनके सिरों में जो समझ होती तो वे इतना भारी कवच धारण न करते !

रैम्बर्स—इँगलैण्ड द्वीप में बड़े-बड़े वीर उत्पन्न होते हैं। इन कुत्तों से कोई नहीं लड़ सकता।

*अर्थात् हमसे कोई अँगरेज़ भी न मरेगा !

ओर्लियन्स—पागल कुत्ते! जो बिना समझे-सोचे रूसी रीछ के मुँह मे आ रहे हैं और अपने सिरों को सेव की तरह कुचलवा रहे हैं। वह मक्खी भी बड़ी बहादुर है जो शेर की मूँछ पर बैठती है।

इसी हँसी-ठट्ठे मे थोड़ी रात कटी। जब प्रातःकाल हुआ तब हनरी ने लड़ाई की तैयारियाँ कर दीं। बिगुल बज गया। फ़रासीसी लोग भी घोड़ों पर सवार होकर आगे बढ़े। हम ऊपर बता चुके हैं कि अँगरेज़ी सिपाही बीमार पड़े हुए थे। इसलिए उनके पतले-दुबले शरीरों को देखकर फ़रासीसी लोग और भी बेपरवा हो गये और समझने लगे कि अँगरेज़ हमारे हाथ से जीते न बचेंगे।

परन्तु हनरी अब भी डर रहा था और अपनी सम्पूर्ण आशा परमात्मा पर बाँध रहा था। जब उसके एक साथी वेस्टमोरलैण्ड ने कहा कि अगर हमारी सहायता को वह एक हजार आदमी भी होते जो आज इँगलैण्ड मे बेकार बैठे हैं तो अच्छा होता, तब हनरी ने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया—नहीं भाई! ऐसी इच्छा मत करो; अगर मरना है तो इतने ही काफ़ी हैं। अगर जीना है तो जितने थोड़े आदमी होंगे उतना अधिक यश होगा। ईश्वर की इच्छा पूर्ण हो। अब एक भी आदमी की ज़रूरत नहीं। मुझे रुपया नहीं चाहिए। न मुझे इस बात का सोच है कि मेरे धन को कौन खा रहे हैं। परन्तु यदि यश चाहना पाप है तो मैं सबसे बड़ा पापी हूँ।



ईश्वर जानता है कि मैं अपने साथ इस सेना से अधिक एक आदमी भी लेना नहीं चाहता, नहीं तो वह मेरे यश को बाँट ले जायगा। वेस्टमोरलैण्ड! मेरी सेना से कह दो कि जो कोई मनुष्य आज के दिन लड़ना न चाहे वह कुशलपूर्वक लौटकर घर को जा सकता है। हम उसे मार्ग-व्यय देंगे। हम उसके साथ मरना नहीं चाहते, जो हमारे साथ मरते हुए डरता है। आज क्रिस्चियन त्यौहार है। जो आज जीवित बचेगा वह आज के दिन हर साल इस युद्ध को याद किया करेगा और अलाव पर बैठकर बड़े अभिमान के साथ अपने साथियों को अपने घाव दिखाया करेगा कि इस वीरता से हम लोग लड़े थे। हमारे पराक्रमों के गीत हमेशा गाये जाया करेंगे और भद्र पुरुष अपने बालकों को हमारी कथाएँ सुनाया करेंगे। सब लोग मिट जायँगे परन्तु जो आज के दिन रण-क्षेत्र में प्राण देंगे उनका नाम प्रलय तक रहेगा। और जो लोग आज की रात इँगलैण्ड में सो रहे हैं वे पछतायँगे कि हाय हम न हुए नहीं तो हमारा भी नाम होता।

जब हनरी ने इस प्रकार अपने वीरों को सेना में आगे बढ़ाया तब फ़रासीसी दूत आया और कहने लगा—महाराज! वीर कांस्टेबिल ने कहला भेजा है कि अब आपके परास्त होने में कुछ भी सन्देह नहीं है। इसलिए एक बार आपसे और पूछा जाता है कि आप अपने छुड़ाने के लिए क्या निस्तार-धन देना चाहते हैं। दूसरी बात यह है कि कृपा करके अपने

सिपाहियों को आज्ञा दे दीजिए कि लड़ने से पहले ईश्वर का ध्यान कर लें जिससे उनकी आत्माएँ स्वर्ग को जा सकें, क्योंकि आज वे जीते न बच सकेंगे।

हनरी—अब की तुझे किसने भेजा है?

दूत—फ़्रान्स के कांस्टेबिल * ने।

हनरी—जो उत्तर मैंने पहले दिया था वह अब भी देता हूँ। पहले वह मुझे जीत ले फिर मेरी हड्डियों को बेच ले। हे ईश्वर! वे बेचारे सिपाहियों को क्यों चिढ़ाते हैं? एक आदमी ने शेर के जीते हुए ही उसका चमड़ा बेच लिया था परन्तु उसका शिकार करते हुए मारा गया। हममे से बहुत से तो अपने ही देश में मरेंगे और उनकी क़बरों पर पीतल के पट्टों पर उनके पराक्रम लिखे जायँगे। परन्तु अगर कोई फ़्रांस मे भी मर गये तो क्या हानि! सूर्य्यदेव उनकी हड्डियों पर अपना प्रकाश करेंगे और उनकी वीर आत्माएँ स्वर्ग पहुँचेगी। उनके भौतिक शरीर सड़-सड़कर तुम्हारे देश की जल-वायु को बिगाड़ेंगे। हमारे अँगरेजी सिपाहियों की वीरता तो देखो। अगर जीते न मारा तो मरकर रोग-द्वारा मारेंगे। तुम जाकर उनसे कह दो कि सिवा इन हड्डियों के मेरा निस्तार-धन और कुछ नही मिल सकता।

---

*मुख्य सेनाध्यक्ष।

दूत तो चला गया और अब दोनों सेनाएँ लड़ने लगीं। थोड़ी सी देर में फ़रासीसी सिपाही तितर-बितर हो गये। और हनरी की फ़ौज ने शत्रु के दल में हलचल मचा दी। एक-एक अँगरेज ने दस-दस को मारा और बार्बन, डौफ़िन, कांस्टेबिल तथा ओर्लियन्स सबके सब मारे गये। हनरी ने बहुत से सिपाहियों को क़ैद कर लिया। उसकी ओर से ड्यूक आफ़ यार्क और ड्यूक आफ़ सफ़ोक मारे गये। परन्तु अपने मरने से पहले उन्होंने बहुत से शत्रुओं को साफ़ कर दिया। थोड़ी देर पीछे जब हनरी ने देखा कि फ़रासीसी लोगों ने बची हुई सेना फिर इकट्ठी की है और अभी रणक्षेत्र छोड़ना नहीं चाहते तो उसने आज्ञा देकर अपने सब फ़रासीसी क़ैदियों को मरवा डाला।

अब तो फ़रासीसियों के पैर न जमे और जिसका जिस ओर को मुँह उठा वह उसी ओर को भाग निकला। अन्त में फ़रासीसी दूत फिर आया। हनरी ने उसे देखकर कहा—कहो जी! निस्तार-धन के लिए फिर आये हो?

दूत ने उत्तर दिया—नहीं नराधिप, हम आपसे आज्ञा लेने आये हैं कि अपने सेनाध्यक्षों की लाशों को उठा लें और यथानियम उनका मृतक-संस्कार कर दें। इस समय सरदार और सिपाही सब एक में मिले पड़े हुए हैं और उनके घायल घोड़े अपने ही मृत सवारों को दुबारा मार रहे हैं। हे राजन्, हमको आज्ञा दीजिए कि इन लाशों को ठीक लगा दें।

हनरी—हम नहीं जानते कि जीत किसकी हुई; क्योंकि अभी तुम्हारे सवार क्षेत्र मे फिर रहे हैं।

दूत—महाराज, आपकी ही विजय है।

हनरी—परमात्मा की जय हो न कि हमारे बल की! यह अज़ीनकूर की विजय कहलायेगी।

हनरी ने जब मृत पुरुषों की गणना कराई तब इसमें फ़्रांस की ओर के १२६ जागीरदार और राजकुमार, ८, ४०० सरदार, और अन्य लोग मारे गये। इनमे प्रसिद्ध पुरुषों के नाम ये हैं—चार्ल्स डीलाब्रट (कांस्टेबिल), लार्ड रैम्बर्स, डौफ़िन, ड्यूक आफ़ एलेङ्कन, ड्यूक आफ़ ब्रबण्ट, ड्यूक आफ़ बरगण्डी का भाई, ड्यूक आफ़ बार, अर्ल आफ़ ग्राण्डपरी, रोसी, फौकनबर्ग, फोइक्स, बोमण्ट, मार्ल, बोडमण्ट और लेस्ट्रेल। अँगरेज़ों के मृत पुरुषों की संख्या केवल २५ ही थी जिनमे यार्क, सफोक, रिचार्ड कैटली और डैवी गैम ही प्रसिद्ध पुरुष थे। इस अपूर्व और आशातीत विजय को सुनकर हनरी उछल पड़ा और कहने लगा—परमात्मन्, यह आपका ही हाथ था। यह आपका ही हाथ था। यह विजय आपकी है न कि हमारी। कभी किसी युद्ध मे विजयी दल के इतने कम पुरुष नहीं मरे। ईश्वर आपकी जय हो; क्योंकि यह जीत आपकी ही कृपा का फल है।

फिर उसने अपनी सेना को आज्ञा दे दी कि कोई मनुष्य इस जीत पर डींग न मारे और इसे अपनी जीत न बतावे,

क्योंकि यह यश सब परमात्मा का है। उस दिन ईश्वर की प्रार्थना के भजन गाये जाते रहे। फिर हनरी फ़ौज़ें होता हुआ इँगलैण्ड को वापिस आया। अँगरेज़ों ने अपने सम्राट् को इस असाधारण विजय को सुनकर बड़े समारोह से उसका स्वागत किया। लन्दन नगर के सब नर-नारी टेम्स नदी के तीर आ इकट्ठे हुए और बड़े आदर-सत्कार से जय जयकार बोलते हुए उसे ले गये।

थोड़े दिनों के पश्चात् फ़ान्स-नरेश ने मेल करना चाहा और ट्रोइस नामक नगर में दोनों सम्राट् अपने मुख्य-मुख्य मंत्रियों-सहित उपस्थित हुए। हनरी ने पहुँचकर कहा— फ़ान्स-नरेश से हमारा यह मिलाप कल्याणकारी हो। महारानीजी और राजकुमारी कैथरायन! हम आपको प्रणाम करते हैं। ईश्वर आपको दीर्घजीविनी करे। ड्यूक आफ़ बरगण्डी को हमारा प्रणाम हो।

फ़ान्स-नरेश—योग्य इँगलैण्ड-नरेश! हमको आपके दर्शनों से बड़ा हर्ष हुआ है।

फ़ान्स की महारानी—हमको यह दिन बड़े भाग्य से मिला है। ईश्वर इसका परिणाम अच्छा करे। आपकी आँखों से जो क्रोध अब तक हमारे देश के लिए प्रकट होता रहा है वह नष्ट हो जाय और आपकी दृष्टि हमारे लिए हितकारिणी हो।

हनरी—एवमस्तु।